राजनैतिक उपन्यास

गृहयुद्ध

मन्मथनाथ गुप्त

किताब महल

इलाहाबाद

१

पछाँह का एक शहर ।

यहाँ के बंगाली बाशिन्दों में राय परिवार का एक अपना स्थान था । राजीव के पिता डाक्टर सुविमल राय कानपुर के एक नामीगरामी व्यक्ति थे । शहर के लोगों के अतिरिक्त दूर-दूर के लोग उनके पास चिकित्सा के लिये आते थे । कुछ रोगी खुद घर पर आते थे, पर कुछ रोगियों की दशा इतनी खराब होती थी कि वे आने में असमर्थ होते थे, इसलिये उनकी तरफ़ के लोग डाक्टर साहब को हाथी, पालकी या घोड़े पर लेने आते थे । पर डाक्टर राय जाते थे अपनी ही मोटर पर । हाँ, वे कभी-कभी घोड़े पर भी जाते थे । घोड़े पर वे तभी जाते थे जब एक ही ढेले से दो चिड़िया मारना चाहते थे । बात यह है डाक्टर राय घोड़े के बड़े शौकीन थे ।

पहले वे सरकारी नौकर थे । १९१४-१८ के महायुद्ध में मेसोपो-टोमिया तक हो आये थे । पर बाद को वे स्वतंत्र रूप से चिकित्सा करने लगे थे । जल्दी ही डाक्टरी जम गई, हाथों में यश था, डाक्टरी जमने में देर नहीं हुई ।

वे अच्छे चिकित्सक थे, पर केवल अच्छी चिकित्सा से ही कोई अच्छा सरकारी नौकर नहीं होता, वैसा होने के लिये और भी गुण चाहिये, और इस सम्बन्ध में सबसे बड़ा गुण यह होना चाहिये कि बड़े साहबों की हाँ में हाँ मिलाये । सुविमल बाबू में इस गुण का परम अभाव था । वे कहा करते थे कोई साला हमारी चिकित्सा में ग़लती निकाले तो मैं समझूँ । इनके सामने जब देखो तब हाथ बाँधकर खड़े रहो और हर क़दम पर हज़ूर के लहजे में सर सर कहो, यह मुमकिन नहीं ।...नतीजा यह हुआ कि एक जगह पर आकर

मामला ऐसा पड़ा कि उन्होंने एक मुहूर्त के अन्दर सोलह साल की नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

भले ही डाक्टर राय अच्छे चिकित्सक रहे हों, पर स्वतंत्र रूप से डाक्टर रूप में जमने में उन्हें कई साल लग गये। सबने सफलता ही देखी, पर इस सफलता का जो संग्राम तथा अश्रु राशि थी, उसे किसी ने नहीं देखा। आजकल की दुनिया में केवल प्रतिभा से ही कोई जीवन-संग्राम में आगे नहीं बढ़ सकता है। क्या कभी कोई हो सकता था? इस वर्त्तमान युग में कम से कम आगे बढ़ने तथा सफल होने के लिये विषयबुद्धि और रुपये चाहिये, और चाहिये कुछ अपराध...। फिर जिसे लोग व्यावहारिक बुद्धि या विषय बुद्धि कहते है, उसमें अपराध का उपादान कितना होता है, क्या इसे कभी किसी ने सोचा है?

मुकद्दमें में जीतने की कोई आशा नहीं है, फिर भी मुवक्किल को सब्जबाग दिखाना पड़ेगा, मुकद्दमे में हार हो जाने पर भी यह कहना पड़ेगा कि अपील में अवश्य जीत होगी, तभी कोई अच्छा वकील हो सकता है। मृत्यु रोगी के सिर पर खड़ी है और धीरे-धीरे अपने काले निष्ठुर हाथों को रोगी की ओर बढ़ा रही है, फिर भी कहना पड़ेगा कि आशा है, अवश्य आशा है, तभी तो कोई अच्छा डाक्टर हो सकता है। यही विषयबुद्धि का स्वरूप है। इसके अतिरिक्त कोई सफल नहीं हो सकता, पर इस प्रकार का आचरण अपराध नहीं तो क्या है।

सुविमल बाबू विषयबुद्धि से बिलकुल शून्य थे ऐसी बात नहीं, इस सम्बन्ध में जो थोड़ी-बहुत कमी थी, उसे उन्होंने थोड़े दिनों में धक्के खाकर पूरा कर लिया।

कहते हैं उनकी मीठी बातों से ही रोगी का आधा रोग अच्छा हो जाता था। फिर प्रतिभा से उज्ज्वल उनका चेहरा, बड़े आदमियों की तरह चाल, उभरा हुआ ललाट, तना हुआ सीना बाकी काम बना देते थे। कई एक साल में ही वे अच्छे डाक्टर के रूप में विख्यात हो गये।

जिस अनुपात से उनकी ख्याति और प्रैक्टिस बढ़ गई, उसी अनुपात से समाज की सीढ़ी में वे बढ़ते चले गये।

पहले-पहल जब वे नौकरी से अलग हुए थे, और अभी जमने के लिये संग्राम कर रहे थे, उस समय उनके मन में बारबार यह अफसोस आता था कि शायद निश्चिन्तता की अपनी नौकरी को छोड़कर उन्होंने अच्छा नहीं किया, पर सफलता के वरद हस्त के प्रथम स्पर्श से ही उनका यह अफसोस बिलकुल जाता रहा। बल्कि वे अब आवेश के मुहूर्त को सैकड़ों धन्यवाद देने लगे जिसमें उन्होंने सरकारी नौकरी पर लात मारकर स्वतंत्र रूप से डाक्टरी करने की ठान ली थी। सफलता ने उनके इस सम्बन्ध के सारे दृष्टिकोण को ही बदल दिया।

धन-वृद्धि के साथ-साथ डाक्टर राय की शुमार शहर के गण्य-मान्य लोगों में होने लगी थी। म्युनिसिपलिटी, साहित्य-सम्मेलन, संगीत समाज सर्वत्र उनकी अव्याहत गति हो गई। वे शीघ्र ही म्युनिसि-पलिटी के किङ्गमेकरों में हो गये। साहित्य-सम्मेलन—चाहे वह बंगला का हो, चाहे हिन्दी का, यहाँ तक कि अंजुमन-इ-अदब-उर्दू सब उनके निकट चन्दाप्रार्थी होकर आते थे। वे स्वयं चन्दे में मोटी रक़म देते थे, और दूसरों से दिलाते थे। संगीत समाज भी उन्हें चन्दा देने तथा दिलाने की असीम शक्ति के कारण सभापति, उपसभापति या किसी न किसी पद पर चुन देता था, यद्यपि साहित्य तथा संगीत के सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी नहीं थी, पर इससे क्या आता जाता था? वे समाज में एक साहित्य तथा संगीतमर्मज्ञ के रूप में ख्यात थे। क्या इस समाज में ख्याति ही सबसे बड़ी बात नहीं है? असल में गुणी कौन है यह इस विज्ञापन या आत्मविज्ञापन के युग में कौन उसकी खबर रखता है! आज के समाज में गुणी वही है, जो गुणी के रूप में अपने को स्वीकृत करा सकता है। अवश्य कई बहुत प्रतिभावान व्यक्ति सब बाधाओं के होते हुए अपने को मनवा लेते हैं, पर इस प्रकार विराट प्रतिभा के अधिकारी बिरले ही होते हैं।

जो कुछ भी हो इन कारणों से—विशेषकर अपने सदा हँसमुख चेहरे के कारण—जो परिभाषा की पकड़ में नहीं आता, ऐसे गुणों के अधिकारी हुए थे, जिससे इन गुणों का अधिकारी कास्मोपोलिटन या सब देशों के नागरिकों का रुचियुक्त हो जाता है।

पिता तो ऐसे थे......

उन्हींके पुत्र थे राजीव। वह पिता से बढ़कर सब देशों के नागरिक की मनोवृत्ति रखता था। पर वह अपने पिता की तरह सफलता को प्रयास से प्राप्त होनेवाली नहीं समझते थे। बात यह है कि उसे सफलता, गाड़ी, मोटर, बँगला, नौकर, अर्दली, अच्छा खाना पहिनना सब अनायास ही प्राप्त हुये थे। उसने अस्पष्ट तरीके से सुन रक्खा था कि सुविमल बाबू ने बचपन में अपने रिश्तेदारों की दया पर शिक्षा प्राप्त की थी, फिर ट्यूशन कर अपने हाथों से रोटी पकाकर कालेज अटेंड किया था। राजीव ने इन बातों को केवल सुन ही रक्खा था मानो ये किसी कहानी की बातें हों, पर वह इन अनुश्रुतियों का यथार्थ अर्थ क्या है यह कभी समझ नहीं सका था। सच तो यह है कि इस बात के मर्म को जानने की उसने कभी चेष्टा भी नहीं की थी।

उत्तराधिकार में उसने अपने पिता के सभी सद्गुण प्राप्त किये थे, इसके अतिरिक्त राजीव था परम साहसी—बौद्धिक और शारीरिक दोनों दृष्टिकोण से। वह बहुत अच्छा खिलाड़ी था, साथ ही साथ वह अपने कालेज का श्रेष्ठ वक्ता था। वाग्युद्ध हो या बाक्सिङ्ग हो वह दोनों में पारङ्गत था। उर्दू, हिन्दी, बँगला अंग्रेज़ी में वह समान रूप से व्याख्यान दे सकता था।

सुविमल बाबू सब भाषाओं की साहित्यसभा के आलंकारिक रूप से ही प्रधान आदि रहते थे, पर राजीव इन सब साहित्यों का रस समान रूप से ग्रहण कर सकता था। बत्तख का बच्चा जैसे अनायास ही पानी में विचरण कर सकता है, उसी प्रकार राजीव एक साथ रवीन्द्र, इकबाल,

प्रेमचन्द्र और इकबाल का रस ग्रहण कर सकता था। इसके फलस्वरूप उसका मन एक ऊँचे सुर में बँध गया था—जहाँ संकीर्ण देशभक्ति और साम्प्रदायिकता के लिये जगह नहीं छूटी थी। वह बेचारा यह समझ ही नहीं पाता था कि लोगों ने अपनी इच्छा से अपनों को क्यों और कैसे छोटे-छोटे कटघरों के दायरे में संकीर्ण लेबिल लगाकर बन्द कर रक्खा है जिसके कारण उनमें सब तरह की हवा तथा रोशनी का प्रवेश नहीं हो पाता।

राजीव के आदर्शवाद ने अभी तक दूकान के फुटबाल की तरह अनुकूल और प्रतिकूल वायु की चरण ताड़ना के बावजूद जीवन के इस क्षेत्र में इधर-उधर विक्षिप्त होते हुए भी अव्याहत रहकर अपना कुल परिचय नहीं दिया था। अभी तक उसका आदर्शवाद बिलकुल नया था, उस पर किसी प्रकार का कोई दाग नहीं लगा था। इसी को लेकर राजीव ने जगत में प्रवेश किया।

जगत का अर्थ क्या है यह बताया जा रहा है।

अपने मित्रों में राजीव फ़ीथिंकर मशहूर था। प्रत्येक विषय में उसका एक निजी मत था। प्रत्येक विषय में वह आक्रमणात्मक तरीके से अपने मत को व्यक्त करने में अभ्यस्त था। फिर भी जब उसने आज एकाएक अपने मित्रों में यह घोषणा की कि वह एक मुसलमानी से शादी करने वाला है, तो उसके मित्रों में—उन मित्रों में जो उसकी खास ख्यालियों से सुपरिचित थे—एक सनसनी पैदा हो गई। उसके हिन्दुस्तानी मित्र और प्रशंसक रमेश ने उत्तेजित होकर पूछा—यह कैसी बात है?

राजीव ने विरुद्ध समालोचना के लिये तैयार होकर ही यह बात कही थी, कहा—कैसी बात? मेरा केवल इतना ही कहना है कि यदि मैं शादी करूँ तो मुसलमानी से ही करूँगा।

सहपाठी अमित ने कहा—तर्क के लिये मैंने मान लिया कि तुम

मुसलमानी से शादी करना चाहते हो, पर मुँह से कहने से ही कहीं तुम्हें मुसलमानी नहीं मिली जाती है। मान लिया कि मुसलमानी के साथ शादी करने में तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है, पर तुम्हें लड़की कौन दिये देता है ?

इस प्रश्न से राजीव की दृष्टि में एक व्यथा का पुट दृष्टिगोचर हुआ। उसने तो इस चीज़ को इतनी गहराई के साथ नहीं सोचा था। उसकी भौंहों पर बल आ गये, पर अगले ही क्षण उसके चेहरे पर तरुण-सुलभ लापरवाही की भावना खेल गई। वह कुछ कहने ही जा रहा था, पर उसके मुँह से बात छीनकर इस दल के सबसे छोटी उमर के रणधीर उर्फ राना ने ताली बजाते हुए कहा—बहुत मौज रहेगी। *राजीव भैया लुंगी लगाकर नमाज पढ़ेंगे, और भाभी जी सबेरे उठकर सुरताल के साथ पंजसूरा पढ़ेंगी। ला-इलाहा-इल्लल्ला मुहम्मद रसुलल्लाह।*

राना उत्साह के मारे राजीव के और पास चला आया। सभी उसकी बातों को सुनकर हहराकर हँस पड़े, यहाँ तक कि स्वयं राजीव भी। केवल रमेश सबके साथ दिल खोलकर नहीं हँस सका। वह सच-मुच राजीव से प्रेम रखता था। अत्यंत बचपन से दोनों की मित्रता थी। एक मुहल्ले में ही दोनों पले थे। फिर इसके बाद एक ही स्कूल तथा बाद को एक ही कालेज में एक क्लास में पढ़ते रहे। एक ही-सेक्सन में। बी० ए० पास करने के बाद रमेश ने पढ़ना छोड़कर अपने पिता की कोठी में काम देखना शुरू किया, पर इतना होते हुए भी राजीव के कमरे में जो अड्डा शाम को जमा करता था, उसमें वह अब भी नियमित रूप से आता था।

वह कुछ दिनों से यह महसूस कर रहा था कि राजीव जैसे उससे कुछ हटता चला जा रहा था। कहीं पर जैसे राजीव और उसके बीच में खाई का सूत्रपात हुआ था। वह इस बात को बहुत समझने की

चेष्टा करता था कि इस प्रकार जिस व्यवधान की सृष्टि हो रही है, उसके स्वरूप को समझे, पर किसी भी प्रकार वह इस मामले को कूत नहीं पा रहा था। उसके बाद उसने सोचा कि अब उसने कालेज छोड़ दिया, दोनों का जीवन जो बहुत वर्षों तक एक ही धारा में प्रवाहित हो रहा था, अब दो विभिन्न धाराओं में प्रवाहित हो रहा है, तभी शायद यह विलगाव है।

पहले-पहल उसे इससे बड़ी चिन्ता रहती थी, पर धीरे-धीरे सब सहन होने लगा। समय ने लाकर उसके दुःख पर अपना प्रलेप लगा दिया, फिर भी मन ही मन उसे तकलीफ अवश्य थी। इन दिनों राजीव कुछ उन्मन रहता था। और कभी-कभी तो वह सन्ध्याकालीन मजलिस से भी गायब रहने लगा था।

रमेश ने दो-एक बार राजीव से पूछा भी वह इन दिनों इतना उदास क्यों रहता है, उसकी चिन्ताओं का कारण क्या है, पर राजीव साफ-साफ कुछ नहीं कहता था। वह पहले की भाँति रमेश के एक हाथ को अपने हाथ में लेकर रास्ते में घूमने निकल पड़ता था। फिर जाकर किसी रेस्टोरेंट में रुक जाता था। इससे रमेश को कुछ ढाढ़स बँधता था। वह सोचता था चलो कोई बात नहीं, पर अगले ही क्षण जब वह राजीव के किंचित विषाद भरे चेहरे की ओर ताकता था, तो उसका अन्तर कह उठता था कि अवश्य ही उसके मित्र के विशाल वक्षस्थल के अन्दर कोई ऐसी बात गुप्त और छिपी हुई है जिसका परिचय उसे प्राप्त नहीं है तथा जिसका उसे पता नहीं।

इसी प्रकार सन्देह के झूले में झूलते हुए उसके दिन कट रहे थे। ऐसे समय में राजीव ने आज यह घोषणा कर दी—हाँ, यह युद्ध-घोषणा के अतिरिक्त क्या है कि वह एक मुसलमानी से शादी करने जा रहा है।

रमेश जैसे इतने दिनों से इसी प्रकार की एक घोषणा की प्रतीक्षा

कर रहा था। इस बात को सुनते ही उसकी आत्मा पुकार उठी—यूरेका, मैंने रहस्य को पा लिया। इसीलिये जब राना की बातों से रहस्य पर पर्दा डालने का उपक्रम हुआ, तो उसे खुशी नहीं हुई। हँसी का दौर खतम होते ही उसने कुछ कड़ुवेपन के साथ राजीव से कहा—राजीव तुम अब कोई नन्हे से बच्चे नहीं हो—बात शायद उसके अपने कानों में कुछ अधिक पृष्ठपोषक जनोचित ज्ञात हुई, इसलिये उसने खासकर अपनी बात के रुख को कुछ पलटते हुए कहा—हममें से कोई भी अब दुधमुँहे बच्चे नहीं, तुम यहाँ के छात्रों के एक अच्छे खासे नेता हो, मैं भी दो दिन बाद अमोलकचन्द रमेशचन्द की कोठी का मालिक होने जा रहा हूँ, हजारों रुपये हमारी उँगलियों के बीच से जायेंगे और आयेंगे, इसलिये किसी बात पर कोई राय देते समय हमें जरा सोच-साचकर मुँह खोलना चाहिये। तुमने चट से कह तो दिया कि यदि शादी करोगे तो मुसलमानी से करोगे, पर तुमने क्या यह सोच देखा कि इसकी सामाजिक-धार्मिक तथा अन्यान्य क्या सम्भावनायें और परिणाम हैं। तुम जानते हो कि सबसे पहले तो तुम्हारे पिता जी और तुम्हारी माता जी इस विवाह का विरोध करेंगे।

बारूद के ढेर में जैसे हथौड़ी की चोट पड़ी। राजीव का चेहरा एकाएक तमतमा उठा, पर अगले क्षण वह सम्हल गया। अत्यन्त धीर और उदात्त स्वर में कहा—रमेश, मैंने तो ऐसा कभी भी नहीं कहा कि मैं हमेशा के लिये पिता और माता के पक्षपुट के आश्रय में ही रहूँगा।—फिर ज़रा रुककर उसने कहा—मैं इतना अहमक नहीं हूँ कि अपने एक ख्याल को घर वालों पर खामोखाह लादूँ। यदि वे मेरे विचार को पसन्द करें तो वाह वाह है, पर यदि दुर्भाग्य से वे प्रस्ताव का समर्थन न कर सकें तो मुझे अपना रास्ता खुद ढूँढ़ लेना पड़ेगा। उनको छोड़कर किसी मार्ग को अपनाने में निदारुण दुख होगा, केवल मानसिक दुख ही नहीं, अनेक तरह के दूसरे दुख भी प्राप्त होंगे, पर इसमें हम भय का या ठिठककर सोचने का कोई कारण

नहीं पाते,—कहकर वह जँगले के अंदर से दूर क्षितिज की ओर अपनी प्रज्वलित दृष्टि से देखने लगा, आकाश के उस स्थान पर वह देख रहा था जहाँ धीरे-धीरे सन्ध्या अपनी धूप छाँह रंग की एक साड़ी पहनकर उतर आ रही थी। वहाँ ताक कर मानो वह जानने तथा पढ़ने की चेष्टा कर रहा था कि उसके भाग्य में अर्थात् उसके भविष्य में क्या है।

अभी तक रमेश के अतिरिक्त किसी ने राजीव की बातों को गम्भीरता से नहीं लिया था, पर इस वक्तव्य के बाद किसी के लिये भी उसकी बातों को एक क्षणिक ख्याल मात्र समझ कर हलकेपन के साथ टाल देना सम्भव नहीं था। ज्ञात हो गया कि यह केवल राजीव के मानस गगन में एक पतला टुकड़ा मेघमात्र नहीं था। ये बातें केवल मानो विद्युतस्फुरण के रूप में थीं। मालूम होता है जबर्दस्त बादल छाये हुए थे। कौन जाने कहाँ से वज्रपात होगा। सभी के चेहरे पर बल आ गये, सभी के मुँखमंडल चिन्ताभाराक्रान्त हो गये। सभी कुछ देर तक चुप्पी साधे रहे।

इस नीरवता को भंग करते हुए अमित ने कहा—तो मालूम होता है मामला कुछ सीरीयस है—अमित के स्वर में जैसे कुछ भय था, जैसे इस विषय के सम्बन्ध में इतनी पूछताछ करनी चाहिये या नहीं, इस सम्बन्ध में और भी प्रश्न कर कहीं गलती तो नहीं की जा रही है, इस प्रश्न को कर कोई भूल तो नहीं की जा रही है, कहाँ तक ऐसा पूछना भद्रता-संगत है, इस विषय में उसे सन्देह था।

—हाँ, सीरीयस है—राजीव ने ऐसे उत्तर दिया मानों वह अपने को ही सम्बोधन कर कुछ कह रहा था।

अमित को आगे प्रश्न करने की हिम्मत नहीं हुई।

रमेश ने जैसे निराशा के साहस से कमर बाँधकर पूछा—मालूम होता है मामला बहुत दूर तक आगे बढ़ चुका है—कहकर वह बड़ी

बड़ी आँखों को खोलकर अजीब तरीके से ताकने लगा। वह यह सुनने की आशा कर रहा था कि मामला कुछ भी नहीं है।

पर राजीव ने उसकी इस प्रकार की आशा को चूर्ण-विचूर्ण करते हुए कह दिया—हाँ, मामला दूर तक जा चुका है।

—बहुत दूर ?

—हाँ, बहुत दूर—राजीव ने उसी प्रकार स्वाभाविक स्वर में कहा।

प्रत्येक उत्तर के साथ-साथ रमेश का कौतूहल दुगना होता जा रहा था। उसने मन ही मन कहा कि देखा जाय कि मामला कहाँ तक आगे बढ़ा है, प्रकाश्य ने पूछा—इतना दूर जा चुका है कि लौटना सम्भव नहीं है।

—हाँ, इतना दूर जा चुका है कि लौटना सम्भव नहीं है।

रमेश ने कहा—It is never too late.

—इस सम्बन्ध में यह बात लागू नहीं होती, विशेषकर जहाँ पर लौटना माने शर्त तोड़ना है—कहकर उसने अपने चेहरे को अधिक रूखा बना लिया, फिर बोला—जहाँ पर लौटने का अर्थ विश्वासघात है, वहाँ लौटना हमेशा ही too late रहेगा। कम से कम ऐसा करना मेरे वश की बात नहीं है। फिर मैं जो लौटूँगा, वह किस उदात्त सिद्धान्त के लिये होगा। मैं धर्म नहीं मानता, धर्म के नाम से घृणित दलबन्दियाँ प्रचलित हैं, मैं उन्हें भी नहीं मानता, फिर मैं उनकी दलबन्दियों के नियमों को मानकर क्यों चलूँ ? अवश्य मैं यह भी समझता हूँ कि धर्म के सम्बन्ध में इन बातों को बक जाना जितना आसान है, इसके अक्टोपस-जाल से बचना उतना आसान नहीं है, पर—कहकर वह कुछ रुका जैसे कुछ उधेड़बुन में पड़ा हो, फिर एक लम्बी साँस खींचकर अपने विशाल वक्ष को ताजे आक्सीजन से भरते हुए उसने कहा—पर अब लौटना सम्भव नहीं है, अब लौटना पाप है, और पाप से भी यदि कुछ खराब हो तो वह है।

सब समझ गये कि मामला उम्मीद से कहीं अधिक गहरा है, पर इसकी पृष्ठ-भूमि में घटित होने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में किसी को कुछ भी मालूम न होने के कारण मामला और भी सङ्गीन तथा रहस्यमय ज्ञात होने लगा, मानो यह कोई प्रेतों से सम्बन्धित घटना हो।

इस समय राजीव के जो तीन मित्र उपस्थित थे, उन सबके मन ही मन यह अहंकार था, इसे अहंकार नहीं तो क्या कहेंगे कि वे राजीव के जीवन के गुप्ततम कमरों के साथ सम्पूर्ण रूप से परिचित हैं। पर यह क्या ? वे सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगे। यह क्या हुआ ? उनके हृदय में जैसे एक अपमान बोध एक टीस की तरह उठने लगा, पर इस अपमान बोध से कहीं अधिक प्रबलतर रूप से उनके मन में कौतूहल जग उठा ? यह लड़की कौन है ? उन लोगों ने तो कभी भी राजीव को किसी मुसलमानी के साथ घूमते-फिरते नहीं देखा। अकस्मात् यह मुसलमानी कहाँ से टपक पड़ी ? हिन्दू और मुसलमानों के जीवन इतनी अलग-अलग धाराओं में प्रवाहित होते हैं तथा उनमें मिलना-जुलना इतना कम रहता है कि हिन्दू तथा मुसलमान युवक-युवतियों में प्रेम सम्बन्ध का स्थापित होना सम्भव नहीं होता। कम से कम राजीव को ऐसी कोई सुविधा है यह तो ज्ञात नहीं होता। एक ही साथ तीनों मित्रों के दिमाग में यह सन्देह उठा कि कहीं राजीव के कुछ खलल तो नहीं पैदा हो गया""""। इन दिनों राजीव बहुत अधिक इकबाल भक्त हो चला है। पर यह तो सब पुरानी बातें हैं। हमेशा से राजीव जो स्वयं नहीं है, उसीके प्रति अधिक मोहग्रस्त है। वह बङ्गाली है, पर वह हिन्दुस्तानी प्रतिभा का अनन्य समर्थक है। उसका कहना है कि साहित्य और राजनीति में बङ्गालियों के अग्रणीत्व के युग का अन्त हो चुका है। आज बङ्गाल जो सोचता है, कल सारा भारत उसी बात को सोचता है, राजीव का कहना है कि गोखले की यह बात भले ही किसी युग में सही उतरती रही हो, पर यह बात न तो आज के बङ्गाल पर लागू है और न आज के भारत पर लागू हो

सकती है। राजीव का कहना है कि अब सभी प्रदेश आधुनिक युग की प्रधान धारा के स्रोत में आ चुके हैं, इसलिये अब बङ्गाल की विशेष प्रतिभा के लिये कोई स्थान नहीं। इसी प्रकार राजीव हिन्दू है कम से कम एक नैष्ठिक हिन्दू परिवार में उसका जन्म कर्म हुआ है, पर वह हिन्दू धर्म और संस्कृति का कटु समालोचक है। यहाँ तक कि वह अपने को हिन्दू करके मानना ही नहीं चाहता। राजीव को बचपन से अँग्रेजी शिक्षा मिली है, पर वह इन सब शिक्षालयों को गुलाम खाना बताता है। राजीव की मातृभाषा बङ्गला है, पर वह कहता है कि हिन्दुस्तानी साहित्य की सम्भावनायें बङ्गला से कहीं अधिक हैं। वह हिन्दी तथा उर्दू साहित्य की ताजी से ताजी प्रवृत्ति तथा रुझानों से परिचय रखता है। अवश्य वह रवीन्द्र का अनन्य प्रशंसक है, यह दूसरी बात है। पर उसकी रवीन्द्र प्रशंसा में भी एक विशेषता है। वह कहता है कि रवीन्द्र बङ्गाल के नहीं बल्कि अखिल भारतवर्ष के हैं। इसके लिये वह यह तर्क देता है कि सारे भारतवर्ष की संस्कृति ने मिलकर रवीन्द्र नाथ का निर्माण किया है। उसका कहना है कि रवीन्द्र ने उपनिषद, बुद्ध, बाल्मीकि, कबीर, दादू, तुलसी आदि से अनुप्रेरणा ली है, और यह एक आकस्मिक बात मात्र है कि इस अखिल भारतीय प्रतिभा ने अपने साहित्यिक अवदान के वाहन के रूप में बङ्गला भाषा को अपनाया था।

यह राजीव का परिचय है। खाम-ख्याली, अत्यन्त अद्भुत, ऐसी बात कहता है जिससे बहुत आश्चर्य होता है, पर रोज के जीवन में सबके साथ मिल मिलाकर चलने में समर्थ है। इसके पहले भी लोग उसके अजीब विचारों से परिचित थे, पर आज उसने जो बात कही उसने सबको मात कर दिया। सभी आशा कर रहे थे कि राजीव और कुछ कहकर अपनी परिस्थिति का कुछ स्पष्टीकरण करेगा, पर राजीव ने कुछ नहीं कहा।

इस बीच में नौकर चाय दे गया। सब चाय पीने लगे। सब

अपनी-अपनी चाय तैयारकर एक प्याला, दो प्याले, तीन प्याले तक पी गये, पर किसी ने कुछ नहीं कहा। दूसरे अवसरों पर इसी चाय की मजलिस में चाय के साथ-साथ गप्पें लड़ाई जाती थीं, या तर्क-वितर्क होता था। राजीव चाय की मेज़ का नादिरशाह था, पर कभी-कभी रमेश उसके इस पद को छीन लेता था। दूसरे भी बोलते थे, पर आज एक के बाद एक इतने प्यालों का ध्वंस हो गया, पर न तो कहकहा उठा और न कोई तर्क ही हुआ। इस मजलिस के ऊपर काले बादल की छाया पड़ गई थी। सभी के हृदय एक अज्ञात आशंका से धड़क रहे थे।

आखिर चाय पीना भी खतम हो गया। अब यह चुप्पी असहनीय हो गई। तब राजीव ने इस चुप्पी को भंग करते हुए कहा—तो आज हम उठें, कुछ बातें अनिश्चित हैं, इसलिये और कुछ अधिक न कहूँगा—इसके बाद कुछ रुककर उसने कहा—यथा समय कहूँगा, कहूँगा क्यों न—सान्त्वना देने के स्वर में इन बातों को कहकर वह उठ खड़ा हुआ। कैसे उसके साथ एक मुस्लिम युवती का परिचय हुआ था, कैसे वह एक अखण्ड दीप्त बुद्धि का रूप धरकर उसके सामने आयी थी, कैसे वह एक सूर की तरह राजीव के सारे गगन में व्याप गई थी, इस कहानी को उसने किसी को नहीं बताया, बताने की प्रवृत्ति ही नहीं हुई।

उसके उठते ही सब लोग उठ खड़े हुए। राजीव ने अकस्मात् अद्भुत रूप से भावाविष्ट होकर अपना एक हाथ रमेश के कंधे पर और दूसरा रणधीर के कंधे पर रखकर धीरे से दबा दिया, फिर रुँधे हुए कंठ से कहा—मैं जो भी करूँ स्मरण रखना कि मेरे द्वारा किसी की गौरव हानि नहीं होगी।

ये बातें कुछ अजीब मालूम हुईं। अकस्मात् ऐसी बात क्यों? ठीक इसी समय सबने राजीव के मुँह की ओर देखा, यह क्या, उसकी आँखों

में पानी-सा कुछ चमक रहा था। नहीं अभी आँसू नहीं थे, पर उसकी दो बड़ी-बड़ी आँखें वर्षणोन्मुख तो थीं हीं। ऐसा क्यों ? रहस्य और भी जटिल हो गया।

दुर्भेद्य घूँघट की आड़ में आत्मगोपनकर राजीव ने और कुछ कहने-सुनने का मौक़ा न देकर तो चलता हूँ कहकर ज़रा मृदु हँसने की चेष्टाकर बैठक से जल्दी में निकल गया। तीन मित्र भूताविष्ट की तरह अभिभूत होकर मकान से निकल गये। बाहर उस समय प्रत्येक दूकान में रोशनी हो चुकी थी। यह चिरपरिचित शहर पर इसकी सड़कें तथा रोशनियाँ आज इन लोगों की आँखों में जैसे कुछ नयी ज्ञात हुई। मानो वे एक नई दुनिया को खोजने के लिये निकले थे।......

२

जोहरा के पिता डाक्टर नोशेर मियाँ का आदि निवास बंगाल का जसोर जिला था। सात वर्ष की उमर तक वे जसोर ही में थे, पर इसके बाद उनके पिता व्यवसाय के कारण पछाँह में आये, तब से वे वहीं पर रह गये। नौसेर मियाँ के पिता व्यापारी थे, व्यापार पछांह में जम गया, इसलिये यहीं पर मकान आदि बनवाकर वे पछाँही होकर बस गये। वे स्वयं पछाँह में रहने पर भी उनके पुत्र नोशेर की शिक्षा बंगाल में ही हुई। उनके मन में यह आकांक्षा थी कि पुत्र की शिक्षा-दीक्षा अलीगढ़ में ही हो, पर पुत्र अपनी दादी का दुलारा था। दादी किसी भी प्रकार पोते को दूर भेजने के लिए तैयार नहीं हुई। इसलिये नोशेर के पिता को अपनी इच्छा के बावजूद चुप कर जाना पड़ा।

नोशेर मियाँ की शिक्षा पहले जसोर में, और फिर कलकत्ता मेडिकल-कालेज में हुई! यहीं पर उसका परिचय सुविमल बाबू के साथ हुआ था। दोनों प्रेक्टीकल वर्क में बहुत दक्ष थे, इसके अतिरिक्त उनके स्वभावों में बहुत गहरी एकता थी। दोनों स्वतंत्र विचार के थे। दिन-रात मुर्दा लेकर चीरते-फाड़ते रहते थे, इसलिये उनके मन आकाश की तरह निस्पृह हो गये थे। दूसरे लोग जिन साम्प्रदायिक चिन्ताओं के संकीर्ण दायरे में मज़े में विचरण करते थे, वे उसमें हाँफ जाते थे।

पाकिस्तान हो या न हो प्रत्येक स्कूल कालेज में पाकिस्तान बहुत स्पष्ट है। हिन्दू लड़के हिन्दू लड़कों से मिलते हैं, मुसलमान लड़के मुसलमान लड़कों के साथ मिलते हैं। जैसे दो पृथक जातियाँ हैं। अवश्य इसके लिये अधिकारीवर्ग—कालेज और बोर्डिंग के अधिकारी।

वर्ग ज़िम्मेदार हैं। यदि दोनों सम्प्रदायों के लिये कालेज एक भी हुआ, तो बोर्डिंग अलग-अलग, मेस अलग-अलग, खाना-पीना, आमोद-प्रमोद अलग-अलग। फिर भी मिलने-जुलने की सुविधा कुछ न कुछ रहती ही है। पढ़ना एक साथ, हाकी फुटबाल, क्रीकेट एक साथ, चाहने पर भी इतने ही योगसूत्र के जरिये से हिन्दू-मुसलमान छात्रों में घनिष्ठता हो सकती है, पर ऐसा कितने क्षेत्रों में होती है? फिर हिन्दू-मुसलमान हम-उमर छात्रों की घनिष्ठता को लोग विशेष अच्छी निगाह से नहीं देखते। यदि अपवाद रूप से ऐसी एक आध घनिष्ठता उत्पन्न भी हो जाय तो फौरन चारो तरफ़ से अर्थपूर्ण गला खखारना, तथा ताने हिनहिनाना, और न मालूम क्या-क्या शुरू हो जाता है। परिणाम सभी क्षेत्रों में एक होता है, पर तमाम आँधियों तथा तूफानों की प्रतिकूलता और बाधा के बावजूद सुविमल बाबू और नौशेर मियाँ की दोस्ती दिन बदिन और भी गाढ़ी होती गई।

इस प्रकार से दोनों डाक्टर हो गये।

इसके बाद जीवन के स्रोत ने दोनों को भिन्न-भिन्न मार्ग में परिचालित किया। सुविमल बाबू ने सरकारी नौकरी ले ली। यदि नौशेर मियाँ सरकारी नौकरी चाहते, तो वे और भी आसानी से चले जाते। बात यह है मुसलमानों में हिन्दुओं की तुलना में उच्चशिक्षा कम है, नौकरियों में आनुपातिक प्रतिनिधित्व के कारण वे आसानी से नौकरी पा सकते हैं, पर वे प्राइवेट प्रैक्टिस की तरफ़ गये।

इस बीच में दादी मर गयी थी। उधर माँ भी बीमार ही रहती थी। वे चाहती थीं कि नौशेर पास बना रहे। नौशेर क्या कह सकता था? इसलिये उसे पछाँह में आकर पिता के व्यापार के स्थान में ही एक डिसपेन्सरी खोलकर डाक्टरी शुरू करनी पड़ी। थोड़े ही दिन में डाक्टरी अच्छी जम गई।

एक दिन अकस्मात् रास्ते में नौशेर मियाँ और सुविमल राय में

भेंट हो गई। इसके बाद जो होता है वह हुआ, अर्थात् बीच-बीच में वे एक दूसरे के घर जाने-आने लगे। पर दोनों काम काजी आदमी थे। एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं रहती थी, इसलिये जाना-आना बहुत कम हो गया। कम होते-होते क़रीब-क़रीब जाना-आना रहा ही नहीं। जीवन द्रुत स्रोत में किसी चीज़ को—विशेषकर जिस चीज़ के साथ कोई दैनिक योग सूत्र या आदान-प्रदान नहीं है, पकड़े रहना सम्भव नहीं है। पर सुविमल बाबू और नौशेर मियाँ का परिचय उनकी सन्तानों के परिचय के जरिये से जीवित रहा।

मुसलमान होने पर भी नौशेर मियाँ के घर में पर्दा-प्रथा नहीं थी। स्वयं नौशेर मियाँ कतई कट्टर नहीं थे। उन्होंने कभी भी दाढ़ी नहीं रक्खी। वे हर जुम्मे अर्थात् जुम्मे के जोहर की नमाज़ को जमायत में पढ़ते थे। ईद के दिन वे नमाज़ पढ़ने के लिये ईदगाह में जाते थे, पर वह तो एक महोत्सव-सा था। ईद के दिन ईदगाह में नमाज़ पढ़ने के लिये जाना तो कोई कष्टकर कर्त्तव्य नहीं ज्ञात होता था, बल्कि वह तो एक तफ़रीह ज्ञात होती थी। नमाज़ पढ़कर लौटते रास्ते में ईद का मेला मिलता था। उसमें यह खरीदो वह खरीदो, इस अन्धे को इकन्नी दो, उस लूले को एक पैसा दो, लड़का शौकत को तरह-तरह की चीज़ें खरीद देते, लड़की जोहरा तथा मकान के सारे लोगों के लिये तरह-तरह की सौगात खरीदने में नौशेर मियाँ में किसी भी साल उत्साह का अभाव नहीं देखा गया। जब तक पिदर बुजुर्गवार जीवित थे, तब तक शौकत उन्हीं के साथ ईदगाह में जाया करता था। नौशेर अलग गाड़ी में जाते थे और लौटते थे, पर पिता की मृत्यु के बाद से शौकत नौशेर के साथ ही जाता था।

ईदगाह के विराट मैदान में हर साल शहर के सब मुसलमानों का सम्मेलन होता था, पर इसी के साथ-साथ इस मौक़े का फ़ायदा उठाकर शहर के सब बंगाली मुसलमान भी एक दूसरे से मिलजुल लेते थे। मुसलमान होने पर भी ये पछाँहवासी बंगाली मुसलमान पछाँह के मुसल-

मानों के साथ घुलमिल कर एक नहीं हो सके थे। अव्वल तो अधिकांश बंगाली मुसलमान इस प्रकार पछैयों के साथ एक नहीं होना चाहते थे। वे घरों में बँगला बोलते थे, केवल यही नहीं यदि बंगाली मुसलमान रास्ते में बंगाली मुसलमान के साथ मिलता था, तो वे बँगला में बात करते थे। पछाँह के मुसलमान बंगाली मुसलमानों के इस प्रकार आपस में बँगला बोलने के रिवाज को बहुत बुरी निगाह से देखते थे, पर इससे बंगाली मुसलमान नहीं मानते थे। जरा भी मौका मिलते ही वे बँगला में बातचीत शुरू कर देते थे। ओह, बँगला में बातचीत कर उन्हें जो तृप्ति होती थी, वह उर्दू में बातचीत से कहाँ हो सकती थी ?

यह तो अधिकांश बंगाली मुसलमानो की बात हुई, पर पछाँह में बंगाली मुसलमानों का एक ऐसा जत्था भी था जो उर्दू पढ़ते थे, उर्दू बोलते थे, वे यह भूल जाने की चेष्टा करते थे कि उनकी मातृभाषा बँगला है, पर वे इस कारण पछाँही मुसलमानों के विशेष श्रद्धा के पात्र होते थे, ऐसी बात नहीं। पर इसका दूसरा ही किस्सा है। बंगाली मुसलमान उर्दू बोलकर जितना ही पछैया हो जाने की चेष्टा करते थे, उतना ही वे उर्दू वालों के निकट हास्यास्पद हो जाते थे। पछैये बंगाली मुसलमानों के उर्दू उच्चारण को सुनकर हँसते थे। बंगाली मुसलमान इधर का लिबास पहनकर तथा उर्दू बोलकर जितना ही अपने स्व को भुला देने की चेष्टा करते थे, उतना ही उनकी उर्दू उन्हें पकड़वा देती थी। उनकी उर्दू सुनकर पछाँह के मुसलमान जरूर कुछ न कुछ हँस पड़ते थे। बंगाली मुसलमान किसी भी प्रकार उर्दू में मुजक्कर मुअन्नस (पुलिंग स्त्रीलिंग) को समझ नहीं पाते थे, यहाँ तक कि दस वर्ष तक पछाँह में रहकर उर्दू अरबी फारसी पढ़ने पर भी वे इसके रहस्यों से अपरिचित रह जाते थे। इसीलिये पछाँह के मुसलमान उन पर हँसते थे। बंगाली मुसलमान इसका बदला इस प्रकार लेते थे कि वे जब इकट्ठा होते थे तो सब लोग यह कहकर हँसते-हँसते लोटपोट हो जाते

थे कि उर्दू में क़लम, दवात, पेन्सिल, चप्पल, कुर्सी, मेज़ तक के लिंग होते हैं ।

नौशेर मियाँ का एक लड़का तथा एक लड़की थी । दोनों दो तरह के थे । शौकत ने लड़कपन से उर्दू में ही शिक्षा पायी थी, अच्छी उर्दू बोलता था, कट्टर मुसलमान था । अवश्य घर में उसे भी बँगला बोलना पड़ता था । कई बार उसने जोश में आकर यह प्रण किया कि वह घर मे भी उर्दू के अतिरिक्त कुछ न बोलेगा, पर प्रत्येक बार जब वह ऐसा प्रणकर घर में लौटता था तो उसके उत्साह में जैसे कुछ मारा पड़ जाता था । जोहरा के सामने तो उसके मुँह से उर्दू में बात ही नहीं निकलती थी । नौशेर मियाँ के साथ तो उर्दू में बोलना ही अकल्पनीय था, इसके अतिरिक्त वे उर्दू अच्छी तरह बोल भी नहीं पाते थे ।

जोहरा ठीक इसके विपरीत थी । वह बँगला पढ़ती थी, और बँगला से प्रेम रखती थी । बीच-बीच में जब शहर में कोई बङ्गला खेल आता था, तो वह अवश्य ही उसे देखने जाती थी । कई बार नौशेर भी उसके साथ बङ्गला खेल देखने जाते थे । जोहरा शहर के कई बङ्गाली परिवार में विशेषकर सुबिमल बाबू की स्त्री के साथ मिलने-जुलने जाया करती थी । वह कई बङ्गला मासिक पत्रिकाओं की ग्राहिका थी, नियमित रूप से एक बङ्गला दैनिक भी उसके पास आती थी । अवश्य वह उर्दू भी पढ़ती थी, पर बङ्गला की तुलना में उर्दू के प्रति उसकी ममता कम थी । इसका कारण कोई पक्षपात नहीं, बल्कि बङ्गला साहित्य का उत्कर्ष ही इसका कारण था ।

जोहरा और राजीव में सहजही में मित्रता की सृष्टि हुई । जोहरा पहले कुछ हिन्दू-विद्वेषी थी । वह समझती थी कि सभी हिन्दू एक ही तरह के होते हैं, पर जब वह राय परिवार विशेषकर राजीव के संस्पर्श में आयी, तो उसकी यह धारणा रातोरात दूर हो गई । उसने अवाक

होकर देखा कि हिन्दुओं में भी ऐसे लोग होते हैं जिनमें किसी प्रकार का तास्सुब नहीं है, जिनका मन उस आकाश की तरह उन्मुक्त तथा अवारित है। बंकिमचन्द्र, रमेशचन्द्र, द्विजेन्द्रलाल आदि को पढ़कर उसने यह धारणा बना ली थी कि प्रत्येक बङ्गाली हिन्दू-मुस्लिम विद्वेषी होता है। बङ्गला भाषा के साथ वह नाड़ी का सम्बन्ध अनुभव करती थी, बङ्गला गाना उसके हृदय को जितना स्पर्श करता था, इतना कोई भी बात नहीं करती थी: फिर भी जब भी वह बङ्गला के कथित ऐतिहासिक उपन्यास तथा नाटक पढ़ती थी, तभी उसका मन सन्देह से दोलायमान हो जाता था। और ये ही सब लेखक भारत की राष्ट्रीयता के ऋत्विक और पुरोधा हैं। उसका सन्देह बढ़ता ही जाता था। स्पष्ट था कि राष्ट्रीयता की इस धारणा में दस करोड़ मुसलमानों का कोई स्थान नहीं था।

अवश्य जोहरा रवीन्द्र साहित्य की भक्त थी। रवीन्द्र भी हिन्दू थे, समय-समय पर उनका हिन्दुत्व जोहरा के निकट अत्यन्त घृणित रूप से स्पष्ट हो जाता था—यद्यपि उसके ऊपर विश्वमानवता का अच्छा खासा मोटा-सा प्रलेप रहता था। फिर भी रवीन्द्र नाथ में साम्प्रदायिक उपादान बहुत कम था, कम से कम उनकी कला की उत्कृष्टता से उसकी क्षतिपूर्ति हो जाती है इसमें सन्देह नहीं।

जोहरा का मन ऐसे उपादानों से बना हुआ था कि वह किसी भी करवट बैठ सकती थी। ज़रा इधर जाते ही वह कट्टर साम्प्रदायिकतावादी हो सकती थी, फिर ज़रा उधर झुकते ही वह उदार राष्ट्रीयतावादी हो सकती थी।

ऐसे ही समय में जब उसका मन पलड़े में था, उसके साथ राजीव का परिचय हुआ। पहले-पहल उसने राजीव को एक रवीन्द्र तथा इकबाल साहित्य के मर्मज्ञ हिन्दू युवक के रूप में ही लिया, उस समय उसका मन राजीव के प्रति विशेष खुला हुआ नहीं था। वह सोचती

थी कि किसी न किसी मौके पर राजीव के चित्त की शीशी की डाट खुल जायगी, और उसके अन्दर से सड़े प्याज की तरह हिन्दूपन की बू निकलकर सारी आबोहवा को बिषाक्त कर देगी। पर बात इसके बिलकुल विपरीत हुई। जोहरा जितना ही बँगला साहित्य चर्चा, बँगला सिनेमा, उर्दू कविता की समालोचना तथा दूसरे कार्यों के उपलक्ष्य में राजीव के पास आती गई, उतना ही वह उसकी उदार विचारधारा से मुग्ध होती गई। उसका तरुण मन राजीव की उदार विचारधारा के आह्वान पर और भी जोर से किलकारी दे उठी। धीरे-धीरे वह सद्भाव प्रेम में परिणत हो गया था। यहीं पर हमारी कहानी का सूत्रपात होता है।

३

नौशेर कट्टर मुसलमान रूप में परिचित होने पर भी इतने कट्टर नहीं थे कि वे अपनी पुत्री और राजीव के बीच में घनिष्ठता में बाधा स्वरूप हों। वे इनकी घनिष्ठता में ऐसी कोई भी बात नहीं देखते थे जिसमें आपत्ति की जाय। इसके अतिरिक्त काम इतने थे कि इन सब बातों के सोचने का अवसर नहीं था। उनका विश्वास था कि इन दोनों के बीच धर्म की इतनी बड़ी खाई मौजूद है कि एक दायरे के बाहर इनमें घनिष्ठता सम्भव ही नहीं थी। वे यह सोचकर मज़े में निश्चिन्त थे। अपनी कन्या तथा राजीव पर उनकी आस्था अन्तहीन थी।

पर शौकत चीज़ों को इस रूप में नहीं देखता था। वह मन में किसी प्रकार की शंका नहीं रखता था, यह ठीक है, पर वह प्रायः सहजातवृत्ति वश राजीव का इतना अधिक आना-जाना घृणा की दृष्टि से देखता था। कालेज में प्राप्त शिक्षा और सभ्यता के बावजूद वह मन ही मन हिन्दुओं से बहुत नफ़रत करता था। हिन्दू मात्र उसकी आँखों में हेय थे। वह हिन्दुओं में कोई भी सद्गुण नहीं देखता था। जिसे सच्चरित्र कहेंगे वह उस श्रेणी का युवक था। कभी उसने भोजन या पान में असंयम नहीं किया, वह विलासिता के पास भी नहीं फटकता था, इसी कारण उसका कट्टरपन और भी शोचनीय था।

बीच-बीच में वह राजीव और ज़ोहरा के साथ सिनेमा में जाता था, या उनके साथ बैठकर चाय पीता था। बात मुँह से निकली नहीं कि उसकी साम्प्रदायिक प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती थी। उसके मतानुसार फ़िरदौसी दुनिया के सबसे बड़े एपिक कवि थे, भारतीयों में उसके मतानुसार इकबाल सर्वश्रेष्ठ कवि थे। ये मत इतने कुछ अद्भुत नहीं थे। बहुत से लोग इस प्रकार के मतों का पोषण करते हैं, पर शौकत

इन बातों को इस प्रकार से कहता था कि मालूम होता था कि चोट पहुँचाने के लिये ही वह ऐसी बातें कर रहा है। पर वह चोट पहुँचाने के लिये ऐसी बात नहीं करता था। ये बातें उसके विश्वास के अन्तर्मुक्त थीं, इन्हीं को वह चिल्लाकर प्रचार करता था। प्याली में चाय उंडेलते हुए जोहरा इन बातों को सुनकर भौंहों को तान देती थी, पर कोई कुछ कहता नहीं था। ऐसे अवसरों पर आलोचना जल्दी-जल्दी खतम हो जाती थी।

जब इस प्रकार दो-चार बार हुआ तो जोहरा ने राजीव को अकेले में पाकर क्षमा याचना के सुर में कहा—आप कुछ ख्याल न करें मेरे भईया कुछ अक्खड़ टाइप के व्यक्ति हैं......

बीच में ही उसकी बात को काटते हुए राजीव ने कहा—आप इतमीनान रखें, हिन्दुओं में ९९ फी सदी शिक्षित व्यक्ति इसी प्रकार के मत के पोषक हैं, वे ज्ञान में, विज्ञान में, भास्कर्य में हिन्दू प्रतिभा की श्रेष्ठता पाते हैं। ये लोग किसी भी चीज़ को एक सार्वदेशिक विश्व-दृष्टि से नहीं देख पाते। ये प्रत्येक चीज़ को अपने पीलारोगग्रस्त साम्प्र-दायिक चश्मा के जरिये से देखते हैं। और यही लोग मुँह से राष्ट्रीयता की बोली झाड़ते रहते हैं। नहीं, मैं मि० शौकत को किसी भी प्रकार इन लोगों से खराब नहीं समझता। बल्कि सच तो यह है कि वे बहुत शरीफ़ हैं......

इस प्रकार छोटी-छोटी घटनाओं के बीच से इन दोनों की घनि-ष्ठता बढ़ने लगी। न मालूम कब आप से तुम शुरू हो गया। अन्त में एक साथ जीवन बिताने की बात भी उठी। सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ट होने लगा। उन दोनों ने तय कर लिया कि यदि वे शादी करें तो परस्पर के साथ ही करेंगे, नहीं तो नहीं करेंगे, पर उनकी यह इच्छा किस प्रकार कार्य रूप में परिणत होगी, इस सम्बन्ध में वे कुछ निश्चय नहीं कर पा रहे थे। तरह-तरह की जल्पना कल्पना होती थी, किन्तु

कोई भी योजना व्यवहारिक नहीं ज्ञात होती थी। सब कल्पनाओं के अन्त में एक ही योजना रह गई, वह यह कि भाग चला जाय पर इसके लिये साहस नहीं मिल रहा था।

ऐसे समय में ऐसी एक घटना घटित हुई जिसने उनको इस समस्या के समाधान की चिन्ता से मुक्त कर दिया। पर कैसी मुक्ति थी !

सन्ध्या के बाद राजीव आजकल एक बार निश्चय ही जोहरा के यहाँ आता था। राजीव के लिये जोहरा का सारा मन और प्राण उदग्र रहता था। शहर में हिन्दू और मुसलमानों के बीच एक नव आविष्कृत कब्रिस्तान को लेकर झगड़ा मचा हुआ था। हिन्दू कहते थे कि यह उनके देवताओं का स्थान है, और मुसलमान कहते थे कि यह उनके पीरों की जगह है। और मज़े की बात यह है कि इसके पहले न तो इसे कोई देवस्थान ही कहता था और न पीरों की जगह ही कहता था। बहुत से लोग तो यह भी नहीं जानते थे कि शहर के बीच में ऐसी कोई जगह भी है। फिर उसके बीच की कब्र की बात तो बहुत दूर की बात है। एक नया मकान बन रहा था। इसी के लिये नींव गहरी की जा रही थी, एकाएक कुछ कंकाल निकल आये, जो आसपास सुलाये हुए थे। इन कंकालों में कोई भी ऐसी बात नहीं थी जिससे इन्हें हिन्दू या मुसलमान करके शिनाख्त किया जा सके, पर कल्पना जब बे-लगाम दौड़ती है तो उस समय उसे किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं रहती।

जो मकान बनने जा रहा था वह हिन्दू और मुसलमान बस्तियों के बीच में था। इधर हिन्दू बसते थे उधर मुसलमान। मुसलमानों ने कहा—यह कब्रिस्तान है, हिन्दुओं ने कहा यह सन्यासियों की समाधि है। अब यह बहस उठी कि अच्छा देखा जाय कि कंकालों का सिराहना किधर था, पर उस समय तक कंकाल हटा दिये जा चुके थे। हिन्दुओं

ने कहा कंकालों का सिर पूर्व की ओर था, मुसलमानों ने ठीक इसकी उल्टी बात कही, इस प्रकार लठैती के ढंग हो गये। दो दिन पहले तक जिन पड़ोसियों में सद्भाव था, अकस्मात् वे एक दूसरे को देखकर भौंहें तानने लगे। साम्प्रदायिक नेताओं का पौबारह हो गया। उन्होंने अपने विषैले गैस के बकसों को खोल दिया। कांग्रेसवाले भौंचक्के रह गये। इस सम्बन्ध में उनके पास शायद कोई कार्यक्रम नहीं था। पुलिस दूर बैठे तमाशा देखने लगी। वे भला लोगों की नागरिक स्वतंत्रता में हस्तक्षेप क्यों करतीं? इसलिये झगड़ा बढ़ता गया।

नौशेर का मकान भयंकर मुसलमानी मुहल्ले में था। चारों तरफ़ बहुत दूर तक मुसलमान ही मुसलमान थे। १० वर्ष पहले जब यहाँ पर हिन्दू-मुस्लिम दङ्गा हुआ था उस समय इस मुहल्ले में दो-चार सौ घर हिन्दू थे, पर उस दङ्गे में उनमें से कुछ मारे गये और जो बचे वे मुहल्ला छोड़कर भाग गये। जो भाग गये, वे फिर नहीं लौटे। जिन हिन्दुओं की इस मुहल्ले में जायदादें तथा मकान थे, वे अपनी जायदादों को सस्ते दामों पर बेचकर हिन्दू मुहल्लों में जाकर बस गये थे। इस प्रकार यह मुहल्ला सम्पूर्ण रूप से मुसलमानी मुहल्ला हो गया था।

छिटफुट हमले जारी थे, पर कोई ऐसी गम्भीर बात नहीं थी। नगर का कर्मजीवन पहले की तरह तरन्तर वेग से चलाया जा रहा था। एकाध भँवर से क्या आता जाता था?

गजील के कानों में दूर से मेघ गर्जन की तरह दंगे की बात आ पहुँची थी, पर इससे वह चिन्तित नहीं हुआ था। वह अपने को हिन्दुत्व और मुसलमानत्व के ऊपर उस जगह पर समझता था जहाँ वास्तविक मानवता, विश्वप्रेम तथा भ्रातृत्व है, और इसीको वह यथेष्ट समझता था। वह कभी भी यह नहीं सोचता था कि दूसरों की आँखों में उसका आन्तरिक अंश कुछ नहीं है, वे केवल उसके हिन्दू लेबेल वाले बाहरी छिलके को ही देखकर राय क़ायम करते थे।

राजीव पक्का स्वप्नद्रष्टा होने पर भी कुछ वस्तुवादी भी था। वह आज निश्चय कर आया था कि जोहरा के यहाँ से दूसरे दिनों के बनिस्बत जल्दी लौटेगा, पर जोहरा के साथ बातों में कब घड़ी का काँटा ९ के आगे निकल गया था यह उसे मालूम नहीं हुआ था।

गत दो घंटे के अर्से में न मालूम किन-किन विषयों पर आलोचना हो गई। अच्छी बातचीत का लक्षण यह है कि वह कभी एक विषय पर अधिक क्षण तक स्थायी नहीं होती। एक विषय पर स्थिर रहने पर तर्क होता है। मजलिसी या प्रेमी-प्रेमिका में बातचीत का ढंग ही दूसरा होता है। गुरु गम्भीर मनतव्यों के साथ-साथ हल्की बातचीत की मिलावट ही योजनाहीन बैटकी बातचीत का नियम है।

बातचीत मासिक पत्रिका में प्रकाशित एक गल्प से आरम्भ हुई थी। यह कहानी बड़ी ही करुण थी। संक्षेप में कहानी यह थी कि एक तरुण और एक तरुणी ने तजर्बे की कोई पूँजी न लेकर ही जीवन-यात्रा शुरू कर दी। ऐसा उन्होंने कोई ख़ुशी से शुरू की हो ऐसी बात नहीं। तरुण के पिता अकस्मात् चल बसे, इसलिये घर का भार तरुण पर आ पड़ा। तरुण इतने दिनों तक बाँसुरी बजाकर तथा नौटंकी में हिस्सा लेकर काट आया था। उसे आटे दाल के भाव की कुछ खबर नहीं थी। इसलिये पिता की मृत्यु उसके लिये बिना मेघ में वज्रपात की तरह हुआ।

तरुण-तरुणी ने बहुत कुछ सलाहकर दूकानदारी शुरू की, पर तजर्बा न रहने के कारण एक के बाद एक कई व्यापारों में घाटा रहा। फिर भी तरुण-तरुणी की आशा परास्त नहीं हुई। फिर नये उद्यम से नया व्यापार शुरू हुआ। इसकी भी वही गति हुई। अब की बार कुछ क़र्ज़ा भी हो गया। फिर भी तरुण-तरुणी ने नये ढंग से कमर कस ली। व्यापार में मुनाफ़ा भी होता है और घाटा भी। अब की बार घाटा रहा, अगले बार मुनाफ़ा होगा। अब की बार जो मुनाफ़ा होगा, उससे

पुराने सब घाटों का भी बदला निकल आयगा। केवल यही नहीं कुछ और भी रकम बच रहेगी। मकान पक्का कर लिया जायगा। नये मकान में जो चीज़ जहाँ होनी चाहिये, वह चीज़ वहाँ होगी। यहाँ तक कि यह भी तय हो गया कि फलाने कोने पर एक अमरूद का पेड़ होगा। तरुण अमरूद के पेड़ का विरोधी है, पर तरुणी चाहती है कि जब मुन्ना बड़ा होगा, तो वह अपनी ऐडवेंचर वृत्ति को चरितार्थ करने के लिये इस अमरूद पर चढ़ेगा। मुन्ना अमरूद पर चढ़ेगा और माँ नीचे खड़ी रहकर आँचल पसारकर अमरूद बटोरेगी। इस प्रकार की कल्पनायें चलती थीं। तरुण कल्पना करता था कि वह रुपयों का घड़ियाल होगा, पर तरुणी की कल्पना मधुरतर थी। तरुणी की सब कल्पनाओं का मध्यबिन्दु मुन्ना था।

जो कुछ भी हो व्यापार में फिर भी घाटा ही रहा। यहाँ तक कि पैतृक मकान को बेचकर इस २½ अढ़ाई आदमी के परिवार को अपने एक दूर के फुफेजाद भाई के आश्रय में जाकर रहना पड़ा। पहले-पहल तरुण और तरुणी वहाँ एक सामयिक रूप से गये थे, पर जब तरुण किसी भी प्रकार व्यापार में उन्नति नहीं कर सका, तब तरुण को अपने भैया की दूकान में बिना तनख्वाह का मुहर्रिर होना पड़ा, और तरुणी घर की महाराजिन तथा चौका बर्तन करने वाली हो गई। इस बीच में यथेष्ट यत्न न होने के कारण लड़का चल बसा। तरुण-तरुणी बहुत परेशान हो गये पर उन्हें अपने रिस्तेदार का अन्नदास रहना पड़ा।

एक मित्र के सुझाव के अनुसार ये लोग भाग्य-परीक्षा के लिये महानगरी कलकत्ते में पहुँचे, पर बहुत खोज करने पर भी कोई भी ऐसी नौकरी नहीं मिली जिससे दोनों का पेट भर सकता था। इसलिये उनको फिर गाँव की ओर लौटना पड़ा। तरुणी ने अपनी 'भाभी' की गालियों तथा पग-पग पर अपमान की बात याद रक्खी थी। पर रेल के किराये से अधिक पैसे नहीं बचे थे, इसलिये मुँह बंद कर लौटने के लिये राज़ी होना पड़ा।

हावड़ा स्टेशन के पास आकर पुल पर तरुण को याद पड़ी कि पहले-पहल जब वह अपनी स्त्री के साथ इस महानगरी में आया था, तो उसकी स्त्री ने उससे यह कहा था कि एक बार मौका लगाकर वह गंगा में स्नान करना चाहती है। नौकरी खोजने की परेशानी तथा दौड़धूप के कारण वह अपनी स्त्री के इस छोटे से अनुरोध का पालन न कर सका था। फिर रेल में कुछ देरी भी थी, इसलिये तरुण ने सोचा कि हाय में तो इसकी एक भी साध पूर्ण न कर सका, यही पूर्ण कर दिया जाय।

दोनों उतर पड़े। उस समय भाटे का खिंचाव शुरू हो गया था। तरुण ने नावों की पंक्ति की आड़ में एक अच्छी-सी निरापद जगह देखकर गमछे से शरीर रगड़ने की तैयारी की। ऐसे समय में उसने देखा कि तरुणी उससे कई एक क़दम आगे पानी में बढ़ गई है। उसने स्त्री को सावधान कर दिया और कहा कि लौट आवो, पर तरुणी बिना कुछ कहे और भी दो-तीन हाथ आगे बढ़ गई। तब तरुण ने प्रायः चीखकर आदेश दिया—मैं कहता हूँ लौट आओ, तुम तैरना नहीं जानती हो।

तरुणी ने अबकी बार उसकी तरफ़ देखा। उसकी दोनों आँखों से बड़े ज़ोरों के साथ आँसू जारी थे। तरुणी ने प्रायः रुँधी हुई आवाज़ में कहा—अजी मैं अब वहाँ नहीं लौटने की......।

इतने में भाटे का खिंचाव और भी ज़ोरों के साथ आया। तरुणी की बात मुँह में ही रह गई। वह अपार जलराशि में समा गई।

तरुण एक क्षण के लिये किंकर्त्तव्यविमूढ़ रह गया। इसके बाद उसने अकस्मात् देखा कि जहाँ तरुणी पानी में समा गई थी, उससे बीस हाथ दूर पर बड़े-बड़े बालों का गुच्छा दिखाई पड़ा, फिर विपुल जलराशि में विलुप्त हो गया। तरुण पागल की तरह उस तरफ़ कूद पड़ा। उधर एक नाव बँधी हुई थी, उससे उसका सिर टकरा गया और साथ-ही-साथ वह बेहोश हो गया।

कुछ मल्लाहों ने तरुण को कूदते देखा था, इसलिये वे पीछे-पीछे दौड़कर झपट पड़े और उसे बेहोश हालत में उठा लिया। तरुण ने बहुत कहा सुना कि अजी मुझे भी वहीं जाने दो जहाँ वह गई है, पर किसी ने उसकी बातों की परवाह न की। कहानी का अन्त इस प्रकार हुआ था—

"नदी के जल में गला हुआ सोना उड़ेल कर उस पार की दूर्वालियों की पंक्ति की आड़ मे सूर्य अस्त हुए। वाह्य ज्ञान शून्य शङ्कर फिर भी बैठा रहा। जीवन के सहस्र दुर्भाग्यों के बीच भी कल्पना बराबर उसे आशा की वार्त्ता सुनाती रही, पर आज उसके मनमें कोई भी आशा का चित्र उदित नहीं हुआ। उसका समस्त आकाश कुसुम बिखर गया, अपने सुख-दुख की सहचरी के परम विश्वासघात से उसकी कल्पना का सोता सूख गया।"

राजीव ने यह कहानी पहले ही पढ़ी थी। जिस मासिक-पत्रिका में यह कहानी छपी थी, राजीव ने ही उसे लाकर जोहरा को दिया था। आज आते ही राजीव ने उत्साह के साथ पूछा (उसे मन-ही-मन पूर्ण रूप से विश्वास था कि सैकड़ों काम छोड़कर जोहरा ने उसकी बताई हुई कहानी अवश्य पढ़ी होगी)—कहानी कैसी रही जोहरा ?

जोहरा इस प्रश्न के लिये मानो तैयार ही थी। फिर भी उसने कुछ सोचा, फिर कहा—बड़ा करुण है, अन्त की तरफ़ आँसू रोकना मुश्किल हो जाता है।......

इतना ही कहकर वह रुक गई। राजीव जैसे कुछ क्षुण्ण हुआ। उसने एक बार जोहरा के चेहरे को देख लिया, फिर बोला—नहीं जोहरा, इस कहानी को केवल करुण कहना कहानी का अपमान करना है। इसके अतिरिक्त इस कहानी को केवल एक व्यक्ति अथवा एक परिवार की ट्रेजेडी कहना उचित न होगा। यह है पतन शील पूँजीवाद के युग के ,क्षयग्रस्त निम्नमध्यवित्तवर्ग की ट्रेजेडी की कहानी। लेखक

प्रबोध बाबू कहाँ तक सज्ञान कलाकार हैं यह नहीं मालूम, पर उनकी वस्तु अनुसारी कला में एक वर्ग का चरित्र स्वयं ही स्पष्टीकृत हो गया है। यह वर्ग अपने सिर को जितना ही पानी के ऊपर रखने की चेष्टा कर रहा है, उतना ही यह डूब रहा है। ये लोग काम करना चाहते हैं, पर काम नहीं पाते। एक जमाने में स्वतन्त्र एन्टरप्राईज के युग में इस तरह के कम पूँजीवाले लोगों के लिये व्यापार में उन्नति करने की सुविधा थी। यह देखो न कि पायोनियर प्रेस के एक साधारण कम्पो-जीटर ने व्यापार में इतनी उन्नति की कि वह एक विराट प्रकाशन कम्पनी का मालिक हो गया। और भी बहुत से उदाहरण दिये जा सकते हैं, पर भारतवर्ष में भी धीरे-धीरे मोनोपोली का युग आ रहा है। अब छोटी-मोटी पूँजीवालों के लिये उन्नति करना सम्भव नहीं है। फिर बेचारा शंकर क्या करता? उसमें व्यापार की प्रतिभा थी या नहीं थी प्रश्न यह नहीं है। प्रश्न यह है कि इस युग में सफल होने के लिये जितनी पूँजी की आवश्यकता है, उतनी उसके पास थी या नहीं थी।

राजीव की उद्दीप्त वाक्यधारा में बाधा देकर जोहरा ने कहा—संक्षेप में तुम्हारा वक्तव्य यह है कि लेखक प्रबोध बाबू ने इस कहानी में यह दिखलाया है कि कैसे परिस्थितियों की मार के कारण मध्यवित्त-वर्ग अपनी अनिच्छा के बावजूद सर्वहारा वर्ग में जा रहा है⋯

—हाँ, यह तो है ही। अवश्य लेखक ने इसे सज्ञान रूप में चित्रित किया है ऐसा मैं नहीं समझता। लेखक ने अपनी चारों तरफ दिन-रात होने वाली बातों का एक मर्मस्पर्शी चित्र खींचा है, बाकी चीजें, समाज की वाणिक अवस्थायें कहानी में अपने से आ गई हैं। एक कलाकार अपनी कला में सज्ञान रूप से जितना रखता है वास्तविक कला में उससे अधिक भी तो रह सकता है। इसलिये जिन लोगों की रचना वायु में घूर्णमान नहीं है, जिनकी रचना वस्तु के अनुसार चलती है, उनकी कला वे चाहे जाने चाहे न जाने क्रान्तिकारी होने के लिये बाध्य है।

जोहरा के हाथ से भुनहला प्याला लेकर उसमें से एक छोटा-सा घूँट पीते हुए राजीव ने कहा—इसलिये यह न समझना जोहरा कि मैं इस सारी कहानी को क्रान्तिकारी मान रहा हूँ। बिलकुल नहीं। इस कहानी में एक क्रान्तिकारी इङ्गित अन्तर्निहित होने पर भी, इसको आसानी से पेटिबुर्जुवा भोडेपन में डाला जा सकता है। इस कहानी में इन दो प्राणियों का दुखदर्द ही प्रधान होकर रह गया है। वे अपने वर्ग के प्रतिनिधि मात्र हैं, यह बात स्पष्ट नहीं हो पायी। इसके अतिरिक्त लेखक ने भवानी शंकर की व्यापार-सम्बन्धी प्रतिभाहीनता को कोई कारण समझा है। वह बेचारा इतनी कम पूँजी लेकर सफल हो ही नहीं सकता था, इस बात को लेखक ने बिलकुल नहीं दिखलाया।

चाय ठंडी हो रही थी, इसलिये राजीव ने चाय पीने में मन लगाया। जोहरा भी चाय पीने में व्यस्त थी। मकान के सामने से कुछ लोग न मालूम कैसे कर्कश आवाज़ करते हुए निकल गये, पर दोनों में से किसी ने भी उसपर ध्यान नहीं दिया। दोनों पढ़ी हुई कहानी की गहराई में विचर रहे थे कि शायद कोई नई बात मिल ता कही जाय।

जोहरा एक प्याला पीकर राजीव के लिये और एक प्याला तैयार करने लगी। राजीव ने कहा—रहने दो आज एक प्याले से ही हो जायगा—फिर कुछ सोचकर बोला—नहीं-नहीं एक प्याला और हो जाय, इस चाय के लोभ से ही तो आना होता है......

उसने एकबार प्रशंसा भरी दृष्टि से जोहरा को देख लिया।

जोहरा का कर्ण मूल तक लाल पड़ गया। चीनी मिलाते हुए उसका हाथ कुछ हिल गया। उसने कहा—अच्छी बात है, च्यूँकि सत है, और तो किसी बात का लोभ नहीं है, मैंने तो समझा था... ...

—तुमने क्या समझा था?—उत्सुक होकर राजीव ने पूछा।

ज़रा नटखट हँसी हँसकर और राजीव को अच्छी तरह देख कर जोहरा ने कहा—मैं तो यह समझती थी कि तुम केवल फजूल की बहसें करने के लिये आया करते हो।

राजीव ने हाथ के प्याले को उतारकर मर्माहत होने के लहजे में कहा—फजूल वहम ? यह सब फजूल वहस है ?

जोहरा ने सोचा कि शायद राजीव कुछ गलत समझ गया, इस-लिये अपनी बात का रुख पलटकर बोली—पर सुनने में बहुत अच्छा लगता है। फिर इसके बाद ज़रा गर्दन नीची कर बोली—इसी फजूल बहस को सुनने के लिये मैं सारा दिन उदग्रीव होकर प्रतीक्षा करती रहती हूँ।

जो भूल समझने की हवा कहाँ से आयी थी, वो जिस प्रकार आयी थी उसी प्रकार चली गई। राजीव ने मेज़ के उस पार से सीधे जोहरा की आँखों के अन्दर दृष्टि डाली। जोहरा ने उस दृष्टि के सामने आँखें नीचा नहीं की। सीधे-सीधे ताकती रही। साथ ही उसके चेहरे ने और भी कोमल भाव धारण किया। ऐसे समय में नौकर आकर चाय के सामान ले गया।

दोनों बड़ी देर तक समझ नहीं पा रहे थे कि क्या बात करें। जब बात अधिक हो जाती है तब भी व्यक्ति मूक हो जाता है।

जोहरा ने कहा—पर, गल्प लेखक तो गल्प लिखकर छुट्टी पा गये। उन्होंने कहा कि नदी के जल में गला हुआ सोना उड़ेल कर सूर्य अस्त हो गया, और वाक्यज्ञानशून्य शङ्कर वहीं पर बैठा रह गया, सिनेमा के अन्तिम दृश्य के उपयुक्त घटना है, पर कहानी वहाँ खतम होने पर भी शङ्कर का जीवन तो वहाँ खतम नहीं होता। उसकी स्त्री सरसी तो गई, पर वह तो रहा, उसका क्या हुआ ?

राजीव ने इस दृष्टिकोण से कहानी को नहीं सोचा था। एक मुहूर्त पहले जोहरा ने भी इस दृष्टिकोण से चीजों को नहीं सोचा था, अकस्मात् ही यह विचार उसके दिमाग में आ गया था।

राजीव ने कहा—सच तो है जोहरा, मुझे यह जानने की बहुत इच्छा होती है कि इसके बाद शङ्कर का जीवन कैसा रहा।

कुछ नटखटपन के साथ जोहरा ने कहा—तुम्हारी कला सम्बन्धी धारणा के अनुसार तो यह समस्या बहुत ही आसान है।

—क्यों ?

—तुम्हारी धारणा के अनुसार तो शङ्कर को इसके बाद स्ववर्गत्यागी होकर सर्वहारा वर्ग में मिल जाना चाहिये। तुम्हारे अनुसार आगे गल्प का रूप यों होगा कि शङ्कर फिर कलकत्ता लौट गया। वहाँ पर वह एक मिल में मज़दूरी करने लगा। उसके बाद उस मिल में एक स्ट्राइक हुई, इसमें शङ्कर का भाग सबसे अधिक वीरतापूर्ण रहा। अन्त तक शायद वह साम्राज्यवाद की बलि वेदी पर चढ़कर शहीद हो गया। इस प्रकार उसका जीवन पूरा हुआ।

जोहरा अपनी बात पर आप ही हँस पड़ी। यह हँसी राजीव को कुछ बुरी लगी। उसने मानों जोहरा को कुछ चोट पहुँचाने के लिये कहा—क्यों ऐसा भी तो हो सकता है कि शङ्कर गाँव में लौट गया, कुछ दिनों बाद उसने शादी की, शादी के दहेज में उसे जो रक़म मिली, उसे लेकर उसने व्यापार शुरू किया, दो एक और हिस्सेदार मिल गये। बार-बार धोखा खाकर उसका तजुर्बा अधिक हो गया था, इसलिये अबकी बार उस तजुर्बे के कारण वह बहुत मुनाफा करने लगा। इस प्रकार वह जल्दी ही लखपती हो गया। इसके बाद उसने एक मिल खोली, और उस मिल के ज़रिये से हजारों मजदूरों का शोषण करने लगा—कहकर राजीव ने बचपन भरी वीरता की दृष्टि से जोहरा को घूरा मानो वह दृष्टि कह रही थी कि कैसी खबर ली।

राजीव का सारा चेहरा विजय के आनन्द से दमक उठा। पर जोहरा दबनेवाली नहीं थी, बोली—अन्त तक वह शोषक तो होगा ही। दहेज से प्राप्त धन जिसकी पूँजी है, वह शोषक के अलावा और क्या होगा ?

अब की बार राजीव के लिये हमले से बचना मुश्किल हुआ।

उसने यह नहीं सोचा था कि जिस बात को उसने इस प्रकार रुख बदल कर कहा था, वह बात सारी पुरुष जाति के विरुद्ध एक श्लेष में परिणत की जा सकती है। राजीव पहली चोट में कुछ अभिभूत हो गया, पर जब उसने जोहरा के वक्तव्य के पूर्ण अर्थ को समझ लिया, तो उसका चेहरा एक मीठी हँसी से उद्भासित हो गया।

पर जोहरा ने इस हँसी को नहीं देखा। उसने कुछ देर तक आँख मूँद कर जैसे कुछ सोच लिया, फिर कुछ शिकायत और कुछ नटखट-पन के स्वर में बोली—राजीव, तुम्हारे समाजवाद के मारे कोई भी मामूली बात नहीं कही जा सकती। मैंने कहा कहानी बड़ी करुण है। तुमने यह समझने की चेष्टा न कर कि यह कहानी मुझे क्यों करुण लगी फौरन अपने ढंग से कहानी की वर्ग समालोचना शुरू कर दी।...

जोहरा की बात में बाधा देकर राजीव कह उठा—मैंने जो कुछ कहा, वह समाजवादी समालोचना है या नहीं यह मैं नहीं कह सकता, पर यही वास्तविकता है। तुम जिसे करुण कह रहे हो, वह अवश्य ही करुण है, पर मैं अपने को व्यक्ति तक सीमित न रखकर और भी गहराई तक जाकर कह रहा हूँ कि केवल शंकर नहीं, सरसी नहीं, शंकर और सरसी जिस वर्ग के हैं, उस वर्ग का ही जीवन करुण है, उस वर्ग का ही जीवन दुखान्त है।

राजीव एक साँस में इन बातों को कह गया। जोहरा को कुछ कहने का मौका ही नहीं मिला। बात कहने में बाधाग्रस्त होकर ही हो या राजीव जो कुछ कह रहा है उसकी सत्यता का अनुभव करके ही हो, जोहरा चुप रह गई। यहाँ तक कि जब राजीव की बातों की प्रतिध्वनि ही रह गई, हवा में केवल एक सुखकर रेशा तैरने उतराने लगा, उस समय भी जोहरा चुप रही। ऐसे समय में बाहर कुछ अजीब शब्द सुनाई पड़े। दोनों ने अन्यमनस्क होकर खुले जँगले से बाहर की तरफ ताका, पर कुछ भी दिखाई न पड़ा। बाहर अच्छा अँधेरा हो चुका था। म्युनिसिपलिटी की बत्तियाँ जल रही थीं।

दोनों बाहरी जगत के प्रति उदासीन थे, जैसे वे रोज़ इस समय रहा करते थे। उनके निकट इस समय बहिर्जगत का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता था। वे परस्पर के एकमात्र ज्ञेय, प्रेय, श्रेय, मन्तव्य, निदिध्यासितव्य हो जाते थे। या यों कहिये दोनों के दो जगत मिलकर एक जगत हो जाते थे। इसके बाहर उनके लिये कोई जगत ही नहीं रहता था।

फिर वही धमधम आवाज। जैसे कुछ लोग दौड़ रहे थे। काना-फूसी की आवाज़। पर दोनों में से किसी ने इन बातों पर ध्यान न दिया। वे जब एक दूसरे के पास हैं, तो फिर बाहरी दुनियाँ में क्या हो रहा है, क्या नहीं हो रहा है इसकी चिन्ता उन्हें नहीं थी। जब बाहरी जगत उनके सामने रहता, तभी यह प्रश्न उठता कि उसके साथ उनका कोई प्रयोजन भी है या नहीं।

अकस्मात् इस निस्तब्धता को भंगकर जोहरा बोली—शायद वही बात है जो तुम कह रहे हो। शायद शंकर और सरसी का जीवन इतना करुण इसलिये है कि इस युग में उनके वर्ग के लोगों, स्त्री तथा पुरुषों का जीवन करुण होने के लिये बाध्य है, पर इससे उनके जीवन की करुणता कुछ कम नहीं हो जाती······।

—बल्कि बढ़ती है, क्योंकि समझ में आ जाती है कि शंकर की असफलता का कारण उसमें व्यापार बुद्धि की कमी नहीं है। वह जिन परिस्थितियों में है, उनमें वह सफल हो ही नहीं सकता था।

जोहरा मानो उसकी बातों पर ध्यान देकर बोलती गई—सरसी का जीवन कितना करुण है! ओह बिचारी ने अभी जीवन का सूत्रपात ही किया था, पर परिस्थितियों की ताड़ना से उसने गंगा में डूबकर प्राण दे दिये। लेखक प्रबोध बाबू आत्मविसर्जन को सुख-दुख की सहचरी की परम विश्वासघातकता बताकर कहानी समाप्त करते हैं, पर यह विश्वासघातकता है या अपने प्रियतम सहचर को मुक्ति प्रदान

है। लेखक चाहे जितनी सहानुभूति रखते हों, पर वे पुरुष हैं, पुरुष के दृष्टिकोण से ही घटना को देखते हैं। वे यह नहीं देख पाते कि सरसी ने जब यह देखा कि इस टूटी नाव में दोनों का पार जाना मुश्किल है। तब वह इच्छापूर्वक उपकूलहीन अथाह मृत्यु के सागर में कूद पड़ी, और इस प्रकार अपने जीवन सहचर को पूरी नाव छोड़ दी। यह क्या जीवन सहचर के साथ विश्वासघात था? या उसके लिये आत्मदान था।—अंतिम बातों को जोहरा ने कुछ तैश में कहा।

—पर जोहरा······।

—पर कुछ नहीं, मैं इसमें पुरुष लेखक का अच्छा खासा पक्षपात देख रही हूँ······।

—पर जोहरा तुम्हारे रूपक को ही ज़रा गहराई के साथ देखा जाय। मान लिया कि सरसी ने जो गंगा गर्भ में आत्मविसर्जन किया, वह जीवन संग्राम से विमुखता या भय के कारण नहीं है, उसने डोंगी में जीवन सहचर को अधिकतर स्थान देने के लिये ही जो कुछ किया सो किया जिससे उसका पार लग सके, पर वह जो अकस्मात् डोंगी से कूद पड़ी और उसके फलस्वरूप डोंगी डगमगा कर एक तरफ़ झुक गई उसमें उसकी नाव डूब सकती थी, क्या इसको तुमने सोचकर देखा है। क्या पता शंकर की जीवन डोंगी डूब ही गई हो। सरसी ने यह सोचकर प्राण दे दिया कि शंकर एक ही के लायक रोटी कमा सकता है, वह दो प्राणियों का पेट चलाने में असमर्थ है, इसलिये सरसी जानबूझकर पीछे हट गई। यहाँ तक तो तुम्हारा रूपक लागू होता है, पर मनुष्य केवल रोटी पर ही नहीं जीता। तुम इस बात को नहीं सोचती हो कि सरसी की मृत्यु के बाद शायद शंकर में यह अनुप्रेरणा ही नहीं रही कि वह आगे जिये और उपार्जन करे। इस दृष्टिकोण से देखने पर सरसी का आत्मविसर्जन अपने प्रिय सहचर के साथ विश्वासघात के अतिरिक्त कुछ नहीं ज्ञात होगा।

जोहरा इसपर भी हार मानने के लिये तैयार नहीं हुई, फिर भी उसे कुछ बात सूझ नहीं रही थी। अकस्मात् उसके दिमाग़ में एक बहुत बड़ी बात आयी। ऐसा बहुधा हुआ है जिस समय उसकी बुद्धि-वृत्ति स्तिमित है, क़रीब-क़रीब बुझ रही है। कोई और बात ढूँढ़े नहीं मिल रही है, उस समय एक ऐसी बात उसके दिमाग़ में आयी जिसे उसने कभी नहीं सोचा था, कोशिश करती तो सोच नहीं पाती, पूर्णरूप से अचिन्तितपूर्व, अकल्पितपूर्व। इस तरह से जो बातें उसके दिमाग़ में आती थीं, वे सीधे-सीधे उसकी जीभ पर आती थीं या दिमाग़ के ज़रिये से जीभ पर आती थीं, इस दुरूह प्रश्न की मीमांसा कौन करे। इतना ज्ञात है कि ऐसी एक-एक सूझी हुई बातों के कारण वह कई बार बड़ी विपत्तिपूर्ण परिस्थितियों से जयी होकर निकल आती थी। बात कर रही है और बात नहीं सूझ रही है, इससे बढ़कर विपत्ति और क्या हो सकती है ?

जोहरा ने चट से कहा—सरसी संग्राम विमुख नहीं थी, बल्कि उसके अंदर पहले ही प्रगति की पुकार आयी थी। जब उसने कलकत्ते में देखा कि उसका पति मुन्शी बनकर केवल अपना ही पेट पालने भर को रोजगार कर सकता है, उस समय उसने पति से प्रार्थना की थी कि जब परिस्थिति ऐसी है, तो वह भी कहीं महाराजिन का काम करे, पर शंकर ने उसे ऐसा करने नहीं दिया। उस समय शंकर ने कहा था 'यह कभी हो सकता है कि औरत नौकरी करे और मैं जीवित रहकर देखता रहूँ। कुल-मर्यादा भी कुछ होती है या नहीं।' इसलिये सरसी को चुप मार-कर बैठ जाना पड़ा। सरसी ने संग्राम तो करना चाहा था, पर शंकर ने उसे संग्राम कहाँ करने दिया। संग्राम करने का मतलब यह तो नहीं है कि हाथ-पैर बाँध दिये जायँ, आँख पर पट्टा बाँध दिया जाय, कान में रुई भर दी जाय, और इसके बाद कहा जाय कि तुम संग्राम करो। प्रत्येक संग्राम का ही एक नियम है, संग्राम में विजयी होने के लिये उन नियमों को काम में लाना पड़ेगा। सरसी ने काम तो करना चाहा था,

पर उसके पति देवता ने उसे ऐसा करने कहाँ दिया। उसने उसे अपनी झूठी कुल-मर्यादा की वेदी पर चढ़ा दिया। ऐसी अवस्था में दो ही रास्ते थे। एक इब्सेन की नोरा की तरह कुलत्याग करके चल देना, और वह भी जिधर आँख जाय उधर चल देना, या सरसी की तरह आत्महत्या करना······

राजीव अकस्मात् सम्हलकर बैठ गया, बोला—अच्छी बात है, कौन-सा तरीका अच्छा है, नोरा का तरीक़ा या सरसी का तरीक़ा ?

—अवश्य ही नोरा का तरीक़ा अच्छा था, पर सरसी जो थी, उसमें उसने जो कुछ किया वह उसके उपयुक्त तथा स्वाभाविक था। सरसी निष्ठावान, परिवार की पति-सर्वस्वा हिन्दू कन्या थी, वह नोरा की तरह सत्साहस की अधिकारिणी कहाँ से हो सकती थी ? उसने जो कुछ किया, वही उसके लिये एक मात्र सम्भव तरीक़ा था......

—पर जोहरा जिस प्रकार से सरसी के लिये नदी में डूबकर आत्मविसर्जन करना स्वाभाविक था, उसी प्रकार शंकर के लिये कथित कुल-मर्यादा पर जान देना स्वाभाविक था। इस बात को तुम क्यों मानने से इनकार करती हो ? जिसके पेट में अन्न नहीं है, उसकी कुल-मर्यादा कैसी ? इसके अतिरिक्त कुल-मर्यादा का विचार, विशेषकर इस रूप में विचार सम्पूर्ण रूप से एक कुसंस्कार है यह तुम्हें समझना चाहिये। काम करना कभी खराब हो सकता है······

कहानी के सम्बन्ध में इस प्रकार बहुत ब्यौरेवार तर्क-वितर्क हो चुका था। दो उद्भावनी शक्तिशील, प्रखर, निरलस बुद्धि की सर्चलाइट में कहानी के चरित्रों का कोना-कोना उद्भासित होकर अपनी-अपनी गुप्त बात बता दी थी। और भी जो कुछ वक्तव्य हो सकता था, वह भी धीरे-धीरे सामने आ गया। बातचीत अब विषयान्तर पर चली गई। सच तो यह है कि इस कहानी पर बातचीत बहुत देर तक रुकी रही।

इसके बाद जो विषय आते गये, उनके इर्दगिर्द बातचीत इतनी देर तक नहीं रही।

रात के सवा नौ बजे भी राजीव को होश नहीं था। अन्त की ओर वह कुछ अधिक अन्यमनस्क हो चला था। वह इस बात की सुविधा खोज रहा था कि असली बात पर आया जाय, पर कोई मौका नहीं लग रहा था। राजीव कुछ तो अपने ऊपर और कुछ जोहरा के ऊपर नाराज़ हो रहा था। जोहरा हमेशा से बातों की धनी थी, पर आज उसकी प्रगल्भता हद से ज़्यादा हो रही थी। प्रारम्भ की तरफ़ राजीव ही अधिक बोल रहा था, पर अन्त की तरफ़ जोहरा ही अकेले बोल रही थी। राजीव उसकी सभी बातें सुन रहा हो ऐसी बात नहीं। कुछ सुनता था, और कुछ नहीं सुनता था। वह जोहरा की बातें जितना ही सुनता जाता था, उतना ही उसके भीतर एक ऐंठन-सी पैदा हो रही थी। वह अपने को क्षुद्र अनुभव कर रहा था। यह महिमामयी नारी, युवती विदुषी है। क्या यह उसकी जीवन संगिनी होना स्वीकार करेगी? कौन जानता है? ना कर दे तो?

जोहरा कहती जाती थी—मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि जो बातें इतनी सत्य और सहज हैं, मनुष्य ठीक उन्हीं बातों को क्यों नहीं सोच पाता?—साम्राज्यवाद, राफेद मनुष्य का बोझा, धर्म, वर्ण-भेद—कितनी ही बातें हैं जिन्होंने मनुष्य को हमेशा दुःख ही दिया है, फिर भी इन्हीं धारणाओं को केन्द्र बनाकर सभ्यताएँ तथा संस्कृतियाँ पनपी हैं। मैंने पढ़ा है मध्ययुग में अवस्कुरान्तिस्ट नाम का एक सम्प्रदाय था जिनकी कौर थी शिक्षा के साथ असहयोग। शायद ये लोग समझ गये थे कि मनुष्य की विद्याबुद्धि सब व्यर्थ है, मनुष्य भीतर ही भीतर नग्न, पशु......, जानवर है। उसकी कोई भी उन्नति न तो हो सकती है और न होगी।

दूसरा दिन होता तो राजीव प्रतिवाद कर उठता, कहता—क्यों रूस,

वहाँ जिस नई सभ्यता का प्रारम्भ हुआ है......—इत्यादि, और रूस का नाम लेते ही जोहरा का सारा सन्देहवाद काफूर हो जाता, उसका उग्र, दीप्त, खिंचावयुक्त चेहरा प्रशान्त निर्मल तथा विश्वास के आलोक से उद्भासित हो जाता। पर इस समय राजीव ने कुछ नहीं कहा, कुछ कहने की इच्छा नहीं हुई।

जोहरा कहती गई क्या कोई अंग्रेज बच्चा कभी इस बात को समझ सकेगा कि काले और गोरे सभी मनुष्य बराबर हैं—जब तक कि उसे बूट की ठोकरों से यह बात समझाई न जाय? क्या एक ब्राह्मण इस बात को कभी स्वीकार करेगा कि वह और मेहतर एक है? कभी नहीं। तर्क से उन्हें कौन समझा सकता है? थ्योरी में उनके निकट सभी आत्मायें एक हैं, मनुष्य-मनुष्य में कोई फ़र्क नहीं है, पर व्यावहारिक क्षेत्र में बात ही दूसरी है......

ऐसे समय में कमरे के दरवाज़े के पास कुछ दबे हुए पैर के शब्द सुनाई पड़े। दोनों की दृष्टि युगपत उधर गई। तो क्या कोई आड़ में खड़ा रहकर उनकी बातों को सुन रहा था? उन दोनों की भौंहें सिकुड़ गईं। उन दोनों ने याद करने की चेष्टा की कि आज उस प्रकार की कोई बात हुई या नहीं।

ठीक दरवाज़े के बाहर कुछ लोग जैसे कानाफूसी कर रहे थे।

और नहीं। जोहरा हिलकर सचेत होकर बैठी। तो क्या पिताजी? नहीं-नहीं वे तो घर पर नहीं हैं, होते भी तो उनके लिये ऐसी निकम्मी बात सम्भव नहीं। तो क्या शौकत?

जोहरा अकस्मात् खड़ी हो गई और नौकर का नाम लेकर पुकार उठी—करीम!

कोई आवाज़ नहीं आयी।

—करीम, देख तो वहाँ कौन है।

फिर भी कोई आवाज नहीं आयी। फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि पैर की आहट और कानाफूसी सुनाई पड़ी थी।

राजीव भी कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ था, वह सोच रहा था कि आगे बढ़कर देखें या नहीं।

जोहरा ने फिर, अबकी बार प्रथम दो बारों से अधिक जोरों के साथ कहा—करीम देखता क्यों नहीं दरवाजे के पास कौन है।

—कोई खड़ा नहीं है, मैं हूँ—कहकर शौकत ने प्रवेश किया, और उसके पीछे-पीछे पचीस-तीस दूसरे लोगों ने प्रवेश किया।

शौकत अपने रोज़ की पोशाक में था। पर उसे बहुत उत्तेजित दिखाई पड़ रहा था। एक-एक कर पूरा कमरा लोगों से भर गया। जोहरा ने देखा कि कई तो मुहल्ले के नौजवान हैं, कई एकदम अपरिचित हैं, पर परिचित-अपरिचित सभी के चेहरे से एक खूनीपन टपक रहा था।

जोहरा या राजीव समझ नहीं पा रहे थे कि मामला क्या है। शौकत आकर जोहरा के बहुत पास सटकर खड़ा हो गया। भाई बहिन के पास आकर खड़ा हो गया इसमें कोई अस्वाभाविक बात नहीं थी। जोहरा जरा आश्वस्त हुई। तो कुछ नहीं है। बाकी लोगों में कुछ तो दरवाज़े के पास रहे, और कुछ सारे कमरे में फैल गये। कुछ जाकर राजीव के पास खड़े हो गये।

जोहरा ने ही पहले बँगला में बात की—भाई जान क्या मामला है?

शौकत ने उर्दू में उत्तर दिया—मौलाना जफरुलमुल्क कज़ा कर गये......

—ऐं.....

—हाँ, सच कह रहा हूँ।

—कहाँ उनकी बीमारी के बारे में तो कुछ सुना नहीं था।

—वे बीमारी से नहीं मरे।

—फिर? —जोहरा ने पूछा। मौलाना जफरुलमुल्क शौकत के कुलगुरु तो थे ही, इसके अतिरिक्त उनकी जोड़ के आलिम भारतवर्ष में कम थे। उन्होंने अलअजहर में शिक्षा प्राप्तकर ६ वर्ष तक फिलस्तीन, हेजाज और इराक का भ्रमण किया था। जोहरा मौलाना की विशेष प्रिय पात्री थी। जोहरा मौलाना पर जितनी भक्ति रखती थी, उतनी शायद पिता के अतिरिक्त और किसी मुसलमान पर नहीं रखती थी। इसलिये यह खबर उसके लिये पितृवियोग के खबर के समान न होने पर भी बहुत हृदय-विदारक थी।

जोहरा प्रायः रुआसी होकर पूछने लगी—फिर?

शौकत ने कहा—हिन्दुओं ने उन्हें धोखे से पकड़ कर मार डाला है।

साथ ही साथ करीब पचीस जोड़े आँखों की क्रुद्ध दृष्टि राजीव पर गिरी। राजीव कुछ कहने जा रहा था, पर इतनी दृष्टियों के एक साथ दबाव से उसके मुँह से बात नहीं निकली।

जो मुसलमान युवकगण राजीव के पास थे, वे उसकी तरफ और भी बढ़ गये। उनकी गरम साँस राजीव के बदन से लगने लगी। राजीव भीतर-ही-भीतर कुछ बेचैन होने लगा।

मौलाना जफरुलमुल्क की हत्या का संवाद सुनकर जोहरा इतनी अभिभूत हो गई थी कि उसके लिये जो राजीव अभी तक निखिल जगत था, वह उसका अस्तित्व भी सम्पूर्ण रूप से भूल गई।

जोहरा धम से कुर्सी पर बैठ गई। बोली—ओह, इस जगत में इतनी धोखेबाज़ी है। मौलाना से बढ़कर निरीह व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। वे वेदान्त के तसव्वुफ के बहुत बड़े प्रशंसक थे। उन्होंने एक दिन मुझसे कहा था—बेटी, कहना तो नहीं चाहिये, पर हजरत रसूलल्लाह सल्ले अलैहवसल्लम के कम-से-कम बारह सौ वर्ष पहले

उपनिषदों में वहदत की तालीम दी गई थी। और इसी मौलाना को हिन्दुओं के हाथों में कुत्ते की मौत मिली। ओह, ये लोग कैसे जानवर हैं—उसने लज्जा, घृणा तथा दुःख से अपने मुँह को दोनों हाथों से ढँक लिया।

राजीव किंकर्त्तव्यविमूढ़ की तरह खड़ा रहा। जोहरा ने जो कुछ कहा, उसकी एक-एक बात से वह सहमत था, पर उसने चारों तरफ ताककर देखा कि वह यदि इस बात को कहे तो कोई विश्वास न करेगा।

शौकत ने जोहरा के कंधे के ऊपर धीरे से हाथ रखकर पुकारा—बहिन......

—हाँ—जोहरा ने मुँह उठाकर देखा।

—तुम जाओ—अत्यन्त स्नेह से, जितना स्नेह शौकत के लिये सम्भव था उतने स्नेह से कहा।

—क्यों?—जोहरा ने पूछा।

शौकत ने कोई उत्तर नहीं दिया।

—हम बदला चाहते हैं, इन्तकाम—भीड़ में से एक व्यक्ति चीखकर कह उठा।

जोहरा ने बोलने वाले की तरफ देखा तो यासीन को ऐसा कहते हुए पाया।

—हम मौलाना के खून का बदला लेना चाहते हैं।

—यासीन ने पहले से स्पष्टतर शब्दों में कहा।

इसी यासीन के साथ शौकत की इच्छा थी कि जोहरा की शादी हो। इस व्यक्ति का खून इस समय जैसे खौल रहा था। कितना घृणित है, जोहरा ने परेशानी में उसकी ओर से मुँह फेर लिया। यासीन भी समझ गया कि जोहरा ने परेशानी में तथा नाराजगी में

मुँह फेर लिया। उसके चेहरे पर एक नारकीय आग शिखा विस्तार-कर जल उठी।

यासीन ने शौकत को कहा—यही न वह काफिर है जिसके साथ आपकी हमशीरा की शादी की बातचीत चल रही है?

शौकत एक इतनी बड़ी बदनामी से बहुत नाराज़ हो गया, बोला—यासीन, माँ-बहिन लेकर दिल्लगी नहीं, सम्हलकर बात करो .....

यासीन हँस पड़ा, बोला—तो इतनी गहरी रात में यह हज़रत अकेला आपकी हमशीरा के साथ क्या कर रहे थे, इसका कोई जवाब आप के पास है?

—है—गुस्से में शौकत ने है तो कह दिया, पर उसे कोई ऐसी बात सूझ ही नहीं रही थी, जिससे इन लोगों को इतमिनान होता।

—क्या?—यासीन ने अविचलित निर्ममता के साथ पूछा।

शौकत ने कहा—तुम कौन हो जो तुमको मैं हरेक बात का जवाब देता फिरूँ, हाँ अगर ये लोग सब मुझसे पूछें, तो मैं बताऊँगा पर उसके पहले अपना काम तो कर लो।

जितने लोग वहाँ मौजूद थे, उन सबने कहा—जरूर आगे हम जो करने आये हैं, वह तो हो जाय......

सब लोग एक साथ राजीव को देखने लगे। कहाँ से क्या हुआ कुछ पता नहीं लगा, एकाएक यासीन एक ही छलाँग से राजीव पर चढ़ बैठा।

राजीव जैसे इस हमले के लिये तैयार ही था। वह शरीर झाड़-कर अलग हो गया और यासीन छटककर दूर गिर पड़ा। राजीव ने बगल की कुर्सी उठानी चाही, पर एक साथ बीस आदमी उस पर झपट पड़े। एक मिनट के चौथे अंश के अंदर सबने मिलकर राजीव को एक बालू के बोरे की तरह ज़मीन पर बिछा दिया, उसके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया, और हाथ-पैर बाँध दिये।

जब इस प्रकार राजीव गिरा दिया गया, उस समय शौकत ने ललकार की आवाज में कहा—सुनो यासीन, अपनी बात का जवाब सुनो। मैंने ही अपनी बहिन के साथ साजिशकर इस काफिर को इतनी रात तक रोका था। मौलाना ने दो बजे कजा किया, उसके बाद मैंने आकर सब ठीक-ठाक किया था। यासीन, तुम्हीं एक मुसलमान नहीं हो। हम लोगों के खून में भी गर्मी''''''है, समझे? हम भी इस्लाम के लिये मर मिट सकते हैं''''''

यासीन ने शौकत की बात पर विश्वास नहीं किया, पर दूसरे लोग यह तो जानते नहीं थे कि राजीव रोज आता था। उनके निकट यह व्याख्या माकूल और सन्तोषजनक थी। मुहल्ले के एक लड़के ने कहा—यह तो है ही, यकीनन, बंगाली मुसलमान भी तो आखिर हैं मुसलमान ही। यकीनन''''''

शौकत इस मन्तव्य से बहुत खुश नहीं हुआ। वह यह नहीं चाहता था कि किसी भी हालत में उसका उल्लेख एक बंगाली के रूप में किया जाय। यासीन ने तो इस मन्तव्य पर मुँह बना लिया। पर अब किसी तरह की बातचीत का मौका नहीं था। राजीव पड़ा-पड़ा सभी बातें सुन रहा था। पहली चोट में उसमें कुछ बेहोशी-सी आ गयी थी, पर बाद को वह होश में आ गया था।

इन लोगो ने राजीव को एक चोरे की तरह टाँग लिया।

उधर जिस समय यासीन राजीव पर कूद पड़ा था, उसी समय जोहरा बेहोश हो गई थी। दो उर्ध्व शिखा ज्योतियाँ आकुल होकर परस्पर की तरफ धावित हो रही थीं परस्पर में निमज्जित होकर एक और अभिन्न हो जाने के लिये। जब वे परस्पर के बहुत पास थे, मिल चुके थे, तब किसी ने फुफकार कर इन दोनों ज्योतियों को अलग-अलग बुझा दिया।

४

रास्ता बिलकुल सुनसान था। केवल म्युनिसिपलिटी के लैम्प जहाँ-तहाँ जगमगा रहे थे।

पाँच-छः आदमी किसी एक भारी चीज को टाँगकर लिये जा रहे थे। कोई बात नहीं कर रहा था। सब अपने-अपने विचारों में डूबे हुए थे। वे क्या सोच रहे थे इसका कुछ पता नहीं। सिर के ऊपर नक्षत्रगण उनकी तरफ देखकर न मालूम कैसी हँसी हँस रहे थे। पता नहीं यह हँसी व्यंग की थी, उदासीनता की थी या समर्थन की थी।

अकस्मात् एक चिड़िया, शायद कोई खूसट बहुत जोर से चीख उठी। जो पाँच-छः आदमी बोरे की तरह किसी चीज को टाँगकर लिये जा रहे थे, वे खूसट की चीख सुनकर कुछ भयभीत से हो गये। उनके हाथ शिथिल पड़ गये। जरा और कोई बात हो जाती तो वे जिस चीज़ को टाँगकर लिये जा रहे थे उसे छोड़कर नौ दो-ग्यारह हो जाते, पर वे समझ गये कि यह केवल खूसट की चीख है, इसलिये नहीं भागे।

फिर वे उस चीज को टाँगकर जल्दी-जल्दी चलने लगे।...

थोड़ी देर बाद वे सड़क छोड़कर कई एक गली पार करते हुए एक बहुत बड़े मकान के सामने आ पहुँचे। भीतर के लोग मानो उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, फौरन मकान के दरवाजे को खोल दिया।

सब लोगों ने सावधानी से मकान के अन्दर प्रवेश किया, दरवाजा फिर बन्द हो गया।

राजीव पर जब पहले-पहल एकाएक हमला हुआ था तो एक मुहूर्त के लिये वह बेहोश हो गया था। पर अगले ही क्षण उसको होश फिर आ गया था। बात यह है उसे कोई गहरी चोट नहीं आयी थी।

उसी हालत में उसे बाँध डाला गया और उस पर मार-पीट की गई। उससे उसका सिर फिर एक बार घूम गया था, पर फौरन ही फिर होश आ गया था। विशेषकर जब उसे टाँगकर सड़क पर से ले जाया जा रहा था तो सड़क की खुली हवा में उसे अच्छी तरह होश आ गया था।

वह सब कुछ समझ रहा था। सब कुछ देख रहा था। समझ रहा था कि शायद उसे जीवित अवस्था में ही कब्र दे दी जाय, पर इस चिन्ता से उसे विशेष कोई दुःख नहीं हो रहा था। और दुःख करने से ही होता क्या था? इस अभागे देश में सभी बातें सम्भव थीं……।

पर एक चिन्ता उसके हृदय को काँटे की तरह बिद्ध कर रही थी। शौकत ने जो कुछ कहा था, उसने वह सुना था। सुनकरके ही उस समय उसका सिर घूम गया था। क्या यह सम्भव है कि प्रेममयी जोहरा इस प्रकार की पापिष्ठा थी कि साजिशकर उसे दङ्गाकारियों के हाथों में सौंप दिया था। ओह, यदि यह बात सच हो, तो कितनी भयानक है! आज संध्या से जोहरा ने कितना अभिनय किया! राक्षसी! पिशाचिनी! तभी वह आज घर्म को पानी पी-पीकर कोष रही थी। इसीलिये उसकी बात में एक अश्रुतपूर्व निराशावाद का सुर ध्वनित हो रहा था। कितना भयानक है! इस प्रकार की धोखा-फरेब वाली दुनिया में जीने से क्या लाभ है? कुछ भी लाभ नहीं…। उसकी चिन्तायें अस्पष्ट हो रही थीं।

एक प्रशस्त कमरे के अन्दर उसके वाहकों ने उसे एक बोरे की तरह ले जाकर करीब-करीब पटक दिया। उसका होश फिर जाता रहा। उसने बिना प्रतिवाद के बेहोशी का ग्रहण किया, कुछ भी प्रतिरोध नहीं किया। जाने दो। पिताजी, घर, रमेश, दुनिया, जोहरा, सब जायें।

कमरे में प्रायः चालीस के करीब व्यक्ति थे। सभी आंशिक रूप से उत्तेजित तथा आंशिक रूप से डरे हुए थे। शायद अधिकांश लोगों में डर ही अधिक समाया हुआ था।

यह इस प्रकार के दङ्गाकारियों की कौंसिल या सभा-सी थी। दङ्गाकारी शब्द का व्यवहार हो रहा है, इससे यह न समझा जाय कि ये लोग स्वभाव-अपराधी या बदमाश हैं। अवश्य इनमें कुछ पेशेदार बदमाश भी थे, पर अधिकांश निरीह भद्र व्यक्ति थे। इन लोगों ने सारे जीवन में कभी कोई अपराध नहीं किया था। कल तक ये लोग आदर्श न सही अच्छे नागरिक थे।

चौबीस घंटे के अन्दर ये लोग ऐसा हो गये थे जैसा कि हम इन्हें देख रहे हैं।

मकान यासीन का था। वही इस मकान का मालिक था। सारे प्रान्त में उसके तम्बाकू का व्यापार फैला हुआ है। यासीन सच्चरित्र युवक है। सुशिक्षित है, अलीगढ़ विश्वविद्यालय का ग्रेजुएट है। वह शौकत का मित्र है। बहुत दिनों से चाहता है कि जोहरा के साथ शादी हो जाय। शौकत इसमें राजी था, पर उसने अपने मित्र से यह साफ कह दिया था कि बहिन के मतामत पर उसका कोई हाथ नहीं है, तथा उस पर बाप या भाई कोई भी जबर्दस्ती नहीं कर सकता। यह बात यासीन को बहुत खटकी। उसने समझा इसमें कहीं कोई दाल में काला अवश्य है। वाह बाप और भाई चाहें और लड़की इन्कार करे? इस बात को वह किसी भी प्रकार नहीं समझ सकता था। इन बंगाली मुसलमानों का ढंग ही और है। वह इन लोगों के रंग-ढंग को समझ ही नहीं पाता था। इधर यासीन की कई एक शादियों का प्रस्ताव आया, पर उसने सबको ना कर दिया।

दूर रहकर वह जोहरा पर जरा पहरा-सा रखता था। राजीव आता-जाता है, और स्वतन्त्रतापूर्वक जोहरा के साथ मिलता-जुलता

है, इस बात को वह जानता था। प्रायः वह उसे सड़क पर से जाते और लौटते देखता था। अजीब बेवकूफी थी। क्या नौशेर बिलकुल पागल था कि अपनी जवान लड़की को इस हिन्दू छोकरे के साथ इस प्रकार मिलने-जुलने देता था। ऐसा सोचते हुए उसने कई बार घृणा के मारे थूक दिया, पर यह थूक नौशेर पर थी या राजीव पर यह कहना कठिन था।

उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि नौशेर मियाँ से कुछ कहे। उतने दूर तक उसकी पहुँच नहीं थी। एक दिन उसने शौकत मियाँ से हिम्मतकर कह डाली—क्यों जी यह जो हिन्दू छोकरा जोहरा के पास आता-जाता है, यह करता क्या है? देखने से तो वह आवारा मालूम होता है।

—वह हम लोगों के जिले का आदमी है। कई एक पुश्त से हमारे घराने और उसके घराने में दोस्ती है—फिर थोड़ा रुककर बोला—यह छोकरा आवारा बिलकुल नहीं है, बहुत अच्छा है......

शौकत स्वयं ही नहीं चाहता था कि राजीव आया-जाया करे। राजीव को वह अच्छी निगाह से नहीं देखता था, पर वह यह भी नहीं चाहता था कि कोई उसकी बहिन की किसी भी प्रकार नुकता-चीनी करे। इसलिये उसने कहा था कि यह छोकरा बिलकुल आवारा नहीं है, बड़ा अच्छा है। इसके बाद उसने मनगढ़न्त ढंग से कहा—हजरत रसुलल्लाह में बड़ी भक्ति है, अन्त तक मुसलमान भी हो सकता है।

शौकत मन-ही-मन अच्छी तरह जानता था कि राजीव कभी भी मुसलमान नहीं होगा क्योंकि वह तो कहा करता था कि सभी धर्म जनता के लिये अफीम है। फिर भी शौकत ने यह झूठी बात इसलिये कही कि यासीन पर जीत बनी रहे।

यासीन सुनकर और भी असन्तुष्ट हो गया। था तो वह बड़ा

ही कट्टर। तब लीग और तनजीम के लिये चन्दा दिया करता था, पर राजीव के मुसलमान होने की सम्भावना की बात सुनकर उसे खुशी नहीं बल्कि नाखुशी हुई। उसने केवल कहा—ओ ओ—और वहाँ से चला गया।

वही यासीन था। आज उसी के मकान पर राजीव हाथ-पैर बँधा हुआ, मुँह में कपड़ा ठूँसा हुआ, बेहोश पड़ा था। सभी ने बिजली की रोशनी में देखा कि वह नहीं मरा है, साँस चल रही है। अभी जान बाकी है।

यासीन ने पास ही खड़े एक व्यक्ति से पूछा—क्यों जी बदाऊ कितने हुए?

—इसे लेकर उन्नीस हुआ—बदाऊ नाम से सम्बोधित व्यक्ति ने राजीव की तरफ इशाराकर बहुत सहज भाव से कहा।

यासीन ने सबकी तरफ ताककर कहा—और एक आदमी चाहिए। फिर हमारा कोटा पूरा है।

बैठे हुए लोगों में से एक व्यक्ति जो राजीव को पकड़ने गया था बोला—अब एक भी आदमी पाना मुश्किल है। अब हिन्दू होशियार हो चुके हैं······।—इसके बाद राजीव की तरफ इशारा करते हुए कहा—यह भी नहीं मिलता, महज खुशकिस्मती से ही मिल गया। यह आदमी कुछ बुद्धू है, नहीं तो इतनी रात गये इस मुहल्ले में···

उसके मुँह से बात को छीनकर भाग के साथ यासीन ने कहा—हाँ इश्क में ऐसा ही होता है, अच्छे खासे लोग बेवकूफ हो जाते हैं······।

किसी ने कुछ नहीं कहा।

शौकत इस सभा में नहीं था। वह बहिन की तीमारदारी के लिये घर पर रह गया था। इसलिये यासीन समझ रहा था कि वह जो चाहे

सो कह सकता था, पर यह उसकी गलती थी। उपस्थित व्यक्तियों में एक ने जिसे देखते ही ज्ञात होता था कि यह बङ्गाली है उर्दू में बोला—हजरत क्या कह रहे हैं, समझ में नहीं आया......बोलने वाले की उर्दू में बङ्गलापन स्पष्ट था।

यासीन ने इस व्यक्ति को एक बार आग्नेय नेत्रों से देख लिया फिर बोला—मैं वही कह रहा हूँ जो शायर कह गये हैं—

इश्क ने हमको निकम्मा कर दिया,
वरना हम भी आदमी थे काम के।

कोई हँसा नहीं, और न किसी ने कुछ कहा।

बङ्गाली मुसलमान ने कहा—बिलकुल झूठी बात है। सफेद झूठ......

ऐसे समय में दरवाजे को किसी ने खटखटाया।

यासीन ने पुकारा—वहाब!

—हुजूर

—खोल दो, मुहल्ले का कोई होगा।

वहाब ने जाकर दरवाजा खोल दिया।

जिस आदमी ने दरवाजा खुलने पर प्रवेश किया, वह और कोई नहीं शौकत था।

उसने कमरे में प्रवेश करते ही सबको एक दृष्टि में देख लिया। इसके बाद उसने गलीचे के ऊपर हाथ-पैर बँधी हुई हालत में पड़े हुए बेहोश राजीव को देखा। एक उड़ती हुई दृष्टि से नहीं, बल्कि ध्यान से देखा। शायद देखा कि जीवित है या मृत। उसको देखने से उसका चेहरा और भी कठिन हो गया। वह धम से एक खाली कुर्सी पर बैठ गया और सबको देखने लगा।

यासीन ने शौकत को देखकर ही जल्दी में खड़े होकर कहा—तो इसे भी ले जाओ।

किसी ने कुछ नहीं कहा।

यासीन ने पुकारा—वहाब !

—हुजूर

—इसे भी वहीं पहुँचा दो जहाँ और अठारह गये हैं।

फिर उसने इकट्ठे लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा—उम्मीद है कि इस हजरत जफरुल मुल्क की रूह को राहत मिलेगी। हमने उनकी शहादत के बदले में बीस काफिरों को जहन्नम रशीद करने का बीड़ा उठाया था। बीस में उन्नीस तो हो गये, एक शायद जल्दी आवे, या यह भी हो सकता है कि रास्ते में मर जाने की वजह से उसे सीधा कब्रिस्तान भेजा गया हो।

राजीव हाथ-पैर बँधा होने पर भी जरा-सा हिला। सब लोग सिहर उठे। शायद राजीव अब फिर होश में आ रहा था।

इसी समय कुछ दूर पर लोगों के दौड़ने की आहट मालूम हुई। कहीं पुलिस तो नहीं है। एक तरफ से सबके चेहरे जैसे रक्तहीन पीले पड़ गये। यासीन चुप हो गया। सभी चुप थे। इतनी चुप्पी थी कि अपने सीने की धड़कन भी सुनाई पड़ रही थी। निस्तब्धता, विकराल निस्त-ब्धता थी।

राजीव अबकी बार बहुत जोर से हिला। एक अस्पष्ट कराहने की आवाज। उसने हाथ-पैर खोलने के लिये कुछ हाथ-पैर फटफटाये। फिर चुपचाप पड़ गये।

उधर पैर की आहट और भी पास में आयी। एकदम कान के सामने। सभी ने सोचा कि पुलिसवाले हैं। भागने का कोई रास्ता नहीं था, मकान का एक वही दरवाजा था, और उधर पुलिस थी। सब अपनी-अपनी जगह पर डर से जमे हुए बैठे रहे।

अब वे लोग बिलकुल दरवाजे के सामने आ चुके थे।

—खोलो—बाहर से जोर से धक्का मारते हुए किसी ने कहा।

भीतर सबके होश गायब थे। ऐसा मालूम हो रहा था कि जैसे कजा आ गई, कौन उसके मार्ग में बाधा पहुँचा सकता है। इसके अलावा ये लोग सब शरीफ और शरीफजादा थे। कभी ऐसी परिस्थिति का सामना नहीं किया था।

पर वहाब दूसरे ही उपादानों से बना हुआ था। यासीन के यहाँ नौकरी करने के पहिले उसने रामपुर में कोकेन बेचा था, कानपुर में चोरी के माल खरीदकर गलाया था, शायद दो-चार राहजनियाँ और डकैतियाँ भी की हों।

उसने देखा कि शरीफजादों का बुरा हाल हो रहा है। और मकान के सामने पुलिस खड़ी है।

—खोलो—फिर दरवाजे पर धमाका हुआ।

वहाब इतनी देर तक एक जगह पर चुपचाप खड़ा था। ऐसी हालत में शरीफजादों की सिट्टीपिट्टी भूल गई थी देखकर उसे हँसी आयी। ज्योंही दूसरी बार दरवाजे पर धमाका हुआ त्योंही वह बिजली की तरह उस तरफ लपका जिस तरफ राजीव पड़ा था। उसने आसानी से हाथ-पैर बँधी हालत में पड़े हुए राजीव को उठा लिया, और ले जाकर कमरे के एक कोने में जहाँ तख्त पड़ा था उसके नीचे किसी तरह ढकेल-ढकालकर इस आधे मुर्दे और आधे जिन्दे को छिपा दिया। उसने इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं की कि इस प्रकार जबर्दस्ती ढकेलने से शायद राजीव की दो-चार पसलियाँ टूट गईं।

इसके बाद उसने एक चादर खींचकर तख्त पर ऐसे बिछा दिया जिससे नीचे की यह छिपाई हुई अर्धलाश दिखाई न पड़े। वहाब की आँखों में तो इस प्रकार बोरे की तरह बँधी हुई वस्तु लाश से अधिक मर्यादा नहीं रखती थी।

इसके बाद उसने वहाँ से जाकर मकान का दरवाजा खोल दिया। अब चाहे जो हो।

जो लोग कमरे में रह गये उनके लिये एक-एक पल एक-एक युग की तरह हो रहा था। सभी बाल-बच्चेदार शरीफ मुसलमान थे। कोई दूकानदार था तो कोई आढ़तदार, कई ग्रेजुएट थे, और एक नये वकील साहब भी थे।

कमरे में बैठे-बैठे ये लोग वहाब का एक-एक कदम करके दरवाजे तक जाना, दरवाजे के खुलने का तथा भीतर प्रायः हड़बड़ाकर पाँच-छः आदमियों के एक साथ घुसने की आवाज सुनी। उन लोगों ने यह भी सुना कि फिर से दरवाजा बन्द हो गया। तब क्या उन्हें घेरा जा रहा है। सर्वनाश! नये वकील साहब तो करीब-करीब बेहोश हो गये।

एक मुहूर्त में ही आये हुए लोग कमरे में घुस गये। साथ में वहाब!

सभी ने आने वाले लोगों को पहचान लिया। अरे यह तो पुलिस वाले नहीं। ये तो उन्हीं के मुहल्ले के पाँच नौजवान हैं जो हिन्दू शिकार में गये थे।

कमरे के बीच की रुकी हुई हवा जैसे एकाएक साफ हो गई। सब की साँस फिर स्वाभाविक हो गई। सभी व्यक्ति यह दिखाने की चेष्टा करने लगे कि जो डरा भी हो, वह नहीं डरा है।

फिर भी जिस प्रकार से ये लोग आये थे, उसमें भी कुछ डर की बात थी। अरे आये तो चुपचाप आते। इस तरह दौड़ते हुए हड़बड़ाकर आने की क्या जरूरत थी। यासीन जैसे इन्हीं विचारों का अनुवाद-कर आगन्तुकों में से एक से कहा—निसार इस तरह आने की क्या मानी है?

उसकी बातों में कुछ नाराजगी थी।

अब कोई कुर्सी खाली नहीं थी, इसलिये कोने में रक्खे हुए तख्त के ऊपर बैठते हुए निसार नाम से सम्बोधित व्यक्ति ने गहरी साँस लेते हुए कहा—आज खूब बचे, नहीं तो बिलकुल खतम थे......

किसी ने हाँ ना कुछ नहीं कहा। एक दम निस्तब्धता थी। तख्त के नीचे से एक दबी हुई कराहने की आवाज़ आ रही थी; जैसे कोई मृत्यु-यन्त्रणा पा रहा हो। जैसे मृत्यु के किनारे खड़ा होकर कोई जीवन को अंतिम बार के लिये प्रलुब्ध दृष्टि से देखकर अंतिम साँस ले रहा हो। तख्त के ऊपर बैठे हुए निसार तथा उसके साथीगण एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

यासीन ने कहा—वह कुछ नहीं, अपनी कहानी कहो......

निसार ने शुरू किया—हम लोग हिन्दू पकड़ने के लिये चौमुहानी पर खड़े थे कि शायद उधर से कोई गाँव वाला हिन्दू गुजरे तो उसे पकड़ लें। बड़ी देर तक इन्तजारी के बाद एक आदमी उधर की सड़क से आता हुआ दिखाई पड़ा। पास आने पर गौर से देखा तो हिन्दू ही मालूम हुआ। बस हम लोग उस पर झपट पड़े, पर वह आदमी शायद इसलिये तैयार था, ज्योंही हम लोग उस पर झपटे त्यों ही उसने बाघनख निकालकर हम पर हमला किया।

—बाघनख ?—यासीन के पास बैठे हुए नये वकील साहब ने पूछा।

—हाँ-हाँ बाघनख। बाघनख एक तरह का हथियार है, हाथ में पहना जाता है, इससे दुश्मन की अंतड़ियाँ बात-की-बात में निकल सकती हैं।

वह बंगाली मुसलमान छोकरा जिसने यासीन को सफेद झूठ कहकर डाँटा था, बोला—इसी बाघनख से मरदूद शिवाजी ने अफजल खाँ को मारा था।

निसार ने कहा—हाँ-हाँ वही बाघनख। वह आदमी बाघनख निकालकर हम पर झपट पड़ा, और उसके साथ-साथ जोरों से चीखने लगा, मार डाला, दौड़ो वग़ैरह। आप जानते ही हैं कि मौक़ा बहुत खराब है, वहीं से हिन्दुओं का मुहल्ला शुरू होता है। बस हम वहाँ एक मिनट भी नहीं रुके, और भागते-भागते यहाँ पर आ पहुँचे।

यासीन ने कहा—क्या कहते हो जी, भागते-भागते यहाँ आये? वह जगह तो यहाँ से कोई मील भर दूर है।

—है तो जरूर, पर जान तो सस्ती नहीं है। वे अगर हमारे पीछे-पीछे दौड़ते तो मामला ही खतम था। यह देखिये बाघनख से हमारे अचकन की पीठ की क्या हालत हुई है—निसार ने मुँह घुमाकर पीठ दिखला दी।

यासीन ने अर्धस्फुट स्वर में कहा—बड़े बहादुर हो।

निसार के कान तक लाल पड़ गये। गुस्से से काँपते हुए उसने कहा—यह तो आप कहेंगे ही बड़े आदमी हैं। शाम से जान हथेली पर रखकर हम लोगों ने इतने हिन्दुओं को मार डाला और हम हुए कायर, और आप लोग यहाँ मजे में बैठे हैं, आप बहादुर हो गये। क्यों मौलाना जफरुल मुल्क की मौत का बदला लेना यह आपका भी तो काम है। या हम ही पाँच दोस्त मुसलमान हैं। आप लोग हमारी तरफ़ से म्युनिसिपलिटी और कौंसिल में जायेंगे, और हम फाँसी और काले पानी पायेंगे।

यासीन इस बात को समझ गया कि इस तरह निसार को बहादुर कहकर व्यंग करना ठीक नहीं हुआ, विशेषकर जब कि उसके कमरे के तख्त के नीचे एक लाश रक्खी हुई है। उसने नम्र स्वर में कहा—अजी इतने नाराज क्यों होते हो? क्या हम नहीं जानते कि तुम लोग न होते तो आज हमारा काम कभी न हो पाता। इसलिये तुमको हजारों शुक्रिया हैं। इस्लाम तुम्हारी तरह नौजवानों के बूते पर जीता

है, पर यह न सोचना कि हम लोग बिलकुल बैठे ही हैं। इसके अलावा इस बात को न भूलो कि तुम्हें अगर फाँसी हो तो हमें भी फाँसी होगी।

ऊपर से तो यासीन ने ऐसी चिकनी-चुपड़ी कही, पर मन ही मन वह कुढ़ गया कि इस कसाई लड़के की इतनी हिम्मत है कि वह आज मुँह पर तड़-तड़कर जवाब दे रहा है। अच्छी बात है बाद को देख लिया जायगा। जरा मौका आवे तो सही।

फिर भी उसी समय इस बेअदब छोकरे को अपनी बहादुरी का एक मिसाल देने का लोभ सम्बरण न कर सका। उसने गुस्ताखी से पुकारा—वहाब ! वहाब !

—हुजूर—पुकारने के साथ ही साथ वहाब ने जवाब दिया।

—वह लाश कहाँ है ?

वहाब फर्माबरदार नौकर है। मालिक का नमक खाता है, फिर भी जानकर अनजान बनने की एक हद होती है। उसने भौहें तान ली, उसका हृदय घृणा से पूरित हो रहा था, पर फिर भी बोला—हुजूर तख्त के नीचे······

—क्यों ? तख्त के नीचे क्यों ?—जानकर अनजान बनते हुए यासीन ने कहा।

वहाब इस प्रश्न से सचमुच नाखुश हुआ, पर मालिक की कमजोरी से वह परिचित था, वह समझ गया। बोला—जब ये लोग आये—उसने हाथ से निसार और उसके साथियों को दिखलाकर कहा—तो मैंने लाश को तख्त के नीचे ढकेल दिया।

—क्यों ?

—मैंने समझा कि पुलिस आ गई।

—तुमको किसी ने कहा तो नहीं था कि वहाँ छिपा दो, फिर ?

—नहीं हुजूर, किसी ने नहीं कहा था।

—फिर क्यों ?

—हमारी गलती है। मैं डर गया था—बिलकुल अभिनय करने के सुर में वहाब ने कहा। वहाब जानता था कि गरीबों के लिये यही उचित है कि वह बड़े आदमियों की हाँ में हाँ मिलाया करे। उसीमें उनका फायदा है। मन ही मन वह बड़े आदमियों से घृणा करता था, पर ठोकर खा-खाकर उसने यह सबक सीखा था कि बड़े आदमियों की खुशामद में ही आमद है। और फिर बात का ही तो जमा-खर्च है। कौन डर गया था और कौन नहीं, यह तो उसे बखूबी मालूम था।

यासीन के बगल में बैठे हुए वह वकील साहब जिनको दरवाजा खुलते समय गश आ रहा था इस समय बहुत मजे के साथ मुस्कराकर बोले—ये लोग जाहिल हैं, जल्दी में डर जाते हैं, बात यह है कानून तो जानते नहीं।

वहाब ने वकील साहब को रुष्ट-दृष्टि से देखा, पर कुछ कहा नहीं। यासीन इस मामले को और आगे नहीं बढ़ाना चाहता था। वह चाहता था कि किसी तरह घर से लाश निकले। उसने वहाब से कहा—इसे निकालो।······

वहाब ने बिना कुछ कहे तख्त के ऊपर बैठे हुए निसार और उनके साथियों को आँख के इशारे से उठ जाने के लिए कहा।

निसार और उनके दोस्त उठ खड़े हुए, और बैठने को अन्य कोई जगह न होने के कारण खड़े-खड़े देखने लगे कि वहाब क्या कर रहा है।

निसार और उनके दोस्तों को खड़े रहते हुए देखकर यासीन ने वहाब से कहा—क्यों ये लोग बैठ न जायँ, तुमने तो तख्त को बिना उठाये ही लाश को उसके नीचे रख दिया था।

वहाब ने तख्त को उठाकर एकदम खड़ा करते हुए कहा—ऐसा नहीं हो सकता हुजूर, रखते वक्त मैंने जैसे-तैसे करके जबर्दस्ती इसे तख्त के नीचे ढकेल दिया था, पर निकालते वक्त वैसा नहीं हो सकता।

कहते-कहते ही उसने लाश को उठाकर पहले की जगह पर रख दिया।

अभी तक साँस बाकी थी, पर तख्त के नीचे ढकेलते समय कुछ-कुछ कपड़ा फट जाने से और कहीं-कहीं से छिल जाने के कारण अब पहले से वीभत्स मालूम होता था।

यासीन ने खून देखकर कहा—वहाब !

—हुजूर।

—इसे ले जाओ।

वहाब कैदी की ओर बढ़ा।

अकस्मात् बिजली की तरह यासीन के दिमाग में बात आयी। उसने खड़ा होकर वहाब को रुकने के लिये कहा, और इशारे से शौकत को बुलाया। फिर शौकत को तख्त के पास ले जाकर कान में कहा—तो यह सब झगड़ा खतम होने पर जोहरा के साथ हमारी ठीक रही न !

शौकत आश्चर्य में रह गया। ऐसी अवस्था में कोई शादी की बात सोच सकता था, इससे उसे आश्चर्य हुआ। इसके अतिरिक्त वह जोहरा की हालत देख आया था। उसने दृढ़ता के साथ कहा—नहीं......

यासीन ने आँखें लाल-पीलीकर उसकी तरफ देखा और धमकी के सुर में कहा—अच्छा—और अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

शौकत ने एक मुहूर्त तक कुछ सोचा। कहीं पर उसे जरा

अफसोस हो रहा था। ओह इस दुष्ट ने सारा षडयन्त्र इसी उद्देश्य से किया था इस्लाम के पवित्र नाम पर। पर अब लौटने का रास्ता नहीं था। अन्त तक इस तमाशा को देखना ही था। वह धम से कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

यासीन ने कहा—देखो तो वहाब ये जिन्दा भी हैं।

अच्छी तरह बिना देखे वहाब बोला—जिन्दा हैं।

—तो मुँह खोल दो, हाथ खोल दो, पानी का छींटा देकर होश में लाओ।

—पर हुजूर—वहाब ने प्रतिवाद के सुर में कहा—इतनी दूर आकर लौटा नहीं जा सकता।

नये वकील ने बीच में ही बात काटकर कहा—वाह यह आदमी कानून तो खूब समझता है, किडनैपिंग, अटैम्पट टू मर्डर...

प्रायः धमकी के सुर में यासीन ने कहा—रुकिये जनाब, वहाब जो काम तुमसे बताया गया है उसे करो।

—पर इसमें हम सब लोगों की सेफ्टी-इनवाल्वड है, इसे अब छोड़ा नहीं जा सकता।

यासीन का चेहरा पहले क्रोध से लाल और फिर पीला पड़ गया। आज उसे इस ब्रीफहीन वकील की भी बातें सुननी पड़ी। आज इन सबों को न मालूम क्या हो गया है। सभी भूल गये हैं कि समाज में उनका क्या स्थान है। यासीन के मन में कुछ अफसोस हुआ। पर इस समय अधिक सोचने का मौका नहीं था।

यासीन ने जरा रुखाई से कहा—सोच न करिये—आज आप की सेफ्टी और हमारी सेफ्टी अलग नहीं है। यह न भूलिये कि सभी बातें मेरे यहाँ हो रही हैं। आप कानून तो अच्छी तरह जानते होंगे।

यासीन की जीभ पर ये बातें आयी थीं—आपकी सेफ्टी में क्या

धरा है ? आपके पास क्या है ? किराये के मकान में तो आप रहते हैं। मेरी सेफ़्टी माने लाखों रुपये, कुलमर्यादा, एक पुराने खानदान की आफ़त—पर उसने मुँह खोलकर कुछ कहा नहीं। यासीन ने वहाब को फिर से पुकारकर कहा, वहाब जैसा मैंने कहा, वैसा करो......

वहाब ने जल्दी में कैदी के मुँह में ठूँसे हुए कपड़े को खोल दिया। एक क्षीण कराहने की आवाज सुनाई पड़ी, मानों इतनी देर में कैदी ने अच्छी तरह साँस ली। पर कैदी होश में नहीं था। वहाब ने इसके बाद कैदी की कमर के ऊपर को सब रस्सियों को खोल दिया। फिर एक बँधने में पानी लाकर धीरे-धीरे मुँह में छींटा देने लगा। साँस और भी ठीक से चलने लगी। पर कैदी की आँखें नहीं खुलीं।

यासीन ने कलाई की घड़ी की तरफ़ ताककर कहा—मालूम होता है कि बेहोशी दूर न होगी।

—होगी—वहाब ने विशेषज्ञ की तरह कहा—कहीं पर कोई ऐसी चोट तो नहीं आई, सिर्फ़ बेहोशी है।

वहाब फिर पानी का छींटा देने लगा। फिर मौका देखकर उसने कैदी के मुँह में पानी डाला। कुछ पानी भीतर गया, कुछ निकल आया। एक दीर्घ कराहने की आवाज आई। सब डर गये। यासीन भी समझा कि काम ठीक नहीं हो रहा है, कहीं कोई बाहर से सुन ले तो। मुहल्ले के लोगों से खैर कोई डर नहीं। वे तो सभी मुसलमान हैं। इस छोटे से पाकिस्तान के अन्दर एक भी सख़्स ऐसा न होगा जो एक काफ़िर पर किये गये जुल्म का विरोध करे। फिर भी सावधानी अच्छी होती है।

वहाब एक चतुर नर्स की तरह राजीव के मुँह पर पानी का छींटा देने लगा, और बीच-बीच में उसे एक घूँट पानी पिलाने लगा। सब की दृष्टि कैदी के चेहरे पर लगी हुई थी।

निसार के साथ के छोकरे ने जिसके चेहरे पर अभी दाढ़ी

की रेखमात्र आई थी कहा—खूब साले को मुसलमानी पानी पिलाओ......

कोई भी बातों को सुनकर हँसा नहीं। किसी की भी मानसिक परिस्थिति हँसने लायक नहीं थी। सबने एकबार उस छोकरे की तरफ नाराजी से देखा। यासीन ने आग्नेय नेत्र से उसको घूरा, इसलिये नहीं कि राजीव के प्रति उसके मन में कोई ममता अकस्मात् जाग उठी थी, बल्कि इसलिये कि इस सख्स ने यह भुला दिया था कि वह जुलाहा है और उसके सामने बैठकर इस प्रकार आँयबाँयसाँय बक रहा है। इसके पहले यह इस मकान के पास भी नहीं फटक सकता था, और बाबू बनकर बैठकर गुस्ताखियाँ कर रहा है।

वह छोकरा समझ गया कि किसी ने उसकी बात पसन्द नहीं की। तरुणता से कोमल उसका चेहरा अकस्मात् कुम्हला गया। उसने किसी के साथ आँख नहीं मिलाई।

वहाब की कोशिश से आखिर राजीव ने आँख खोल दी, पर खोलकर ही फिर बन्द कर दिया। उसके तरुण चेहरे पर सीमाहीन थकावट का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था।

वहाब ने फिर तीमारदारी शुरू की। फिर पानी दिया। अबकी बार राजीव ने मजे में कई घूँट पानी पिये। फिर उसने आँख खोली। बड़ी देर तक वह हतबुद्धि की तरह छत की ओर देखने लगा। फिर हाथ फैलाया, पर पैर फैलाने गया तो देखा पैर बँधे हैं। उसके चेहरे पर फिर बादल से छा गये......। ऐसा मालूम हुआ कि फिर बेहोशी आयेगी। वहाब ने जल्दी से एक गिलास में पानी डाला और पास ही एक ताक से एक बोतल निकालकर उसमें से अन्दाज से कुछ बूँदें उसमें डाल दी। उसके बाद उसने गिलास को राजीव के मुँह से लगा दिया। बोतल को देखकर उपस्थित सब लोग एक दूसरे का मुँह देखने लगे। यासीन जैसे कुछ शर्मा गया। उसने अर्धस्फुट स्वर से कहा—

कुछ नहीं दना है।—कहीं पर एक अत्यन्त दबी हुई हँसी एकाएक जलकर ही बुझ गई। यासीन ने सिर नीचा कर लिया।

राजीव एक मुहूर्त के लिये झिझका, पर जल्दी ही पहचान गया ब्राण्डी है। उसने हाथ से गिलास को पकड़कर सब पानी पी लिया।

दो मिनट के अन्दर ही उसके चेहरे का स्वाभाविक भाव लौट आया। एक बार उसे इच्छा हुई कि वह कहाँ है, पर उसे कुछ पूछने की प्रवृत्ति नहीं हुई। उसका जीवन जैसे अन्दर ही से कुछ गँदला हो गया था, कुछ साफ सूझ नहीं रहा था। उसने स्मरण करने की कोशिश की कि किन परिस्थितियों में वह पकड़ गया था। उसके कानों में बराबर शौकत की वे बातें गूँज रही थीं—बहिन के साथ साजिस करके ही इस काफिर को इतनी रात तक रोक रक्खा गया था......

राजीव को जैसे कुछ नींद-सी मालूम हो रही थी। ऐसी नींद जिसके विरुद्ध वह प्रतिरोध करना नहीं चाहता था। यदि यह नींद न टूटे तो कोई हर्ज नहीं।

यासीन का इशारा पाकर वहाब ने कई एक बड़े गावतकिये के सहारे राजीव को बैठा दिया। राजीव ने आँख खोलकर सामने की ओर देखा। वह सामने वह आदमी ही तो बैठा था जिसने पहले-पहल हमला कर दिया था। वह उसके कई साथी हैं। वह शौकत है......, हाँ शौकत ही तो है। क्या यहाँ जोहरा भी है? उसकी आँखें एकबार पूरे कमरे के लोगों को देख गईं। नहीं, वह यहाँ नहीं है। उसे जैसे कुछ शान्ति मिली तो क्या? कौन जाने? उसकी दृष्टि आकर घूम-फिरकर शौकत के चेहरे पर स्थिर हो गई। यह सख्स सब रहस्य जानता है। कितना भयंकर विश्वासघात है! वह क्या सोचकर आज जोहरा के पास आया था, और क्या हुआ? ओह! दिन दो बजे जफरुल मुल्क मारे गये थे। कहाँ जोहरा ने तो इस बात का उसे इशारा भी नहीं दिया था। एकबार भी नहीं। अब उसे कुछ सोचने की इच्छा नहीं हो

रही थी। दोनों पैर अकड़े हुए थे। हिलाये नहीं जा सकते। ये लोग उससे क्या चाहते हैं? क्यों पैर बाँध रक्खा है? कौन जाने? और सोचा नहीं जा सकता। यह सब स्वप्न है? हाँ ऐसा ही हो। ओह जोहरा ऐसी है? असम्भव।

५

राजीव ने आँखें बन्द कर लीं।

वहाब ने अबकी बार एक गिलास पानी में कुछ अधिक ब्रांडी मिलाकर देते हुए कहा – पीजिये।

राजीव ने यन्त्रचालित की तरह आँख खोल दी, और गिलास को हाथ में लेकर ढक-ढककर पी गया। उसके बाद उसकी आँखें खुली ही रह गई! अकस्मात् उसने किसी खास व्यक्ति को सम्बोधित न करके कहा—मैं कहाँ हूँ?

—तुम मुसलमानों के हाथों में हो—यासीन ने सबकी तरफ देखते हुए कहा।

—यह तो देख रहा हूँ, पर तुम लोग मुझसे क्या चाहते हो?—राजीव की बात में नाराजगी के साथ ही असहायता थी।

यासीन के कुछ कहने के पहले ही एकाएक निसार बोल उठा—हम लोग मौलाना की मौत का बदला लेना चाहते हैं......

राजीव ने कंठस्वर का अनुसरणकर देख लिया कि कौन बोल रहा है। अच्छा कोमल-सा चेहरा है, सिर्फ बुद्धि का विकास नहीं हुआ। राजीव ने लम्बी साँस ली। उसके ललाट में दुश्चिन्ता की

रेखायें दृष्टिगोचर हुईं, बोला—मैंने तो मौलाना का खून नहीं किया—उसका स्वर अबकी बार बहुत स्पष्ट और दृढ़ था, पर उत्तर देकर ही वह समझ गया कि यहाँ इन सब बातों का कोई मूल्य नहीं होगा। उसका चेहरा फिर एक नामहीन शिथिलता से अभिभूत हुआ।

निसार ने गुस्ताखी के साथ कहा—यह सब कुछ नहीं, हरेक हिन्दू बच्चा उनकी कत्ल के लिये जिम्मेदार है।

निसार का सुन्दर तरुण चेहरा बहुत अजीब मालूम हुआ। उसने आज शाम से सत्रह-अट्ठारह हिन्दुओं के मारने में हिस्सा लिया था, पर क्या उसके चेहरे पर कहीं भी अपराध का कोई चिन्ह था? नहीं था। ऐसे ही उपदानों से धार्मिक शहीद बनते हैं।

राजीव क्या कहेगा कुछ समझ न पाया। दोनों पैरों में बड़ी तकलीफ हो रही थी। उसने पैर हिलाने की चेष्टा की, पर पैर हिला न सका। कुछ नाराज होकर जैसे नाव के डाँड़ों को डुबाकर तूफान के सामने आत्म-समर्पण करते हुए उसने कहा—तो फिर देरी क्यों, हमें खतम कर दिया जाय।

कहकर ही उसने आँखें बन्द कर लीं। उसकी भावना यह थी कि जो होना हो हो जाय, मैं अब इसमें नहीं पड़ता। उसकी एक पसली में जोर का दर्द हो रहा था। बदन कई जगह से छिल गया था और खून निकला था। वे जगहें जल रही थीं। पर सबसे अधिक दर्द पैरों में हो रहा था, जैसे किसी ने पैरों को तोड़कर रख दिया हो। और कुछ देर पहले ही वह जोहरा के सामने बहुत स्वस्थ और सुखी बैठा था। और अब मालूम हो रहा था कि उसके बाद युग चले गये।

यासीन ने निसार को चुप रहने के लिये कहकर कैदी से कहा—बाबूजी......मि० राय।

राजीव जैसे स्वप्न लोक से उतर आया, आँख खोलकर बोला—क्या किसीने मुझे पुकारा?

—हाँ—यासीन ने कहा—मैं आपसे कुछ जरूरी बातें पूछना चाहता हूँ।

सभी लोगों ने कान खड़े कर लिये कि क्या मामला है। शौकत का हृदय धड़कने लगा। उसकी सहजात बुद्धि ने उसे बता दिया कि यासीन कोई न कोई शरारत की बात करेगा। उसने जल्दी से कलाई की घड़ी की ओर देखकर कहा—रात बहुत हो गई, अब फजूल बातों से कुछ आना-जाना नहीं है। उधर शायद पुलिस आ रही हो, जो कुछ करना हो फौरन कर डाला जाय।

नये वकील साहब ने जो राजीव की आँख खुलने के बाद से इस तरह से मुँह ढापे हुए थे कि राजीव उसे पहचान न सके शौकत का समर्थन करते हुए कहा—हाँ सब काम जल्दी कर डाला जाय, ज्यादा तूल की जरूरत नहीं है।

राजीव अपने सम्बन्ध में अपने जीवन के इस समय के हर्ताकर्ता विधाताओं की बातें सुन रहा था, पर वह समझ नहीं पा रहा था कि लोग किस काम का उल्लेख कर रहे हैं। शौकत किस काम के लिये कह रहा है कि जल्दी कर डाला जाय। रहस्य, सब रहस्य में आवृत है। वे उसके साथ क्या करना चाहते हैं? क्या वे उसे मार डालना चाहते हैं? यदि ऐसा करना था तो वे उसे होश में क्यों लाये? उसे शान्तिपूर्वक मर जाने क्यों नहीं दिया? और अगर छोड़ ही देना चाहते हैं, तो दोनों पैरों को बाँध क्यों रक्खा है? ओह पैरों को हालत बहुत खराब हो रही है······

नये वकील की बात सुनकर यासीन बहुत नाराज हो गया, पर अपनी भावना को जहाँ तक हो सके गुप्त रखकर विशेष किसी को सम्बोधित न करते हुए उसने कहा—जिनको देरी हो रही है वे चले जा सकते हैं। वहाब बड़ी मुस्तैदी से उन्हें मकान के बाहर छोड़ आयेगा—फिर जरा नरम होकर बोला—देखिये मैं किसी सख्स को ख्वाम-

ख्वाह मार डालने के हक में नहीं। मान लीजिये कि अगर उसने इस्लाम कबूल कर लिया है, या करने वाला है, तो मैं उसे मार डालने के हक में नहीं हूँ। मुसलमान मुसलमान का खून नहीं बहा सकता।

सब चुप हो गये। कोई बाहर नहीं गया।

यासीन ने राजीव को पुकारकर कहा—मि॰ राय······

राजीव ने बड़ी-बड़ी आँखें खोलकर करीब-करीब निस्पृहता के साथ कहा—कहिये······

—हम लोग आप को कत्ल करना नहीं चाहते। हम जानवर नहीं हैं—यासीन ने कहा।

राजीव के अंदर जीने की प्रायः बुझी हुई इच्छा फिर से जग उठी। उसने अपनी चारों तरफ सजीवता के साथ एक बार ताककर कहा—मैं भी मरने के लिये ख्वाहिशमन्द नहीं हूँ।

—अच्छी बात है तो आप कुछ सवालों का ठीक-ठीक जवाब दीजिये। जवाब से अगर हम लोगों को खुशी हो गई तो हम जरूर ही आपको रिहा कर देंगे।

उपस्थित सभी एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। यह यासीन क्या कह रहा है। हाँ रिहा कर दिया जाय, और यह जाकर एक तरफ से सबको पकड़ा दे। यह भी कभी हो सकता है? यासीन की अक्ल पर पत्थर पड़ गया। उसीके उसकाने पर यह सब झंझट खड़ा हुआ। नहीं तो कौन मौलाना है और कौन नहीं, इससे उनका क्या आता-जाता था? वे बाल-बच्चेदार आदमी हैं। यासीन को क्या है इसका अपना तो कोई है ही नहीं। जायगा तो क्या जायगा? पर उसने जिस तरह से लोगों को दरवाजा दिखा दिया, उसके बाद उसे कुछ कहना सम्भव नहीं। अंत तक देखना ही पड़ेगा कि क्या होता है। इतने आदमियों में से अकेला उठकर चले जाकर कोई नक्कू बनने का साहस नहीं

करता था। मनुष्य सभी बातें स्वीकार कर सकता है, पर अपने को कभी कायर स्वीकार नहीं कर सकता। इसीलिये सब बैठे रह गये।

यासीन जैसे कुछ देर के लिये सोच-विचार में पड़ गया, फिर उसने एकाएक पूछा—मि० राय, क्या जोहरा से आपकी शादी तय हो चुकी है?

सभी यह प्रश्न सुनकर भौंचक्का रह गये। किसी ने भी इस प्रश्न की आशा नहीं की थी। सब कौतूहल से उत्कर्ण हो गये मानो कोई नाटक हो रहा हो। हरेक व्यक्ति भूल गया कि इस नाटक में वह स्वयं एक ऐसा पार्ट अदा कर रहा है जो अत्यन्त विपत्तिपूर्ण है। सिर्फ शौकत कुछ हिलकर बैठा। उसके चेहरे पर भी कौतूहल था पर साथ ही साथ क्रोध और भय भी था; वह स्वयं ही नहीं जानता था कि राजीव और जोहरा का सम्बन्ध कहाँ तक बढ़ चुका है।

राजीव भी प्रश्न सुनकर बहुत आश्चर्य में पड़ गया। पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

—मि० राय, इस सवाल के जवाब पर आपकी जिन्दगी मुनहसर है यह समझकर इस सवाल का जवाब दीजिये।—यासीन ने बहुत स्पष्ट स्वर में इन बातों को कहा।

शौकत के चेहरे पर आतंक घनीभूत होकर फैल गया। उसकी जीभ की नोंक पर कुछ बातें आयीं, पर उसने कुछ कहने का साहस नहीं किया।

राजीव ने अबकी बार बात की, कहा—आप लोग हमारी बात पर इतबार क्यों करने लगे?

—इतबार करने के लिये मजबूर हैं—यासीन ने कहा—इस मामले में आप जो कुछ कहेंगे उस पर हम इतबार करने के लिये मजबूर हैं।

कुछ नाराजगी और कुछ निराशा से राजीव ने कहा—आप किसी बात के लिये भी मजबूर नहीं हैं—और मुँह फेर लिया।

शौकत की जान में जान आई। बाकी सब एक उत्तेजना की आशा कर रहे थे, वे निराश हुए।

यासीन ने फिर भी हार नहीं मानी। अंतिम बार की तरह कहा—हाँ या ना कुछ कह दीजिये, शायद उससे आपको कुछ फायदा हो।

—नहीं—अकस्मात् राजीव ने कहा।

सबने फिर कान खड़े कर लिये। नाटक फिर दिलचस्प हो गया।

—नहीं के माने यह है कि आप कुछ कहना नहीं चाहते—यासीन ने निराशा के साहस में कहा—आप जरूर ही एक शरीफ औरत को बचाने के लिये ऐसी बात कह रहे हैं।......

अकस्मात् राजीव उत्तेजित हो गया। उसने मजबूती के साथ बँधे हुए पैरों को एकबार खींचा। शायद उठने की चेष्टा की, पर सफल नहीं हुआ। दोनों पैरों को इस प्रकार खींचने के कारण शायद वहीं पर कुछ दर्द मालूम हुआ। चेहरे पर दर्द की छाप आ गई, फिर भी उसने कहा—नहीं, नहीं, नहीं, एक सौबार नहीं। मुझसे किसी से शादी का वादा नहीं हुआ। मुझे किसी शरीफ औरत को बचाना नहीं है। क्यों बचावें? सुना तो आपने कि मुझे साजिशकर पकड़ाया गया। नहीं, नहीं, मैं किसी को बचा नहीं रहा हूँ।......

राजीव ने इन बातों को इतनी अधिक उत्तेजना में कहा कि कहते ही कहते वह थक गया।

शौकत ने विजय के गर्व से यासीन की तरफ देखा। यासीन के चेहरे पर जैसे किसी ने एकाएक कालिख लगा दी। पर हारे हुए जुवाड़ी की तरह उसने अपनी हार मानने से इनकार किया। उसका सिर भन्नाने लगा। बिना सोचे-समझे ही वह प्रश्न कर बैठा—मि० राय, और एक सवाल है, क्या आप मुकद्दस इस्लाम को कबूल करेंगे? तब आपकी जान बच सकती है......

जरा भी बिना सोचे राजीव ने शान्त तरीके से कहा—नहीं......

—क्यों ?

—मैं किसी भी मजहब में यकीन नहीं करता—उसी प्रकार शान्ति से राजीव ने कहा।

—आप महम्मत सले अल्ला अले वसल्लम को खुदा का भेजा हुआ नहीं मानेंगे ?

—मैं खुदा को ही नहीं मानता, तो खुदा का भेजा हुआ कैसा—दीप्त स्पष्ट शब्दों में राजीव बोला।

उपस्थित सबका चेहरा गम्भीर हो गया। अन्तिम प्रश्नों का जो उत्तर राजीव ने दिये, उनसे उपस्थित सबका विवेक सन्तुष्ट हो गया कि अब यदि राजीव को मार डाला जाय तो कोई हर्ज नहीं।

राजीव धीर दृष्टि से लोगों को देख रहा था। क्या उसके मनमें उनके प्रति अनुकम्पा पैदा हो रही थी ? कौन जानता है ? कम से कम इस दृष्टि में इसके प्रति कोई विद्वेष नहीं था। हाँ कु॰ घृणा थी।

सभी चुप थे।

आँधी के पहले की गुमसुम की तरह।

यासीन ने इस कष्टकर चुप्पी को भंग करते हुए पुकारा—वहाब !

—हुजूर।

अल्लाह हम लोगों के गवाह हैं, हमने इस गरीब की जान बचाने की सब मुमकिन कोशिशें कीं, कोई बात उठा नहीं रक्खी, पर बेअकली के मारे इसने एक भी बात नहीं मानी, ...मानो इसके बाद उपसंहार के रूप में जो कुछ कहने जा रहा था उसकी भयानकता से डरकर यासीन यहां पर रुक गया।

वहाब ने बिना कुछ समझे ही कहा—जी हुजूर......

कुछ कोशिश करने के बाद यासीन मुद्दा पर आया, बोला—तुम इसे बाँध डालो, और वहाँ ले जाकर कब्र दे दो। निसार तुम्हें मदद देगा।

राजीव के चेहरे पर एक विशाल निराशा, पराजय और शायद आतंक की रेखा उठकर विलीन हो गई। जैसे कुछ कहना चाहा पर नहीं कहा। आँख बन्दकर वह घात की प्रतीक्षा करने लगा।

निसार उठ खड़ा हुआ, पर उसे रोकते हुए वहाब ने कहा—हुजूर मैं किसी की मदद नहीं चाहता, सब कर लूँगा······

—तुम अकेला सब कर लोगे ?

—हाँ हुजूर।

—अच्छी बात है, ऐसे कामों में जितने कम लोग हों उतना ही अच्छा है—वहाब की तरफ प्रशंसा की दृष्टि से, जैसे शिकारी अपने कुत्ते की तरफ देखता है, उस दृष्टि से देखते हुए यासीन ने कहा।

वहाब राजीव की तरफ आगे बढ़ा, और अकस्मात् न मालूम किस चीज से उसने राजीव के सिर पर वजन करके एक हाथ मारा कि राजीव फौरन बेहोश हो गया। तकिया के सहारे रक्खा हुआ उसका सिर जरा-सा टेढ़ा होकर नीचे की ओर झुक गया।

इसके बाद उसे बाँधने में कोई दिक्कत नहीं हुई। दो मिनट के अंदर ही सब काम तमाम हो गया, और वहाब अकेले ही राजीव को पीठ पर उठाकर कब्रिस्तान के लिये रवाना हो गया ?

बाकी सब लोग बिना कुछ कहे सुने अपने-अपने घर के लिये रवाना हो गये।

इस घटना के बाद क्या इन व्यक्तियों के मन में इस प्रकार की कोई आत्मतृप्ति थी कि इन्होंने धर्म की बड़ी भारी सेवा की है ? मालूम तो नहीं होता। निसार भी चिन्तित था। एक अजीबोगरीब नटखट

निष्फल अनुताप उसके बच्चे की तरह सरल मन के चौखट पर धक्का दे रहा था। वह जो कुछ चाहता था, वह उसे नहीं मिला था।

जिस समय निसार घर लौटा उस समय रात बहुत हो चुकी थी। कहीं दूर पर किसी घंटे में टन-टन कर बारह बजे।

असल में कई दिन से ही दंगा जारी था। पर भीतर ही भीतर। पर जिस दिन राजीव जोहरा के घर जाकर फिर नहीं लौटा, उस दिन दंगे ने अकस्मात् अत्यन्त उग्र रूप धारण कर लिया। मामूली तौर पर दंगे में जो लोग मारे जाते थे, वे थे सरल ग्रामवासी जो यह नहीं जानते थे कि इस समय शहर का क्या हाल है, अनजान में यदि वे एक टोकरी उपलों की या एक मटका दूध का शहर में बेचने के लिये लाये तो बेचते समय या बेचकर लौटते समय मार दिये जाते थे। इसके अलावा भिखमंगे, मजदूर, फेरीवाले भी एकाध मारे जा रहे थे। बुद्धिजीवी वर्ग के लोग अर्थात् क्लार्क, वकील, मैनेजर आदि कम मारे जा रहे थे। ऐसे लोग कब मारे जाते हैं जब किसी प्रकार की कोई जरूरी दवा लाने जाते हैं, तो पीछे से घातक की छुरी छप से बैठ गई, या लाठी पड़ गई। असली धनी तो इन मामलों में कभी नहीं मरते।

और दंगों में सबसे फायदे में ये ही लोग रहते हैं।

दंगा ठीक किसी बिन्दु पर शुरू हुआ यह नहीं कहा जा सकता। इस दंगे का सूत्रपात कहा जा सकता है उस दिन हुआ जिस दिन उस नये मकान की नींव रखने के सिलसिले में खोदते-खोदते वे कङ्काल निकल आये थे।

इसके बाद एक मनमुटाव चलता रहा। मौलाना जफ़रुलमुल्क की हत्या के पहले पाँच हिन्दू और चार मुसलमान इस दंगे के शिकार हो चुके थे। मौलाना को जिन लोगों ने मारा था, उन लोगों ने उनको आलिम जानकर नहीं मारा था, बल्कि लम्बी दाढ़ी देखकर ही मारा था।

राजीव जिस समय जोहरा के पास बैठकर गल्प तत्त्व की आलोचना कर रहा था, उस समय दंगे का रूप भीषण हो रहा था, पर राजीव उस सम्बन्ध में कुछ नहीं जान सका था। जोहरा के मकान के सामने उस दिन जो कई बार दौड़ने की आवाज मालूम हुई थी, वह आवाज़ और कुछ नहीं निसार के गिरोह के 'शिकार' मारकर लौटने की आवाज़ थी। निसार की तरह बहुत से लोग अपने-अपने मुहल्ले में अपने-अपने पाकिस्तान में इस प्रकार का शिकार मार रहे थे। केवल मुसलमान निसार ही नहीं। बहुत से हिन्दू निसार भी इसी प्रकार मुसलमानों के शिकार में लगे हुए थे। निसारों की कोई जाति नहीं हुआ करती वे हिन्दू भी होते हैं, और मुसलमान भी। ये जहाँ भी रहते हैं एक ही ढंग से काम करते हैं। ये लोग न तो फाँसी से डरते हैं, न कालेपानी से। इन लोगों की मौजूदगी उस जाति या सम्प्रदाय के पिछड़ेपन का प्रतीक है। ये लोग लड़ते हैं, पर इनकी लड़ाई से दूसरे लोग फ़ायदा उठाते हैं।

उस दिन रात दस बजे तक जब राजीव घर नहीं लौटा, तो रमेश चिन्तित हो गया। वह इसके पहले कई बार पुकारकर लौट गया था। वह किसी काम से नहीं आया था। योंही गप लड़ाने आया था। रमेश दंगा के सम्बन्ध में पूरी ख़बर रखता था। उसे मालूम था कि संध्या समय से दंगे ने उग्र रूप धारण किया है।

राजीव के घर से रमेश का घर एक फर्लाङ्ग से कुछ ऊपर था। रमेश का मकान ऐसी जगह पर था जिसे साम्प्रदायिक दंगों के समय

बिलकुल बेहतरा नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसके मकान के पाँच-छः मकान बाद ही मुसलमानी मुहल्ला शुरू होता था।

हिन्दू मुहल्ला और मुस्लिम मुहल्ले के बीच से एक सड़क चली गई थी। यह शायद ग्रैंड ट्रंक रोड थी। उसकी एक तरफ हिन्दुओं का पाकिस्तान था, और दूसरी तरफ मुसलमानों का पाकिस्तान था। जिन्न कल्पित पाकिस्तान से ये पाकिस्तान कहीं अधिक शुद्ध थे। जिन्ना के पाकिस्तान में हिन्दुओं के लिये स्थान है, पर इस पाकिस्तान में हिन्दू की क्या मजाल कि वह मकान खरीदे या दूकान खोले। हाँ शान्ति के दिनों में इधर के फेरी वाले उधर चले जाते हैं, और उधर के इधर आते हैं, पर रात के अँधेरे में वे भी अपने-अपने पाकिस्तान को छोड़कर जाने की हिम्मत नहीं करते, अर्थात् जाते हैं तो सड़क ही सड़क रहते हैं, गली में नहीं घुसते।

दस साल पहले जब दंगा हुआ था, उस समय तक ये मुहल्ले उतने शुद्ध पाकिस्तानी नहीं थे। न नेताओं ने खयाल किया, न अखबार वालों ने, पर लोक चक्षु के अंतराल में इन पाकिस्तानों की सृष्टि हो गई थी। यह सड़क जैसे दोनों सम्प्रदायों के बीच का मोर्चा था। जब लड़ाई होती है तो बन्द हो जाता है, जब शान्ति रहती है तो खुला रहता है।

दोनों पाकिस्तानों में आत्म-श्रेष्ठता की चेष्टा बराबर रहती है। विगत दंगे के समय मुसलमानों में कोई हलवाई नहीं था। दो-चार दुटपुंजिये रेवड़ी या सेवई बेचने वाले थे, पर अब विगत दस वर्षों में वे बड़े पेट वाले हलवाई हो गये हैं। अब उनकी दूकानों में सब तरह की मिठाइयाँ तथा नमकीन मिलते हैं। इधर कोई बड़ी दवा की दूकान नहीं थी, पर अब वह भी खुल गई है, और अच्छी चल रही है। ये ही लोग साम्प्रदायिक संस्थाओं के सबसे बड़े पृष्ठपोषक हैं। ये लोग दिल खोलकर साम्प्रदायिक संस्थाओं को चन्दा देते हैं। ये लोग

पाकिस्तान के सबसे बड़े समर्थक हैं। सच कहा जाय तो इनका पाकिस्तान आ चुका है। इनके बैंक की किताबों को देखा जाय तो यह बात समझ में आ जायगी।

उधर मुसलमान कसाइयों की कठिनता आ गई। दस साल पहले सारे शहर को गोश्त पहुँचाना उन्हीं के जिम्मे था, पर जब वह दंगा दो महीने से अधिक स्थायी हुआ तो हिन्दू मुहल्ले में न मालूम कहाँ से सिक्ख झटके वाले और हिन्दू चिकवे आ गये। जब वह दंगा खतम हो गया, फिर से शान्ति हो गई, तो मुसलमान कसाई फिर से हिन्दू मुहल्लों में अपनी दूकानों में पहुँचे, पर उनके पुराने ग्राहक अब नहीं लौटे। इस बीच में सिक्ख ग्रन्थी तथा हिन्दू शास्त्रियों ने फतवा दे दिया था कि जिबह करके जो गोश्त होता है उसे नहीं खाना चाहिये। नतीजा यह हुआ कि कसाई लोग अपनी दूकानों को बन्दकर भाग गये। ये भी साम्प्रदायिक संस्थाओं के पृष्ठपोषक हो गये।

इस प्रकार दो तरफ दो पाकिस्तान स्थापित हो गये, और साथ ही साथ पाकिस्तानी मनोवृत्ति बढ़ने लगी। हिन्दुओं में भी मुसलमानों में भी।

रात साढ़े दस बजे के समय रमेश राजीव के मकान के सामने चहलकदमी कर रहा था और सोच रहा था। उसने सोचा कि राजीव के इस प्रकार गायब हो जाने की बात पर डा० राय से सलाह की जाय, तो कैसा रहे। पर उसने सोचकर देखा कि इससे कुछ फायदा न होगा। झूठमूठ घर भर परेशान हो जायेंगे, फायदा कुछ भी न होगा। फिर भी दो एक बात जानना और जना देना जरूरी है।

रमेश सीधा राजीव का जो प्राइवेट नौकर था उसकी कोठरी की तरफ गया। यह कोठरी मकान से लगे छोटे से बाग के किनारे पर थी।

भीतर से किवाड़े बन्द थे।

कोई बत्ती नहीं जल रही थी। रमेश ने कान लगाकर देखा किसी प्रकार की आहट नहीं मिल रही थी। बिलकुल स्तब्ध।

उसने कोठरी के दरवाजे पर एक धक्का मारते हुए पुकारा—बैजनाथ......

कोई जवाब नहीं मिला।

—बैजनाथ, उठो जी।

अबकी बार उसने पहली बार से अधिक जोर से दरवाजे पर धक्का मारा।

—बैजनाथ।

भीतर कुछ आवाज सुनाई पड़ी। जैसे कोई किसी को जगा रहा था। इसके बाद दियासलाई जलने की आवाज हुई। डा० राय के सारे मकान में चारों तरफ बिजली की बत्तियाँ थीं। यहाँ तक की गेट और गैरेज में भी, पर बेजोड़ प्रभुसेवक बैजनाथ के यहाँ एक कुप्पी जलती थी।

रमेश ने देखा कि कोठरी के अन्दर कुप्पी जल चुकी है। ऊपर स्काईलाइट से होकर भरी हुई रोशनी की कुछ रेखायें आ रही थीं।

समय का मूल्य बहुत है, इसलिये रमेश ने जल्दी में पुकारा—बैजनाथ!

बैजनाथ ने कहा—कौन?

रमेश मन ही मन हँसा। अवश्य ही बैजनाथ ने उसकी आवाज पहचानी है। कितने वर्षों का सम्बन्ध है। फिर भी निश्चिन्त होने के लिये ही कि कहीं धोखे से कोई दाढ़ी वाला मुसलमान छुरा लेकर खड़ा न मिले, उसने यह पूछा था—कौन?

रमेश ने कहा—मैं रमेश हूँ।

फौरन दरवाजा खुल गया।

—बाबूजी सलाम—इतनी रात बीते भी मालिक के मित्र को सलाम देना जरूरी था।

—सलाम, बाबू कहाँ गये ?

—राजीव बाबू ?

—हाँ।

—नहीं मालूम, बाबू कुछ कह नहीं गये।

रमेश की आँखों में निराशा की एक झलक आई, और फिर वह समस्त मुखमंडल में व्याप्त हो गई।

बैजनाथ ने सहजात बुद्धिवश समझ लिया कि कुछ मामला जरूर है। अपनी धोती को ठीक से बाँधते हुए उसने कहा—कोई विपत्ति ?

रमेश ने उसके प्रश्न की परवाह न करते हुए कहा—जिस वक्त बाबू बाहर गये थे, उस वक्त तुम थे ?

—हाँ।

रमेश ने जैसे अकस्मात् कुछ रोशनी देखते हुए कहा—बाबू किस तरफ गये जानते हो ?

—हाँ, उस तरफ गये—कहकर उसने हाथ से एक दिशा दिखला दी।

—मुसलमानी मुहल्ले की तरफ ?

—हाँ, उसी तरफ।

रमेश एक मिनट के लिये भी नहीं रुका ? उसे जो दिशा दिखलाई गई थी, उस तरफ लपका हुआ चला गया।

पीछे से बैजनाथ ने पूछा—बाबू हम साथ चलें ?

—नहीं—कहकर रमेश चला गया।

बैजनाथ ने चारों ओर ताककर बड़बड़ाता हुआ कोठरी में जाकर

दरवाजा बन्द कर लिया, और अपने बिस्तरे पर लेट गया। पर कुप्पी नहीं बुझाई। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि कुप्पी को जलते रहने देना चाहिये। उसकी नवविवाहिता स्त्री कुप्पी बुझाने के लिये आगे बढ़ी, पर उसने अकारण धमकी देकर कहा—बाबू इतनी बड़ी विपत्ति में पड़े हैं, और तू एक पैसे के तेल के लिये……

असल में जब से उसने दंगे का नाम सुना था, तब से वह डर रहा था। पर अपनी स्त्री के पास अपनी इस कमजोरी को स्वीकार क्यों करे?

स्त्री गुड़ीमुड़ी होकर बिस्तरे पर अलग से लेट गई।

पर बैजनाथ का मन बातचीत के लिये व्याकुल हो रहा था। वह बाबू के गायब हो जाने के सम्बन्ध में अपनी थियोरी को कुछ बढ़ा-चढ़ाकर बताने के लिये लालायित हो रहा था।

अकस्मात् उसने कहा—बाबू गायब हो गये?

—कौन बाबू, छोटे या बड़े?

—बड़े क्यों गायब होने लगे, वे तो चौथेपन में पहुँच चुके हैं। हमारे छोटे बाबू गायब हुए हैं।

—भाग गये?

—भाग नहीं खाक गये—फिर थोड़ा रुककर आवाज धीमी करते हुए कहा—समझी, यह जो हमारे छोटे बाबू हैं देखने में ही इतने सीधे हैं, भीतर-भीतर डूबकर पानी पीते हैं। अवश्य बड़े आदमियों का यही तो लच्छन है। उस उमर में सभी बड़े आदमी एक-न-एक मामला करते हैं। बड़े आदमियों की ऐसी बातों से इज्जत बढ़ती है। यह जो हमारे बड़े बाबू हैं, यही एक जमाने में कौन कम थे? बाबा के पास सुना है कि एक मेम के साथ इनकी दोस्ती थी। माँ जी कुछ नहीं जानती थीं। जब छोटे बाबू बड़े हो गये, तभी बड़े बाबू ने वे सब ढंग

छोड़े।......छोटे बाबू तो अपने बाप से भी नम्बर मार ले गये। वे तो एक मुसलमानी पर आशिक हैं।

—मुसलमानी?—चौंककर बिलसिया कह उठी। मेम की बात पर वह नहीं चौंकी थी। मेम के साथ इश्क में शायद कुछ गौरव ही बढ़ता था। आखिर राजा की जाति की लड़की है, पर मुसलमानी का नाम सुनकर यह अनपढ़ स्त्री भी भौंचक्की रह गई।

—हाँ-हाँ मुसलमानी, पर बाबू के बंगाल की है। इन लोगों की बात कुछ समझ में नहीं आती। सिर्फ आमी-आमी और तुमी-तुमी कहते हैं। आमी माने मैं, और तुमी माने तुम। और बाबू ने इस मुसलमानी के पीछे हजारों रुपये फूँक दिये।—अंतिम बात बिलकुल झूठी थी। रवीन्द्र नाथ की दो एक किताबों के अतिरिक्त राजीव ने जोहरा को कभी कुछ नहीं दिया।

बिलसिया को जो कुछ आपत्ति थी वह मुसलमानी पर थी, हजार हजार रुपये फूँक दिये इस पर नहीं। प्यार करे और गहना-गुरिया न दे, साड़ी-ओढ़नी न दे, यह कैसा प्रेम है। बिलसिया के कोड में ऐसा कोई प्रेम नहीं हो सकता था।

उसने कहा—बहुत गहने बनवा दिये?

कई एक महीने से एक चाँदी के हमेल बनवा देने के सम्बन्ध में बिलसिया की जिद चल रही थी। बैजनाथ बराबर वादे करता था, पर होता जाता कुछ नहीं था। शायद इसी बात को यादकर बैजनाथ ने कहा—वाह बड़े आदमी गहना वगैरह नहीं दिया करते। धनियों में तो गहना पहनना उठता जा रहा है। सिर्फ रजील लोगों की स्त्रियाँ गहने की माँग करती हैं।

बिलसिया शिक्षित भले ही न हो, पर उसकी विषय-बुद्धि बहुत प्रखर थी। और सब तरह से सती-सावित्री होने पर भी वह इस मामले में जल्दी में धोखे में आने वाली नहीं थी। उसने तनकर कहा—तुमने तो अभी बताया बाबू ने हजारों फूँक दिये...

बैजनाथ के पास इसका कोई उत्तर नहीं था, बोला—वाह रुपये सिर्फ गहने में ही लगते हैं। बड़े आदमी किस-किस तरह से रुपये उड़ाते हैं, यह तू क्या जानेगी मूर्ख औरत......

उसने इससे अधिक कहना उचित न समझा। पति देवता है, स्त्री इससे अधिक क्यों जानना चाहेगी?

बिलसिया का सन्देह दूर नहीं हुआ, पर इसके आगे कुछ पूछने की उसे हिम्मत नहीं हुई। कुप्पी की रोशनी में बिलसिया के मुँह को देखकर कौन जाने क्यों बैजनाथ का दिल कुछ पिघला। उसने दया-पूर्वक कहा—मैं एकबार एक गुड़ की मटिया सिर पर लेकर बाबू के साथ गया था। बंगाली लोग खजूर का गुड़ बहुत पसन्द करते हैं न? बाबू के मुल्क से आया था।

बिलसिया का सन्देह कुछ घटा। वह यह जानता थोड़े ही था कि खजूर के गुड़ की मटिया किसे कहते हैं। उसने समझा शायद खजूर के गुड़ की मटिया हजारों रुपये हों। बैजनाथ ने अधिकतर आश्वासन देने के लिये कहा—एक दिन तुम्हें भी खजूर का गुड़ लाकर खिलाऊँगा......

बिलसिया चट से कह उठी—ना जी, मुझे खजूर के गुड़ की मटिया न चाहिये, इससे बल्कि चाँदी का हमेल बनवा दो। हमारे गाँव के बद्री सोनार ने कहा है कि सत्तह रुपये में ही हमारे खातिर बनवा देगा।

इसी प्रकार बात करते-करते दोनों सो गये। कुप्पी जागकर उन पर पहरा देने लगी, और जिस अन्धकार को विनाश करने के उद्देश से वह जलायी जा रही थी धुँवा छोड़कर उसी अंधकार के चरणों में अपना प्रणाम दे रही थी।

७

बैजनाथ से विदा होकर नाक की सीध चलने लगा। वह कुछ तय नहीं कर पा रहा था कि क्या करना चाहिये। अन्त में जब वह अपने घर पहुँचा, तो सीधे ड्राइवर को बुलाकर गाड़ी तैयार करने के लिये कहा। ड्राइवर ने असन्तुष्ट ढंग से कहा—बाबूजी रात बहुत अधिक हो गई, चारों तरफ दंगे हो रहे हैं।

तर्क में अनिच्छा के सुर में रमेश ने कहा—कोई डर की बात नहीं है, मैं मुसलमानी मुहल्ले में नहीं जा रहा हूँ......

ड्राइवर बाटासिंह ने डर के नाम पर भौंहों को तान लिया। वह सीधा जाकर मोटर निकाल लाया। मोटर के पीछे की सीट पर बैठते हुए रमेश ने कहा—पुलिस कप्तान के घर चलो।

बाटासिंह हिन्दू मुहल्लों के बीच से होता हुआ दस मिनट में पुलिस कप्तान के दफ्तर पहुँच गया।

बहुत चिल्ला-चिल्ली के बाद एक मुन्शी बाहर निकला, बोला क्या है?

—साहब से मिलना है।

मुन्शी ने जमुहाई लेते हुए लौटने के लिये उद्यत होकर कहा—मिलना नहीं हो सकता।

—जरूरी काम है......

मुन्शी एक बहुत कड़ा जवाब देने जा रहा था, पर मोटर से यह अनुमानकर कि आगन्तुक कोई बड़ा आदमी है केवल इतना ही बोला—साहब इस समय बँगले में हैं।

—हाँ, पर बहुत ही जरूरी काम है।

मुन्शी ने कुछ जैसे सोचा, फिर कहा- अच्छा बैठिये, फोन करता हूँ।—मुन्शी चला गया।

दो मिनट बाद लौटते हुए मुन्शी ने कहा—साहब नहीं आ सकते, पर लाइन इन्सपेक्टर आप के मामले की सुनाई करेंगे।

—वे कहाँ हैं—हताश होकर रमेश ने पूछा।

—बुलाता हूँ,—वे आन स्पेशल ड्यूटी हैं।

—अच्छा, शुक्रिया।

दस मिनट बाद एक अंग्रेज नौजवान सिगरेट पीते-पीते रमेश के सामने आकर खड़ा हो गया। जीवन के रस से लबरेज कर्म शक्ति से उबलता हुआ।

दोनों कुर्सी पर बैठकर बातचीत करने लगे। रमेश ने संक्षेप में समझा दिया कि उसके एक कविस्वभाव मित्र आज संध्या के समय टहलते-टहलते मुसलमानी मुहल्ले की तरफ चले गये, वे बेचारे जानते ही नहीं थे कि आज दंगा हो रहा है। इस समय रात के ग्यारह बज रहे हैं, पर अभी तक मित्र नहीं लौटे हैं।

अंग्रेज युवक ने सिगरेट का एक कस खींचते हुए कहा—अच्छा मैं अब समझ गया। आप शक करते हैं कि उनके साथ कुछ न कुछ foul play हुआ है। अच्छा तो आप क्या चाहते हैं?

—मैं यह चाहता हूँ कि उन्हें ढूँढ़ा जाय।

—Oh I see, अच्छा, ठीक, पर लेकिन—अंग्रेज युवक ने पास खड़े मुन्शी की ओर देखा।

मुन्शी ने दीवार पर टँगे हुए मानचित्र को दिखाते हुए कहा—हुजूर ये इस सड़क की बात करते हैं। आज शाम से उधर से बराबर दंगा और खून खच्चर की खबर आ रही है।

यह अंग्रेज युवक अभी ६ महीने हुए इङ्गलैण्ड से आये थे। इङ्गलैण्ड में लेबर पार्टी के मेम्बर थे। रायल एयरफोर्स के लिये किसी एक टेक-निकल कारण से अनफिट हो गये, इसलिये हिन्दुस्तान में पुलिस में काम मिला। ६ महीने के अन्दर ही किसी जिले के पुलिस कप्तान होने वाले हैं। दंगा के प्रारम्भ से ही स्पेशल ड्यूटी पर हैं। जरूरत होने पर काम करेंगे।

मुन्शी का जवाब सुनकर अंग्रेज युवक ने लापरवाही के साथ कहा—Oh, what of that? इससे क्या? उस सड़क पर क्या इन्तजाम हुआ है?

—कुछ भी नहीं सर—मुन्शी ने कहा।

—यह क्या बात है? कुछ भी नहीं?—सिगरेट को फेंकते हुए अंग्रेज युवक ने कहा?

—हाँ सर, कोई भी हुक्म नहीं मिला—मुन्शी ने कहा—बल्कि उधर की सब पुलिस वापस बुला ली गई।

अबकी अंग्रेज युवक कुर्सी से उछल पड़ा, बोला—इसके क्या माने है। What does it mean?

—दंगा होने पर हमेशा ऐसा ही होता है।

—क्यों?

—नहीं तो पुलिस मारी जा सकती है—मुन्शी ने अपनी समझ में जो बात आई, उससे कहा।

—Absurd, अच्छी बात है, अभी लारी तैयार करो, बारह सिपाही सब बन्दूक के......

—पर हुजूर ऐसा नहीं किया जाता। सबेरे देखा जायगा।—आरजू के स्वर में मुन्शी ने कहा।

—No. अभी लारी तैयार करो—युवक ने आदेश के स्वर में

कहा—पाँच मिनट के अन्दर......—कहकर वह फिर कुर्सी पर बैठ गया।

मुन्शी ने आगे तर्क करना उचित नहीं समझा। वह चला गया।

रमेश ने अंग्रेज युवक को बहुत धीरे से कहा—एक बात है सर, सब सिपाही हिन्दू हों......

पहले अंग्रेज युवक इसका मतलब न समझ सका, हतबुद्धि की तरह ताकने लगा कि क्यों ऐसा कहा जा रहा है। उसके बाद बात को समझकर कहा—Yes, that's reasonable, ठीक बात है।

कहकर वह उठा और जिस तरफ मुन्शी गया था उधर गया। जाते समय रमेश को बैठने के लिये कह गया।

कई एक मिनट के अन्दर लारी आ गई, और बारह सिपाही, दो हेड कानस्टेबिल मय बन्दूक, हथकड़ी और दूसरे सरन्जाम तैयार हो गये।

लाइन इन्सपेक्टर ने कहा—आप साथ चलेंगे?

रमेश यही तो चाहता था, बोला—हाँ, जरूर, धन्यवाद।

रमेश ने बाटासिंह से घर लौट जाने के लिये कहा। ड्राइवर की सीट पर ही अंग्रेज और रमेश बैठे।

लारी बहुत तेजी के साथ चलने लगी, और जल्दी ही हिन्दू पाकिस्तान के बीच से होते हुए मुसलमान पाकिस्तान के अन्दर घुसी। रमेश ने कहा—मि......

—राबर्ट्‌स। मेरा नाम ट्रेवर राबर्ट्‌स है। आपका नाम?

—मेरा नाम रमेश पाण्डे है।

—याने मि० पाण्डे......

—मि० राबर्ट्‌स, लारी को धीरे चलवाइये।

—अच्छा ।

लारी धीरे चलने लगी । सभी के कान खड़े थे कि कहीं से कुछ कराहने, रोने-पीटने की आवाज सुनाई तो नहीं दे रही है । पर कहीं कुछ नहीं सुनाई दे रहा था । थोड़ी देर बाद अकस्मात् रमेश ने ड्राइवर की पीठ पर हाथ रख दिया, कहा—रुको......

लारी रुक गई ।

रमेश ने राबर्ट्स को धीरे से कहा—कुछ सुनाई पड़ रहा है ?

राबर्ट्स को कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था । कहा—नहीं ।

—अच्छी तरह सुनिये ।

रमेश को जैसे किसी के कराहने की आवाज सुनाई पड़ रही थी । पर राबर्ट्स को कुछ नहीं सुनाई पड़ रहा था । दोनों ने लारी से उतरकर फिर सुना । रमेश ने कहा—एक क्षीण कराहने की आवाज आ रही है, एक दफे आती है, एक दफे चुप हो जाती है ।

साहब ने कान लगाकर सुना, सुनकर कहा—कहाँ मि० पाण्डे, मुझे तो कुछ भी नहीं सुनाई पड़ रहा है—फिर थोड़ा व्यंगकर कहा—वह आपकी भारत माता के क्रन्दन की आवाज है । पुत्रों के गृहयुद्ध से घबड़ा कर रो रही है, मैं तो साम्राज्यवादी हूँ, मैं इस रोने को भला कैसे सुन सकता हूँ मि० पाण्डे ?

आधी रात में इस प्रकार की अवस्था में खड़े होकर इस युवक अंग्रेज के मुँह से इन बातों को सुनकर रमेश को ऐसा प्रतीत हुआ कि व्यंग बहुत तीखा है । सचमुच ही यह भाई-भाई में लड़ाई है, पर क्या इस लड़ाई में बीच-बचाव और इन्साफ़ कराने के लिये रमेश ब्रिटिश साम्राज्यवाद सशस्त्र प्रतिनिधि को बुलाकर नहीं ले जा रहा है ? फिर ! रमेश जरा दुखी हो गया । सब व्यर्थ है, सब व्यर्थ है । इससे क्या लाभ ? पर अकस्मात् उसे राजीव की बात याद आई । फौरन सब

उद्वेगजनक चिन्ताएँ जाती रहीं। कर्म के लिये नई स्फूर्ति मिली। कौन जाने शायद यह राजीव के ही कराहने की आवाज़ हो।

वह कई एक क़दम बढ़कर पास की गली की तरफ गया।

अकस्मात् वह लौट आया, बोला—मि० राबर्ट्स मैं स्पष्ट ही एक शब्द सुन रहा हूँ, इस गली में चला जाय......

लारी पर चार सिपाही, ड्राइवर और एक हेड रहे। बाकी सब रमेश के साथ सावधानी से चलने लगे। मि० राबर्ट्स ने अपने रिवाल्वर को खोलकर हाथ में ले लिया। बन्दूक वाले सिपाही आगे पीछे देखते-देखते पीछे-पीछे चले। गली में घुसने के कारण वे खुश नहीं हुए। बीस रुपये में वे जान देने नहीं आये थे।

इस प्रकार यह सशस्त्र जुलूस गलियों के अन्दर से चला। कहीं कोई आहट नहीं थी। सड़क से कुछ भीतर जाते ही देखा गया कि मकानों का आकार धीरे-धीरे छोटा होता गया है, और बाद को तो खपरैल और टीन के छप्परदार मकान हैं। चारों तरफ बदबू है, इधर शायद ड्रेन नहीं है। म्युनिसिपलिटी ने इधर कोई रोशनी का प्रबन्ध नहीं किया है। और क्यों करे? गरीबों की जान ही जायगी, जिसका कोई भी मूल्य नहीं है। अमीरों की क़ीमती गाड़ियाँ तथा मोटर जिससे गड्ढे में गिरकर ख़राब न हो जाय, उनके सान्ध्यविहार तथा प्रमोद में बाधा न पहुँचे, म्युनिसिपलिटी को इसीकी चिन्ता रहती है।

अकस्मात् रमेश रुक गया।

—अब सुनाई पड़ रहा है?

—हाँ जैसे कोई कराह रहा है......

—हाँ।

—फिर सब लोग चुपचाप चलने लगे।

अकस्मात् रमेश जैसे कुछ दुःखित होकर कह उठा—मि० राबर्ट्स, अब तो आवाज़ बन्द हो गई?

—यह क्यों ?—उसकी बात स्वयं सुनकर कहा—तो अब उपाय क्या है ? मामला कुछ संगीन मालूम होता है।

—हाँ किसी ने जैसे अकस्मात् कराहनेवाले के गले को दाब दिया। नहीं तो एकाएक कराहने की आवाज़ के बन्द हो जाने का कोई कारण नहीं ज्ञात हो रहा है। कुछ समझ में नहीं आता।

सब लोग किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर वहीं पर ठिठककर खड़े हो गये। एक शिकार हाथ से जाता रहा। शायद कई शिकार। पर खोजना तो है ही। इस आदमी को किसी प्रकार बचाना तो चाहिये ही।

अबकी बार राबर्ट्स आगे-आगे चलने लगा। उद्देश्य से हीन तरीके से।

थोड़ी दूर जाकर राबर्ट्स एकाएक रुक गया।

—आप कुछ सुन रहे हैं मि० पाण्डे ?

—नहीं।

—एक-एक दफ़ा जैसे......, समझ गया।

अकस्मात् राबर्ट्स ने सामने के खुले नल की तरफ टार्च जलाकर देखा। पर सन्देह की कोई वस्तु नहीं मिली। यह नल गली के समान्तराल चला गया था। इधर का सब मैला पानी शायद इसी नल से जाता है। नल गली के ही बराबर चौड़ा है।

राबर्ट्स के दिमाग़ में न मालूम क्या ख्याल आया, वह नल से सटकर जिधर से आया था उधर ही लौटने लगा। दाहिने हाथ में रिवाल्वर और बाँये हाथ में जलता हुआ बिजली का टार्च। आगे की तरफ सब लोग व्यूह बनाकर चलने लगे।

टार्च जलाने के कारण शायद पास के किसी मकान में कुछ आहट मिली। जरा कानाफूसी भी हो रही थी। शायद कोई चुपचाप किसी

झरोखे से देख भी रहा था। पर कोई भी इस सशस्त्र जुलूस पर आक्रमण नहीं करेगा, इस सम्बन्ध में सभी निश्चिन्त थे। किसी को निहत्था तथा अकेला पाकर ही ऐसे लोगों की जेहादवृत्ति जाग उठती है। इसके अलावा ये सभी लोग दंगा में हिस्सा लेते हैं ऐसी बात नहीं, और लेते भी हैं तो विभिन्न दबावों से लेते हैं।

अकस्मात् राबर्ट्स के टार्च की रोशनी किसी एक चीज़ पर पड़ी, जिससे वह कह उठा—वह.....

सभी ने देखा कि नल के किनारे एक लाश है।

राबर्ट्स जरा भी बिना हिचकिचाये नल में सावधानी से उतर गया, साथ-साथ रमेश और हेड कानस्टेबिल भी उतरा। लाश का पैर गंदे पानी में था। मुँह कपड़े से ढँका हुआ था।

रमेश और राबर्ट्स क़रीब-क़रीब एक साथ कह उठे—अरे यह तो मुसलमान है।

कहीं कोई ग़लती न हो जाय इसलिये राबर्ट्स ने हेड की ओर ताकते हुए कहा—यह लाश मुसलमान की है न जी?

—हाँ हुजूर।

—इसका माने—राबर्ट्स ने कहा—इस मुहल्ले में लाश का माने क्या होता है?

कोई भी कुछ नहीं बता सका। यहाँ हिन्दू की लाश स्वाभाविक होती, पर मुसलमान की लाश? कुछ समझ में नहीं आया।

रमेश अकस्मात् कह उठा—शायद जान है।

राबर्ट्स ने झुककर लेटे हुए आदमी को परीक्षा कर कहा—शायद, कुछ गरम मालूम होता है।

—तो?

—इसकी जान बचाने की कोशिश पहले हो।

राबर्ट्‌स ने हेड को पुकारकर कहा—दो सिपाही से कहो कि इसे लारी में ले जाकर फस्ट एड दे।

हेड ने सिपाहियों में जाकर साहब ने जो कुछ कहा वह बता दिया, पर कोई आगे नहीं बढ़ा।

देर हो रही है देखकर राबर्ट्‌स ने पूछा—रामसिंह देर काहे की है।

हेड का नाम रामसिंह था। उसने ज़रा थूक निगलते हुए कहा—हुजूर ये लोग कह रहे हैं कि लाश उठाना भङ्गी का काम है......'

—अच्छा—राबर्ट्‌स ने कुछ देर तक सोचा। फिर रिवाल्वर और टार्च रमेश के हाथ में देकर साहब ने खुद ही पड़ी हुई लाश या अर्द्धलाश को अपनी पीठ पर लाद लिया। रमेश मदद करने लगा।

इतने से शायद सिपाहियों को अक्ल आ गई। साहब के करने से अब यह काम शायद भंगी का नहीं रहा। फौरन इनकी आँखों में इस काम की मर्यादा बढ़ गई। या कि ये लोग डर गये? जो कुछ भी हो आँख की पलक मारते ही दो सिपाही बन्दूक छोड़कर लपके, और साहब की पीठ से लाश या अर्द्धलाश को उठाकर टाँग लिया। हेड के इशारे पर दो बन्दूक वाले इन दोनों सिपाहियों के साथ-साथ चले। ये लोग लारी में लौट गये।

राबर्ट्‌स ने अपने कपड़े को झाड़कर रमेश के हाथ से रिवाल्वर और टार्च लेकर नल के बाहर कदम रक्खा। इसके बाद बिना कुछ कहे जो मकान सामने पड़ा उसके किवाड़ें पर धक्का दिया—खोलो कौन है?

हेड पीछे खड़ा था। साहब की इच्छा जानकर दरवाजे पर धक्का देने लगा। काठ का दरवाजा झनझना उठा। साथ-ही-साथ चारों तरफ़ के मकानों में आहट पड़ गई।

—खोलो, खोलो—हेड ने फिर धक्का दिया।

जल्दी से किवाड़ा खोलकर एक सफेद बाल वाला बुड्ढा सामने खड़ा हो गया। वह थर-थर काँप रहा था, जाड़े में काँप रहा हो या अंग्रेज को देखकर।

हेड ने समझा कि अब उसे जौहर दिखाना चाहिये। उसने बुड्ढे से पूछा—क्योंजी, तुम्हीं इस मकान में रहते हो न ?

—हाँ—डरते हुए बूढ़े ने कहा।

—तुम्हारे लड़के कहाँ हैं ?

—लड़के ?

—हाँ लड़के, तुम्हारे कोई लड़के नहीं है ?

—हाँ हैं, लेटे हैं।

—बुलाओ, साहब बुला रहे हैं।

बुड्ढा दरवाजे को खुला रखकर ही भीतर गया।

हेड ने साहब से कहा—हजूर आपने देखा ? घर पर जवान लड़के होंगे, पर बूढ़े बाप को आगे कर दिया। बूढ़े को कौन सोचेगा कि हत्यारा है। ऐसे ही अच्छी तरह शायद चल नहीं पाता।

जल्दी ही तीन आदमी आकर खड़े हो गये। सब के चेहरे पर गरीबी की छाप थी। जीवन में शायद कभी पेट भर कर खाना नसीब नहीं हुआ।

हेड ने पूछा—बस ? मकान में और कोई बालिग मर्द नहीं है ? समझ-बूझकर जवाब देना, हम अभी मकान की तलाशी लेंगे।

सब लोग स्पष्ट ही डर गये और विचलित हुए, बूढ़े ने कहा—हैं......

—सब को बुलाओ।

तीनों आगन्तुक में से जो सबसे कम उमर था वही बुलाने के लिये भीतर गया।

थोड़ी ही देर में और भी तीन आदमी आकर खड़े हो गये। किसी के बदन पर कोई गरम कपड़ा नहीं था। बूढ़े ने जैसे माफी के तौर पर कुछ कहना चाहा।

राबर्ट्स ने बिना कुछ सुने ही रमेश को अंग्रेजी में कहा—कितने आश्चर्य की बात है कि कितने लोग इसी खपरैल के नीचे रहते हैं।

रमेश ने कहा—इसके अलावा ये शायद सब के सब शादी-शुदा हैं।

रमेश समझ गया था कि अंग्रेज युवक का वक्तव्य यह है कि ऐसी हालत में अगर ये लोग चोरी, डकैती, राहजनी करें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अब भी राबर्ट्स के दिमाग में लेबरपार्टी की सभाओं में सुनी हुई वक्तृताएँ कुछ-कुछ थीं।

रामसिंह ने साहब की और रमेश की बातों की ओर ध्यान न देकर सामने खड़े लोगों को अच्छी तरह धमकाकर कहा—तुम्हारे मकान के सामने की नाली में एक लाश बरामद हुई है······

बूढ़े ने अस्फुट कराहने की तरह एक आवाज की, कहा—लाश ?

—हाँ, बनो मत। अभी पाँच मिनट पहले तक कराह रहा था—फिर चिल्लाकर जैसे सारे मुहल्ले को सुनाता हुआ बोला—सारे मुहल्ले को बाँध ले जाऊँगा, समझे ? जो जानते हो सब ठीक-ठीक कहो।

बूढ़े ने जिद्दकर कहा—हम कुछ नहीं जानते।

—तुम्हारे मकान के सामने एक आदमी नाली में पड़ा रहकर कराहते-कराहते मर गया और न तुमने कुछ सुना, और न तुमने कुछ जाना। ऐसा कभी हो सकता है ?

पर बूढ़े ने कुछ भी कबूल नहीं किया। वह बराबर कहता रहा कि

वह कुछ नहीं जानता है। यहाँ तक कि उसने यह भी नहीं मानी कि उसने कराहने की आवाज सुनी है, लाश की बात जानना तो दूर रहा।

हेड और साहब हैरान होकर एक दूसरे का मुँह देखने लगे। राबर्ट्स की समझ में नहीं आया कि अब क्या हो। हेड परिस्थिति को समझ गया। उसने साहब को थोड़ा अलग ले जाकर धीरे-धीरे कहा—तो हम ऐसी हालत में वही करें जो ऐसी हालत में करते हैं।

—क्या?—शंकित होकर राबर्ट्स ने पूछा। उसने सोचा कि शायद रामसिंह मारपीट करने की बात कर रहा है।

यह किया जाय कि चारों तरफ के मकानों से पाँच-छः आदमियों को गिरफ्तार किया जाय। दाखिल हवालात होने के बाद ये लोग बहुत-सी ऐसी बातें कहना शुरू करेंगे जो ये इस वक्त नहीं कह रहे हैं।

आश्वस्त होकर राबर्ट्स ने कहा—तो वही करो, पर देर न हो, अभी असली काम बाकी है।

रामसिंह ने उसी वक्त अन्दाज से इनमें से दो आदमियों के हाथों में हथकड़ी डाल दी। फिर बाकी लोगों को और बूढ़े को वहाँ से हँकाते हुए कहा—भागो।

बूढ़ा हिला नहीं, पर पुलिस वाले इन दो आदमियों को हथकड़ी पहनाकर बगल के मकान के सामने खड़े हो गये। हथकड़ी पहने हुए दोनों आदमियों की तरफ देखकर राबर्ट्स ने कहा—मि० पाण्डे, ये लोग बड़े ही जिद्दी हैं, इन लोगों ने उस आदमी के कराहने की आवाज सुनी थी इसमें कोई शक नहीं, फिर भी देखिये ये हमारे साथ सहयोग करने को तैयार नहीं।

रमेश ने कुछ दुःख के साथ कहा—हमारे देश में पुलिसवालों के सम्बन्ध में यह विचार बन गया है कि वे देश के शत्रु हैं, इसलिये उनसे कोई सहयोग नहीं करना चाहता।

रामसिंह अपने काम में व्यस्त था। जिस तरह से उसने इस मकान से दो आदमी गिरफ़्तार किये थे उसी प्रकार इसने आसपास के दूसरे मकानों से और चार आदमियों को गिरफ़्तार किया। इस प्रकार ६ आदमियों को गिरफ़्तारकर पुलिस वाले आगे बढ़े।

बन्दीगण चुपचाप चलने लगे। पुलिसवाले अब लारी की ओर लौट रहे थे। इस समय तक मुहल्ले में स्त्रियों के रोने-पीटने की आवाज़ उठ चुकी थी। चुपचाप राबर्ट्स और रमेश लारी तक गये। जो हेड नाली से उस अर्धलाश को लेकर लौटा था, उससे राबर्ट्स ने पूछा—उस आदमी को कुछ होश आ रहा है ?

—नहीं हुज़ूर, वह तो मर गया।

राबर्ट्स और रमेश चुपचाप जाकर लारी पर बैठ गये।

लारी फिर धीरे-धीरे चलने लगी।

फिर सभी पहले की तरह चौकन्ना होकर लारी की दोनों तरफ निगाह रखने लगे, पर इस बार लारी में एक लाश तथा ६ कैदियों के बढ़ जाने के कारण इस यात्रा का चरित्र पहले से गम्भीर हो गया था, अब यह कुछ विपत्ति-मिश्रित नैश-यात्रा नहीं थी। इसके अलावा अब लारी धीरे-धीरे मुस्लिम पाकिस्तान के उस अंश में आ गई थी जिसमें कसाई लोग रहते थे। अवश्य सड़क पर जो मकान थे, वे मुख्यतः उनके मकान नहीं थे, वे ऊँची जाति के मुसलमानों के मकान थे, पर सड़क पर कसाईयों के दो-चार मकान नहीं थे ऐसी बात नहीं।

लारी धीरे-धीरे चल रही थी, मानों वह इस मुहल्ले के और भीतर जाने पर नाराज थी।

अकस्मात् एक गली के सामने दो आदमियों की छाया दिखाई पड़ी। राबर्ट्स के हाथ का दबाव पाकर ड्राइवर ने लारी को रोक दिया।

रामसिंह ने चिल्लाकर कहा—रुको ।

पर कौन रुकता है, दोनों आदमी सिर पर पैर रखकर दौड़े । पीछे-पीछे रमेश; राबर्ट्‌स और तीन-चार सिपाही दौड़े, पर गली के बीच होकर वे कहाँ से होते हुए कहाँ छिप गये इसका कुछ पता नहीं मिला । तब पुलिस वाले दौड़ना व्यर्थ समझकर धीरे-धीरे पैर दबाकर आगे बढ़ने लगे ।

अकस्मात् एक मकान के सामने आकर उन्होंने देखा कि सामने के कमरे में बत्ती जल रही है, और कुछ लोग चिल्लाकर गाना गा रहे हैं । इतनी रात में यह कौन-सा गाना था ? सब लोग ध्यान से सुनने लगे । वे गा रहे थे—

न घबराओ मुसलमानो खुदा की शान बाकी है,
अभी इस्लाम जिन्दा है, अभी कुरान बाकी है ।
जो काफिर दिल में हँसते हैं, वो खुदा को क्या समझते हैं
अभी तो करबला आखरी मैदान बाकी है ।

गाना खतम हो गया, अब जोर-जोर से बातें होने लगीं ।

बाहर सब चुपचाप सुनने लगे कि क्या बात हो रही है । एक कह रहा था—मैंने पूरा छुरा उसकी छाती में घुसेड़ दिया, बस इतनी बड़ी जीभ निकल आई ।

इसके बाद एक दूसरा आदमी बोलने लगा, पर वह इतना धीरे-धीरे बोलने लगा कि कुछ सुनाई नहीं पड़ा ।

राबर्ट्‌स ने अपनी रेडियम लगी हुई घड़ी में देखा—बारह-बीस ।

रमेश ने उसे चुपके से समझा दिया—अब मालूम होता है कि ठीक जगह पर पहुँचे हैं ।

—तो ?—राबर्ट्‌स ने पूछा, फिर उसने खुद ही कहा—तो घुस पड़ा जाय ।

—हाँ, पर सावधानी से, सम्भव है इनके पास हथियार भी हों ।

रामसिंह ने दरवाजे को खटखटाया ।

—खोलो !

खोलो कहने के साथ ही साथ अन्दर के कमरे की रोशनी बुझ गई, और साथ ही साथ स्टूल, चौकी आदि गिरने की आवाज हुई ।

राबर्ट्‌स का टार्च जल उठा । रामसिंह दरवाजा तोड़ने लगा । दो मिनट में ही दरवाजा टूटकर गिर पड़ा । राबर्ट्‌स सबके आगे-आगे टार्च हाथ में लेकर घुस पड़ा । किसी ने टार्च को निशान बनाकर कोई भारी चीज फेंककर मारी । खैरियत यह हुई कि वह काँच में नहीं लगी । सब भीतर घुस पड़े ।

बहुत तजुर्बेकार रामसिंह ने एक सिपाही को पुकारकर कहा—जगमोहन, तुम बाहर रहो, कोई बाहर निकले तो फौरन गोली मार दो ।

पर यह क्या जादू हुआ । टार्च की रोशनी में दिखाई पड़ा कि कमरे में कोई नहीं है । एक जूता, मूँगफली के बहुत से छिलके, एक उल्टी हुई तथा बुझी हुई मोमबत्ती के अलावा कमरे में कुछ नहीं था । हाँ, एक टूटी कुर्सी, एक खटिये का पाया, और एक चूर्ण-विचूर्ण चिलम वहाँ पड़ी थी । किसी ने ताककर टार्च पर चिलम मारा था ।

जमीन पर चटाई बिछी थी । बीच में एक उल्टा हुआ डेक्स था । पर यहाँ तो कोई नहीं है । चिलम किसने छोड़कर मारा ? मोमबत्ती के पास गला हुआ मोम पड़ा था । अभी जमा नहीं था पर ताज्जुब है ये लोग कहाँ गये ? जँगले तो बंद हैं ।

सब लोग कमरे को खोजने लगे । डर किसे कहते हैं यह मि० राबर्ट्‌स को मालूम नहीं था, पर इस जादू से उसका हृदय भी कुछ-कुछ धड़कने

लगा था। कौन जाने ? इंडिया मुल्क के लिये सभी सम्भव है। उसे इस बात का भय होने लगा कि कहीं इस समय टार्च फेल न हो जाय। यद्यपि इस प्रकार डरने की कोई बात नहीं थी क्योंकि इसकी बैटरी अभी ताजी भरी गई थी। भराने के बाद जलाई ही नहीं गई थी।

रमेश ने एक तरफ खोजते-खोजते कहा—यह क्या एक दूसरा किवाड़ा है!

सभी उसी तरफ दौड़ पड़े। किवाड़े में कहीं किसी तरफ की सिटकनी तक नहीं थी। बस भेड़ा हुआ था। एक धक्का देने पर खुल गया।

किवाड़े के उस तरफ एक दूसरा कमरा था। पर बहुत छोटा। टार्च की रोशनी में देखा गया कि कुछ बँधने, एक बिछा हुआ बिस्तरा, कुछ छोटी-मोटी जरूरत की चीजें जैसे एक कलई की हुई थाली, एक कटोरी इत्यादि थी।

और उस कोने में क्या है ? कोई लाश ?

सबको कुछ सिहरन-सा मालूम हुआ। यह किस दैत्यपुरी में ये आ गये। रामसिंह ने आगे बढ़कर देखा। एक आदमी औंधा पड़ा है, जैसे साष्टांग दंडवत कर रहा है। किसी ने शायद पीछे से एकाएक धक्का दिया, फिर नहीं उठ सका। पर नहीं यह तो जिन्दा मालूम होता है। कुछ बड़बड़ा रहा है। पास में मोटे दानों की एक माला पड़ी है। अब अच्छी तरह दिखाई पड़ रहा है। लम्बी दाढ़ी है बिलकुल सफेद। अंग-प्रत्यंग शीर्ण है। चेहरा सौम्य मालूम होता है जैसे पत्थर पर खुदा हुआ है।

रामसिंह ने बुड्ढे की पीठ पर बन्दूक का कुन्दा छुवाकर कहा—ए······ए······

बुड्ढा कुछ हिला, पर न तो उसने बड़बड़ाना बन्द किया, और न उठा।

अबकी बार और भी जोर के साथ बन्दूक के कुन्दे को उसकी रुई भरी बंडी पर ढकेलते हुए रामसिंह ने कहा—ए जी ......

बुड्ढा फिर भी नहीं बोला।

राबर्ट्स ने रामसिंह को बन्दूक हटा लेने के लिये कहा।

रामसिंह ने अपने समर्थन में कहा—हुजूर यह भी जरूर ही उस कमरे की साजिश में शामिल था। अब नमाजी बनकर बैठ गया है। शायद भाग नहीं सका।

राबर्ट्स इसका कोई उत्तर न दे सका।

अजीब परिस्थिति थी। आगे क्या किया जाय, समझ में नहीं आ रहा था।

पर बूढ़े ने स्वयं ही उनको इस परिस्थिति से उबार लिया। वह बड़बड़ाता हुआ सिजदा से उठ बैठा, और कुछ देर तक और बड़बड़ा-कर चुप होकर बैठ गया।

क्या उसने एकबार आँख खोलकर सबको देख लिया? फिर कर्कश आवाज में बोला—कौन?

रामसिंह ने पूछा—तुम कौन हो?

बूढ़े ने एक बार आँख खोलकर ही उसे बन्द करते हुए कहा—मैं अंधा फकीर हूँ......

—अंधा फकीर? तुम अंधे हो?

—हाँ, मैं जनम का अंधा हूँ, अल्लाह की इबादत करता हूँ।

सब चुप हो गये। अंधे से क्या कहा जाय? पर सचमुच अंधा है या कि बना हुआ है?

राबर्ट्स ने पूछा—यह मकान किसका है?

बूढ़ा जरा भी बिना झिझके बोला—यह मकान खुदा का है......

रामसिंह ने कहा—बड़े मियाँ पहेली की बातें छोड़ दो। होश में बातें करो। यों तो सभी मकान खुदा का है, पर यह मकान तुम्हारा है।

बूढ़ा अबकी बार कुछ नाराज हो गया। बोला—मैं तो खैर अंधा हूँ, कुछ देख नहीं सकता, पर तुम लोग तो आँखियारे हो। यह मसजिद है तुम्हें नहीं सूझती ?

सब लोग आश्चर्य होकर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। कहाँ इसमें मसजिदपन तो कहीं दिखाई नहीं पड़ता। पर बूढ़ा झूठ क्यों बोलेगा ?

रामसिंह ने अविश्वास के साथ कहा—मसजिद किधर है ? दो कमरे-से हैं।

—हाँ, दो कमरे हैं। एक मकतब है, दिन में यहाँ लड़के पढ़ते हैं, रात में कोई मुसाफिर हुआ तो टिक जाता है। और दूसरी यह कोठरी, जिसमें चालीस साल से मैं रहता हूँ। खुदा की इबादत करता हूँ और जो मिल जाता है उस पर कनायत करता हूँ। खुदा के मकान में भला किस चीज की कमी है। इस कमरे से निकलकर ही बड़ी भारी जगह है। लोग वहाँ नमाज पढ़ते हैं—कहकर उसने एक दिशा में इशारा किया।

रामसिंह ने उस तरफ जाकर देखा कि सचमुच एक दरवाजा है। दरवाजे से दिखाई दिया कि यहाँ सचमुच मसजिद है। अन्धकार के हृदय को चीरकर मसजिद के मीनार खड़े थे......। रामसिंह की हिन्दू आँखें इस सौन्दर्य को समझने में असमर्थ थीं, विशेषकर इस परिस्थिति में, पर मीनार के ऊपर से होकर जो चाँद उठ रहा था, उसकी तरफ वह भी एक क्षण बिना देखे न रह सका।

ये कमरे मसजिद के पीछे की ओर थे। मसजिद के आगे का हिस्सा अब दिखाई पड़ रहा था। कमरे में बैठकर जो लोग गाना गा रहे थे,

उनका कहीं पता नहीं था। रामसिंह के पीछे-पीछे आकर सभी लोग दरवाजे के बाहर खड़े हो गये। सभी मीनारों को और चाँद को देखने लगे। राबर्ट्स ने टार्च को बुझा दिया। वह एक क्षण के लिये भूल गया कि वह सुदूर इंडिया में है। एकाएक उसे आना के मुखड़े की याद आ गई। मीनारों के ऊपर से होकर उठने वाले चाँद के साथ आना की जैसे कुछ समता थी। वह अपनी चारों तरफ की परिस्थिति को भूल गया। एक दर्द से उसका हृदय मरोड़ दे उठा। आना का विदा के समय का चेहरा स्मरण हो आया।

अन्यमनस्क होकर राबर्ट्स ने उत्तर दिया—हाँ कहीं पर कोई नहीं है......वह मीनारों को देखने लगा, मानों चाँद को सुन्दरतर बना देने के लिये ही किसी सामन्तवादी कलाकार ने मीनार शिल्प की कल्पना की थी।

रामसिंह पुलिसलाइन में बाल-बच्चे छोड़ आया था। उसका कवित्व उस प्रकार से वहिर्मुखी, चन्द्रमुखी नहीं था। मसजिद शब्द उसके मनमें पवित्रता या सौन्दर्य की धारणा उत्पन्न न कर घृणा, विद्वेष; भय तथा शंका ही उत्पन्न करता था। बचपन से हिन्दूगण मुसलमानों के खराब पहलू को ही देखने में अभ्यस्त होते हैं। जैसे ये दो अलग जातियाँ हों, अलग जहनियत और अलग जगत। एक के साथ दूसरे का कोई सम्बन्ध नहीं होता। एक दूसरे की भाषा नहीं समझते, प्रेम नहीं करते, भयपोषण करते हैं।

रामसिंह ने देखा कि देर हो रही है। उसने साहब से कहा —तो इस अन्धे से ही पूछा पाछा जाय, शायद कोई बात मालूम हो जाय।

फिर टार्च जल उठा।

सब फिर उस अँधेरी कोठरी में घुसे। अन्धा उस समय तक फैलाये हुए बिस्तरे पर सोने का ढङ्ग कर रहा था।

रामसिंह ने उससे पूछा—क्यों जी फकीर, यह जो लोग यहाँ बैठे बात-चीत कर रहे थे, ये लोग कौन हैं बता सकते हो?

अन्धे ने अपने कम्बल को तानकर उस पर एक चादर मिलाते हुए लापरवाही से कहा—कौन लोग ?

—यह लोग जो अभी यहाँ पर बैठे-बैठे हल्ला-गुल्ला कर रहे थे, और अभी भाग गये, यह लोग कौन थे ?

कम्बल के साथ चादर मिलाना खतम हो गया था। बूढ़ा बिस्तरे पर चित्त होकर लेट गया और चद्दर मिले हुए कम्बल को ओढ़ लिया। बोला—कौन थे सो मैं क्या जानूँ। खुदा का मकान है, इसमें कितने ही लोग आते-जाते हैं, शरीफ और रजील। कौन किसे पूछता है कि तुम कौन हो। यह जो तुम लोग आये हो, सो मैं क्या जानूँ कि तुम लोग कौन हो, चोर या साव। मैं अन्धा फकीर हूँ, कौन मेरी परवाह करता है। हाफिजजी हाफिजजी कहके कितने ही लोग आकर पास बैठते हैं, उसमें शरीफ, बदमाश, खूनी, डकैत सभी तरह के लोग रहते होंगे। मैं तो जान ही नहीं सकता कि कौन आया और कौन गया।

रामसिह ने कहा—हम लोग पुलिस के हैं।

बूढ़ा कुछ चौंक उठा। वह जन्मान्ध है, फिर भी पुलिस का नाम सुनते ही एक बार चौंक उठा, कहा—यहाँ क्यों आये हो ? अल्लाह के मकान में पुलिस का क्या काम है ?

—तुम नहीं जानते शहर में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो रहा है, न मालूम कितने लोग मारे जा चुके।

—हाँ ऐसा तो होगा ही, जब तक सारी दुनिया रसूल और कुरान पर ईमान नहीं लाती, तब तक तो झगड़ा-लड़ाई होगी ही,—कहकर वह सिर तक ओढ़कर सो गया।

राबर्ट्स चौंक उठा। यह आदमी सचमुच विश्वास करता है कि इस्लाम के प्रचार से ही विश्व में शान्ति प्रतिष्ठित होगी। कितना सरल और दृढ़ विश्वास है, साथ ही कितना गुमराह है। राबर्ट्स की एक बार इच्छा हुई कि अंधे हाफिज से यह पूछे कि जिन मुल्कों

में इस्लाम ही इस्लाम है वे क्यों आपस में लड़ते हैं। पर उसे अकस्मात् स्मरण हो आया कि यूरोप और अमेरिका में बड़े-बड़े विद्वान् पादरी भी इसाई-धर्म के सम्बन्ध में इसी प्रकार सोचते हैं। इसीलिये अपने देश के लोगों का दुःख दूर न कर सुदूर प्राच्य देशों में इसाईयत का प्रचार करते फिरते हैं और इसके लिये करोड़ों रुपये फूँक दिये जाते हैं। फिर इस बेचारे अंधे फ़कीर को क्या दोष दिया जाय? बल्कि यह बेचारा यदि इस दृढ़ विश्वास को लेकर शान्ति से मर जावे, तो अच्छी बात है। इसमें बाधा देने की न तो किसी को अधिकार है और न कोई ज़रूरत ही है।

राबर्ट्स टार्च दिखाकर आगे-आगे चला और सब उसके पीछे-पीछे चले।

बाहर तैनात बन्दूक वाले सिपाही ने कहा—इधर कोई नहीं आया।

बाहर आकर रामसिंह ने साहब से चुपचाप पूछा—हुजूर, क्या अंधे को गिरफ़्तार कर लें, वह बहुत-सी बातें जानता है।

—नहीं—दृढ़ कंठ से राबर्ट्स ने कहा, और जिस रास्ते से आया था, उसी रास्ते से लारी में लौटने लगा। लारी में लौटकर राबर्ट्स और रमेश अपनी-अपनी जगह पर बैठ गये।

ड्राइवर ने पूछा—हुजूर मोटर घुमावें?

—नहीं आगे चलो......

फिर लारी धीरे-धीरे चाँदनी की मिलावटयुक्त अंधकार का हृदय विदीर्णकर चलने लगी।

रमेश ने समझा कि जिस उद्देश्य से आया गया है, उसकी सिद्धी की कोई आशा नहीं है। वह यह भी समझ गया कि राबर्ट्स के अलावा कोई भी मोटर को आगे ले जाने का पक्षपाती नहीं है। उसने

कुछ-कुछ अपने दोष के स्खालन के लहजे में कहा—मसजिद के लोगों की बातों से यह तो समझ में आ गया कि दंगा करने के लिये एक बहुत ज़बर्दस्त साजिश की गई है पर इन आदमियों को पकड़ना मुश्किल है।

—हाँ......ये लोग पूरे छँटे हुए हैं, एकदम निडर—राबर्ट्‌स ने कहा।

—हाँ इन्हें पकड़ना मुश्किल है। प्रमाण करना शायद और भी मुश्किल है। फिर भी इस मुहल्ले के आखिरी हिस्से तक, क़ब्रिस्तान तक चला जाय।

जमुहाई लेते-लेते राबर्ट्‌स ने कहा—यहाँ से क़ब्रिस्तान कितना दूर होगा?

—कोई मील भर......

लारी चली जा रही थी। गाड़ी के अन्दर के सिपाही बन्दूक हाथों में लेकर ऊँघने लगे। हथकड़ी पहने हुए बन्दियों से उन्हें कोई डर नहीं था। इसके अलावा पुलिस पर हाथ उठावें इतनी सामर्थ्य इन-में कहाँ है? पलासी की लड़ाई से लेकर लोगों को इतना दबाया और पीसा गया है कि ये लोग सरकारी लोगों के विरुद्ध हाथ उठाने की हिम्मत नहीं करते। १८५७ में इन लोगों ने सिर उठाया था, पर इनके सरों को ऐसे कुचल दिया गया कि ८५ साल तक सिर नहीं उठाये। पर हिन्दू के विरुद्ध मुसलमान और मुसलमान के विरुद्ध हिन्दू का सिर उठाना, हाथ उठाना, छूरा उठाना—यह दूसरी बात है। बात यह है ऐसा करने के लिये उनको कभी किसी ने सजा नहीं दी।

लारी चलने लगी। बीच-बीच में एकआध कुत्ता कहीं भूँक देता था, पर एक ही आध। वे भी शायद दंगे से प्रभावित हो गये थे। अपने-अपने आस्ताने में सुरक्षित पड़े थे।

८

कब्रिस्तान शहर के बिलकुल किनारे पर था। लड़ाई के पहले बहुत दूर तक कोई आबादी नहीं थी, पर शहर की आबादी बढ़ने के साथ-साथ इस तरफ बहुत से छप्पर वाले मकान बन गये थे। मुसलमानों के मकान दो-चार घर इसाइयों के भी थे।

फिर भी यह जगह सुन-सान ही थी। इस समय वहाँ तो बिलकुल सन्नाटा था। चाँदनी के साथ इस समय जरा-जरा कुहरा मिल जाने के कारण रात का अँधेरा और भी तीक्ष्ण हो गया था।

लारी आकर बिल्कुल कब्रिस्तान के किनारे पर रुकी। राबर्ट्स ने रमेश से पूछा—आप यहाँ क्या पाने की उम्मीद करते हैं?

राबर्ट्स की समझ में नहीं आ रहा था कि कब्रिस्तान से क्या मालूम होगा। कब्रें कभी बात तो नहीं बतातीं। राबर्ट्स की समझ में नहीं आ रहा था, यह ठीक ही था। बात यह है वह उस दंगे के इतिहास से परिचित नहीं था।

रमेश ने कहा—कोई खास बात नहीं, पर अक्सर ऐसा होता है कि लाश को न छिपाने का मौका पाने पर अक्सर उसे लाकर दंगा करने वाले गाड़ देते हैं...

—मैं साफ-साफ नहीं समझ रहा हूँ, और भी साफ कहिये।

—सुनिये। मान लीजिये कि मुसलमान मुहल्ले से एक हिन्दू जा रहा है, उसे नहीं मालूम कि शहर में दंगा हो रहा है। वह मजे में निश्चिन्त होकर अपने काम से चला जा रहा है, इतने में किसीने पीछे से छूरा भोंक दिया। बस वह तड़प-तड़पकर वहीं पर रह गया। उस समय उसकी लाश को छिपाना तो पड़ेगा, अब छिपायेगा तो कहाँ छिपायेगा? पास में नदी होने पर लाश उसमें डाल दी जाती है, बड़ा

अन्डरग्राउंड ड्रेन होने पर उसमें ढकेल दिया जा सकता है, पर इधर नदी नहीं है, सड़क के आस-पास के कुछ मकानों के अलावा ड्रेन नहीं है, इसलिये कब्र में डालना ही सबसे अच्छा तरीका है। उस बार के दंगे में ऐसा ही हुआ था।

राबर्ट्स इतनी देर में मामले को समझ सका, बोला—ठीक, You are right पर कब्रें अपनी कहानी तो नहीं बतायेंगी……

—पर इतना तो कब्र भी साफ बता देती है कि उसमें क्या है। इसके अलावा……

अकस्मात् कुछ शब्द सुनकर रमेश रुक गया। कब्रिस्तान के अन्दर जमीन खोदने की आवाज हो रही थी। रमेश ने धीरे से कहा—वह……

—हाँ—राबर्ट्स कान लगाकर सुन रहा था, उसका हाथ खुद-ब-खुद रिवाल्वर पर पहुँच गया। कब्रिस्तान पाँच फीट ऊँची दीवार से घिरा था। रमेश और उसके साथी पुलिस वाले अब भी दीवार के बाहर ही थे। कब्रिस्तान में कहाँ क्या हो रहा है यह बाहर से समझना सम्भव नहीं था। कब्रिस्तान के पेड़ उनकी दृष्टि को रोक रहे थे। इसके अतिरिक्त कोहरा था। फिर भी उन्होंने समझने की चेष्टा की कि किस जगह पर जमीन खोदी जा रही है।

कुदाल का खनखन और शावल की धुपधुप आवाज हो रही थी। कोहरा मिली हुई चाँदनी में यह शब्द बहुत ही अजीब मालूम हो रहा था। ये अभागे इतनी मेहनतकर किसकी कब्र खोद रहे थे।

राबर्ट्स ने चट से कार्य-प्रणाली ठीक कर ली। कार्य-प्रणाली यह थी कि शब्द का अनुसरणकर दीवार के इस तरफ रहते हुए इन लोगों के उतने करीब पहुँचा जाय जितना कि सम्भव है। इसके बाद दीवार फाँदकर इनके ऊपर टूट पड़ा जाय। राबर्ट्स ने अपनी कार्य-प्रणाली को सबको धीरे-धीरे समझा दिया।

शब्द अनुसरणकर सब लोग दीवार के इस पार रहकर पैर दबा-दबाकर चलने लगे। एक स्थान पर ऐसा मालूम हुआ कि वह जगह जहाँ ये लोग जमीन खोद रहे हैं सबसे करीब पड़ेगी।

सब खड़े हो गये।

पर यह क्या, अकस्मात् आवाज बन्द क्यों हो गई? क्या उन लोगों को पता लग गया कि कोई उनका अनुसरण कर रहा है। यह क्या? अबकी बार भी पंजे के अंदर से शिकार निकल जायगा?

राबर्ट्‌स धीरे-धीरे दीवार से प्रायः सटकर सीधा खड़ा हो गया। अब तक वे लोग कुछ झुककर चल रहे थे। अकस्मात् राबर्ट्‌स ने क्या देखा कौन जाने, वह एकाएक दीवार फाँद गया। साथ ही साथ दल के और लोग भी दीवार फाँद गये। इतने लोगों के एक साथ जूते पहनकर दीवार फाँद जाने से भयंकर शोर हुआ।

डकैत पड़ने की तरह एक शब्द से अकस्मात् कब्रिस्तान का आकाश विदीर्ण हो गया।

राबर्ट्‌स ने साथ ही साथ बिना किसी पर निशाना लिये गोली चलाई। वह उम्मीद करता था कि ऐसा करने पर ये लोग जहाँ के तहाँ रह जायेंगे, भाग नहीं सकेंगे, पर हुआ ठीक इसके विपरीत। वे इतने जोर से दौड़े कि देखते-देखते दूसरी तरफ की दीवार के पास पहुँचे।

रामसिंह ने चिल्लाकर कहा—ठहरो नहीं तो गोली मार दूँगा......

पर कौन सुनता था? उनको शायद गोलियों से भी बढ़कर कोई और भय था, इसलिये वे गोलियों के नाम से नहीं डरे। एक पलक के अन्दर ही वे दीवार फाँदकर कोहरा में या पेड़ की आड़ में कहाँ विलुप्त हो गये कुछ पता नहीं लगा। दो सिपाही दीवार तक दौड़ गये, पर अनुसरण व्यर्थ जानकर लौट गये।

राबर्ट्‌स ने कहा—मि० पंडा।

—पंडा नहीं पाण्डे।

—I am sorry. हाँ मि० पाण्डे, फिर बदमाश हमारी आँखों के सामने भाग गये.....

—तो देखा जाय कि ये लोग कर क्या रहे थे।

सब लोग आकर जहाँ एक गड्ढा खुदा हुआ था, उसके पास खड़े हो गये।

गड्ढा बहुत बड़ा था। साधारण कब्र इतनी बड़ी नहीं होती। तो क्या ये लोग कब्र खोद रहे थे या दूसरी कोई बात कर रहे थे? किसी गुप्त धन का पता तो नहीं लगा था।

राबर्ट्‌स स्वयं सावधानी से गड्ढे के अन्दर उतर पड़ा यह देखने के लिये कि गड्ढे में कुछ है कि नहीं। कौन जाने शायद ये कुछ गाड़ ही रहे हों। गाड़कर उसके ऊपर से मिट्टी डालकर गड्ढे को पाट रहे थे, ऐसे समय हम लोगों के आ पड़ने पर भाग गये हों।

राबर्ट्‌स स्वयं सावधानी के साथ जल्दी ही गड्ढे के नीचे पहुंच गया। टार्च जलाकर देखा कि कहीं कुछ नहीं है। हाथ डालकरके भी देखा पर मिट्टी के अलावा कुछ हाथ नहीं लगा।

रामसिंह दूसरी तरफ से गड्ढे में पहुँचा उसने भी सावधानी से दाब-दूबकर देखा, पर कुछ नहीं था। कहा—अभी तक गड्ढा खोदा जा रहा था, नीचे कुछ भी नहीं था।

दोनों निराश होकर लौटे। यह गड्ढा साधारण कब्र के मुकाबले में बहुत बड़ा था, इसलिये कोई असाधारण बात चल रही थी, इसमें कोई सन्देह नहीं। पर वह असाधारण बात क्या थी इसकी कोई कल्पना न कर सका। मामला बहुत जटिल ज्ञात हुआ।

अच्छी तरह निरीक्षण करने के बाद यह दिखाई पड़ा कि जो लोग

भागे हैं वे दो कुदाल, एक शावल और एक जूता छोड़ गये हैं, पर ये चीजें बात तो करती नहीं, इसलिये रहस्य गुप्त ही रह गया।

रामसिंह ने कहा—इन सब औजारों को ले चला जाय, बाद को सी० आई० डी० पता निकालते रहेंगे कि ये चीजें किनकी थीं।

राबर्ट्‌स जानता था कि सी० आई० डी० वाले असाध्य साधन कर जाते हैं, एक जूते से वे कभी-कभी पूरे गिरोह को पकड़ लेते हैं, पर वह रामसिंह के प्रस्ताव से उत्साहित नहीं हुआ। वह प्रत्यक्ष फल चाहता था। बात यह है रामसिंह की तरह वह अभी पेशादार नहीं हो सका था।

राबर्ट्‌स ने कहा—हाँ इनको मोटर में ले चला जाय......

पर रमेश इतनी आसानी से निरुत्साह होने के लिये तैयार नहीं था। उसने मन ही मन कहा कि ये लोग पागल नहीं थे यह इस बात से बहुत साफ हो गया कि अपनी जान के प्रति मोह की मात्रा इनमें बहुत है, नहीं तो इस प्रकार भाग नहीं पाते। ऐसी हालत में यह भी मान लिया जा सकता है कि गड्ढा खोदने में इनका कोई न कोई उद्देश्य था, और वह उद्देश्य निश्चय ही गूढ़ था, नहीं तो जाड़े की इस रात में......। प्रकाश्य रूप से उसने कहा—इनका कोई उद्देश्य अवश्य ही था, तभी तो इतना बड़ा गड्ढा खोद रहे थे। अवश्य ही वे लोग कुँआ नहीं खोद रहे थे......

राबर्ट्‌स ने संक्षेप में कहा—हाँ!

अकस्मात् रमेश के दिमाग में एक ख्याल आया। कहा—ये लोग जब शाबल, कुदाल आदि लेकर आये थे, तो जरूर आते समय दीवार फाँदकर नहीं आये थे......

—हाँ।

—इसलिये यह देखा जाय कि ये लोग किस तरफ से आये थे। वैसे शायद कुछ पता लगे।

राबर्ट्‌स ने कलाई की घड़ी की ओर देखा। ढाई बज गये थे।

रमेश ने समझ लिया कि अब साहब के भी धैर्य में कमी पड़ रही थी, पर उसने उस तरफ ध्यान न देकर कब्रिस्तान के फाटक की ओर चलना शुरू किया। पेड़ का एकाध सूखा पत्ता उसके पैर के नीचे पड़ जाने से एक विशेष शब्द हो रहा था। चाँद उस समय सिर पर था।

जब रमेश उधर गया त, मजबूरन सब पुलिसवालों को उसके पीछे-पीछे चलना पड़ा।

रमेश कब्रिस्तान के गेट तक गया, पर उसे कोई भी बात संदेह-जनक नहीं दिखाई पड़ी। वह बहुत निराश हुआ। ऐसा मालूम हुआ कि शायद वह मि० राबर्ट्‌स के धैर्य के रबर को बहुत ज्यादा खींच रहा है। फिर भी उसने एक बार गेट के बाहर जाकर जितना दूर देखना सम्भव था देख लिया। शायद कुछ मिल जाय। पर जितना दूर दिखाई पड़ता था, कुछ भी नहीं दिखाई पड़ा। कान लगाकर सुना कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा था। चारों तरफ अखंड रात्रि कालीन निस्तब्धता थी। राबर्ट्‌स के रिवाल्वर से निकली हुई गोली का शब्द इस निस्तब्धता के महासमुद्र में एक सामयिक बुलबुला की सृष्टिकर विलीन हो गया था।

मजबूरन रमेश को लौटना पड़ा, और साथ ही साथ पुलिस वाले भी लौटे। रमेश के चेहरे पर पराजय की छाप थी। इन अज्ञात नाम बदमाशों के विरुद्ध उसके मन में क्रोध हिलोरे लेने लगा।

अकस्मात् पास ही कोई चीज झप से गिरी।

सब लोग ठिठककर खड़े हो गये।

रामसिंह ने पास ही एक पेड़ को दिखलाकर कहा—हुजूर बेल गिरा।

—बेल ? बेल क्या—राबर्ट्‌स ने पूछा।

—रमेश ने उसे समझा दिया कि बेल एक तरह का कठिन

छिलकायुक्त फल होता है। साहब शायद ठीक-ठीक समझ नहीं सके। रामसिंह मौका देखकर खैरख्वाही दिखाने के लिये जिधर बेल गिरने की आवाज हुई थी उधर गया। उसका उद्देश्य था कि गिरे हुए बेल को लाकर साहब को दिखावें।

वे जहाँ पर खड़े थे, वहाँ और बेल के पेड़के बीच में एक बहुत बड़ा पाकड़ का पेड़ था जिसकी जटाएँ उतरकर जमीन को जगह-जगह छू रही थीं। रामसिंह उसीकी छाया से होकर पैर के नीचे पत्ता दबाता हुआ बेल खोजने पहुँचा। कहता गया कि अभी आता हूँ। सब उसके लिये वहीं प्रतीक्षा करने लगे।

अकस्मात् पाकड़ के उस पार से रामसिंह की आवाज सुनाई पड़ी—अरे यह क्या?

उसके स्वर में केवल आश्चर्य नहीं आतङ्क भी था।

रमेश का हृदय धड़कने लगा। उसका मन शंका से उद्विग्न हो गया। वह उसी समय रामसिंह की तरफ दौड़ा। साथ में पुलिसवाले भी दौड़े।

राबर्ट्स का टार्च फिर से जल उठा।

बीस कदम आगे बढ़कर पाकड़ के तने के नीचे इन लोगों ने जो कुछ देखा, उससे वे दंग रह गये। मनुष्य की आँखों ने ऐसा दृश्य कभी न देखा होगा। इस गिरोह में रामसिंह सबसे तजर्बेकार था। बीस साल की पुलिस की नौकरी में उसने बहुत कुछ ऊँच-नीच देखा था, बहुत से घाटों का पानी पिया था, बहुत से भयंकर हत्या-कांड देखे थे, पर सामने जो दृश्य था, वह उसके लिये भी अदृष्टपूर्व, अश्रुतपूर्व और अकल्पनीय था।

एक पर एक लदकर पन्द्रह-बीस लाशें रक्खी हुई थीं। किसी का मुँह और नाक कुचला हुआ था तो किसी का सिर फटा हुआ था, सारे बदन से होकर खून बह गया है, कोई कट-कट करके बरफ की

तरह दृष्टि से ताक रहा है। कोई लाश लम्बान से रक्खी हुई है तो कोई उनके साथ समकोण में रक्खी हुई है। कोई चित है तो कोई औंधी है। किसी का सिर नीचे की तरफ और पैर ऊपर की तरफ है। कुछ लाशें नंगी थीं, शायद वे कीमती वस्त्र पहने हुए थे, कपड़े की इस मँहगी के दिन में यह बात आश्चर्य की नहीं थी। किसी लाश पर पूरे कपड़े थे।

ये तरह-तरह से पड़ी हुई थीं। ऐसा मालूम देता था कि किसी प्रकार इन लोगों को लाकर पटक गया दिया है। जो जैसे गिरा, यह उसकी किस्मत है। मनुष्य पर मनुष्य का इतना विद्वेष ? इतना ?

भावुक रमेश की आँखों में आँसू आ गये। उसने रूमाल निकालकर आँख पोछी। सौभाग्य से किसी ने उसके आँसू नहीं देखे। उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि इसका प्रतिकार करूँगा।

एक दृष्टि से ही समझ में आ गया कि सब लाशें हिन्दुओं की थीं। राबर्ट्स ने कहा—समझ में आ गया यह गड्ढा उन्हीं के लिये खोदा जा रहा था।

इस बात को सभी समझ गये थे। इसे समझना कोई ऐसी मुश्किल बात नहीं थी।

रमेश लाशों की ढेर की ओर बढ़ा। फिर उसने प्रत्येक लाश के मुँह को टार्च की रोशनी में अच्छी तरह देखा। इनमें राजीव भी तो हो सकता था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, पर रमेश के माथे से टपटप पसीना गिर रहा था। वह साँस रोककर एक-एक लाश को देखता जाता था, और जब मुँह पहचानकर देख लेता था कि यह राजीव नहीं है तब वह शान्ति की साँस लेता था। कई एक लाश का चेहरा कुचल गया था। उनके चेहरों की रमेश बड़ी देर तक जाँच करता था। अकस्मात् नीचे से एक लाश को उठाते हुए रमेश ने कहा—अरे इसका तो शरीर गरम मालूम देता है, यह जीवित है।

उसने इस लाश को या यों कहना चाहिये इस आदमी को सबसे अलग करके लेटा दिया। इसके बाद उसके सीने पर हाथ रखकर देखा कि सचमुच उसका हृदय यन्त्र काम कर रहा है। इस आदमी के शरीर पर तथा कपड़े में जो खून लगा था, वह उसका खून नहीं मालूम हुआ। शायद दूसरी लाशों का खून उसके कपड़ों में तथा शरीर में लगा था।

रमेश ने उसके बाल हटाकर देखा कि सिर पर कोई चोट है कि नहीं।

राबर्ट्स ने इस अभागे के चेहरे की तरफ झुकते हुए कहा—यही वह हैं जिन्हें आप खोजने निकले थे?

—नहीं, यह वह नहीं है, पर हिन्दू तो है......

राबर्ट्स रमेश की बात को ठीक-ठीक समझ नहीं सका। बोला—निश्चय ही He will be looked after. रामसिंह......

रमेश बाकी लाशों की ओर भी ध्यान के साथ जाँच करने लगा। अन्तिम लाश तक को देखकर रमेश उठ खड़ा हुआ। जेब से रूमाल निकालकर उसने माथा पोंछा। कोट के बटन तो पहले ही खुल चुके थे, अब भीतर तक सब कुरतों के बटन खोल दिये।

राबर्ट्स ने रामसिंह से पूछा—क्या किया जाय?

—वाजिब तो यही है कि सब लाशों को ले चला जाय, पर लारी में जगह नहीं होगी।—अब भी जो व्यक्ति जीवित था उसकी ओर हाथ से दिखाकर रामसिंह ने कहा—इसको ले चला जाय, न हो तो इन लाशों को ले जाने के लिये एक खेप और किया जायगा।

राबर्ट्स ने रमेश की ओर देखकर कहा—क्या कहते हैं? रात भी बहुत हो गई है। लाशों को ले जाना इतना कुछ जरूरी नहीं है।

—जरूरी क्यों नहीं है? इनके भी तो घर वाले होंगे। कुछ नहीं

तो क्रियाकर्मकर कुछ तृप्ति तो मिलेगी। इसके अलावा लाशों से हत्यारों का कुछ पता भी लग सकता है......

पर लारी में जगह नहीं थी। इसलिये तय हुआ कि रामसिंह की सलाह के अनुसार इस अधमरे व्यक्ति को उठा ले चला जाय, बाकी लाशों को यहीं पड़े रहने दिया जाय, बाद को आकर ले चला जायगा। मोटर में आते-जाते देर क्या लगती है।

अधमरे व्यक्ति को उठाकर सब लोग रवाना हो गये। पीछे बाकी लाशें जिन्ना की दो जाति सिद्धान्त के एक एक ज्वलन्त प्रमाण की तरह पड़ी रहीं। जिन लोगों ने इन अभागों को मारा था, उनकी और इनकी भाषा एक थी, देश एक था, एक ही देश के अन्न-जल से वे पुष्ट हुए थे। वे एक ही भाषा बोलते हैं, पर कितना भयानक विद्वेश है? फर्क है तो केवल धर्म का। कौन कहता है कि धर्म जातीयता के लक्षणों में नहीं आता। जो लोग ऐसा कहते हैं वे अपनी बात इन लाशों को समझावें।

इस प्रकार तरह-तरह की बातें मन-ही-मन सोचते-सोचते रमेश लारी पर बैठ गया, कब लारी चलने लगी यह उसे पता भी नहीं लगा। लारी हवा से बातें कर रही थी। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार चरागाह से गायें बच्चों की तरफ जोर से लपकती हैं। रास्ता भर किसी ने किसी से बात नहीं की। रमेश सोच रहा था कि राजीव भी कहीं इसी प्रकार इन लाशों की तरह पड़ा होगा। या यह भी हो सकता है कि वह इस बीच में घर लौट आया हो। इस बात को सोचते ही उसका मन अकस्मात् आनन्द से थिरकने लगा। यदि राजीव न लौटा हो तो उस लड़की का पता लगाना पड़ेगा, जिसके प्रेम में राजीव सर्वस्व होमने को तैयार था। शायद बैजनाथ उस लड़की का पता जानता हो।

मि० राबर्ट्स भी अपनी चिन्ता में मग्न थे। वे एक बड़ी विकट समस्या में पड़ गये थे। तो क्या सचमुच हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के रहने

की जरूरत है, नहीं तो ये लोग आपस में एक दूसरे का खून कर डालेंगे ? ये जो लाशें थीं, जिन्हें वह छोड़ आया, क्या वे मरकर इसी बात को नहीं कह रहे हैं। उसके निकट [illegible]नी समाजवादियों के सब नारे संदिग्ध और फीके पड़ गये। सचमुच ही भारतवासी बड़े असभ्य हैं। तो चन्दा माँगनेवाले पादरी झूठमूठ यह प्रचार नहीं करते कि भारतवासी असभ्य हैं।

रहा रामसिंह, सो उसने इसमें सोचने की कोई बात नहीं पाई। वह पालतू कुत्ते की तरह यही सोचने में परेशान था कि साहब बहादुर उस पर खुश हुए या नहीं ? मालूम तो ऐसा होता है कि हुए।

जब लारी आकर कोतवाली के सामने रुकी और पहरे पर का सन्तरी संभ्रम के साथ मि० राबर्ट्स को सल्यूट देने के लिये सावधान होकर खड़ा हुआ, और सिपाही लारी से उतरने की तैयारी करने लगे, उस समय रमेश को होश आया।

उस समय पूर्व की तरफ अच्छी रोशनी होती जा रही थी।

विदाई के समय रमेश ने राबर्ट्स से हाथ मिलाकर कहा—आप तो फिर एकबार उधर जायेंगे ?

—हाँ जरूर हाँ, लाशों को तो लाना पड़ेगा।

रमेश ने कहा—कैदियों को लिखापढ़ीकर दाखिल हवालात करने में कुछ समय तो लगेगा ही, कम से कम आध घंटा। मैं इस बीच में देख आऊँ कि मेरे मित्र का कहीं कुछ पता लगा कि नहीं।

राबर्ट्स ने कैदियों को उतारने की देख-रेख करते-करते कहा—दो घंटे के अंदर हम वापस नहीं जा सकते, आप अगर साथ चलना चाहें, तो ठीक दो घंटे बाद आवें।

राबर्ट्स ने कहा—हाँ, आप के द्वारा हमें बहुत सहायता मिली। सम्भव होने पर फिर आवें।

रमेश ने साहब के साथ हाथ मिलाया, रामसिंह को हाथ उठाकर राम-राम किया और फिर चला गया।

६

बहुत रात बीते बल्कि प्रायः सबेरे शौकत ने घर लौटकर देखा कि उसने जोहरा को होश में लाकर जहाँ जिस कुर्सी पर जिस प्रकार बैठा दिया था, वह वहीं पर उसी प्रकार बैठी हुई है। यह देखकर उसके मन में भय उत्पन्न हुआ। आँखें अपलक थीं। इस शरीर में जीवन जैसे अकस्मात् गतिहीन हो गया था, न आगे ही बढ़ता था, न पीछे ही हटता था। अकस्मात् जैसे उसके ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय सब स्तब्ध होकर जहाँ के तहाँ रुक गये थे।

उसका वह स्वप्न—जिस स्वप्न की रचना उसने गत दो वर्षों से की थी, अकस्मात् कुछ धर्मान्धों के फूँक मारने से चूर्ण-विचूर्ण होकर बिखर गया था। राजीव का इसके अतिरिक्त कोई भी दोष नहीं था कि वह हिन्दू पिता-माता के घर पैदा हुआ था। उसकी तरह विशाल दृष्टि वाले लोग दुर्लभ थे। कम से कम इस अभागे देश में उसकी तरह कितने व्यक्ति थे? पर यह क्या हुआ……?

जोहरा ने दो-एक हिन्दू कांग्रेसी नेताओं से बातचीत की थी, पर उसे तृप्ति नहीं हुई थी। उनके विश्व बन्धुत्व की बोली के नीचे बहुत गन्दी साम्प्रदायिकता छिपी रहती थी। उनके कईयों के सम्बन्ध में यह भी सुना गया था कि विगत हिन्दू-मुस्लिम दंगे के अवसर पर इन्होंने चुपचाप हिन्दू दंगाइयों की सहायता की थी।

इन सब लोगों के बातचीत तथा आचरण को देखकर यही मालूम

होता था कि जिन्ना की दो जाति सिद्धान्त सही है। दो जाति—हिन्दू और मुसलमान। हिन्दुओं का तो ये रहा, मुसलमान और भी कट्टर हैं। उसका भाई शौकत, वह कैसा है? वह तो साफ-साफ कहता है कि हिन्दू-मुसलमान का एक जातित्व गलत बात है। उसने अपने आचरण से भी इसी बात को प्रमाणित कर दिया। वह बिना कारण राजीव के ऊपर झपट पड़ा। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सफेद जाति के औपनिवेशिकों ने अमेरिका और अस्ट्रेलिया के आदिम निवासियों की निष्ठुरता के साथ हत्या कर दी है।

आह, कितना बड़ा विश्वासघात है! कितना घृणित कट्टरपन है! राजीव निष्पाप और अकलंक है। उसकी शायद इन लोगों ने हत्या कर डाली है। आँसू की दो बूँदें टपटप करके जोहरा की आँखों से गिरीं। उसने आँसू की बूदों को पोंछने की चेष्टा भी नहीं की। उसे ऐसा प्रतीति हुआ कि राजीव की जान बचाने के लिये वह बिना कष्ट के प्राण दे सकता है, पर वह तो कुछ भी नहीं कर सका। जब वे राजीव को बाँधकर ले गये थे तब वह बेहोश हालत में पड़ी थी।

जोहरा ने जीवन में पहली बार अनुभव किया कि वह अबला है। इसके पहले उसने बराबर हरेक काम को पुरुषों से होड़ लगाकर किया था। बैडमिंटन खेला है, टेनिस खेला है, मोटर चलाई है, नाव खेई है, पर यह क्या कि जीवन के असली सूत्रपात में ही या सूत्रपात की सूचना में उसे यह क्या कड़ुवा अनुभव प्राप्त हुआ? और इसे क्या केवल एक अनुभव की श्रेणी में रखकर टाला जा सकता है? बाज आये ऐसे अनुभवों से। इसने तो एक ही फूँक में उसके जीवन की सारी रोशनी बुझा दी, यह तो अनुभव नहीं बल्कि साढ़े सर्वनाश है।

इस प्रकार सोचते-सोचते कई बार उसकी आँखों से आँसू की धारा जारी हुई, कई बार सूख गई। एक बार उसमें यह इच्छा हुई कि वह पुलिस की सहायता ले। पर उसे यह तो मालूम था ही नहीं कि पुलिस

की सहायता किस प्रकार ली जाती है। उसने गहराई से सोचा तो उसे ज्ञात हुआ कि वह पुलिस की सहायता ले नहीं सकती। इसके अलावा और भी बातें थीं।

जोहरा प्रत्येक स्त्री की तरह भावुक होने पर भी, वह उसी में उस टाइप की थी जो विचार-प्रधान है। इस परिस्थिति में जोहरा एक तरफ राजीव की दुर्दशा की बात, उसके साथ किये गये विश्वासघात की बात, उसकी सम्भव मृत्यु की बात सोचकर दुखी हो रही थी, पर इससे भी दूसरी सतह पर वह बंगालियों, भारतीयों के द्विजातित्व याने हिन्दू और मुसलमानों के पृथक जातित्व के प्रमाणित हो जाने पर अत्यन्त दुःखी हो रही थी।

राजीव के चले जाने से उसका जीवन नष्ट हो गया, पर इस प्रकार जिन्ना के द्विजातित्व व्यवहारिक रूप से प्रमाणित हो जाने पर उसके जीवन का आदर्श भी नष्ट हो गया। राजीव के उठ जाने से उसकी अनुभूति की दुनिया ही नष्ट हो गई, पर उसकी सारी विचारधारा की ही समाधि हो गई। प्रमाणित नहीं तो क्या? सब हिन्दू और मुसलमान अपने व्यवहार से इसी बात को कह रहे हैं कि जाति दो हैं एक नहीं। जिन लोगों ने मौलाना जफरुल मुल्क को मारा है, वे तथा जिन लोगों ने राजीव को मारा है, वे मानों सभी एक साथ चिल्लाकर कह रहे थे कि जिन्ना का द्विजाति सिद्धान्त सत्य है। जहाँ तक जोहरा जानती थी इस सिद्धान्त के विरुद्ध केवल एक प्रमाण था।

वह प्रमाण राजीव था।

पर वह तो इतनी वास्तविकताओं के हमले के सामने नहीं ठहर सका।

इसीलिये जोहरा पारी-पारी से एक बार तो राजीव के लिये, और दूसरी बार अपने आदर्श के विनाश के लिये आँसू बहा रही थी।

जब रात के अंत में शौकत उसके सामने आकर खड़ा हुआ, तो

उसके आँसुओं की पूँजी समाप्त हो चुकी थी। अब जोहरा सम्पूर्ण रूप से दिवालिया होकर बैठी थी, निस्पन्द, गतिहीन, जीवन के पात्र में मृत्यु की विषैली सुरा को धारणकर, मूर्त्तिमती विषाद की तरह।

—बहिन—शौकत ने पुकारा।

कोई जवाब नहीं मिला।

शौकत ने देख लिया कि मजे में ताक रही है।

फिर पुकारा—जोहरा! बहिन!

जोहरा जरा हिलकर बैठी। फिर अकस्मात् भाई को पहचानकर कुछ सजीव-सी हो गई, बोली—क्या खबर है—फिर रुककर बोली—कुछ खबर है?

शौकत समझ गया कि जोहरा काहे की खबर पूछ रही है। कहने को कुछ नहीं था, इसलिये अनजान बनकर बोला—काहे की खबर?

जोहरा ने कुछ नहीं कहा—उसका शरीर फिर शिथिल हो गया। दृष्टि में फिर वह बर्फीला पथराया हुआ भाव आ गया।

शौकत ने फिर पुकारा—उस तरह बैठे मत रहो, लेट जाओ। ठंढ लगेगी......

जोहरा के मुखमंडल पर परेशानी तथा क्रोध की रेखा झलक गई। ओह मेरे लिये बड़ा दर्द है।

—जोहरा, अच्छी बहिन उठो, लेट जाओ। मैं भी जाकर लेट जाता हूँ, गजब की नींद लग रही है।—बड़े दुलार के साथ शौकत ने कहा। कृत्रिम दुलार नहीं, वास्तविक दुलार, मन से निकला हुआ।

जोहरा ने फिर भी बात नहीं की। पर उसके चेहरे की कठिन रेखायें विलीन हो गईं। भाई के स्वर में एक ऐसा मीठापन था कि जोहरा के अनजान में उसपर उसका असर पड़ा। इसके अलावा आज रात की बात को यदि छोड़ दिया जाय, तो मानना पड़ेगा भाई शौकत बराबर उसका रक्षक था।

फिर भी जोहरा न तो उठी, और न उसने बात की। हमेशा से रक्षक रहकर आज वह इस प्रकार भक्षक बन गया। जोहरा का चेहरा फिर कठिन हो गया।

शौकत ने बगल से जोहरा के कंधे पर हाथ रक्खा—उठो।

पलक के अंदर न मालूम क्या हो गया, जोहरा ने कंधे के ऊपर रक्खे हुए हाथ को जोर से पटक दिया और विकृत कंठ से कहा—दगाबाज......

शौकत भौंचक्का रह गया। जरा सँभलकर बोला—दगाबाज? कौन? मैं?

अबकी बार जोहरा सिंहनी की तरह गरजकर उठी, बोली—हाँ तुम, और कौन? तुम सभी, दोजख के कीड़े?

—क्या?

—एक आदमी इतमीनान से आपके घर बैठा हुआ है, आप कुछ गुण्डों और बदमाशों को लेकर आते हैं और उस पर कूद पड़ते हैं। वाह! इसके बाद उन्हें कहाँ ले गये? यही इस्लाम है?

शौकत यासीन के मकान से राजीव के सम्बन्ध में एक बहुत अच्छी धारणा लेकर लौटा था। यासीन के इतने बहकाने और यह जानने पर भी कि जोहरा भी इस साजिश में थी, उसने अन्त तक जो जोहरा का नाम लेने से इन्कार किया, इससे वह बहुत प्रभावित हुआ था। उसे करीब-करीब अफसोस हो रहा था, पर जब जोहरा ने उस पर इस प्रकार से हमला कर दिया, तो वह तिलमिला उठा। बोला—क्या तुम मुझे इस्लाम सिखा रही हो?

—जरूर ही सिखा रही हूँ, सौ बार सिखा रही हूँ? क्या मैं मुसलमान बाप और मुसलमान माँ की बेटी नहीं हूँ?—एक-एक पर्दा करके जोहरा की आवाज चढ़ने लगी।

अकस्मात् शौकत शान्त हो गया। वह सामने की एक कुर्सी पर बैठ गया, फिर बोला—मैंने तो सोचा था कि तुम इस्लाम पर एतकाद नहीं रखती......

शौकत के स्वर में कुछ व्यंग का पुट था।

जोहरा ने भी उसी प्रकार जवाब देते हुए कहा—आज शाम तक मजहब में मेरा कुछ-कुछ एतकाद था, पर जिस तरह तुम लोगों ने यह डकैती की और एक बेकसूर आदमी को बाँधकर ले गये, उसी क्षण से मैंने राजीव की उस बात को कि धर्म जनता के लिये अफीम है मान लिया है। इसके बाद भी मजहब में एतकाद हो सकता है? असम्भव। मैं तो आँख के सामने देख रही हूँ कि मजहब अच्छे खासे शरीफ तथा बाल बच्चेदार आदमी को भी जानवर में तबदील कर देता है।—जैसे जोहरा की बातों को ही प्रमाणित करने के लिये आँसू की दो बूँदें उसकी आँखों के कोनों पर चमक गईं।

दूसरा समय होता तो जोहरा के आँसू से शौकत अभिभूत हो जाता, पर इस समय इन आँसुओं ने उसके क्रोध में घृताहुति का काम किया। इन आँसुओं ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि उसमें और जोहरा में जो खाई है वह कितनी गहरी है, एक पूरे विश्व का फासला है।

वह अवाक होकर जोहरा की ओर ताकने लगा मानों इस जोहरा को वह पहचानता नहीं है, जानता नहीं है, मानो इस जोहरा को वह कभी जानता नहीं था, कभी पहचानता नहीं था।

शौकत का सारा क्रोध राजीव पर जा गिरा, कहा—छिः एक काफिर के लिये तुम्हारे दिल में इतना दर्द होना नाजेबा है।

शौकत के स्वर में स्पष्ट तिरस्कार था।

जोहरा उत्तेजना में खड़ी हो गई, चीखकर बोली—हाँ, वह काफिर है, और तुम लोग मुसलमान हो, क्यों? मैं कहती हूँ उनसे बढ़कर

कोई मुसलमान नहीं हो सकता—इसके बाद उसने स्वयं जो कुछ कहा था, उससे धर्म की बड़ाई ही होती है यह अनुभव कर उसने कहा—मानो मुसलमान होना ही दुनिया में सबसे बढ़कर बहादुरी है। तुम्हीं लोग तो मुसलमानी के मियार (आदर्श) हो न? तो राजीव बाबू मुसलमान न भी हुए तो क्या, वे इन्सान तो सबसे बढ़कर थे......

—इन्सान नहीं हिन्दू।

—एकदम झूठी बात है। वे बिलकुल हिन्दू नहीं थे। वे गाय के गोश्त से भी परहेज नहीं करते थे—जोहरा फिर आराम कुर्सी पर बैठ गई।

—हाँ-हाँ सब जानता हूँ, ये लोग सब नये टाइप के हिन्दू हैं। महज धोखेबाजी है। इधर तो सभी गोश्त खायेंगे, उधर दिन-रात हिन्दुस्तानी तहजीबोतमद्दुन की तारीफ के पुल बाँधेंगे। और यह हिन्दुस्तानी तहजीब हिन्दू तहजीब का दूसरा नाम है। बहुत देखा है।

जोहरा ने बीच में ही बात काटते हुए कहा। उन्होंने कभी भी हिन्दुस्तानी तहजीब की बेजा तारीफ नहीं की। बल्कि वे इसके बरअक्स यह कहते थे कि हिन्दुस्तानी मजहब, तमद्दुन, तसव्वफ जागीरदारी जमाने की है और शूद्र नाम के नीम गुलामों के खून पर मुनहसर है।

जरा नरम पड़कर शौकत ने कहा—अच्छा मान लिया कि राजीव बाबू सब इन्सानों में बेहतरीन थे, पर तुम उस बात को भूल गई हो जो मरहूम मौलाना मुहम्मद अली ने गाँधीजी को लिखा था। मौलाना ने लिखा था कि सबसे बढ़कर गैरमुस्लिम सबसे घटिया मुसलमान से खराब है। मैं भी यही कहता हूँ। इस तरह का अकीदा न होने पर इस्लाम एक रोज भी न टिकता।

जोहरा ने देखा कि बात बढ़ रही है, इसलिये उसने संक्षेप में कहा—खुशकिस्मती है कि मैंने उस तरीके के अकीदे से निजात पा ली है।

—निजात पा ली है ? यह गुस्से की बात है ।

—नहीं, गुस्से की बात नहीं है, खूब सोच-साचकर कह रही हूँ। तुम लोगों ने हमें निजात दी है । मुझमें कुछ अकीदा बाकी था, पर तुम लोगों ने उसकी जड़ों को काटकर उस जगह अच्छी तरह हल चला दिया है । अब उसमें कोई गुञ्जाइश नहीं है कि फिर उस जमीन पर वह पौधा पनपे......

शौकत और भी गुस्से में आ गया । व्यंग के साथ बोला—अब की बार उस जमीन पर शायद हिन्दू मजहब का पौधा बोया जानेवाला है, पर यह सब किसके लिये ? वह तो गया......

शौकत के इस व्यंग ने जैसे चाबुक का काम किया । जोहरा का सारा अंग-प्रत्यग, मन, आत्मा जैसे जल उठी; वह प्रायः रोती हुई बोली—तुम लोग राजीव बाबू को मारकर आये, अबकी बार मुझे भी मारो, मैं कहती हूँ मैं मुसलमान नहीं हूँ, काफिर हूँ, काफिर, काफिर...

शौकत ने देखा कि जोहरा को मिरगी-सी आ रही है, क्रोध होने पर भी वह चुप कर गई । उसके मन का आंतरिक भाव यह था कि पागल के साथ बात क्या बढ़ाई जाय ।

दोनों बहुत देर तक चुप बैठे रहे । मैं मुसलमान नहीं हूँ, काफिर हूँ, काफिर-काफिर—जोहरा की ये बातें कमरे के अंदर ध्वनित प्रतिध्वनित हो रही थीं । खैरियत यह है कि नौशेर उस समय कलकत्ते में थे, नहीं तो क्या होता नहीं कहा जा सकता, नहीं तो वे अपनी दुलारी लड़की की यह हालत देखकर क्या करते कौन जाने ।......घूम-फिरकर शौकत का सारा क्रोध राजीव पर जा रहा था । राजीव इस समय कहाँ है ? दो हाथ मिट्टी के नीचे । पर इस बात को सोचकर उसे कुछ खुशी नहीं हुई, कहीं पर इस खुशी में जैसे कुछ कमी थी ।

अकस्मात् जोहरा आराम-कुर्सी पर से उठी । कुछ सोची । अपनी

शिथिल कबरी को किसी प्रकार पीछे की तरफ लपेट लिया। शौकत ने सोचा कि वह दूसरे कमरे में जाना चाहती है, बोला—रहने दो मैं ही चला जा रहा हूँ।

जोहरा ने शौकत की तरफ उद्‌भ्रान्त दृष्टि से देखा, कुछ सोची, बोली—शौ-क-त......

—हाँ।

—क्या तुम लोगों ने सचमुच उन्हें मार ही डाला ? बोलो, सच बताओ......

शौकत ने देखा कि जोहरा बहुत उत्तेजित है, इसलिये उसने सवाल को बराकर कहा—बाद को ये सब बातें होती रहेंगी, अब तुम जाकर अब्बाजान के कमरे में सो तो जाओ, इस कमरे में तुम्हें नींद नहीं आयेगी।

—नहीं तुम पहिले बताओ—नन्हीं-सी लड़की की तरह जिद करती हुई जोहरा ने कहा।

शौकत ने जोहरा की ओर देखा। नहीं यह तो अपरिचिता नहीं है जैसा कि अभी थोड़ी देर पहले मालूम हो रहा था। नहीं यह तो उसी की सगी बहिन जोहरा है। इस बात को सोचते हुए उसके अंतरतम किसी प्रदेश में जैसे एक ऐंठन-सी होने लगी। छिः यह कमज़ोरी उसे शोभा नहीं देती। उसकी बहिन, और वह प्यार करे एक काफिर से।

शौकत ने कुछ नहीं कहा।

जोहरा की दुलार में कही हुई बातें मकान के पत्थर तथा ईंट के दीवारों में पटकन खा-खाकर विलीन हो गईं। इस समय तक कमरे के अंदर अच्छी रोशनी आ गई थी।

जोहरा ने शौकत से एक तरह से झुककर अकस्मात् उसके दाहिने

हाथ को पकड़कर कहा—बोलो शौकत। बोलो मुझे सच बात जानने दो। मैं कहती हूँ—सत्य जितना भी अप्रिय हो मैं टूट नहीं पड़ूँगी।

शौकत ने अपने हाथ को क़रीब-क़रीब रुखाई से छुड़ाते हुए दूसरी तरफ़ मुँह करके कहा—क्या जरूरत है?

वह जिस कुर्सी पर बैठा था उसे छोड़कर पास की एक दूसरी कुर्सी पर जा बैठा।

—नहीं तुम कहो—मर्माहत होने पर भी शौकत की कुर्सी की तरफ़ एक कदम बढ़ती हुई जोहरा बोली।

—नहीं, नहीं, इससे किसी को फायदा न होगा।

—मैं कहती हूँ मेरा फायदा रहेगा—आरजू के स्वर में जोहरा ने कहा।

—नहीं।

—होगा, होगा, कहो.........

—तुम्हें पसन्द नहीं आयेगा।

—मैं कहती हूँ मुझे अच्छा लगेगा।

—नहीं।

—मैं कहती हूँ मुझे अच्छा लगेगा।

—तुम सह न सकोगी।

—क्या?—कहकर जोहरा जैसे गिरने से अपने को बचाती हुई धम से उस कुर्सी पर बैठ गई जिस पर शौकत इतनी देर तक बैठा था, बोली—तो क्या तुम लोगों ने उन्हें मार ही डाला, बदमाश। मैं तुम लोगों को पुलिस में दूँगी। तुम्हारे साथ मेरी किसी भी तरह की मारल (Moral) मजबूरी नहीं है, तुम मेरे भाई नहीं हो, तुम मेरे दुश्मन हो, तुम इन्सानियत के दुश्मन हो। तुम लोगों की जगह जेलखानों में

होनी चाहिये, वहाँ तुम मजे में मजहबी राज्य चलाओ। मैं डर नहीं दिखा रही हूँ। मैं कहती हूँ तुम सबको पुलिस में दे दूँगी। मैं तुम लोगों में से हरेक को पहचानती हूँ। वह यासीन था जो पहले-पहल कूदा था, रुपयों का घड़ियाल है, बम्बई में मिल है, यहाँ पर बारह या बाइस मकान हैं। हबीब, रमजान, इमतियाज, एहतराम सभी को मैं पुलिस में भेजूँगी। तुमने क्या सोचा है कि भाई की मोहब्बत में मैं इतनी अंधी हो जाऊँगी कि तुम लोगों को छोड़ दूँगी। कभी नहीं। मैं तुम लोगों को सजा दिलाकर दुनिया के सामने एक मिसाल पेश करूँगी कि मुसलमानों में सभी मजहबी-पागल नहीं होते। मैं क़सम खाती हूँ कि तुम लोगों को पकड़ा दूँगी। हिम्मत हो तो मुझे भी मार डालो, नहीं तो मैं कहती हूँ कि तुम्हारे पूरे गिरोह को पकड़ा दूँगी।

—और जिन लोगों ने मौलाना जफरुल मुल्क को पकड़ा दिया है, उन्हें तुम शायद लेकर पूजोगी?—व्यंग का चाबुक मारकर शौकत बोला।

—नहीं, मैं अगर जानती तो उनमें से हरेक को फाँसी पर चढ़वा देती, पर उन्हें नहीं जानती इसलिये तुम लोगों को नहीं छोड़ूँगी। एक जुर्म से दूसरे जुर्म को अच्छा नहीं कहा जायगा। तुम लोगों ने जो कुछ किया वह इन्सानियत के खिलाफ जुर्म था। उसके लिये कोई माफी नहीं है। पर मैं तुम लोगों की तरह कायर नहीं हूँ। मौत से नहीं डरती हूँ। मैं तुम लोगों को मौका दे रही हूँ, तुम लोग मुझे मार डालो, और इस तरह खतरे से बचो।......

शौकत सुनता जा रहा था, समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। जोहरा की बातों को सुनकर ऐसा मालूम हो रहा था कि वह सब कुछ कर सकती थी। प्रेम में निराश होकर प्रेमिका क्या नहीं कर सकती?

१०

जिस समय शौकत और जोहरा में इस प्रकार की बातचीत हो रही थी, उस समय कल रात को जिस प्रकार अकस्मात् याखीन का गिरोह घुस आया था, उससे भी आकस्मिक रूप से इस कमरे में बिना मेघ के वज्रपात की तरह मि० राबर्ट्स, रमेश, बैजनाथ, रामसिंह और दूसरे पाँच या सात बन्दूक वाले सिपाही घुस आये।

शौकत का चेहरा फौरन ऐसा हो गया कि काटो तो खून नहीं। यह क्या भयंकर दैवी विपत्ति है! जिस मुहूर्त्त में जोहरा का दिमाग बिल्कुल ठीक नहीं है, वह सबको पुलिस के हाथों में पकड़ा देने की धमकी दे रही है, उसी समय इस प्रकार पुलिस घुस आई कि शौकत घबड़ा गया।

राबर्ट्स ने आगे बढ़ते हुए कहा—माफ करियेगा, आप लोग समझ ही गये होंगे कि हम लोग इस दंगे के सिलसिले में आये हैं।

शौकत ने खड़े होकर यन्त्रचालितवत् कहा—अच्छा, अच्छा, तशरीफ रखिये।

इसी बीच में जोहरा भी उठ खड़ी हुई थी। वह जानती थी कि उसका चेहरा बहुत खराब मालूम हो रहा है। ये लोग क्या बात करते हैं इसे जानने के लिये उसे बहुत कौतूहल हो रहा था, इसके अतिरिक्त वह खुद ही बात करना चाहती थी, पर इस प्रकार के चेहरे से कभी बात हो सकती है। छिः। वह मराकर बाहर जाने लगी। उद्देश्य यह था कि मुँह को अच्छी तरह धोकर साड़ी बदलकर आकर बातचीत में भाग लें।

हाय नारी ! नारी जब सती होने भी गई है, या जौहर-व्रत भी किया है, उस समय भी वह अपने सबसे अच्छे वस्त्र तथा आभूषण में सज्जित होकर गई है। कुछ भी हो जोहरा भी तो इन्हीं स्त्रियों में है।

जोहरा चली गई। किसीने उसे बाधा नहीं दी। रमेश उसकी तरफ कटकटाकर ताकने लगा। यही छोकरी तो सारे अनर्थ की जड़ है।

इस कमरे के अन्दर घुसकर बैजनाथ ने उसे दिखा दिया था कि इन्हीं के पास वह एक बार खजूर के गुड़ की मटिया और दूसरे मौकों पर दूसरी-दूसरी चीजें ले आये थे। ये बातें मुझे याद हैं।

राबर्ट्स और रमेश ने कुर्सी पर बैठे-बैठे कमरे को एक निगाह से देख लिया। कमरे की बहुत-सी चीजें लस्टम-पस्टम हालत में पड़ी हुई थीं। एक फूलदानी टूटी हुई हालत में पड़ी हुई थी, और गुच्छे के फूल इधर-उधर बिखर गये थे। सुन्दर सफेद गुलदावदी के फूल थे।

इतनी देर तक शौकत ने इस टूटी हुई फूलदानी को नहीं देखा था। आगन्तुकों की दृष्टि का अनुसरणकर उसने टूटी हुई फूलदानी देख ली। जैसे टूटी हुई फूलदानी उसके जघन्य अपराध की बात को जाहिर कर दे रही है, गुलदावदी के फूलों से जो खुशबू निकल रही है, मानों वह दशों दिशाओं में उसके अपराध की बात की घोषणा कर रही है। शौकत को अपने ऊपर गुस्सा आया कि इतनी बड़ी फूलदानी उसकी आँखों को बचाकर वहाँ पड़ी कैसे रह गई। कौन जाने इस टूटी फूलदानी के अलावा उसके अपराध का और भी कोई प्रमाण कमरे में हो। शायद थोड़े से बाल या एक बटन पूरी कहानी को बता दें। उस सुअर यासीन को उस प्रकार कूद पड़ने की क्या जरूरत थी। हजार हो यासीन जाति का शेख ही तो ठहरा, चाहे उसके पास रुपयों के ढेर लगे हों तो इससे क्या ?

शौकत टूटी फूलदानी की तरफ पीठ करके एक कुर्सी खींचकर बैठ गया।

—हम लोग इनके दोस्त मि० राजीव के सिलसिले में यहाँ आये हैं—राबर्ट्स ने शौकत को सम्बोधित करते हुए कहा—आप का नाम?

—शौकत इलाही—शौकत ने कहा।

—हाँ, तो आप कुछ जानते हैं।

—जरूर, मैं राजीव बाबू को पहचानता हूँ, उनके साथ बंगाल से ही जान-पहचान है।

रमेश बीच ही में शौकत से पूछ बैठा—कल शाम के वक्त राजीव बाबू इधर आये थे?

—कल शाम को!—क्या जवाब दें जल्दी में यह तय न कर सकने पर शौकत ने पूछे गये प्रश्न के एक अंश की पुनरावृत्ति भर कर दी।

—हाँ कल शाम को—रमेश ने जरा रुखाई से कहा।

जरा हिचकिचाते हुए शौकत ने कहा—मालूम नहीं।

रमेश ने जब से शौकत को देखा था, तब से वह उस पर सन्देह कर रहा था। उसकी खसखसी दाढ़ी और सुरुचिपूर्ण चेहरे में कोई ऐसी बात थी जो रमेश को खटक रही थी। इसके अतिरिक्त इस आदमी की अजीब शरारत-भरी दृष्टि थी। यह तो किसी नाटक के खलनायक होने के सम्पूर्ण उपयुक्त था। नहीं मालूम कहने पर रमेश को बहुत क्रोध आया, उसने कहा—देखिये हमारे पास इस बात का प्रमाण है कि कल मेरे दोस्त इस तरफ आये थे।

—प्रमाण है?—शौकत सचमुच डरा, न मालूम इसे कितना मालूम है।

—हाँ वह सामने खड़ा है—कहकर रमेश ने झूठमूठ बैजनाथ की ओर दिखला दिया।

शौकत ने बैजनाथ की ओर ताका। उसने तो बैजनाथ को कभी नहीं देखा था। मुँह पर पाँच-छः दिन की दाढ़ी थी, सिर पर एक अधमैली सफेद पगड़ी थी। नहीं, यासीन के साथ इस हुलिये का कोई व्यक्ति कल आया था। ऐसा तो याद नहीं पड़ता, पर कौन जाने?

शौकत जरा सहम गया, बोला—हो सकता है कि वे कल आये हों, पर मैं नहीं जानता।

—आपके मकान में वे आये, और आप नहीं जानते तो कौन जानता है?—अबकी बार रमेश के स्वर ने भद्रता छोड़कर जिरह का रूप धारण किया था।

शौकत ने देखा कि वह बिल्कुल निरुत्तर हो गया है, फिर भी अकस्मात् इतने नये लोगों के सामने जोहरा का नाम लेते हुए वह हिचकिचाया। इसके अतिरिक्त जोहरा इस समय जैसी मानसिक अवस्था में है, उसमें न मालुम वह क्या कहते हुए क्या कह जाय। भाई के विरुद्ध बहिन की गवाही कोई ऐसा अश्रुतपूर्व, अभूतपूर्व, अद्भुत मामला नहीं है।

उसने कहा—क्यों वालिद साहब भी तो थे, राजीव बाबू से वालिद साहब की भी तो खास जान-पहचान थी। मुझसे तो महज मुहदेखी जान-पहचान है, और कुछ नहीं।

नरम पड़ते हुए रमेश ने कहा—आप के वालिद साहब इस वक्त कहाँ हैं?

—कौन कहाँ हैं?—शौकत ने प्रश्न को अच्छी तरह सुना था, पर उसके एक अंश की पुनरावृत्ति करते हुए बोला।

—आपके वालिद कहाँ हैं?—रमेश ने जरा तैश के साथ कहा।

—मेरे वालिद साहब जसोर में हैं—निराश होकर सच बोलते हुए शौकत ने कहा।

—वे जसोर कब गये ?

शौकत ने हिसाब करते हुए कहा—सात दिन हुए।

रमेश और राबर्ट्स अर्थपूर्ण तरीके से एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

अबकी बार राबर्ट्स ने बात शुरू की।

—देखिये मि० इलाही, हम लोग एक बहुत संगीन मामले की तहकीकात के लिये यहाँ आये हैं। कल शाम के वक्त मि० राजीव इधर आये थे। वे अक्सर आपके मकान में आया करते थे। अभी तक वे लौटकर मकान नहीं गये। शहर में दंगा जारी है, समझ लीजिए कि ऐसी हालत में उनके दोस्तों के लिये सोच में पड़ जाना बिल्कुल कुदरती बात है। हम लोग कल दस बजे रात से घूम रहे हैं, हमने कुछ गिरफ़्तारियाँ भी की हैं, कुछ लाशें भी बरामद हुई हैं। एक अच्छी तरह से मुनज्जिम गिरोह काम कर रहा है इसमें शक नहीं। कल रात को ही हम इस नतीजे पर पहुँच चुके हैं। आज सबेरे और भी खतरनाक सबूत मिला। हम अट्ठारह लाश……

रामसिंह संख्या को शुद्ध करते हुए बीच में बोल उठा—हुजूर अट्ठारह नहीं सत्रह, एक तो जिन्दा था, हम उसे अस्पताल पहुँचा आये।

—हाँ हाँ ठीक है। कल हम लोग एक जगह पर सत्रह लाश देख आये थे कि सूर्य निकलते ही ले आयेंगे, पर अभी जाकर देखा तो सब लाशें गायब थीं।

—लाशें गायब हो गईं ?—शौकत ने आश्चर्य से कहा।

—हाँ, एक-दो नहीं, सत्रह हिन्दुओं की लाशें गायब हो गईं, सिर्फ

ये ही नहीं, जिस जगह पर लाशें पड़ी हुई थीं, उस जगह को वे इतनी साफ कर गये हैं कि जिससे यह समझना मुश्किल है कि तीन-चार घंटे पहले वहाँ लाशें रही होंगी। इसलिये एक बड़ा गिरोह काम कर रहा है इसमें कोई शक नहीं है। अब आपको जो कुछ मालूम हो साफ-साफ बता दीजिये।

—मैं इस गिरोह के बारे में कुछ नहीं जानता—थूक निगलते हुए शौकत ने कहा।

राबर्ट्‌स जरा हताश हो गया।

पर रमेश इतनी आसानी से हार मानने वाला जीव नहीं था, रुखाई के साथ शौकत से बोला—आप से सिर्फ राजीव के बारे में पूछा जा रहा है।

रमेश को पूर्ण विश्वास हो गया था कि यह आदमी बहुत कुछ जानता है। जोहरा का इस प्रकार चला जाना रमेश को अच्छा नहीं लगा था।

शौकत ने संक्षेप में कहा—हाँ—बाद को सोचकर कहा—मैंने तो बता दिया कि मैं इस बारे में कुछ भी नहीं जानता।

राबर्ट्‌स ने कुछ रुखाई के साथ कहा—आप एकदम कुछ नहीं जानते ऐसा तो नहीं मालूम होता। इस मामले में कुछ न छिपाकर सब बातों को कह देना ही आपके लिये अच्छा होगा। सो आप नहीं कह रहे हैं। ऐसी हालत में आपको गिरफ़्तार करने के अलावा हम कोई चारा नहीं देखते। झूठी इज्जत के फेर में न पड़कर इधर-उधर की बातें कहने से कुछ फायदा न होगा। अब आपकी जो खुशी हो सो कीजिये।

बिना इशारे के ही रामसिंह शौकत के पास जाकर डट गया।

शौकत के कुछ कहने का समय पाने के पहले ही जोहरा कमरे में आकर खड़ी हो गई, और शौकत के पास ही एक कुर्सी पर बैठ गई।

वह मुँह धोकर एक मामूली साड़ी पहन कर आई थी। जब वह मुँह धोने और साड़ी पहिनने गई थी तो उसने दरवाजे के पास आकर सारी बातें सुन ली थीं। अन्त में राबर्ट्स ने जिन बातों को कहा था, उसने उन सबको अच्छी तरह सुन लिया था। उसने सुना था कि यह अंग्रेज शौकत को गिरफ्तारी की धमकी दे रहा था। गिरफ्तारी, उसके बाद शायद फाँसी। राजीव गया। शौकत जायगा। जाय। इस जगत में अब किसी चीज के रहने का कोई अर्थ नहीं होता। रहने की जरूरत भी क्या है।

जोहरा को देखकर रमेश ने कहा—मैं खासकर आपकी मदद चाहता हूँ। राजीव यहाँ आते थे, हाँ-हाँ उसमें कोइ शर्म की बात नहीं है, दुनिया में उसकी तरह धुन के पक्के बहुत कम हैं। उनके साथ रिश्ता किसी भी सख्श के लिये फख्र की बात होगी......

रमेश की बातें सुनकर जोहरा के आँख का कोना चमक उठा। रमेश कहने लगा—हाँ, मैं जानता हूँ आप उनकी खास मिलनेवाली थीं। मेहरबानी से सब बातें बताइये जिससे मुजरिमों को पकड़ने में आसानी हो। जहाँ तक मालूम होता है गुंडों ने राजीव को मार डाला है, यहाँ तक कि लाश को भी लापता कर दिया है......

—लाश!—राजीव के साथ लाश शब्द के सम्बन्ध को सुनकर जोहरा चौंक उठी।

—हाँ, कल रात को एक जगह पर सत्रह लाशें थीं, उनमें राजीव की लाश नहीं थी। शायद किसी परनाले में ढकेल दिया हो—रमेश के स्वर में दुःख तो था ही पर क्रोध इससे कहीं अधिक था।

रमेश ने जरा थमकर कहा—अब आप हमारी मदद करें बस यही आप से गुजारिश है।

—जरूर। यह तो हमारा काम है। दंगाइयों के साथ मुझे रत्ती भर भी हमदर्दी नहीं है।

शौकत का चेहरा एकदम पीला पड़ गया। प्रबल इच्छाशक्ति के द्वारा अपने चेहरे पर भावना को न आने देने की कोशिश करने पर भी उसका पैर थर-थर काँपने लगा। खैरियत यह थी कि उसकी तरफ किसी ने देखा नहीं, नहीं तो सभी समझ जाते कि कुछ दाल में काला है।

जोहरा ने भी भाई की तरफ ख्याल नहीं किया। वह कहती गई— जिन लोगों ने दंगा किया है, वे हिन्दू हों या मुसलमान, वे इन्सानियत के दुश्मन हैं, उनसे हमें कोई भी हमदर्दी नहीं है। वे मामूली बदमाश के अलावा कुछ नहीं हैं।

अकस्मात् शौकत ने उठकर मि० राबर्ट्स की ओर ताककर कहा—मैं जाता हूँ, आप लोग हमारी बहिन के साथ बातचीत करें। कहते-कहते उसके दिमाग में एक और नई बात आई। उसने कहा— शायद हमारी मौजूदगी से सब बातें साफ-साफ न हो पायें......

राबर्ट्स राजी होने वाला था, पर उसके कुछ कहने के पहले ही जोहरा ने कहा—नहीं, नहीं, तुम जा नहीं सकते......

कहते-कहते उसकी दृष्टि अकस्मात् शौकत के चेहरे पर पड़ी। ऐसा मालूम हुआ कि उसे गश आने वाला है। जोहरा ने जल्दी से बात खतम करते हुए कहा—बैठो-बैठो, तुम कैसे जाओगे!

शौकत हिलते-डुलते अपनी कुर्सी पर धम से बैठ गया। राबर्ट्स ने कहा—हाँ-हाँ, बैठिये न आपके रहने से हमें कोई बाधा नहीं होगी। बल्कि कुछ मदद ही होगी। क्यों मि० पण्डा?

—पण्डा नहीं पांडे—रमेश ने जल्दी से कहा।

—हाँ माफ कीजिये, मि० पांडे क्या आप समझते हैं कि मि० इलाही के रहने से कुछ मुश्किल होगी?

—मुझे तो ऐसा नहीं मालूम होता—यन्त्रचालित की तरह बिना

किसी के आन्तरिकता के रमेश ने कहा। वह चाहता था कि शौकत यहाँ से न जाय। जब से बात शुरू हुई थी तब से वह मन-ही-मन उस पर अकारण क्रुद्ध हुआ था। एक विजातीय क्रोध जिसका कोई विशेष कारण नहीं था।

राबर्ट्‌स ने शुरू किया—अच्छा मिस······—बात यह है वह नाम तो जानता नहीं था इसलिये रुक गया।

—मिस जोहरा—जोहरा ने जल्दी से अपना नाम बताते हुए कहा।

—तो मिस जोहरा मि० राजीव यहाँ अक्सर आते थे?—राबर्ट्‌स ने पूछा।

—अक्सर नहीं इधर तो रोज आया करते थे—जोहरा ने बिना किसी हिचकिचाहट के कहा।

—रोज?

—हाँ रोज—अविचलित रहकर जोहरा ने कहा।

—कल आये थे?

—हाँ, कल भी रोज की तरह आये थे।

कुर्सी पर बैठे हुए शौकत को ऐसा मालूम हुआ कि उसके पैर के नीचे की जमीन जल्दी-जल्दी खिसक रही है। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मकान घूम रहा है। पर साथ ही उसने यह भी सोच लिया कि अगर जोहरा पूरी बात बता दे तो वह अपनी क्या सफाई देगा। उसने सोचा कि अगर सब बातें बता दे तो वह यह कहेगा कि उसने जो कुछ किया, वह यासीन के द्वारा मजबूर किये जाने पर ही किया। यासीन ने उसके सीने पर छुरा रखकर सब कुछ करवाया। इस सफाई की बात को सोचकर शौकत के मन को जरा शान्ति मिली। डूबता हुआ व्यक्ति हाथ के पास तिनका पाकर जिस प्रकार की शान्ति पाता है,

यह उस प्रकार की शान्ति थी। उसने आँखें बंद कर लीं। मृत्यु-दंड-प्राप्त कागर जिस तरह जल्लाद की उठी हुई तलवार को देखकर आँखें बंद कर लेता है, उसी प्रकार शौकत ने आँखें बंद कर लीं।

एक पल सौ वर्ष की तरह दीर्घ हो गया।

रावर्ट्स ने पूछा—क्या वे जानते थे कि शहर के अंदर इस तरह का दंगा हो रहा है।

—हाँ—जोहरा ने झूठी बात कही, राजीव केवल इतना जानता था कि मामूली कुछ गोलमाल है।

—फिर भी वे आये ?

—हाँ, वे बिलकुल निडर थे—जोहरा ने गौरव के साथ कहा।

—ओ—बेवकूफ की तरह रावर्ट्स ने कहा! वह थोड़ी देर के लिये भूल गया कि वह यहाँ पर कहानी सुनने के लिये नहीं बल्कि तहकीकात करने के लिये आया है। थोड़ी देर में सम्हलते हुए उसने कहा—क्या आप बता सकती हैं कि वे कै बजे आये थे ?

—क्यों नहीं, अंदाज सात बजा होगा।

—सात ?

—हाँ, सात के कुछ पहले ही आये होंगे। सात बजे मैं चाय पीती हूँ। जिस दिन उनको चाय पीना होता था, उस दिन वे सात के पहले ही आ जाते थे—जोहरा ने रटे हुए सबक की तरह जल्दी कह दिया।

—कल आप लोगों ने चाय पी थी ?

—हाँ।

—सिर्फ आप या दोनों ?

—दोनों—जोहरा ने बिना संकोच के कहा।

इसके बाद क्या पूछना चाहिये इस सम्बन्ध में राबर्ट्‌स हिचकिचा रहा था। यह तो साफ ही था कि वे प्रेमी-प्रेमिका हैं। इसलिये उनमें क्या बातें हुई यह तो साफ ही था। इसे पूछा क्या जाता? प्रेमिकों में जो बातें होती हैं, वह दूसरों की आँखों में कुछ नहीं होतीं, वर्णन करने पर लोग कहेंगे कि घंटे के बाद घंटे इसीमें कैसे कटे। पर इस प्रकार उनका समय कट जाता है यह तो सही बात है। इसके अलावा जो भी बातें हुई हों, उनसे और इस तहकीकात से क्या सम्बन्ध है।

—वे कितने बजे वापस गये?—राबर्ट्‌स ने पूछा।

तलवार अब बिलकुल गले पर आ गई थी। शौकत को ऐसा प्रतीत हुआ मानों कयामत की घड़ी आ गई। इस राफील ने सींगा फूँक दिया। वह कान खड़ाकर बेहोश होने के लिये तैयार हो गया। हाय, गया, सब कुछ गया।

जोहरा जरा खाँसी, उसके बाद गला साफ करते हुए कहा—वे रोज की तरह नौ बजे चले गये।

शौकत ने आँखें खोलकर देखा। यह क्या? जहाँ पर उसने जल्लाद की तलवार की उम्मीद की थी, वहाँ पर, कौन उसे अपने पंखों की आड़ में आश्रय देकर आकाश मार्ग में छीनकर ले गया। उसने जोहरा की तरफ आँखें खोलकर देखा। हजार हो, पर है तो सगी ही बहिन न? हजार हो उसकी धमनी में इस्लाम के वीरों का पवित्र रक्त प्रवाहित हो रहा है न? जो शौकत एक क्षण पहले अपने को बहुत दुर्बल समझ रहा था, इस समय अपने बाहु में सौ पागल हाथियों के बल का अनुभव करने लगा। उसने कटकटाकर सब की ओर घूरना शुरू किया।

पर नहीं, अभी सब विपत्तियों का अन्त नहीं हुआ था। राबर्ट्‌स ने पूछा—आप दंगा की बात जानती थीं? आप जानती थीं कि दंगा हो रहा है?

—हाँ कुछ-कुछ ।

--आपने उनको जाते समय होशियार कर दिया था ?

—हाँ, कर दिया था, यहाँ तक कि हम लोगों के नौकर ने उनको आखिर तक पहुँचाने की बात कही थी । —बिना कुछ हिचकिचाये जोहरा ने सरासर झूठ कहा ।

—वे नौकर को साथ ले गये ?

—नहीं, वे मुस्कराकर अँधरे में निकल पड़े ।

मि० राबर्ट्स ने मन ही मन सोचा Over-chivalrous, पर प्रकाश में कहा—अच्छा हम लोग दुखित हैं कि आपको कष्ट दिया, अब चलें ।

राबर्ट्स उठ खड़ा हुआ । साथ-साथ रमेश भी उठा । पुलिस वाले निकलने के लिये तैयार हो गये ।

राबर्ट्स ने फिर एक बार भाई और बहिन दोनों के पास दुःख प्रगट किया । आगन्तुकगण चले गये । उनके पैरों की आहट आकाश में एक दुःस्वप्न की तरह विलीन हो गई । बाहर रास्ते में एक मोटर चलने की आवाज हुई, उसके बाद कुछ नहीं । सब शून्य शांत हुआ ।

जाते समय जब आगन्तुकों ने नमस्कार किया तो जोहरा ने नमस्कार का उत्तर नहीं दिया, न वह उनको विदा करने के लिये खड़ी ही हुई । वह फिर उसी प्रकार प्रस्तरीभूत रूप से बैठ गई, जैसे वह आज सारी रात बैठी थी । जैसे बीच में जीवन का एक झोंका आया, फिर मृत्यु की अकर्मण्यता का अखंड राज्य रहा ।

शौकत कुछ देर तक न मालूम क्या सोचता रहा, फिर पुकारा—बहिन !

कोई आहट नहीं मिली ।

—बहिन ! जोहरा !

—हाँ, बहुत धीरे से जोहरा ने कहा, मानो कब्र से आवाज आ रही थी।

शौकत ने जोहरा के कंधे पर स्नेह के साथ हाथ रख दिया। फिर बोला—यही तो चाहिये, मैं तुमसे यही तो उम्मीद करता हूँ।

जोहरा ने हाथ को जरा रुखाई के साथ ढकेल दिया—फिर सीधी होकर बैठी। एक तुच्छता-व्यंजक दृष्टि से शौकत को देखकर जोहरा ने कहा—क्या ?

शौकत इस तीक्ष्ण दृष्टि के सामने सहम गया। कुछ हिचकिचाता हुआ बोला—मैं यही कह रहा था कि जैसा उचित था तुमने कहा, बहुत ठीक किया।

जोहरा ने भाई को आग्नेय नेत्रों से देखकर कहा—तुम्हें ऐसी बात करते शर्म नहीं आती ?

शौकत समझ नहीं सका कि क्या कहे, इसलिये चुप रहा।

जोहरा ने अकस्मात् क्रुद्ध होकर कहा—हट जा हमारे सामने से दोजख का कीड़ा। मैंने तुम्हारे लिये कुछ निहायत पाजी बदमाशों को बचा दिया, हाँ मैंने कुछ बदमाशों के लिये उनके साथ विश्वासघात किया। ओह मैं इतना पतित हूँ। अन्त में जाकर मैंने यह साबित कर दिया कि खून पानी से गाढ़ा होता है।—अन्त में एक तीव्र आत्म-तिरस्कार के सुर में उसने कहा—हजार हो मैं तुम्हारी बहिन हूँ न !

एक क्षण के लिये घृणा की इस धारा के स्रोत में वह गया, पर अब कोई डरने की बात तो थी नहीं। वह बोला—जिसे बदला नहीं जा सकता, उसे लेकर अफसोस की क्या जरूरत है ?

जोहरा कुछ क्षण के लिये इसलिये चुप हो गई कि उसका मन बड़ी भारी समस्या के भँवर में पड़कर डाँवाडोल हो रहा था।

पर अकस्मात् खड़े होते हुए कहा—तुम जाओ, जाओ, दूर चले जाओ जहाँ से तुम्हारा काला मुँह हमें देखना न पड़े, हत्यारा, बदमाश।

—और तुम उसके एकम्प्लिस, जुर्म के साथी—शौकत अट्टहास कर उठा।

जोहरा ने पहले से शान्त कंठ में कहा—हाँ, इसीलिये तो दूर जाना चाहती हूँ कि कहीं तुम लोगों के साथ फँसकर फिर और कोई जुर्म न कर डालूँ।......

जोहरा की प्रत्येक बात घृणा, व्यंग, तिरस्कार तथा डाँट से ओत-प्रोत थी। उसकी आँखों में निराशा से उत्पन्न साहस था।

शौकत ने न मालूम क्या सोचा, एकबार कनखी से बहिन की ओर देखा, फिर कुछ सोचकर दुतकारे हुए कुत्ते की तरह वहाँ से चला गया। जोहरा फिर कुर्सी पर उसी प्रकार बैठी रही। जोहरा की आँखों से दरदर धारा से आँसू गिरने लगे। इस समय उसे रोने में कुछ शान्ति मिल रही थी।

पास ही फर्श पर जो टूटी हुई फूलदानी पड़ी थी, जिसके फूल बिखरकर भूमि का चुम्बन कर रहे थे, उसके साथ जोहरा के जीवन की कहीं पर जैसे समता थी। कहाँ से यह दुर्दान्त अनाहूत हवा का झोंका आया, जिसने उनके जीवन को एकाएक उजाड़कर नीरस, सारहीन, कष्टप्रद, रद्दी लकड़ियों में शामिल कर दिया।

११

रमेश जब मकान को लौटा, तो वह इस सिद्धान्त पर पहुँचा कि राजीव को मुसलमान दंगाइयों ने मार डाला है। पहले-पहल वह राजीव की मृत्यु की बात पर विश्वास न कर सका था। न मालूम कैसे यह असम्भव मालूम हो रहा था। यह तो कल तक उसने उसके साथ बातें की है, हँसा है, तर्क किया है।

पर जब उसने जोहरा का बयान सुना, तो उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि राजीव को अब मृत करके समझ लेना चाहिये। वह फिर भी जोहरा की बातों पर पूर्ण-रूप से विश्वास नहीं कर सका था। जोहरा जिस प्रकार जल्दी-जल्दी निस्पृहता के साथ राबर्ट्स की बातों का उत्तर देती गई, उससे उसके मन में जैसे कुछ खटका हो गया। क्या प्रेमिकायें-प्रेमिकों की मृत्यु में इस प्रकार निस्पृहता दिखलाती हैं? कौन जाने? उसने कभी किसी से प्रेम नहीं किया था। उसे कभी प्रेम करने का अवकाश प्राप्त नहीं हुआ था। किशोर अवस्था के प्रारम्भ में ही शादी हो गई थी, बाल-बच्चे भी हुए थे, पर प्रेम करना किसे कहते हैं यह वह नहीं जानता था। वह बल्कि राजीव से ही प्रेम करता था, बहुत ही अधिक।

रमेश को जोहरा का रंग-ढंग बिल्कुल अच्छा नहीं लगा था। और वह इलाही, वह तो एक गुण्डा है। वह किसी भी प्रकार इस आदमी को राजीव का संभव साला समझने के लिये तैयार नहीं था।

जो कुछ भी हो, यह तो सब खतम हो गया, अब?

दंगा के कारण इधर की सब दूकानें बन्द थीं। पुलिस ने लारी में लाउडस्पीकर लगाकर कर्फ्यू आर्डर भी जारी कर दिया था, आठ बजे रात के बाद कोई बाहर नहीं निकल सकेगा।

रमेश को सबसे अधिक अफसोस इस बात का था कि वह यह भी नहीं जान सका कि बदमाशों ने राजीव को किस तरह मारा है। पीछे से छुरा मारकर ? लाठी मारकर ? या और किसी तरीके से ? कब्रिस्तान में उसने जिन सत्रह लाशों की परीक्षा की थी, उससे यह अनुमान करना कठिन नहीं था कि राजीव को इसी प्रकार किसी भोथरे अस्त्र से। इसके बाद उसकी लाश को गायब कर देना, यह ऐसी क्या कठिन बात थी ? जो लोग सत्रह लाशों को चुराकर हजम कर गये, उनके लिये एक लाश को गायब कर देना ऐसी क्या कठिन बात थी ? ये लोग सब कुछ कर सकते हैं। लगातार उसे कब्रिस्तान की उन लाशों की बात याद आ रही थी। कितना भीषण है !

मनुष्य पर मनुष्य बिना कारण इतना अत्याचार कर सकता है ? राजीव बहस में बहुत कहा करता था कि हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं, क्या यही भाइयों का काम है ? मैं तो बराबर कहता हूँ कि हिन्दू और मुसलमान में कभी मेल नहीं हो सकता, पर राजीव कहता था कि ये सब झगड़े केवल दो धर्मों की मध्यवित्त श्रेणी की नौकरी और कौंसिल की सीटों के लिये लड़ाई का परिणाम-मात्र है। जनता अशिक्षित है, इसलिये इनके दिये हुए नारों पर लड़ मरती है, इत्यादि और क्या-क्या ! जनता इस प्रकार अपने शत्रुओं की लड़ाई को लड़ा करती है।

पर वह बराबर राजीव से कहा करता था कि ये सब बातें गलत हैं। जब तक मुसलमान इस देश को अपना वतन न समझें, तब तक लड़ाई होती रहेगी। उसके मतानुसार इन सब दंगों को रोकने का एक-मात्र तरीका यह है कि हिन्दू और भी तगड़े हो जायें। हिन्दू जब मार के बदले मार करना सीखेंगे, तब ये दंगे खुद ही बंद हो जायेंगे।

रमेश ने सोचा कि राजीव के साथ उसका जो तर्क हुआ करता था, उसमें आज फैसलाकुन रूप से उसकी जीत हो गई है, पर आज

इस जीत में उसे जरा भी खुशी नहीं हुई है। आज यदि राजीव मौजूद होता, तो कितनी जबर्दस्त बहस होती।

उसने एक लम्बी साँस ली।

सामने उसकी मेज पर स्थानीय हिन्दी दैनिक-पत्र पड़ा था। ऊपर ही बड़े-बड़े हरफों में दंगे की बात थी। वह दंगे की खबरों को पढ़ने लगा।

स्थानीय संवाददाता ने अच्छी तरह तैयार कर खबर को दिया था। पहले यह लिखा था कि गत दस वर्षों से इस शहर में कोई साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ, पर हाल में एक मकान की नींव को खोदते-खोदते कुछ कंकाल प्राप्त हुए। तब से शहर की मुस्लिम लीग ने इस बात को लेकर एक आन्दोलन खड़ा कर दिया। वे दावा करते हैं कि ये कंकाल मुसलमानों के हैं, इसलिये इस जगह पर मुसलमानों का कब्जा होना चाहिये। मुस्लिम लीग का यह दावा बिल्कुल झूठा है क्योंकि इस शहर के एक सौ वर्ष पहले का जो नकशा स्थानीय म्युनिसिपलिटी। के अजायबघर में सुरक्षित है, उसमें यह जमीन एक हिन्दू लाला मुन्शीराम की करके दिखाई गई है। कभी भी यह जमीन मुसलमानों की नहीं थी, न यहाँ कभी कब्रिस्तान था।

जमीन के वर्त्तमान मालिक श्री रणछोड़ दास ने मुस्लिम लीग के दावे की परवाह न कर दीवार उठाना शुरू कर दिया। एक दिन में दो फुट दीवार उठा भी दी गई, पर रात में न मालूम किसने या किन लोगों ने दीवार की सब कच्ची ईंटों को चुरा लिया। पुलिस में रिपोर्ट की गई पर चोरों का कोई पता नहीं लगा। लाला रणछोड़ दास धनी व्यक्ति हैं, उन्होंने चोरी की परवाह न करते हुए दूसरे दिन फिर दीवार उठवाई। अबकी बार उन्होंने चुपचाप एक नौकर को पहरे पर रक्खा। अगले दिन सबेरे देखा गया कि किसने या किन लोगों ने उस नौकर को छुरे से मार डाला।

हत्या की खबर सुनकर पुलिसवालों के कान खड़े हो गये, पर हत्यारों का कोई पता नहीं लगा। तब मजिस्ट्रेट साहब ने सार्वजनिक शान्ति भङ्ग होने की आशंका से श्री रणछोड़ दास को यह हुक्म दिया कि जब तक हुक्म न मिल जाय तब तक वे दीवार न उठावें।

इस प्रकार झगड़ा बराबर बढ़ता ही गया। इसके पहले कई जगह दंगाइयों ने इक्के-दुक्के हमले किये। दो-चार आदमी इधर-उधर अज्ञात व्यक्तियों के हाथों से मारे गये, पर इतने बड़े शहर में दो-एक कत्ल कोई ऐसी बात नहीं थी। पर कल दोपहर के समय जब किसी ने या किन लोगों ने मुस्लिम लीगी नेता मौलाना जफरुल मुल्क को कत्ल कर दिया, तब से दंगे ने भीषण रूप धारण कर लिया। तीन बजे रात तक जहाँ तक मालूम हो सका है हताहतों की संख्या ५३ हो गई। इनमें से हिन्दू ३६ और मुसलमान १४ थे। आज से कर्फ्यू आर्डर जारी होगा ऐसी खबर है, पर अभी तक इसकी सरकारी तसदीक नहीं हुई है।

रमेश ने दंगे की खबर को पढ़कर अखबार को बिना मोड़े ही रखा दिया।

उस समय दिन के एक बजे थे। जाड़े के दिन थे, देखते-देखते निकल जाते हैं। उसने नौकर से कहा—कि आज वह अपने कमरे में ही खाना खायेगा, चौके में नहीं जायगा। रमेश की स्त्री जानती थी कि रमेश का अभिन्नहृदय मित्र मारा गया है, इसलिये न तो उसने कुछ कहा, और न वह परेशान हुई। उसने थाली लगवाकर नौकर के हाथ में भेजवा दिया।

रमेश ने अन्यमनस्क होकर थाली को अपने पास खींच लिया, पर एक ग्रास खाकर ही कहा—ले जाओ।

अब रमेश के दिमाग में राजीव की बात नहीं थी। उसके दिमाग में केवल ३६ और १४ आ रहे थे। ये हिन्दू कितने कायर होते हैं। इस शहर के अधिवासियों में ७६ फी सदी हिन्दू और सिर्फ २५ फी सदी

मुसलमान हैं, पर इसका क्या कारण है कि जब भी कोई दङ्गा-फसाद होता है, हिन्दू ही सबसे ज्यादा मारे जाते हैं। इस सम्बन्ध में रमेश को राजीव की बातें याद आई।

कितनी ही बार राजीव ने तर्क करते हुए कहा था—हिन्दुओं का दर्शनशास्त्र ही इसके लिये जिम्मेदार है। ये लोग मुँह से ही कहते हैं वासांसि जीर्णाणि यथा विहाय, मुँह से कहते हैं ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या, पर मरने से यही सबसे अधिक डरते हैं। हिन्दुओं में भी संस्कृत के पंडित सबसे अधिक कायर होते हैं। किसी प्रकार के प्रगति-मूलक आन्दोलन में उनका कोई हाथ नहीं होता। किसी ने कभी सुना है कि कोई महामहोपाध्याय कभी जेल गया है।

तर्क में रमेश ने राजीव की बात कभी स्वीकार नहीं की, पर यह ३६ और १४ क्या बता रहे हैं। यदि राजीव से पूछा जाता तो वह ३६ और १४ का यह अर्थ लगाता कि ये दोनों सम्प्रदाय ह्रास शील मनोवृत्ति के द्वारा परिचालित होते हैं, लोगों की आर्थिक माँगों को स्पष्टतर करके उनमें वर्ग चेतना उत्पन्न करना पड़ेगा, इत्यादि, पर रमेश पर इन बातों का दूसरा ही प्रभाव पड़ता था।

उसने बैठकर ध्यानपूर्वक सोचने की चेष्टा की कि ऐसी हालत में उसे क्या करना चाहिये, पर कुछ भी सोचकर तय न कर सका। उसके दिमाग में बराबर ३६ और १४ घूमने लगा। उसने एक शाल खींचकर सोने की चेष्टा की, पर उसमें सफल नहीं हुआ।

तब वह मकान के बाहर गया। सड़क पर पैर रखते ही उसने देखा कि चारों तरफ कानाफूसी हो रही है। सभी उत्तेजित मालूम पड़ रहे हैं। सभी माने कुछ नौजवान उत्तेजित ज्ञात होते थे। सड़क पर ज्यादा उम्र का एक भी आदमी नहीं मिला।

सामने से अमित आ रहा था। रमेश ने उससे पूछा—कोई खबर लगी?

—काहे की ?—अमित ने पूछा।

असल में रमेश यह पूछ रहा था कि राजीव की कोई खबर लगी या नहीं, पर जब अमित ने कहा कि काहे की खबर, तो उसमें उसी बात को पूछने की प्रवृत्ति नहीं रह गई। कहा—दंगे की क्या खबर है ?

—चल रही है— इसके बाद शहर के दूसरे इलाके का नाम लेते हुए उसने कहा—उधर भी दंगा शुरू हो गया है, बहुत से हिन्दू मारे गये हैं।

रमेश ने भौंहों को तान दिया, बोला—और मुसलमान नहीं मारे गये ?

—गये हैं, पर बहुत कम।

रमेश का चेहरा गंभीर हो गया, बोला—ये हिन्दू बिल्कुल निकम्मे होते हैं।

मुहल्ले का एक नौजवान दंगे का नाम सुनकर खड़ा हो गया था, बोला—निकम्मा कैसे कहा जाय। हिन्दुओं में जो अच्छे लड़के होते हैं, जो जान के लिये डरते नहीं हैं, वे सब के सब क्रांतिकारी, समाजवादी आदि हो जायेंगे। जो बाकी बचे उनमें जान देने लेने की सामर्थ्य कहाँ से आयेगी ?

अमित राजीव का सबसे अच्छा चेला था। दूसरा वक्त होता तो अमित कहता कि धन्यवाद है ईश्वर को कि हिन्दुओं में साम्प्रदायिक मनोवृत्ति कम है, पर इस समय उसे ऐसी बात कहने की प्रवृत्ति नहीं हुई। राजीव की मृत्यु के साथ-साथ राजीव का आदर्श भी जैसे मर गया था। राजीव की मृत्यु उसके निकट वह अन्तिम प्रमाण हो गया था जिसके बाद राजीव का सिद्धान्त चल नहीं सकता था।

वह नौजवान कहता गया—मुसलमानों में जो लोग निडर होते हैं, वे सबके सब साम्प्रदायिक दंगे में हिस्सा लेते हैं। इसीलिये दंगे में

हमेशा मुसलमान कम मरते हैं। क्रान्तिकारी, समाजवादी आदि ही हिन्दुओं के लिये काल हो रहे हैं।

रमेश ने चुप होकर सब बातें सुनी, इसके बाद नौजवान की तरफ ताकते हुए कहा—नौजवान तुम बहुत बढ़-बढ़कर बातें मार रहे हो, पर तुमने क्या किया है? तुमने कितने मुसलमानों को मारा है? तुम तो कोई क्रान्तिकारी नहीं हो?

नौजवान जरा भी बिना हिचके हुए बोला—दीजिये न आप लोग लीड, देखिये जो आप लोग बताते हैं, वही हम करते हैं या नहीं। सो नहीं आप लोग तो करेंगे देशोद्धार, और इधर मुसलमान लोग हिन्दुओं को मारमारकर खतम किये देते हैं। स्वतन्त्रता लेकर क्या होगा यह समझ में नहीं आता।

राजीव होता तो इस नौजवान की स्वतन्त्रता-सम्बन्धी धारणा को सुनकर हँसता, पर रमेश और अमित नहीं हँसे। नौजवान की क्रोधपूर्ण बातों में रमेश ने जैसे किसी बात का इंगित पाया।

उसने कहा—अच्छी बात है, इस मामले में बातचीत हो जाय। बहुत हुआ, आगे सहन नहीं होता।

नौजवान ने कहा—हाँ और सहन नहीं होता, सरकार तो कुछ करेगी नहीं, हमहीं कुछ करें।

अमित ने कहा—इतनी जल्दी किसी फैसले पर पहुँचने से फायदा क्या है? सोचा समझा जाय।

अब रमेश नाराज हो गया। बोला—काफी सोचा समझा गया, सैकड़ों साल से सोचा समझा जा रहा है, पर कुछ नहीं हुआ। अब आगे यह ३६ और १४ सहन नहीं होता......

उसके दिमाग में ३६ और १४ घूम रहा था। वह चाहे जो कुछ सोचे, पर घूम-फिरकर उसके दिमाग में ये दो संख्यायें आ रही थीं।

मानो ये दो संख्यायें उसके निकट भारतीय सब समस्याओं का प्रतीक तथा संक्षिप्त रूप हो गई थी। भारतवर्ष विदेशी-शासन की चक्की के पाट में पिस रहा है, यहाँ के अधिकांश लोग आधे पेट नहीं खा पाते, कितने उस प्रकार के ३६ और १८ रोज बिना खाये मर रहे हैं, ये बातें उसके निकट गौण हो गईं।

तीनों खड़े-खड़े बात करने लगे। अन्त में ठीक हुआ कि तीन बजे के समय अमित के बैठका में मुहल्ले के सब विश्वस्त हिन्दू युवक एकत्र हों, और वहाँ पर इस विषय पर आलोचना हो कि दंगे से उत्पन्न परि-स्थिति का किस प्रकार मुकाबला किया जाय?

थोड़ी देर के अन्दर ही भीतर ही भीतर एक सजो-सजो पुकार हो उठी। यद्यपि यह आन्दोलन मुख्यतः युवकों तक सीमित रहा, फिर भी बड़े बूढ़ों का इसमें कोई हिस्सा नहीं था यह बात नहीं। उनमें से कुछ ने तो यह सोचा कि यह नौजवानों का एक सामयिक झख मात्र है, दूसरे झखों की तरह यथा समय खत्म हो जायगा। दूसरे बड़े बूढ़े जान-बूझकर सहानुभूतिशील थे। इस समय सबके भीतर के हिन्दुत्व ने जोर मारा।

इसके अतिरिक्त सबसे बड़ी बात यह थी कि कोई इतना सोच नहीं सका।

१२

साढ़े तीन बजे दिन के समय अमित के बैठक में पन्द्रह-सोलह व्यक्तियों की कान्फरेंस हो रही थी।

सबके चेहरे पर उत्तेजना थी, एक सुदूर की पुकार। कल तक इन लोगों में से किसी ने किसी समस्या पर सिर नहीं खपाया था, पर आज जैसे एकाएक दुनिया की सारी समस्याओं के समाधान का भार इनके ऊपर आ पड़ा था। पर इस भारी बोझ से उनमें से किसी को झुक पड़ने का कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहा था। वे पहले से अधिक क्रियाशील, मानसिक रूप से सावधान और बलिदान के लिये तैयार थे।

चौबीस घंटे में इन लोगों का चरित्र बदल गया था। अब उनके मन का वह भीगा, शिथिल, कीचड़ लगा हुआ ढंग दूर हो गया था, अब उनका मन बिल्कुल शुष्क और कर्मठ हो गया था।

सबसे पहले रमेश ने एक रिपोर्ट की तरह दिया। कल शाम से लेकर आज तक जो घटित हुआ था उसका उन्होंने कुछ अतिरंजित वर्णन किया। यह अतिरंजन दो तरह का था। एक तो उसने अपनी वीरता को जरा बढ़ाकर कहा। दूसरी बात यह है कि मुसलमान दंगाई जितने घृणित नहीं थे, उससे कहीं अधिक घृणितकर उन्हें चित्रित किया गया। मुँह बाकर उसकी बातों को सुनते-सुनते सब लोग भूल गये कि वे कोई कहानी नहीं सुन रहे हैं, बल्कि दंगा से उत्पन्न परिस्थिति की आलोचनाकर एक कर्मधारा का निर्णय करने के लिये एकत्र हुये थे।

इस बैठक में एकत्रित युवकों के मन में जो थोड़ा बहुत सन्देह था,

वह इस कहानी को सुनकर जाता रहा। सभी एक मत हो गये कि कुछ करना चाहिये।

रमेश ने अन्त में जिन बातों को कहकर अपनी कहानी को खत्म किया, वह विशेष द्रष्टव्य है। उसने कहा—३६ और १४ कब तक हम लोग इसे सहन करेंगे। हम संख्याधिक सम्प्रदाय हैं, फिर भी जभी कोई झगड़ा होता है तो हम मारे जाते हैं। और मजे की बात यह है कि जब देखो तब मार-पीट का सूत्रपात वे ही करते हैं। इसका कुछ प्रतिकार तो होना चाहिये। हमारे श्रद्धेय मित्र राजीवराय कहा करते थे कि अब आगे दंगे नहीं होंगे, कहते थे कि आर्थिक शक्तियाँ धीरे-धीरे अपना काम कर रही हैं, पर मैं तो कुछ भी नहीं देखता। धनी, गरीब, मकान मालिक, किरायेदार, महल में रहने वाला, झोपड़ी में रहनेवाला सभी दंगे में एक हो रहे हैं। मुहल्ले में खून हो रहा है, मकान के सामने आदमी मारा जा रहा है, फिर भी एक गवाह नहीं मिलता। मैं कहता हूँ कि इसका कुछ प्रतिकार होना चाहिये। उपनिषद में कहा है— नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः। हम लोग बलहीन, आलसी, स्वार्थ पर हो गये हैं, और कुछ नहीं।

सब लोग चुप रहे। रमेश ने फिर कहा—इसका कुछ-न-कुछ उपाय करना पड़ेगा, आज, अभी, इसी मुहूर्त्त। इसीलिये हम लोग आज यहाँ इकत्र हुए हैं।

जब सब लोग फिर भी चुप रहे तो गाँधी टोपी पहने हुए एक अधेड़ उम्र के आदमी ने कहा—हमें स्वेच्छा-सेवक दल तैयारकर लोगों को दंगा करने वालों के हाथों से बचाना चाहिये।

यह आदमी वार्ड कांग्रेस कमेटी का सभापति या उपसभापति कुछ था। अच्छा मोटा-ताजा था, म्युनिसिपल कमिश्नर था, भविष्य में असेम्बली के सदस्य होने की उमीद करता था। जब शहर के बाहर से कोई बड़े नेता आते हैं, तो उनकी मोटर के पास इन्हें आप देख

लीजिये। दलबन्दी में एक नम्बर, पार्टीबाज आदमी हैं। बातें बहुत मीठी करते हैं। कांग्रेस में न होकर और किसी काम में होते तो इन्हें लोग पक्का धोखेबाज कहते।

इस बैठके में इकत्रित युवकों के मन में यह उत्साह हुआ कि कुछ काम जरूर किया जाय, अब बैठे न रहा जाय। पर यह काम क्या है इसके सम्बन्ध में किसी को कोई स्पष्ट धारणा नहीं थी।

एक कांग्रेसी के मुँह से स्वेच्छासेवक बनाने की बात सुनकर वह युवक जिसने रमेश के साथ बहुत कड़ी-कड़ी बातें कही थीं बिल्कुल क्रुद्ध हो गया, बोला—विश्वम्भरजी, आप लोग वही पुराना राग अलापा करते हैं कि स्वेच्छासेवक भर्त्ती किये जायँ, चन्दा उठाया जाय इत्यादि। अरे साहब शहर में आग लगी है, फौरन क्या करना चाहिये। यह न सोचकर आपने देश के सामने एक लम्बी-चौड़ी योजना रख दी।

विश्वम्भरजी नाम से सम्बोधित व्यक्ति ने बिना कुछ झेंपे ही कहा—रोग पुराना है, एक दिन के इलाज से कुछ न होगा, धैर्य से काम लेना पड़ेगा।

—मकान में आग लगी है, और आप कहते हैं शान्ति-शान्ति, धीरे-धीरे काम होगा—कहकर उस नौजवान ने मुँह बना लिया, और समर्थन की आशा से सबकी ओर दृष्टि डाली।

विश्वम्भर घाघ आदमी था, बातों से हारने वाला जीव नहीं था, बोला—आग क्या आज लगी है। महाशयजी यह आग बहुत पुरानी है। भगवान बुद्ध ने इस आग को बुझाने की चेष्टा की, फिर कबीर ने किया, और अब इस युग में गांधीजी कर रहे हैं।

बीच में ही रमेश बोला—इसका अर्थ ?

—इसका अर्थ यह है कि सत्याग्रह करना पड़ेगा।

अबकी बार सब लोग कुछ उकता से गये। फिर भी विश्वम्भर इस शहर का एक प्रमुख व्यक्ति था। कहते हैं कि सेवाग्राम और आनन्द भवन में उसकी बेरोक-टोक गति है। १६४२ तक जेल गया था, यद्यपि ४३ के प्रारम्भ में ही छूट गया था। सरकारी हलकों में भी उसका अच्छा चलता था, इसलिये उसकी बात को उड़ा देना सम्भव नहीं था।

अमित ने कहा—विश्वम्भरजी आप उस प्रकार से पहेली क्यों बुझवा रहे हैं। साफ-साफ बताइये कि हम लोग क्या करें।

विश्वम्भर ने बिना कुछ सोचते हुए ही कहा—क्यों सत्याग्रह कीजिये। यदि सत्याग्रही मिलें तो दंगाइयों के विरुद्ध सत्याग्रह किया जाय। हम उनको समझायें कि वे जो कुछ कर रहे हैं, वह अत्यन्त घृणित काम है। अच्छा काम नहीं है।

रमेश ने गुस्से में आकर कहा—आप हवाई किलों की बात रहने दीजिये। हमारे मित्र राजीव रात को घर लौट रहे थे। उनकी तरह अच्छे व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। इस आदमी ने जिन्दगी भर हिन्दू और मुसलमान में कोई भेदभाव नहीं रक्खा, पर क्या हुआ। क्या दंगाइयों ने उनके साथ कोई तर्क किया ? उन लोगों ने आकर पीछे से छूरा भोंक दिया। ऐसी हालत में सत्याग्रह किसके साथ किया जाय। समझायेंगे किसे, उठे हुए छूरे को ?

विश्वम्भर ने सबके चेहरे देख लिये, उसके बाद चबा-चबाकर कहा—सत्याग्रह करने से अन्त में विजय ही होगी, रहा फौरन ही विजय होगी ऐसा न तो मैं कहता हूँ और न कहूँगा।

रमेश स्वयं कांग्रेस के चार आने का सदस्य था। कांग्रेस के काम में चंदा देता और दिलाता था, समय-समय पर खद्दर भी पहनता था, पर वह न तो कभी जेल ही गया था, और न तो उसने कभी सत्याग्रह ही किया था। विश्वम्भर का उस प्रकार चबा-चबाकर सर्वज्ञ की

तरह बात करने पर उसका क्रोध और बढ़ता ही गया। उसने कहा—महाशयजी यह आपके चर्खा संघ की बैठक नहीं है, स्पष्ट करके कहिये कि अभी हमें क्या करना चाहिये।......

विशेष किसी की तरफ न ताककर विश्वम्भर ने पहले की तरह दृढ़ता के साथ कहा—हमें स्वेच्छासेवक सेना तैयारकर विपत्ति उठाकर सबको एक सत्याग्रही की तरह समझना पड़ेगा।

उस नौजवान ने जिसने बहस की थी विश्वम्भर की बात को बीच में काटते हुए कहा—मान लिया कि आपका सिद्धान्त बहुत ऊँचा है, पर तीन दिन से इक्के-दुक्के हमले हो रहे हैं, और कल दोपहर से तो बहुत जोरों से हत्याएँ हो रही हैं, पर आप कांग्रेस वालों ने क्या किया है ? क्या आपने कहीं पर जाकर सत्याग्रह किया है ?

—नहीं, पर हम लोगों ने उर्दू और हिन्दी में एक नोटिस छपवाई है, उसमें संक्षेप में दोनों धर्मों की एकता दिखलाकर कहा गया है कि इस प्रकार के दंगे से किसी को लाभ नहीं है। इतनी देर में वह नोटिस शहर भर में बाँट दी गई है—कहकर उसने जेब से एक नोटिस निकाली और रमेश को दिया।

सब लोग नोटिस के ऊपर टूट पड़े। यह देखकर विश्वम्भर ने जेब से नोटिसों का एक पुलिन्दा निकाला, और हरेक को उसमें से एक-एक नोटिस दे दी।

नोटिस की एक तरफ हिन्दी थी और दूसरी तरफ उर्दू। नीचे कुछ नाम थे, उनमें विश्वम्भर नाथ दीक्षित का नाम भी दो-चार नामों के बाद ही था। नोटिस को एक दृष्टि से देखकर और कुछ-कुछ पढ़कर रमेश ने चिन्तित होकर कहा—क्या आप समझते हैं कि आपके तरीके से कुछ काम होगा।

रमेश की दृष्टि से अपनी दृष्टि को न मिलाकर ही विश्वम्भर ने

कहा—कुछ न करने से तो कुछ करना ही अच्छा है। जनता को समझाने के अतिरिक्त हम और क्या कर सकते हैं ?

—तो आप फिर सत्याग्रह की बात क्यों कर रहे थे। आप लोगों ने सत्याग्रह किया—रमेश ने जरा उग्रता के साथ प्रश्न किया मानो उसने तर्क युद्ध में विश्वम्भर को हराकर उसे कोन में दाब दिया।

—यह नोटिस भी सत्याग्रह की ही पहलू है—ऐसा कहते हुए उसे कुछ भी संकोच नहीं हुआ।

—किस प्रकार ? —आश्चर्य के साथ अमित ने पूछा।

—क्योंकि यह नोटिस हृदय परिवर्तन में सहायक हो सकती है। जो कोई भी बात या काम गुमराह व्यक्ति के हृदय परिवर्त्तन में सहायक हो वही सत्याग्रह है। सत्याग्रह माने केवल नमक तैयार करना या नोटिस देकर लड़ाई के विरुद्ध 'न एक पाई, न एक भाई' का नारा देना है।

—इसके माने आप यह चाहते हैं कि नोटिसबाजी करें, और मजे में खतरे से दूर बने रहें—अकस्मात् सभा का एक नौजवान बोल उठा।

अब तक इस युवक की ओर किसी की दृष्टि नहीं गई थी। नाम केशव शर्मा था, एक बार बम बनाते हुए इसका चूतड़ जल गया था। बात यह है कि बम ठीक तरह से बना ही नहीं था और उसका शब्द सुनकर पुलिस आ गई। तीन साल जेल काटकर तब छुट्टी हुई। स्कूल के लड़कों के आगे खूब गरम-गरम व्याख्यान दिया करता है। कांग्रेस के चार आने का सदस्य है। कांग्रेस में वह दक्षिण पंथियों का घृणा-पात्र है। उसे वे लोग पीठ पीछे चूतड़-जला केशव कहते हैं, पर ऊपर से इज्जत के साथ बात करते हैं।

अबकी बार विश्वम्भर क्रोध में आ गया, पर जहाँ तक हो सका

क्रोध को दबाकर बोला—मैं आपकी तरह व्याकुल भारत नहीं, सत्याग्रह के अलावा हमारे पास कोई अस्त्र नहीं है।

—हाँ, तो वही सत्याग्रह न कीजिये—चूतड़-जला केशव ने तैश में आकर कहा।

—हाँ करूँगा।

—कब? जब सब ठंडा हो जायगा? जब मुहल्ला जलकर खाक हो जायगा, तब आप दमकल लेकर दौड़ेंगे।

—नहीं, सत्याग्रही मिलते ही मुसलमानी मुहल्लों में चलकर सत्याग्रह करेंगे।

—वह शुभ दिन कब होगा?—जिद् के साथ केशव ने कहा।

जब आप लोग तैयार होंगे। हमारे बल तो आप ही लोग हैं। सत्याग्रही कोई आसमान से तो नहीं टपकेंगे।

चूतड़-जला केशव यों तो बोलता नहीं था, पर एक बार बोलना शुरू करता था तो जोंक की तरह चिपट जाता था, और खून पीकर तभी अलग होता था। दक्षिण पन्थीगण उससे बहुत घबराते थे। औव्वल तो वे उससे तर्क नहीं करते थे, पर यदि कभी तर्क हो जाता था, तो फौरन मीठी बातों से उसे लुढ़कर या दूसरे के सर पर लदवाकर चल देते थे।

केशव ने तर्क को अंतिम उपसंहार तक ले जाने के लिये कहा—न तो कभी सत्याग्रही मिलेंगे और न कभी सत्याग्रह होगा, न नौ मन तेल जलेगा, और न राधा नाचेगी।

विश्वम्भर ने चूतड़-जला केशव की तरफ आग्नेय नेत्र से घूरा, पर कुछ कहा नहीं। उसकी शिक्षा ही यह थी कि सब अप्रिय बातों को बर्दाश्तकर अपना काम हासिल करना। फिर भी इज्जत बचाने के लिये कुछ कहना उचित था। वह कुछ कहने जा रहा था, पर रमेश ने उसे इस प्रयोजन से बचा लिया।

रमेश ने किसी को लक्ष्य न कर यों ही कहा—एक दूसरे की बात काटने में समय नष्ट करने से कोई फायदा नहीं, काम की बात की जाय।—इसके बाद थोड़ा थमकर कहा—यह तो विश्वम्भरजी भी मान रहे हैं कि इस हालत में चाहे जिस कारण से हो सत्याग्रह नहीं हो सकता, इसलिये अगर और किसी के पास कोई सुझाव हो तो वह पेश करे।

किसी ने कुछ नहीं कहा। सब चुप रहे।

जब रमेश ने देखा कि कोई बात नहीं कर रहा है तो उसने चूतड़-जला केशव को संबोधितकर कहा—अजी केशव, तुम्हीं कुछ कहो।

—क्या कहूँ?—केशव मानो विपत्ति में पड़ गया।

—क्या किया जाय?—रमेश ने कहा।

कुछ बात न समझकर केशव ने कहा—बाहुबल से काम लिया जाय।

विश्वम्भर हहराकर हँस उठा, पर कुछ बोला नहीं। दूसरे भी थोड़ा-बहुत हँसे।

रमेश ने प्रवीण सभापति की तरह इन बातों की ओर ध्यान न देकर कहा—किसके साथ बाहुबल से काम लिया जाय।

—जो लोग दंगा कर रहे हैं उनके साथ बाहुबल से काम लिया जाय और किसके साथ?

—पर वे मिलते कब हैं? मिलते तो उनसे बाहुबल से अच्छी तरह काम लेते, पर वे तो अदृश्य रहकर काम करते हैं।

चूतड़-जला केशव कुछ भी न झेंपकर बोला—उन्हें खोजना पड़ेगा······

रमेश ने समझ लिया कि केशव की बातें भी विश्वम्भर की तरह हवाई हैं, इसलिये उसने आगे उनसे जिरह नहीं किया, और दूसरों

से पूछा कि उनका कोई सुझाव है कि नहीं। रणधीर ने कहा—आप ही बतावें, हम क्या कहें ?

रमेश ने चारों तरफ सबसे पूछा। सब लोगों ने वही एक बात कही कि आप ही कहिये, आप ही कहिये।

यहाँ तक कि विश्वम्भर ने कहा—आप ही कहिये, हमारे दिमाग में कोई बात नहीं आ रही है।

मजबूरन रमेश को कहना पड़ा। उसने जरा गले को साफकर कहा—देखिये मैं पहले ही एक बात साफ कर देना चाहता हूँ, वह यह कि हम साम्प्रदायिक मनोवृत्ति को बहुत बुरा समझते हैं। मैं समझता हूँ सभी भारतीय एक जाति के हैं, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, इसाई हों या पारसी। मैं हिन्दू और मुसलमान को भारत माता की दो आँखें समझता हूँ, या यह भी कहा जा सकता है कि वे भारतीय राष्ट्रीयता के रथ के दो पहिये हैं। इसके अतिरिक्त मैं यह भी समझता हूँ कि सभी धर्मों की आधारगत बातें एक हैं, फिर भी उनमें जो भेद है, वह भौतिक कारणों से ही उत्पन्न हुआ है।

रमेश ने जरा देर के लिये रुककर सोचते हुए कहा—फिर भी यह एक तथ्य है कि साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, जरूर ही ये दंगे राष्ट्रीय एकता के परिचायक नहीं हैं……

लूला-लंगड़ा केशव बीच में ही बोल उठा—बल्कि यह दंगे जिन्ना के दो जाति सिद्धान्त को प्रमाणित करते हैं……

—हाँ, अवश्य करते हैं; पर इस प्रमाण का अस्तित्व दस साल में दो या तीन दिन के लिये रहता है, बाकी दिनों में इसके विरोधी प्रमाण ही मिलते हैं। जो प्रमाण केवल क्षणिक है उससे सत्य का निर्णय नहीं हो सकता, विशेषकर जब स्थायी-रूप से उसके विरुद्ध गवाही मिल रही है। जो कुछ भी हो हम इस विषय में अधिक नहीं कहेंगे, जो स्वतः सिद्ध है, उसके प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

उसने अपनी आवाज को उतारकर कहा—उसके अतिरिक्त एक तृतीय पक्ष है जिसका हित हिन्दू और मुसलमानों को लड़ाने में है। Divide and rule, चाणक्य से शुरूकर सभी साम्राज्यवादियों का यह कौल रहा है। भारत एक और अविभाज्य है। सब भारतवासियों को लेकर एक महाजाति की सृष्टि हुई है—जँगले के अंदर से दूर तक दृष्टिपात करते हुए उसने कहा—कोई इसे विखंडित नहीं कर सकता।

रमेश रुक गया। उसकी बातें दृढ़ और जोरदार थीं, पर कल से जिस भीषण दंगे का सूत्रपात हुआ था, उसमें ये बातें कुछ अवास्तविक ज्ञात हुईं। शायद इसीलिये श्रोतागण जरा अधैर्य हो गये।

एक श्रोता ने मानो इसी धैर्यहीनता को भाषा देते हुए कहा—जरूर, यह तो है ही।

—हाँ पर ३६ और १४ एक तथ्य हैं। उसको तथ्य की तरह मानने से अस्वीकार करना पागलपन होगा। हमारे दुर्भाग्य से इस देश में कुछ ऐसे लोग मौजूद हैं, जो इसे उन्नति न होने देने के लिये कमर कस चुके हैं। ये लोग बराबर देश को पीछे घसीट रहे हैं। ये लोग तृतीय शक्ति के हाथ में खेलकर मातृभूमि की गुलामी को चिरस्थायी बनाना चाहते हैं। ये लोग कुछ भी नहीं सुनना चाहते हैं। चोर भला धर्म के वचन क्यों सुनने लगे। ये लोग नोटिस से भला क्यों मानने लगें, इन्हें दूसरे तरीके से मनाना पड़ेगा।

इतना कहकर उसने सबके चेहरों की ओर अच्छी तरह देख लिया। क्या किसीने उसकी बातों को नापसन्द किया है? ऐसा तो नहीं मालूम हुआ। वह कहता गया—जैसा देवता है उसके लिये वैसी ही पूजा चाहिये। ये लोग धर्मान्ध हैं। दुःख है कि ऐसे लोगों में मुसलमानों की संख्या बहुत है। ये लोग धर्मान्ध हैं। ये लोग ३६ और १४ देखकर खुश होते हैं, ये लोग समझते हैं कि वे अपने

मज़हब की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं, पर यदि ३६ और १४ को किसी प्रकार उलटकर १४ और ३६ कर दिया जाय, तब ये लोग मान जायेंगे। दूसरे किसी प्रकार से इनको समझाना व्यर्थ है। समझाया जा भी नहीं सकता।

—याने ?—अमित ने पूछा।

—याने क्या ? मामला बहुत साफ है—रमेश जैसे कुछ हिच-किचाया।

इसका अर्थ यह है कि हम भी निर्दोष मुसलमानों को पकड़-पकड़कर मारें ?

—हाँ—रमेश ने संक्षेप में कहा, पर जब उसने देखा कि इस बात से किसी-किसी के मन में कुछ सन्देह रहा जा रहा है, तो उसने कहा, यह एक War measure या युद्ध कालीन कर्त्तव्य है। आज प्रत्येक जर्मन को, वह चाहे अंग्रेजों को मारने के काम में कोई भी हिस्सा न लेता हो, कैद कर लिया जायगा। जर्मन भी ऐसा ही करेंगे। इससे व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक व्यक्ति के साथ शायद न्याय न हो, पर किया क्या जाय ? इसके बिना राष्ट्र निरापद नहीं हो सकता।

अमित ने बाधा देकर कहा—यह तो आप ने ही कहा कि हिन्दू और मुसलमान एक जाति हैं, पर उपमा देते समय आपने दो ऐसी जातियों का उदाहरण दिया जो पृथक रूप से जाति हैं और परस्पर के साथ युद्ध में लिप्त हैं।

—हाँ ठीक तो है, हिन्दू और मुसलमान अंततोगत्वा और मौलिक रूप से एक जाति होने पर भी सामयिक रूप से पृथक जाति हैं। इसके अतिरिक्त गलत न समझो, मैं जिस अवस्था में दंगे में भाग लेकर मुसलमानों को मारने की सलाह दे रहा हूँ, वह इस उद्देश्य को लेकर नहीं है कि मुस्लिम धर्म को निर्मूल कर दिया जाय। मैं सिर्फ कुछ बदमाशों को शिक्षा देना चाहता हूँ। और एक उद्देश्य यह है कि हिन्दुओं के Morale की रक्षा करना चाहता हूँ। यदि कुछ मुसलमान

गुंडों की उत्पात से घबड़ाकर हिन्दूगण अपने मरैल को खो दें, तो वे सरकार से कैसे लोहा लेंगे ?

विश्वम्भर कह उठा—हाँ मुझे भी ऐसा बार-बार प्रतीत होता है ।......

अमित ने आश्चर्य के साथ कहा—इसके माने यह है कि आप रमेश बाबू के साथ सहमत हैं ?

—सहमत ? हाँ भी और ना भी, मैं आप लोगों से अलग थोड़े ही हूँ ।

जला-भुना केशव आनन्दित होकर बोला—ऐसा न होता तो आप हम लोगों के लीडर कैसे होते ?

विश्वम्भर नाथ ने सिर्फ जरा नेतागीरी के लिये ही कहा था कि वह इन लोगों से अलग नहीं है, पर जब उसने देखा कि वह अधिक फँसा जा रहा है तो साफ कह दिया—देखिये मैं आप लोगों के साथ तभी तक हूँ जब तक सत्याग्रह से च्युत नहीं होता, इससे अधिक नहीं ।

—याने ? रमेश ने पूछा ।

चन्दा माँगूँगा, आप लोग पकड़ जायेंगे तो मुकदमा लड़ूँगा, पर सामने नहीं होऊँगा । समझ गये न कि हमें अपनी पोजीशन बनाये रखनी है ।

जला-भुना केशव तैश में कुछ कहने जा रहा था, पर रमेश ने उसे आँख के इशारे से शांत कर दिया और कहा—हाँ-हाँ, इसीको वैज्ञानिक श्रमविभाजन कहते हैं ।

इसके बाद उसने सब की तरफ ताकते हुए प्रश्न के लहजे में कहा—तो ?

सब लोग चुप रहे । अमित ने पहले बातें की—दादा, कहीं पर जैसे आपकी बात मानने में मन पर बड़ी जबर्दस्ती-सी हो रही है ऐसा मालूम होता है । राजीव भैया मर गये पर उनका मतवाद तो जीवित है, पर आप की राय को मानना तो बिल्कुल उनका श्राद्ध ही करना होगा ।

—श्राद्ध तो करना ही चाहिये, आततायियों के रक्त से।

—आततायी कौन है, कैसे मालूम होगा ?

—प्रत्येक मुसलमान आततायी है।

अमित जरा विद्रोह कर बैठा, उसने कहा—यह कैसे कहा जा सकता है, बहुत से मुसलमान हिन्दुओं से अच्छे हैं, जैसे...

—उदाहरण की कोई जरूरत नहीं, मैं इसे मानता हूँ।

—फिर भी आप ऐसा कह रहे है ?

—हाँ फिर भी।

—क्यों ?

रमेश ने लम्बी साँस खींचकर कहा—तो सुनो। मैं मानता हूँ कि राजीव को जिसने या जिन लोगों ने मारा है, उनकी संख्या बहुत होगी दो या तीन पर जिस समय वे मारे गये हैं, उस समय किसी न किसी प्रकार की लड़ाई तथा हुड़दंगा हुआ होगा। दंगे के युग में सभी लोग बहुत सजग रहते हैं, जरूर ही जिस स्थान पर यह बात की गई उसके आस पास के लोगों ने अच्छी तरह देखा होगा, पर कोई भी बचाने नहीं आया। मारनेवाले मुहल्ले के लोग रहे होंगे, इसलिये किसी न किसी ने उनको पहचाना भी होगा।

—रात थी, यह भी हो सकता है कि न पहचाना हो।

—हाँ रात थी, फिर भी मुहल्ले के लोग आवाज से पहचान गये होंगे। मान लो कि नहीं भी पहचाने, तो जिस हालत में कुछ बदमाश सड़क पर एक आदमी को मार रहे हैं, उस अवस्था में उनका नागरिक कर्त्तव्य क्या था ? क्या एक नागरिक की हैसियत से मुहल्ले वालों का यह कर्त्तव्य नहीं था कि वे एक राहगीर को बदमाशों के हाथ से बचाने के लिये दौड़ पड़ें। याद रखिये कि बदमाशों ने सिर्फ इतना ही नहीं किया कि राजीव की पीठ पर छुरा भोंक कर भाग गये, बल्कि वे मारने के बाद लाश को उठाकर, सड़क से होकर ले गये, फिर किसी नाले में फेंक दिया।

—नाले में फेंक दिया ? डरकर केशव पूछ उठा ।

—इसके अलावा और क्या ? इतने सब मामले हो गये। इनमें बहुत समय लगा, बहुत से लोग जान गये होंगे, पर मजे की बात यह है कि कोई भी खबर नहीं दे रहा है। इस हालत में यदि उन सब को इस हत्या के लिये जिम्मेदार समझा जाय तो क्या गलती होगी ?

सभी चुप रहे। अमित भी चुप रह गया।

सब को एक बार अच्छी तरह देखते हुए रमेश ने फिर कहना शुरू किया—और भी सबूत लो, जो लोग उस मसजिद में बैठ कर गा रहे थे—

न घबराओ मुसलमानो खुदा की शान बाकी है,
अभी इसलाम जिन्दा है, अभी कुरान बाकी है।

इत्यादि, वे क्या एक दो थोड़े ही थे। आवाज सुनकर यही मालूम हुआ उनकी संख्या कम से कम बीस-पच्चीस रही होगी। इन सब का दंगे से सम्बन्ध था, इसमें शक नहीं। मैं तो उस जन्मान्ध हाफिज को भी दोषी समझता हूँ, उसने इस सम्बन्ध में जितना अज्ञान दिखलाया वह इतना अज्ञानी नहीं था। वहाँ जो लोग गाना गा रहे थे वह उन लोगों में से दो-चार को जरूर जानता होगा, पर वह अपनी अंधता का जिरहबख्तर पहन कर मजे में साधु बन गया। और भी आगे चलो, उन लाशों को कौन लोग कब्रिस्तान में लाये थे, और कौन उन्हें दफन कर ले गये। जरूर ही इस प्रकार मिल मिलाकर इन कामों में बहुत से लोग शामिल थे, इसके अलावा जिन लोगों ने देखकर नहीं देखा, सुन कर नहीं सुना, सब जानकर भी चुप हैं, वे सभी दोषी हैं। इस प्रकार देखने पर······

रमेश अपनी बात समाप्त भी न कर पाया था कि अकस्मात् एक नया आदमी उधर से हाँफते हुए कमरे के अंदर दाखिल हुए। जो आदमी इस प्रकार घुस आया, वह इसी मुहल्ले का अधिवासी था। नाम था मुकुन्दीलाल। उसके बाल बिखर गये थे, मुंह से झाग-सा

निकल रहा था। आँख पर अभी तक एक आतंक की दृष्टि लगी थी। उसका मकान हिन्दू पाकिस्तान का अंतिम मकान था, उसी के बाद मुस्लिम पाकिस्तान शुरू होता है।

सब की दृष्टि उस पर गई। रमेश ने पूछा—क्या बात है जी मुकुन्दीलाल? मुकुन्दीलाल उत्तेजना के मारे पहले कुछ कह नहीं सका—धम से बिछे हुए बिस्तरे पर बैठ गया। फिर कहा—देवदत्त भैया को पकड़ ले गये।

सभी एक साथ कह उठे—कौन?

—मुसलमान पकड़ ले गये।

—कैसे?

—वे रोज की तरह बैठकर इस समय मकान के सामने दातुन किया करते थे, अकस्मात् न मालूम किस तरफ से कुछ मुसलमानों ने उन पर हमला कर दिया। एकाएक चिल्लाने की आवाज सुनकर हम लोग मकान से निकल पड़े तो देखा कि उन्हें मुसलमान अपने मुहल्ले के अंदर एक फर्लाङ्ग खींच ले गये हैं। जब तक हम लोग अच्छी तरह देख पावें, उन्हें वे लोग लेकर गली में घुस गये।

—आप लोगों ने क्या किया?—केशव ने पूछा।

—मैं तो उधर ही दौड़ रहा था, पर सबने मिलकर पीछे से पकड़ लिया। कहा तुम्हारी भी जान जायगी, होगा कुछ नहीं। इसलिये खोज करते-करते इधर आप लोगों के पास निकल आया।

रमेश ने कहा—कब की घटना है?

—प्रायः दश मिनट हो गये। चलिये।

मुकुन्दीलाल के बड़े भाई देवदत्त को इधर सभी लोग जानते थे। उम्र सत्तर के करीब थी। बूढ़ा कभी किसी झगड़े में नहीं रहता था। सुरताल के साथ सबेरे हनुमान चालीसा पढ़ना और बहुत रात तक तुलसीकृत रामायण पढ़ना यही उनका काम था। सभी इस बूढ़े पर हमले की बात से उत्तेजित हो गये।

—चलिये, चलिये जल्दी।

सब मुकुन्दीलाल की बात पर तैयार हो गये। सब उठ खड़े हुए।

तर्क के लिये समय नहीं था।

रमेश ने उठकर कहा—पर खाली हाथ जाने का कोई अर्थ नहीं होता।

—हाँ—केशव ने कहा—एक आध बम होता तो अच्छा रहता।

अमित जैसे कुछ चिन्तित तथा लज्जित होते हुए बोला—मेरे यहाँ इतनी लाठियाँ तो नहीं होंगी······

रमेश ने कहा—पाँच मिनट के अंदर जिसे जो कुछ मिले लेकर आगे बढ़ो, सब लोग देवदत्त के मकान के सामने मिलो, और जो आना चाहें उनको भी साथ ले लो।

—हाँ-हाँ—कहते-कहते सब लोग रवाना हो गये। सबके चेहरे पर उत्साह की दीप्ति थी, जैसे वे लोग दिग्विजय करने चले हों।

सिर्फ विश्वम्भर चिन्तित मालूम पड़ा। वह जैसे कुछ सोचने में व्यस्त था जिसका ओर छोर नहीं था। और सब जल्दी में थे, पर वह धीरे-धीरे चला।

———

१३

पाँच मिनट के पहले ही कोई एक सौ आदमी देवदत्त के मकान के सामने इकट्ठे हो गये। सभी के हाथ में कुछ-न-कुछ था। लाठी, बल्लम, छूरा, छुरी, खुकरी। आदमी भी सब तरह के थे। धनी, बाबू, छोटे लोग। पर धनी बहुत कम थे, और कथित छोटे लोग भी कम थे। मध्य श्रेणी के लोग अधिक थे।

देवदत्त के उद्धार के लिये सब लोग कमर कस चुके थे। दो एक तजुर्बेकार लोग शक कर रहे थे कि शायद देवदत्त का उद्धार सम्भव न हो। अरे बाप रे, उस गली के अंदर मार कसाइयों और जुलाहों की बस्ती है। वहाँ से भला किसी का उद्धार सम्भव है? पर ये लोग अपने मन की बात किसी से कहने का साहस नहीं कर रहे थे।

रमेश और अमित का इशारा पाकर भीड़ मुसलमानी मुहल्ले की ओर रवाना हो गई।

उस समय दिन के छः बज रहे थे। यह छः युद्ध समय के अनुसार था अर्थात् पाँच बजे का समय था। जाड़े का दिन होने पर भी अब दिन कुछ बाकी था।

एक मिनट में भीड़ जाकर उस गली के सामने खड़ी हो गई जहाँ देवदत्त को दंगाई पकड़ ले गये थे। डकैती पड़ने से सैकड़ों गुणा अधिक शोर हो रहा था। जिसकी जो तबियत में आ रही थी, वह वही कह रहा था, और साथ-ही-साथ गगनभेदी 'राजा रामचन्द्र की जय' 'गंगा मैया की जय' 'बजरंग बली' का नारा दे रहे थे।

हिन्दू भीड़ को सड़कपर कोई बाधा नहीं मिली, इससे वह साहसी हो गई थी, उसने सीधे दाहिनी तरफ की उस गली में घुसना चाहा,

पर सफल नहीं हुई। सामने जो कुछ देखा उससे चौंककर तीन हाथ पीछे हट गई।

वह गली नर मुंडों से भरी हुई थी। जितनी दूर तक दृष्टि जाती थी, केवल नर मुंड, बल्लम तथा लाठियाँ थीं। इधर से गगन भेदी स्वर से 'राजा रामचन्द्र की जय' 'गंगा मैया की जय' 'बजरंग बली की जय' उठी, तो उधर से आसमान को तोड़ते हुए 'अल्लाह हो अकबर' 'या अली' की आवाज उठी।

हिन्दू भीड़ और मुसलमान भीड़ आमने-सामने खड़ी रही। न वे लोग गली से निकले और न ये लोग सड़क से बढ़े। जैसे अखाड़े में उतरकर दो पहलवान एक दूसरे को दाँव मारने के लिये एक दूसरे की आँख से आँख मिलाये रहते हैं, उसी प्रकार ये दो भीड़ें परस्पर को देख रही थीं। जिस समय पहलवान लोग इस प्रकार एक दूसरे को देखते रहते हैं, उस समय वे निस्पन्द, गतिहीन ज्ञात होते हैं, पर असल में उस समय उनकी हर एक छोटी-बड़ी नस और रक्त बिन्दु सबसे अधिक क्रियाशील तथा सबसे अधिक गतिमान होती है। ठीक यही हालत इन भीड़ों की थी। दो हिंस्र जन्तु घात में बैठे थे कि मौका पाने पर ही प्रतिद्वन्दी पर कूद पड़ेंगे, फिर मारपीट और हत्या शुरू होगी।

हिन्दू भीड़ जिस समय तक देवदत्त के मकान के सामने थी, बल्कि जिस समय वह रवाना हुई उस समय तक उसका नेता रमेश था, पर वहाँ से रवाना होते ही भीड़ ने उसको पीछे ढकेल दिया। फिर तो भीड़ के अंदर से उस मौके के नेता निकल आये। भीड़ अपना स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने लगी। ऐसे सब लोग नेता के रूप में निकल आये, जिनको पाँच मिनट पहले कोई नहीं जानता था।

रमेश और अमित फिर लड़-भिड़कर सामने पहुँच गये, पर अभी तक किसी की दृष्टि उनपर नहीं थी।

इस समय का नेता प्रीतम नाम का अहिर था। उसको इस इलाके में सभी जानते थे। जोर से बातें करता है, उम्र पैंतीस के करीब

होगी। इधर अहिर अक्सर तगड़े होते हैं पर यह आदमी वैसा कुछ तगड़ा नहीं था। दुबला-पतला इकहरा बदन था। सिर पर कटा हुआ दाग था। बाल छोटे थे इसलिये यह दाग और भी साफ मालूम होता था। प्रीतम के हाथ में एक मिर्जापुरी डंडा था। इस डंडे की बहुत सेवा की गई है, यह उसके बिल्कुल चिकने त्वक से ही ज्ञात होता था। लोहे के मोटे तार से ऊपर और नीचे बँधा हुआ था।

उसने हिन्दू भीड़ को उत्साह देते हुए कहा—सब आगे बढ़ो, देखते क्या हो?

भीड़ जरा हिली, चिल्लाती हुई एक कदम आगे बढ़ी, पर सामने उठी हुई लाठी, बल्लम की दीवार बाधक थी। चिल्लाकर साम्प्रदायिक नारे लगाने लगे।

रमेश ने सामने की भीड़ की ओर देखा। कई एक चेहरे परिचित ज्ञात हुए। हाँ वह जो आदमी उचिया कर सामने की तरफ खड़ा है, वह उनके यहाँ बहुत दिनों तक चपरासी था। रमजानी, जुलाहे का लड़का है। बड़ा ही हुक्म का पाबन्द था। बात-बात पर हुजूर कहता था। उसने खुद ही नौकरी छोड़ दी। पर आज उसका यह रूप है! एक क्षण के लिये रमेश स्थान और काल भूल गया। एक दुःख का चाबुक उसके हृदय पर सन से पड़ा। ३६ और १४! इसे मारने में सफल रहे तो हो जायगा ३६ और १५! पर ऐसा सोचकर उसे कुछ अधिक खुशी नहीं हुई।

पर उस समय घटना-चक्र बड़ी क्षिप्रता के साथ विघूर्णित हो रहा था......। वह उस समय भीड़ की एक इकाई मात्र रह गया था। उसमें अपनी कोई शक्ति नहीं थी।

कुछ क्षण में उसकी अपनी इच्छाशक्ति भी विलोप्त हो गई, भीड़ जैसे चलने लगी वह भी वैसे ही चलने लगा।

प्रतीम ने जरा आगे बढ़कर मुसलमान भीड़ को लक्ष्य कर कहा—देवदत्त को लौटा दो!

इतना भयंकर शोर हो रहा था कि मुसलमान उसकी बात नहीं सुन पाये, समझे कि कुछ गालियाँ दे रहा है। उधर से जवाब आया—अल्लाहो अकबर!

प्रीतम ने फिर अपनी बात की पुनरावृत्ति की, पर अबकी बार जवाब में उसके सिर को निशाना बनाकर किसी ने आधी ईंट मारी। कहाँ से क्या हुआ कुछ पता नहीं लगा? सारी हिन्दू भीड़ एक पल के अन्दर मुसलमानों की उस गली में घुस पड़ी। पहला धक्का इतना प्रबल हुआ कि मुसलमान दंगाई प्रायः दस हाथ पीछे हट गये। पर शीघ्र ही वे सम्हल गये। इस बीच में कई आदमी जख्मी हो गये, पर इसकी किसी ने परवाह नहीं की। एक नारकीय चीख से गली गूँज उठी।

हिन्दू गण प्रथम सफलता से बहुत उत्साहित हुए, पर वे अपना आगे बढ़ना कायम न रख सके। मकानों के ऊपर से ईंट, पत्थर, हँडिया, टूटी हुई बोतलों की वर्षा होने लगी। यदि हिन्दू आगे बढ़ पाते तो गली में घुसना सार्थक होता, इस अग्रगति का कोई अर्थ भी होता, पर जब हिन्दू आगे न बढ़ सके, और सिर पर न मालूम क्या-क्या बरसने लगे, दो-चार के सिर फट गये, और दूसरों के फटने की सम्भावना हुई, तब हिन्दू दंगाईगण धीरे-धीरे गली से निकल कर खुले रास्ते में खड़े हो गये।

हिन्दूभीड़ को पीछे हटते देखकर मुसलमान भीड़ के लिये यही उचित था कि वह उस पर टूट पड़ती, पर सहजात बुद्धिवश मुसलमान भीड़ भी गली के मुँह तक बढ़कर ही रुक गई। उसके बाहर निकलने का उन्हें साहस नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त हिन्दू भीड़ अधिक संगठित थी। सच कहा जाय तो मुसलमान दंगाइयों ने इतना नहीं सोचा था।

दो भीड़ फिर आमने-सामने खड़ी हो गई, एक गली में रही, दूसरी सड़क पर।

हिन्दू भीड़ में कुछ लोग समझ गये कि सन्मुख युद्ध में विशेष कुछ लाभ नहीं होगा, पर इस मकान के अधिवासियों के प्रति उनमें प्रबल

क्रोध उत्पन्न हुआ था इसलिये उन्होंने अपनी दुष्टबुद्धि को दूसरी तरफ लगाया।

कुछ लोगों ने पीछे हटकर सड़क के दोनों तरफ मुसलमानों के जो मकान थे उन पर ध्यान दिया। इन सब मकानों के कुछ-कुछ लोग, विशेषकर मुकुन्दीलाल के मकान के सामने, हिन्दुओं को एकत्र होते देखकर भाग गये थे। जो लोग रह गये थे, वे सम्पूर्ण रूप से हिन्दू दङ्गाइयों की दया पर निर्भर थे।

शाम हो जाने के कारण दंगाइयों को सुविधा हुई। इधर गली का मुहाना रोककर हिन्दू भीड़ खड़ी रही, उधर पाँच-पाँच, सात-सात हिन्दू करके मुसलमानों के इन मकानों में घुस पड़े, और उनकी जो तबियत आई सो करने लगे। उन्होंने लूटा, लोगों को मारा पीटा, बाधा पाने पर खून किया, जख्म किया, दो-चार क्षेत्रों में मुसलमान स्त्रियों पर बलात्कार किया, और मकान से निकलते समय घर में आग लगा दी।

धर्म के द्वारा अंधीकृत मनुष्य दूसरे धर्म के माननेवाले मनुष्यों को असहाय पाकर यह लोग जो भी अत्याचार कर सकते हैं, किया और यह सब बूढ़े देवदत्त के नाम पर हुआ जिसने शायद जीवन में कभी कोई जुर्म नहीं किया था।

रमेश, अमित ये लोग सब गली के सामने ही थे। यह भीड़ बराबर गली के सामने चुपचाप खड़ी रही, ऐसी बात नहीं, कई बार यह भीड़ हुमक-हुमक कर आगे बढ़ी और गली के भीतर घुस पड़ने की चेष्टा करने लगी, पर हर बार वे व्यर्थ मनोरथ होकर लौटे।

जिस प्रकार हिन्दुओं में दुष्ट बुद्धिवाले लोगों की कमी नहीं थी, उसी प्रकार मुसलमानों में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं थी। उनमें से कुछ लोगों ने गली में जाकर पूरे मुसलमानी मुहल्ले में खबर दी, और एक बहुत बड़ा गिरोह बनाकर सड़क-सड़क आगे बढ़ने लगे। वे लोग ऐसे कौशल से आगे बढ़ने लगे कि गली के सामने खड़ी हिन्दू भीड़

यह समझ ही न सकी कि उनकी बाँयीं तरफ से कोई दो हजार मुसलमान आगे बढ़ते हुए उनकी तरफ आ रहे हैं।

इस बीच में गली के सामने की हिन्दू भीड़ सौ से हजार व्यक्तियों की भीड़ हो गई थी, पर इनमें से बहुतेरे महज तमाशबीन बनकर आये हुए थे। ये लोग तभी आये थे जब यह अच्छी तरह समझ चुके थे कि हिन्दुओं ने अपना अग्रसर मोर्चा स्थापित कर लिया है, और उनको किसी प्रकार कोई खतरा नहीं है। इनके हाथों में कोई विशेष अस्त्र नहीं था। लाठी भी थी या नहीं, संदेह है।

अकस्मात् गली के सामने की हिन्दू भीड़ ने अपनी बायीं तरफ देखा कि जैसे कोई काली चीज उनकी तरफ बढ़ रही है। म्युनिसिपलिटी के बल्बों को इस समय तक लोगों ने चुरा लिया था, इसलिये कहीं रोशनी नहीं थी।

यह काली चीज जब सड़क पर आगे बढ़ी, और सड़क पर आते हुए मुसलमान जब समझ गये कि वे अपने अस्तित्व को अब आगे गुप्त नहीं रख सकते, तो वे या अली कहकर हिन्दू दंगाइयों के ऊपर टूट पड़े। हिन्दूगण इस आक्रमण के लिये बिल्कुल तैयार नहीं थे, इस लिये वे एकदम पीछे हट गये। साथ-साथ गली के मुसलमान भी मौका पाकर निकल आये, और सड़क के मुसलमानों के साथ मिल गये। जो लोग तमाशा देखने के लिये आये थे, वे चिल्लाते हुए सबसे पहले भाग निकले, और तभी ठहरे जब वे हिन्दू मुहल्ले के भीतर पहुँच गये।

जो हिन्दू लड़ने के लिये तैयार होकर आये थे, वे इस तरह भागे नहीं, पर उन लोगों ने जो कुछ किया, वह भागने की श्रेणी में ही आता है। जो लोग तमाशा देखने के लिये आये थे, उनके भागने में और इनके भागने में यह फर्क रहा कि तमाशाई भागते-भागते शायद अपने-अपने घरों पर ही रुके, पर ये लोग ज्योंही मुसलमानों के पाकिस्तान से निकल कर हिन्दू पाकिस्तान में पहुँचे, त्योंही डट गये, फिर पीछे नहीं हटे।

जो हिन्दू मौका पाकर सड़क पर के असहाय मुसलमानों के मकानों में घुस गये थे, उनमें से तो कुछ पहले ही अपनी-अपनी शरारत कर, कोई सिरपर गठरी लेकर, कोई जेब गरम कर लौट गये थे, पर कुछ लोग अब भी इन मकानों के अंदर थे। जब इन लोगों ने देखा कि बाहर विपत्ति आ गई है, तो इनसे जैसे भी भागते बना, भागने लगे। डर मनुष्य के द्वारा बहुत से ऐसे साहसपूर्ण कार्य करा लेता है जो दूसरे समय अकल्पनीय है। इन हिन्दुओं में से बहुतेरे तो दो मंजिले से कूदकर भाग खड़े हुए। पर कुछ पकड़े भी गये। उनकी जानें गईं।

रात को दस बजे के समय भी हिन्दू पाकिस्तान के छोर पर हिन्दू भीड़, और मुसलमान पाकिस्तान के छोर पर मुसलमान भीड़ उसी तरह खड़ी रही। इस बीच में दोनों तरफ मिलाकर सौ में अधिक हिन्दू मुसलमान मारे गये थे। पुलिस का कहीं पता नहीं था। थोड़ी देर बाद अकस्मात् यह खबर लगी कि पुलिस आ रही है। खबर को पाते ही दोनों तरफ की भीड़ें दो मिनट के अंदर काफ़ूर हो गईं। इसके बाद चारों तरफ रात की निस्तब्धता और अंधकार विराजने लगा। रात्रि के हृदय को कँपाकर कुछ देर के अंदर एक पुलिस लारी आयी। यह लारी दोनों पाकिस्तान के बीच के चौराहे पर कुछ देर रुकी। जैसे उसने कुछ सोचा, पर ऐसा मालूम हुआ कि कुछ न देख पाकर वह जिधर से आयी थी उधर लौट गयी। इतने ही से उसका विवेक शायद सन्तुष्ट हो गया। लारी में आज मि० रावट्र्स नहीं पर स्वयं पुलिस सुपरिंटेन्डेन्ट थे।

रमेश और अमित साथ ही साथ थे। जब उन्हें पुलिस के आने की खबर मिली, तो वे बेतहाशा भागने के बजाय धीरे से देवदत्त के मकान में घुस गये। अमित इस मकान में बराबर आया जाया करता था, वह मकान की स्त्रियों को भी जानता था। वह रमेश को लेकर बेरोकटोक दो मंजिले पर चढ़ गया।

पर देवदत्त के कमरे में घुसकर उन लोगों की सिट्टी-पिट्टी भूल सी गई। सामने वह कौन बैठा था, देवदत्त ही न? गत चार-पाँच घंटों से वे लोग देवदत्त को मुर्दा समझ रहे थे, पर उसे स्वस्थ अवस्था में अपने स्थान पर बैठे हुए पाकर दोनों बहुत आश्चर्य में पड़ गये।

अमित ने मानों तजदीक के लिये पूछा—चाचा आप ?

बूढ़े ने झुर्रियों के साथ मुस्कराते हुए कहा—हाँ।

यह मुस्कराहट दोनों में से किसी को अच्छी नहीं लगी।

—हम तो समझे थे कि आप......

—हाँ, पर यह भूल थी।

—कैसे?—दोनों और आगे बढ़कर पूछने लगे।

बूढ़े ने शान्त होकर कहा—भूल इस प्रकार हुई कि मैं रोज उस समय पर जहाँ बैठा करता था, आज मैंने यह समझा कि वहाँ रोज की तरह बैठना खतरे से खाली नहीं है, इसलिये तिमंजिले पर जाकर बैठ गया। मुकुन्दीलाल को तो जानते हो न? मैया पर जान देता है। जब उसने देखा कि मैं रोज जहाँ रहता था, वहाँ नहीं हूँ, तब उसने मान लिया कि मुसलमान हमें पकड़ ले गये हैं।

—पर मुकुन्दी चाचा ने हम लोगों से तो यहाँ तक कहा कि मुसलमान गली में घुस पड़े।

बूढ़े को हँसी आई, पर हँस न सकने पर वह खाँसा, बोला—उस मकान के अब्दुल के पास एक खस्सी है यह तो जानते हो? जब सद्भाव था, तो वह खस्सी चरने के लिये इधर भी चला आता था। मुकुन्दी के लड़के कितने ही बार उसकी पीठ पर चढ़कर सवारी करते थे। आज वह खस्सी इधर आ रहा था। आखिर जानवर है, उसे क्या मालूम था कि रातोरात इतने कांड हो गये हैं कि इधर आने पर उसे विपत्ति हो सकती है, इसलिये वह इधर आया था। जब मुसलमान लड़कों ने यह बात देखी तो वे उसे बाँधकर वापस ले जाने लगे। पर खस्सी ने आसानी से जाना स्वीकार न किया। आठ-दस छोकरे उससे

लड़कर लस्त हो गये थे। अंत में बहुत कोशिश के बाद वे उस गली में उसे ले गये। मैं तिमंजिले पर जाकर यह सारा तमाशा देख रहा था। मैं क्या जानता था कि दूर पर खड़े रहकर मुकुन्दीलाल यह सोच रहे थे कि वे लोग मुझे ही बाँधे लिये जाते हैं।

रमेश ने भौंहों को चढ़ाकर कहा—यह कोई मामूली गलती नहीं, भयंकर भूल थी।

वह लौटने जा रहा था।

देवदत्त ने कहा—भूल नहीं भैया, भूल नहीं।

—क्यों—खड़े होकर रमेश ने पूछा—क्यों भूल क्यों नहीं है? इतने लोगों की ख्वामख्वाह जान गई।

—जान तो जाती ही, और भी अधिक जानें जातीं।

—क्यों?

—अगर तुम लोग आज हमला न भी करते तो आज मुसलमान रात में हमला करते।

—ए!

हाँ, मुझे अच्छी तरह खबर मिली थी। उधर के एक आदमी ने जिसको हमने कभी एक मुकदमें में बचाया था सामने के मकान की छत पर आकर मुझसे बताया था कि हम आठ बजे रात के पहले ही अपना मकान छोड़कर चल दें।

—क्यों यह कुछ बताया था?

—नहीं, मैं समझ गया था, मैंने मुकुन्दीलाल को उसी समय यह बात बता दी थी, इसीलिये उसने जब मुझे रोज की जगह पर न देखा, तो ऐसी एक भयंकर कल्पना कर ली। इसके अलावा उस खस्सी की घटना ने......—बूढ़ा खाँसने लगा।

रमेश ने चिंतित होकर कहा—तो भूल अच्छी ही रही!

—हाँ, जरूर, नहीं तो और अनर्थ होता ।

इसके बाद रमेश बूढ़े को आज की सब घटनाओं का वर्णन कर सुनाने लगा । बारह बजे के समय रमेश अपने घर लौट गया ।

१४

बाद के दिन दोपहर में रमेश के मकान में मुख्य हिन्दू दंगाइयों की सभा हो रही थी । आज इनमें कुछ नये चेहरे थे । प्रीतम आदि कल के वीर इसमें शामिल थे ।

यह खबर मिली थी कि मुसलमान आज रात को हिन्दुओं के पाकिस्तान पर जोरों से हमला करने वाले हैं । इस सभा के ब्यौरे में जाने की आवश्यकता नहीं है । आलोचना प्रत्यालोचना के बाद यह तय हुआ कि मुसलमानों की तरफ के हिन्दुओं के कुछ मकानों को खाली कर दिया जाय, और इनमें लाठी, बल्लम आदि से सुसज्जित चुने हुए तीन सौ हिन्दू जवान बत्ती बुझाकर रहें, और जब मुसलमान इस मुहल्ले के अन्दर घुस पड़ें और कुछ आगे बढ़ जायें, तो एकाएक दोनों तरफ से उनपर हमला कर दिया जाय । यह भी ठीक हुआ कि प्रीतम अहिर आज का नेता रहे ।

दो-एक व्यक्ति ने रमेश के नाम का प्रस्ताव किया, पर रमेश ने स्वयं ही मना कर दिया, जो कुछ भी हो ऊपर से रमेश जितना भी कहे वह मन ही मन जरा दुःखित हुआ । उसने ध्यानपूर्वक एक बार प्रीतम को देखा और कहा—देखा जायगा ।

× × ×

टन-टन करके दुर्गा मन्दिर के घंटे में दस बजे, फिर भी मुसलमानों का कहीं पता नहीं था। दो-एक आदमियों ने जमीन पर कान रखकर यहाँ तक कि सड़क के उस पार मुसलमान पाकिस्तान में दो कदम आगे बढ़कर देखा, पर न तो कोई शब्द ही सुनाई पड़ा, और न कोई छाया ही दिखाई पड़ी।

मुसलमानों ने उस दिन उस गली तक सब मकानों को खाली कर दिया था। असली बात यह थी कि हिन्दू दंगाइयों ने इन सब मकानों के बहुत से लोगों को खत्म कर दिया था।

साढ़े दस भी बज गये, फिर ग्यारह भी बजे। सब लोग जमुहाई ले रहे थे। बहुत से लोग चुपचाप घर भी चले गये, जिनमें से कुछ लोग घूम-घुमाकर लौट भी आये। पर अधिकांश वहीं पर डटे रहे। उत्तेजना के अभाव के कारण कुछ लोगों का जोश जरा ठंडा पड़ रहा था। बात करते-करते अब बात करने का भी जी नहीं चाहता था।

देवदत्त के मकान के सामने वाले मकान में मुख्यतः रमेश और उनके मित्र थे। अँधेरे में बैठे-बैठे सब लोगों का जी ऊब रहा था। बहुत देर से सब लोग चुपचाप बैठे थे, बात नहीं कर रहे थे। शाम से बात करते-करते थक गये थे। कई बार बातचीत बन्द हो गई, फिर शुरू हुई, फिर बन्द हुई। अंत में एकदम बात बन्द हो गई।

जिस समय टन-टनकर ग्यारह बजे उस समय अकस्मात् चूतड़-जला केशव जाग उठा, धीरे से बोला—रमेश भैया......

—हाँ—रमेश सजग था, बोला—क्या है?

—मैं ज़रा सो गया था......

—हाँ—रमेश ने कहा—सिर्फ ग्यारह बजे हैं।

—मैंने एक स्वप्न देखा।

—हाँ, इस बीच में ही रमेश ने पूछा।

—हाँ, मैंने राजीव भैया को देखा।

वह जरा रुका। सब लोग ध्यान से सुनने लगे।

—मैंने देखा कि राजीव भैया बहुत दुबले हो गये हैं।

अमित ने बीच में ही टोककर कहा—क्या ? वे जिन्दा हैं ?

—कौन जाने ? ठीक-ठीक समझ में नहीं आया। एकबार मैं उन्हें देखाता था। एक बार नहीं देखाता था। जब देखाता था तो वे बहुत दुबले मालूम होते थे। शरीर पर, माथे पर सभी जगह चोट के दाग थे। उन्होंने मुझे पुकारा। कहा—चूतड़-जला केशव !

इस दुःख में भी जरा मजाक की गंध पाकर हँसते हुए अमित ने कहा—उन्होंने तुम्हें चूतड़-जला कहा ?

—हाँ, तुम लोग सभी मेरी अनुपस्थिति में मुझे ऐसा कहा करते हो, क्या मैं इस बात को नहीं जानता ? अच्छा सुनो, उन्होंने ने मुझे पुकारा। मैं पास गया। तब उन्होंने कहा—हमको उन लोगों ने जिस तरह मारा है क्या तू उसी तरह से पाँच मुसलमानों को न मार सकेगा ? मैंने कहा—जरूर दादा जरूर। तब उन्होंने बताया कि उन लोगों ने हमें बाँध-बाँधकर मारा है, कहकर उनकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे।

अमित रुआँसा होकर बोला—बाँध-बाँधकर मारा है ?

—हाँ, उन्होंने ऐसा ही कहा ?

—तो अब ?

—तो अब मेरी राय यह है कि उनकी आत्मा की तृप्ति के लिये काली मन्दिर में बलिदान दिया जाय।

अमित ने स्तम्भित होकर कहा—बलिदान ?

—हाँ बलिदान। इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? नरबलि तो शास्त्रों में है।

बीच में बात काटते हुए रमेश ने कहा—मुसलमान कहाँ से पाओगे, अब वे सावधान हो गये हैं......

—यह भार हमारे ऊपर रहा, मैं सब आर्गेनाइज कर लूँगा, आप कहें तो कि बलिदान होगा।

—बलिदान तो कल हुआ ही, आज भी उसी के लिये बैठा हूँ, इसमें नई बात क्या है?—रमेश ने छुटकारा पाने के लिये कह दिया।

केशव चुप हो गया। सब फिर ऊँघने लगे।

रात को बारह बजे के समय रमेश ने कहा—इस तरह सब लोगों के एक साथ जगने से फायदा क्या है? कुछ-कुछ लोग जगकर पहरा दें, बाकी सोवें।

केशव ने हामी भरी। यही हुआ। पाँच-पाँच आदमी जगने लगे। दूसरे मकानों में भी हिन्दू दंगाइयों ने इसी तरह की व्यवस्था कर ली।

दो-दो घंटे का पहरा था।

६ बजे फिर भी रात कुछ बाकी थी। बिछे हुए लम्बे बिस्तरे पर मोटे-मोटे कम्बल ओढ़कर बिना तकिया के ही सिकुड़कर सब लोग लेटे थे।

चूतड़-जला केशव रमेश को धक्का देकर जगा रहा था—भैया! भैया!

रमेश तड़फड़ाकर उठ खड़ा हुआ, साथ ही और भी कुछ आदमी उठ बैठे।

—क्या मामला है? क्या वे लोग आ गये?

—सबने अपने-अपने अस्त्र या लाठी पर हाथ रक्खा।

—नहीं नहीं, कोई डर की बात नहीं है।

नाराज होकर रमेश ने कहा—फिर क्यों जगाया?

चूतड़-जला केशव ने कहा—पा गया।

रमेश हताश होकर बैठ गया, बोला—जो कहना हो साफ-साफ कहो, इस तरह पहेली न बुझाओ।

केशव ने इसके जवाब में जो कुछ कहा उसका अर्थ यह था कि रात के आखिरी हिस्से में उसी का पहरा था। उसने देखा कि किसी तरह आक्रमण की सम्भावना नहीं है, इसलिये उसने सबको निद्रित छोड़कर एक मील घूमकर मुसलमानों के पाकिस्तान में प्रवेश किया। उसके साथ पाँच हिन्दू और भी थे। उन लोगों ने तीन आदमियों को मार डाला और वे तीन को जिन्दा पकड़ लाये।

केशव ने कहा— भैया, इन तीन आदमियों को पकड़ लाने में हम बहुत हलाकान हुए। खैरियत यह है कि लल्लू पहलवान साथ में था, नहीं तो इन लोगों को लाना सम्भव न होता, रास्ते में ही छोड़ आना पड़ता।

रमेश ने उसकी तरफ एक बार आधे अविश्वास के साथ देखा, पर कुछ कहा नहीं। उसने इसमें उत्साहित होने की कोई बात नहीं पाई। उसने और कोई प्रश्न करना भी उचित नहीं समझा।

अच्छी तरह सवेरा हो चुका था। ताजी हवा आकर जो कुछ सड़ा और गला था उसे भुला देने का निमंत्रण देती आ रही थी। रमेश को अच्छा नहीं लगा। उसने हाँ या ना कुछ न कहकर लाल इमली के कम्बल को ओढ़कर मकान का रास्ता लिया।

१५

काली मन्दिर हिन्दुओं के पाकिस्तान में अच्छी सुरक्षित जगह पर था। रमेश के मकान से एक फर्लांङ्ग ओर इस मुहल्ले के भीतर की ओर था।

यों तो यह काली मन्दिर बिल्कुल ही मुहल्ले के लोगों की दृष्टि आकर्षित नहीं करता था। इस मुहल्ले में काली जी का भक्त कोई नहीं था। अधिकांश लोग राम, कृष्ण तथा बजरंगबली के भक्त थे। इसलिये कई एक घर बंगालियों के अलावा इस मन्दिर में शायद ही कोई आता था। मन्दिर भी किसी की परवाह नहीं करता था। मन्दिर के साथ कुछ जागीर थीं, इसलिये न तो भक्त वृन्द की दया पर न तो मन्दिर ही निर्भर था, न मन्दिर का बंगाली पुरोहित ही।

यह मन्दिर फिर भी मुहल्ले वालों की एक बड़ी सेवा करता था। वह सेवा यह थी कि मन्दिर में एक दीवार घड़ी थी, और दिन-रात मिलाकर दो चपरासी जागीर से तैनात थे जो घड़ी देखकर घंटा बजाया करते थे।

जहाँ तक सेवा की बात है मन्दिर की सेवा इतनी ही थी। पर इस मन्दिर का कौतूहल मूल्य बहुत था। प्रत्येक अष्टमी को यहाँ पर एक बकरे का बलिदान किया जाता था। दूसरे दिनों में भी बलिदान निषिद्ध नहीं था, पर अष्टमी का बलिदान ही नियमपूर्वक होता था। इस दिन मुहल्ले के लड़के तमाशा देखने के लिये मन्दिर के सामने मैदान में हाजिर होते थे। इसके अतिरिक्त बंगाली पुरोहित जो मुहल्ले के लोगों के निकट पुरोहितजी करके परिचित थे, मुहल्ले वालों को चुपचाप गंडा तावीज भी दिया करते थे। पछाँह के शहर में वे विश्वासी लोगों की आँख में बंगाल के जादू के एकमात्र प्रतिनिधि थे।

रमेश मकान पर लौटकर मुँह हाथ धोकर कुछ मामूली नाश्ता करने के बाद सो गया था। उसके मिजाज को सभी जानते थे, इसके अतिरिक्त मकान के सभी लोग अस्पष्ट रूप से यह जानते थे कि वह हिन्दू पाकिस्तान का पहरा देने गया था, इसीलिये किसीने उससे कोई प्रश्न नहीं पूछा।

दोपहर को बारह बजे जब वह नींद से उठा तो पास ही हाट लगने की-सी आवाज सुनाई पड़ी। उसने उसे ध्यान से सुना पर वह कुछ समझ नहीं सका कि मामला क्या है। इतना तो मालूम पड़ा कि यह आवाज हिन्दू मुहल्ले के अंदर से आ रही है। वह उसी वक्त मुंह धोकर निकल जाने के लिये तैयार हो गया। कुछ दिनों से दूकान या कोठी का कोई काम नहीं हो रहा था। उसका रास्ता रोककर उसकी स्त्री खड़ी हो गई। बोली—खाना तैयार है—उसकी स्त्री विमला की हालत दो दिन से बहुत बुरी हो रही थी।

जिसे प्रेम कहते हैं, उसका झंझट तो यहाँ किसी पर नहीं था, पर पति पर उसका परलोक न हो इह लोक निर्भर है। हिन्दू-धर्म की इस सार भूत बात को वह अच्छी तरह समझती थी। उसने कहा—खाना तैयार है।

रमेश ने स्त्री की ओर देखा, कुछ सोचा, फिर खाने के लिये राजी होकर संक्षेप में कहा—लाओ। विमला अकृतकृत्य होकर दौड़ी हुई गई।

रमेश अपने कमरे में जाकर भोजन की प्रतीक्षा करने लगा। उस समय तक लड़का नौकर रामखेलावन आकर उसके बिस्तरे को लपेट रहा था। दूसरे दिनों में विमला अपने हाथ से यह काम करती थी, पर आज अबेर हो जाने के कारण रामखेलावन इस काम को कर रहा था। रमेश ने उससे पूछा कि यह शोर-गुल काहे का हो रहा है।

कम्बल को तह करते हुए रामखेलावन ने कहा—शोर गुल कहाँ ?

—यह जो हाट की तरह शोर हो रहा है यह क्या है ?

—ओह,—रामखेलावन ने कुछ आत्म गौरव के साथ कहा, मानो यह कैसी बात है जिसे सभी जानते हैं, और रमेश के लिये न जानना आश्चर्यजनक है। उसने कहा—मन्दिर में सभा होगी।

—काहे की सभा ?

—हिन्दू सभा—रामखेलावन ने कहा।

खाना आ जाने पर उसे किसी तरह गले के नीचे उतार रमेश कालीबाड़ी के लिये रवाना हो गया। अवश्य ही इस बीच में कोई खास बात हुई है, नहीं तो अकस्मात् यह सभा क्यों ? सबेरे तक किसी सभा की बात तो नहीं थी।

रमेश ने दूर से देखा कि काली मन्दिर के सामने का मैदान भर गया है। लोगों के मारे तिल रखने की जगह नहीं थी। जब इस मैदान में कुछ महीने पहले रामलीला हुई थी, उस समय जैसी भीड़ हुई थी, आज उससे अधिक भीड़ थी, पर एक दृष्टि से ही ज्ञात हो जाता था कि इस भीड़ में और उस भीड़ में बहुत फर्क है। वह भीड़ उत्सवकारियों की भीड़ थी, और यह भीड़ कुछ अजीब-सी गंभीर थी। सबका चेहरा खिंचा हुआ था। उस भीड़ की अभ्यर्थना के लिये दरियाँ बिछी हुई थीं, और बीच-बीच में गुलाब-जल की वर्षा हो रही थी। चारों तरफ़ दूकानें लगी हुई थीं। पर इस भीड़ के लिये कुछ भी बिछा नहीं था फिर भी लोग बड़े चाव से बैठे थे। उस भीड़ में लोग सजकर आये थे। पर इस भीड़ में लोग जैसे-तैसे पोशाक में थे। कई लोग तो केवल रुई की बंडियाँ पहने हुए थे। इस बीच में वस्त्र समस्या और भी जटिल हो जाने के कारण शायद पोशाक की यह कमी हो।

रमेश कुछ समझ नहीं सका कि मामला क्या है। जो हो देखा जाय क्या होता है। खुद ही सब साफ हो जायगा। वह धम से सबसे पीछे के पंक्ति में जहाँ भी जगह मिली वहीं बैठ गया।

सामने कराली काली मूर्ति दिखाई पड़ रही थी। कितने ही बार उसने इस काली मूर्त्ति को देखा, पर आज जैसे काली और भी कराली ज्ञात होती थी। बंगाली पुरोहित आज लाल वस्त्र पहनकर गले में मोटा जनेऊ डालकर खड़ाऊँ पहनकर इधर से उधर टहल रहा था। गले में बहुत बड़े रुद्राक्षों की माला थी। इस आदमी को दंगे की जगह पर नहीं देखा गया था। पर आज यह अकस्मात् सब हिन्दुओं का नेता कैसे बन बैठा?

भीड़ में जो लोग इधर से उधर जा रहे थे, उन सभी को वह पहचानता था, पर आँख से हजार खोजने पर भी अमित, रणधीर, चूतड़-जला केशव दिखाई नहीं पड़े। दूसरे सभी वहाँ पर दिखाई पड़े। प्रीतम पुरोहितजी के साथ कुछ कानाफूसी कर रहा था। यहाँ तक कि बूढ़ा देवदत्त भी वहाँ पर था। पर इस सभा में एक भी स्त्री नहीं थी। हाँ, आस-पास के मकानों के सब जँगले और बरामदे स्त्रियों से भरे हुए थे।

रमेश ने खूब निगाह दौड़ाकर देखा कि सभापति के बैठने की कोई जगह नहीं है। वक्ता के खड़े होने के लिये भी कोई जगह तैयार नहीं थी जैसे स्वयं महाकाली आज सभा की नेत्री हैं।

अकस्मात् पीछे से किसी ने रमेश का कुरता पकड़ कर खींचा।

—चलिये—किसी ने कहा।

रमेश ने पीछे लौटकर देखा कि—मुहल्ले का एक लड़का है। चेहरा उत्साह से प्रदीप्त है। बोला—चलिये......

रमेश ने हिलकर खड़े होते हुए कहा—कहाँ?

—आगे चलिये, हम लोग आपको कब से खोज रहे हैं।

रमेश के बगल में बैठे हुए लोगों ने उसे जरा तुच्छ दृष्टि से देखा, और एक दूसरे का मुँह ताकने लगा।

रमेश ने जरा गौरव का अनुभव किया, और लड़के के पीछे-पीछे चला। वह लड़का सभा के बीच से न जाकर और पीछे चला गया और सभा को भूनते हुए रमेश को करीब-करीब मन्दिर के अन्दर जहाँ से बहुत से गण्यमान्य लोग बैठे थे, वहाँ ले जाकर बैठा दिया।

सामने ही यूपकाष्ठ था।......बहुत दिन से इसने किसी बकरे का भी खून नहीं पिया था।

रमेश ने यहाँ फिर एकबार अमित इत्यादि को आँख से खोजा, पर वे कहीं भी नहीं दिखाई पड़े। रमेश के मन में एक बार इच्छा हुई कि आसपास के लोगों से पूछे कि क्या मामला है, पर उसे ऐसा पूछते हुए शर्म मालूम हुई। जो सभी जानते हैं उसे न जानना यह लज्जा की बात नहीं तो और क्या है? इसके अलावा लोग शायद उसे नेता समझ रहे हैं, और वह इस बात को कैसे स्वीकार करे कि वह इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता। वह चुपचाप बैठकर दूसरों की बात ध्यानपूर्वक सुनने लगा कि शायद मालूम हो।

उसी के पास बैठे हुए मुहल्ले के ही अधेड़-उम्र के धनी ब्रजकिशोर बाबू ने अकस्मात् चिल्लाकर एक आदमी को बुलाया। यह आदमी मन्दिर में घंटा बजाने वालों में था।

इस आदमी के पास आते ही ब्रजकिशोर बाबू ने सबको सुनाकर मुरब्बियाना ढंग से कहा—जाकर पुरोहितजी से मेरा नाम लेकर कह दो कि जो कुछ काम है उसे जल्दी कर डालें।

वह आदमी सिर हिलाकर हामी भरते हुए जाने लगा तो ब्रजकिशोर बाबू ने गले को और एक पर्दा चढ़ाकर कहा—समझे! तमाशा नहीं है, जो काम है उसे जल्दी करो।

वह आदमी जल्दी-जल्दी चला गया और जाकर पुरोहितजी के

कान में कुछ कहा। फिर लौटकर ब्रजकिशोर बाबू से कहा—पूजा बस शुरू ही होने वाली है।

पूजा सचमुच जल्दी शुरू हुई। आज सोलह उपचारों से पूजा हुई, पर पुरोहितजी ने आध घण्टे में पूजा समाप्त कर दी। पूजा के अन्त में पुरोहितजी काली मूर्त्ति के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये। पुरोहितजी का लाल वस्त्र, रुद्राक्ष की माला, और सबसे बढ़कर उनके सीने पर के बड़े-बड़े बाल बहुत ही भयंकर ज्ञात हो रहे थे।

अकस्मात् सभा में कुछ चंचलता दिखाई पड़ी। पुरोहितजी भी अब उस प्रकार से स्थिर होकर खड़े नहीं रह सके। उनके हाथ-पैर जैसे कुछ काँपने लगे। यह कँपना जाड़े के कारण था या और किसी कारण यह कहना मुश्किल है।

यूपकाष्ठ के सामने वही सुपरिचित व्यक्ति दिखलाई पड़ा जो यहाँ पर बलिदान किया करता था। इस आदमी को इस इलाके में कौन नहीं जानता था। प्रत्येक काली की पूजा तथा महाष्टमी के दिन यही मनुष्य आसानी के साथ एक के बाद एक दूसरा बकरा काटता जाता था। अब उसकी उम्र अधिक हो गई है पर फिर भी उसका खाँड़ा पकड़ने का ढंग कितना तेजस्वी है। अपनी-अपनी धारणा के अनुसार वह एक वीर अथवा शैतान है। यह आदमी कहाँ रहता है, बकरा काटने के अतिरिक्त इसका कोई और भी काम है या नहीं इसे कोई नहीं जानता था। फिर भी बलिदान के दिन किसी भी पर्व में उसे ठीक इसी जगह पर पाया जाता था।

यह आदमी शून्य दृष्टि से एक तरफ ताक रहा था। धूप में उसके खुले हुए बदन का एक-एक रोवाँ चमक रहा था।

अकस्मात् चंचलता बहुत बढ़ गई। बहुत से लोग जो पीछे बैठे थे उठ खड़े हुए। कोई भी स्वेच्छा-सेवक नहीं था, पर जनताके बीच से ही

कुछ लोगों ने अपने से ही यह भार अपने ऊपर लिया था। जनता जल्दी बैठ गई, पर उनके उठने के कारण जो धूल उड़ी थी, वह आसमान में बड़ी देर तक भँवर की रचना करने लगी।

सब लोग एक विशेष तरफ ताक रहे थे। देखते-देखते उसी तरफ से चूतड़-जला केशव और दूसरे कुछ लोग निकले। पर यह क्या, इनके बीच में मुश्क बँधी हुई हालत में तीन आदमी थे। इन लोगों के गलों में गेंदे के फूल की एक-एक माला थी। इसके अतिरिक्त गले में रस्सी भी बँधी हुई थी। केशव रस्सी पकड़कर आगे-आगे चल रहा था।

तीनों मुसलमान थे। रमेश एक दृष्टि में ही समझ गया कि मामला क्या है। एक आधी-उम्र का लम्बी दाढ़ी वाला था। दूसरा भी तीस के नीचे था ? परिपूर्ण यौवन था। तीसरा आदमी एकदम बच्चा था, १५ साल का होगा।

केशव दोनो आदमी को यूपकाष्ठ के पास घसीटकर ले गया। आधी उम्र का मुसलमान बलिदान की लकड़ी और सामने खड़े जल्लाद को देखकर अजीब हालत में हो गया। उसने आगे बढ़ने से इन्कार किया। केशव ने बहुत खींचा पर सफल नहीं हुआ। तब साथ के लोग उसे जबर्दस्ती बलिदान की लकड़ी के पास खींच ले गये और उसके विनय करने पर भी बकरे के गले को जिस प्रकार बलिदान की लकड़ी में रक्खा जाता है उसी प्रकार उसके सिर को उसी लकड़ी में डाल दिया। केशव ने दूसरी तरफ जाकर रस्सी को इस प्रकार तानकर पकड़ा कि वह सिर न उठा सके। दूसरों ने उसके पैर को उठा लिया। बराबर वह अधेड़-उम्र का मुसलमान बचाओ, बचाओ कह रहा था, पर कोई भी उसकी बात सुन नहीं रहा था। जनता के बीच से किसी ने एक भी बात नहीं कही।

चूतड़-जला केशव ने खाँड़ा वाले आदमी को इशारा किया कि वह खाँड़ा चलावे। उस आदमी का खाँड़ा एक बार हिला। ऐसा

मालूम हुआ कि शायद गिरे, पर खाँड़ा फिर स्थिर होकर रह गया। उधर उस आदमी का कराहना जारी था, पर केशव ने रस्सी इतने जोर से खींच रक्खी थी कि एक अस्फुट शब्द के अतिरिक्त कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था। उसके अलावा उसका पैर बराबर तड़प रहा था।

खाँड़ा वाले आदमी को हिलते-डुलते न देखकर केशव ने परेशान होकर कहा—अरे खत्मकर, देखता क्या है।

फिर भी जब खाँड़ावाला बूढ़ा हिला नहीं तो एक मुहूर्त के अंदर रस्सी को उसी प्रकार से तनी हुई रखकर केशव ने उसके हाथ से खाँड़ा ले लिया और रस्सी को पैर से दबाकर खाँड़ा चला दिया। एक अस्फुट अंतिम कराहने की आवाज के साथ दाढ़ी वाला सिर जमीन पर लोटने लगा।

कहाँ से क्या हो गया यह रमेश की समझ में नहीं आया। उस आदमी का सिर जमीन पर गिरते ही यन्त्रचालित की तरह सभा के सब आदमी उठ खड़े हुए। रमेश भी उठ खड़ा हुआ।

पर केशव ने इन बातों की परवाह न कर अपने साथियों से कहा कि दूसरे आदमी को भी बलिदान की लकड़ी पर ले आवें। पहले आदमी की तरह दूसरे आदमी ने जरा भी प्रतिरोध नहीं किया। एक बार भी प्राण भिक्षा नहीं माँगी, मानो स्वयं ही जाकर उसने अपना सिर लकड़ी में डाल दिया, पर ऐसा करने के पहले उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को खोलकर सामने खड़े लोगों को एक बार देख लिया। एक ही ह्रस्व चितवन थी, पर उसीमें कितना भयंकर तिरस्कार था।

रमेश विचलित हुआ। कल उसने खुद ही हत्या की है, कराई है, पर इस प्रकार की हत्या का समर्थन उसके मन ने नहीं किया। उसने जाकर पीछे से केशव के उठे हुए खाँड़ा को पकड़ लिया।

—केशव—रमेश ने रोकने के स्वर में कहा, उसका गला भारी था।

केशव ने पीछे ताककर देखा कि रमेश है। बोला—दादा छोड़िये, अभी इस आदमी ने अमित को मार डाला है......

—अमित को मार डाला ?

—हाँ, हम लोगों ने पहले इन लोगों के हाथ-पैर नहीं बाँधे थे, नहलाकर ला रहे थे। अच्छी तरह आ रहे थे, पर रास्ते में आते-आते हाथ के पास एक छुरा पाकर इसने अमित के सीने में बेंट तक बैठा दिया। और मजे की बात यह है कि अमित मुझसे यह कह रहा था कि इन्हें छोड़ दिया जाय।

रमेश का हाथ शिथिल हो गया। उसने खाँड़ा छोड़ दिया, और साथ-ही-साथ केशव का खाँड़ा गिरा, और देखा गया कि उस आदमी का सिर जमीन पर लोटकर तड़प रहा है।

भीड़ खड़ी ही थी। यद्यपि पहले बलिदान के साथ-साथ भीड़ एक सहजात बुद्धिवश खतरे से बचने के लिये उठ खड़ी हुई थी, पर न मालूम किस बात के आकर्षण ने भीड़ के सहस्रों पैरों को पंगु कर दिया था। भय पर कौतूहल और कौतूहल पर नृशंसता प्रबल हो गई थी।

केशव पर जैसे भवानी चढ़ गई थी। उसने इशारा किया कि तीसरे मुसलमान को भी बलिदान की लकड़ी में लगा दिया जाय।

अबकी बार रमेश ने दृढ़ हस्त से उसके हाथों को पकड़ लिया, बोला—रहने दो केशव, काफी हो गया।

—नहीं, नहीं—केशव ने कहा।

—अरे यह तो बच्चा है, इसे मारने से क्या फायदा, छोड़ दो—विनय करते हुए रमेश ने कहा।

जनता में से भी कुछ लोग रमेश की बात का समर्थन कर कह उठे—हाँ हाँ केशवजी, उसे छोड़ दीजिये।

उस १५ वर्ष के लड़के के लिये यह मुहूर्त्त कितने महत्त्वपूर्ण थे। भय से उसका चेहरा इतना-सा हो गया था। ऐसा मालूम होता था कि डर से ही वह मर जायगा। इतने नर राक्षसों के सामने क्या हो सकता था ? वह सब कुछ देख रहा था, सब कुछ सुन रहा था, पर भय से उसके मुँह से बात नहीं निकल रही थी। रोने के लायक साहस भी उसमें नहीं रह गया था।

जनता के बीच से एक आदमी ने आगे बढ़कर केशव के खाँड़ा को प्रायः ले लिया। पर केशव बिल्कुल विचलित नहीं हुआ, बोला—माना कि बच्चा है, पर उसने तो सब कुछ देखा है और सुना है। उसे छोड़ दूँ, उसके दो दिन बाद वह आवे, सबको शिनाख्त करे फिर हम सब लोग फाँसी पर चढ़ें। नहीं, यह सब नहीं हो सकता—कहकर उसने एक तरह से खाँड़ा को छीन लिया। असली बात यह है कि जिस व्यक्ति ने खाँड़ा पकड़ रक्खा था फाँसी के नाम से वह भी डर गया। इसके बाद केशव ने उस मुसलमान लड़के को बलिदान की लकड़ी में न डालकर ही योंही खाँड़ा से उस पर एक के बाद एक दस बीस बार किये, पर वह इतना उत्तेजित था कि उसकी चोटें कम लगीं। कटा कम और कुचल अधिक गया।

वह लड़का उसी वक्त मांस के कुछ लोथड़ों में परिणत होकर गिर पड़ा। जैसे मकान अकस्मात् धँस जाते हैं। आस-पास के लोग खून से तर-बतर हो गये।

एक मिनट के अन्दर सारी जनता भर्र से उड़ गई, मानों उस मैदान में कोई था ही नहीं।

इतने लोगों के आकर्षण का केन्द्र होने के कारण इतनी देर तक पुरोहितजी आकाश मार्ग में विचरण कर रहे थे, पर ज्योंही जनता छँट गई, अकस्मात् पुरोहितजी के निकट सारी वास्तविकता स्पष्ट हो गई। रमेश, केशव आदि भी जब धीरे-धीरे चलने पर उतारू हुए,

तब पुरोहितजी ने अकस्मात् रमेश के पैरों को पकड़ लिया, बोला—बेटा मेरी कुछ गति करो, नहीं तो मैं मारा जाऊँगा······

पैरों को घृणा के साथ छुड़ाकर रमेश ने कहा—कैसी गति ? आप क्या चाहते हैं ?

खड़े होते हुए पुरोहितजी ने लाशों की ओर दिखाते हुए कहा—ये······

—ये क्या ?—रमेश ने कहा ।

—इनको हटवा दो बेटा—उसने प्रायः रुआँसा होकर कहा—मैंने इतना नहीं सोचा था ।

रमेश यों तो कट्टर हिन्दू था, पर फिर भी बहुत सी बातों में उसका कोई विश्वास नहीं था । वह मूर्त्तिपूजा में विश्वास नहीं रखता था । बोला—उनसे कहो—कहकर उसने काली मूर्त्ति की तरफ इशारा करके दिखला दिया ।

पुरोहितजी फिर उसके पैर पकड़ने को तैयार हुए । रमेश एक कदम पीछे हट गया ।

रमेश के निकट निराश होकर उसने चूतड़-जला केशव की ओर आगे बढ़ते हुए कहा—तो तुम्हीं बेटा कुछ ढंग करो ।

केशव ने कहा—हो रहा है ।

केशव चाहे जितना झक्की हो परिस्थिति को अच्छी तरह समझ गया । हिन्दू जनता की कायरता से उसे हार्दिक दुःख हुआ था । फिर भी लाशों को हटाना ही था । पर कहाँ हटाया जायगा, यह उसकी समझ में नहीं आता था । यहाँ से गंगा बहुत दूर थी । कोई ऐसा परनाला नहीं था । इधर के परनाले का जंकशन वहाँ पर हुआ था जहाँ हिन्दू पाकिस्तान खत्म होकर मुस्लिम पाकिस्तान शुरू हुआ था । वहाँ इन लाशों को ले जाना असंभव था । अमित की लाश के साथ इन लाशों को जलाया जा सकता है या नहीं । जब उसने इस प्रश्न पर सोचा तो उसे ज्ञात हुआ कि इस पर श्मशान वाले आपत्ति कर सकते हैं । केशव

ने पहले चीजों को इतनी गहराई के साथ नहीं सोचा था। सच बात तो यह है उसने अपने जीवन में कभी किसी बात को सोचकर किया ही नहीं था। बहुत साल पहले उसने जो बम बनाये थे, उस समय उसने यह नहीं सोचा था कि इनको बनाकर क्या होगा। अंत में वह बम लेकर एक थाने की तरफ जा रहा था। रास्ते में वह फट गया और तब से वह केशव से चूतड़-जला केशव हो गया।

केशव ने पुकारा—रमेश भैया!

—हाँ—रमेश ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

—इन लोगों को......?—लाशों की ओर दिखलाकर केशव ने पूछा।

रमेश स्वयं ही इस विषय में परेशान था, पर अकस्मात् उसके दिमाग में एक बात आई, बोला—कुएँ के अंदर डाला जाय तो कैसा रहे।

—हाँ ठीक है—केशव को जैसे अथाह जल में किनारा प्राप्त हुआ।

काली मन्दिर में ही एक कुआँ था, पर इसका पानी कोई नहीं पीता था क्योंकि इसके पानी में एक अजीब बू थी।

केवल पाँच आदमी रह गये थे। इन लोगों ने मिलकर लाशों को टाँगकर कुएँ में डाल दिया। पहले मुंडहीन शरीर को उस कुएँ में फेंकते ही बड़े जोर से छपसे आवाज हुई, फिर बाद को जब एक और मुंडहीन शरीर, दो मुंड और उस छोकरे की लाश कुएँ में डाली गई तो विशेष शब्द नहीं हुआ।

यह काम पुरोहितजी को पसन्द नहीं आया पर वह चुप रहा। रमेश, केशव आदि चले गये।

पुरोहितजी अकेले रह गये। नौकरों को पुकारकर देखा कि किसी का पता नहीं है। उसे यह समझने में कठिनता नहीं हुई कि ये लोग सब डर से भागे हैं। खड़ाऊँ तो उसने पहले ही उतार लिया था।

खाली पैर कालीबाड़ी के मैदान में आकर उसने देखा कि लाशें तो हट गई, पर हत्या के सब प्रमाण ज्यों के त्यों बने हैं। खाँड़ा भी खून से लथपथ पड़ा था। बलिदान की लकड़ी में खून लगा हुआ था। चारों तरफ खून ही खून था। खून का लाल रंग अब काले में परिणत हो रहा था।

पुरोहितजी ने थोड़ी देर तक खड़े होकर इस दृश्य को देखा। फिर चोर की तरह मन्दिर से मिले हुए अपने मकान में गया, और फौरन दाहिने हाथ में एक बाल्टी पानी और बायें हाथ में एक टोकरी गोबर और बगल में एक झाड़ू लेकर निकल पड़ा। आज के पहले किसी ने पुरोहितजी को इस रूप में नहीं देखा था। पुरोहितजी ने रगड़-रगड़ कर खाँड़ा और बलिदान की लकड़ी को धोया, फिर जहाँ तक मैदान में खून का छींटा था, उसे अच्छी तरह पोता। लाशों को कुएँ तक ले जाने में रास्ते में जो खून के कतरे पड़े थे, उनको उसने बड़ी सावधानी से पोछना शुरू किया। उसने उन दागों को पोतकर हटाने का साहस इसलिये नहीं किया कि ऐसा करने पर कुएँ का रास्ता सन्देहजनक हो जायगा।

१६

दिन में पाँच बजे के समय सशस्त्र पुलिस की तीन लारियाँ आकर हिन्दू पाकिस्तान और मुस्लिम पाकिस्तान के संगम पर खड़ी हुईं, फिर वे धीरे धीरे हिन्दू पाकिस्तान के अन्दर दाखिल हुईं। एक जगह जाकर तीनों लारी थम गईं। हथियारबन्द पुलिसवाले उतरकर गलियों से होते हुए कालीबाड़ी की तरफ चले।

सारा मुहल्ला परोक्ष में रहकर उनकी गतिविधि को उद्ग्रीव होकर देख रहा था। मुहल्ले के सभी लोग जानते थे कि लाशों को कालीबाड़ी के ही कुएँ में डाला गया है। हथियारबन्द पुलिस के एक-एक कदम पर मुहल्ले के प्रत्येक व्यक्ति का हृदय धड़क रहा था।

पर पुलिस वाले कालीबाड़ी के सामने से जाते हुए भी वहाँ पर नहीं रुके। एक मुहूर्त के अन्दर यह अच्छी खबर मुहल्ले भर में फैल गई। सबने जैसे विपत्ति से मुक्ति की साँस ली। तो इसके माने ये हुए कि किसी ने मुखबिरी नहीं की है।

पर यह खुशी अधिक देर तक स्थायी नहीं हुई। वह तीन लारियाँ तो चली गईं, पर कुछ देर बाद फिर एक पुलिस लारी आई। उसमें से भी पुलिस वालों ने उतरकर उसी प्रकार से मुहल्ले को देखाभाला और फिर निकल गये। इसके बाद पैदल पुलिस आई। ये लोग मुहल्ले की खास-खास जगह पर दो-दो पिकेट के हिसाब से फैल गये। मुहल्ले के सभी का दिल धड़क रहा था। कौन जाने कब कुएँ के अंदर की लाशें पकड़ी जायँ। इसके अलावा जब कई एक घंटे के अंदर लाशें सड़ेंगी, तब तो पुलिस वालों की आँख उन पर जायगी ही।

पिकेट लगने के कारण सारे मुहल्ले के लोग दुश्चिन्ता में पड़ गये। परम दुश्चिन्ता।

सन्ध्या के बाद ही केशव रमेश के मकान पर पहुँचा, बोला—भैया !

रमेश उसी समय अमित के दाह-कार्य से घर लौटा था। बोला—हाँ, क्या बात है ?

—भैया, मुहल्ला तो खतम हो रहा है……

—खतम हो रहा है ?—रमेश ने पूछा। राजीव के बाद अमित था। वह भी गया। रमेश का हृदय शोक से आच्छन्न था, बोला—कैसा खतम ?

—सारा मुहल्ला खाली हुआ जा रहा है। मैं देख आया कि सब के मकानों में बिस्तरे बँधे हैं, आधे घंटे के अंदर सारा मुहल्ला खाली हुआ जा रहा है।

—खाली हुआ जा रहा है ?—आश्चर्य के साथ रमेश ने पूछा। फिर सोचकर कहा—अवश्य ही ऐसा मुसलमानों के भय से हो रहा है, हिन्दू जाति ही कायर है, तभी तो गुलाम है। हम जान लड़ाकर रक्षा कर रहे हैं, फिर भी भाग रहे हैं। छिः !

बीच ही में रमेश की उद्दीप्तवाक्यधारा में बाधा देकर केशव ने कहा—मुसलमानों के डर से नहीं।

—फिर ?

—उन लाशों के लिये हिन्दू भाग रहे हैं—अकस्मात् जरा कोई बात याद आने पर केशव ने कहा—पुरोहितजी का क्या हुआ है सुना है ?

—नहीं तो क्या हुआ, गिरफ्तार हो गया—कहकर रमेश ने उत्तर के लिये उद्ग्रीव होकर देखा।

—भाग गया। जाते समय कालीजी के सब गहने लेता गया, यहाँ तक कि काली माँ के सोने का मुँह लेकर भागा।

—वह कहाँ भागेगा, यह समझ में नहीं आता। गत बीस वर्ष से तो मैं उसे एक तरह ही से देख रहा हूँ; पूजा पाठ करता है, न

साला बच्चा है न जोरू। सिर्फ कालीजी की भक्ति और काली पूजा करता है।

—नहीं नहीं, यह सब दिखावा था, वह बड़ा पाजी था।

रमेश ने जरा आँखें तरेरकर कहा—तुममें यही बड़ी बुरी आदत है कि किसी की तारीफ नहीं सह सकते हो।

—बात यह है भैया मैं आपकी तरह भक्त नहीं हूँ। जाते समय वह उस एक बेवा को लेकर भागा है। वह साला बंगाली बहुत पाजी था।

रमेश आश्चर्य में पड़ गया, पर चुप रहा। तथ्यों के विरुद्ध वह क्या कह सकता था?

केशव जिद्दी आदमी था, बोला—अगर वे लाशें वहीं बनी रहीं तो सड़ेंगी, सवेरे तक पकड़ी जायेंगी, इसके बाद सारे मुहल्ले को पुलिस परेशान करेगी।

—अच्छा तो है कि सारी बात पुरोहित के मत्थे जायगी। साला ढोंगी था, पीछे से बँध कर आयेगा, तब बच्चा को मालूम होगा कि आटा-दाल का भाव क्या है।

—ऐसा नहीं हो सकता भैया! वह हरामजादा पकड़ जायगा तो चुप थोड़े ही रहेगा, फौरन सरकारी गवाह बन जावेगा।

रमेश ने सोचकर देखा कि केशव जो कुछ कह रहा है वह ठीक है। नुतड़-खत्ता केशव एकाएक प्राण-भय के मारे बहुत दूरदर्शी हो गया था, जैसा कि वह अपने जीवन में कभी नहीं था।

रमेश मन ही मन कुछ उधेड़बुन में पड़ गया। कहा—तो फिर क्या सलाह है?

—लाशों को निकाल लिया जाय।

—कैसे?

केशव ने यह बात नहीं सोची थी फिर भी मुँह पर एक जवाब आ गया; बोला—क्यों? इसमें मुश्किल क्या है? जैसे बाल्टी या घड़ा

कुएँ में डूब जाने पर उसे निकाला जाता है, उसी तरह से इन लाशों को निकाला जाय।

—कैसे ? काँटा डालकर ? —रमेश ने पूछा।

—हाँ जरूर—केशव ने जोर देकर कहा।

इस सम्बन्ध में रमेश को किसी प्रकार का तजुर्बा नहीं था। उसने सोचा केशव गाँव का लड़का है, सब समझता होगा, इसलिये खुश हो गया।

—पर एक बात है—जाने के लिये तैयार केशव से रमेश ने कहा।

—क्या ?

—मुहल्ले में पुलिस पिकट है न ?

—हाँ।

—तो फिर कैसे होगा ?

—उनकी आँख बचाकर काम करना पड़ेगा—केशव ने ऐसे कहा मानो यह काम बहुत आसान है।

—यही याद दिला रहा था—रमेश ने कहा।

केशव काँटा खोजने के लिये चल पड़ा।

पुरोहितजी के सामान में एक काँटा भी मिला। संध्या के बाद अँधेरे में काम शुरू हुआ, पर आधे घंटे तक खींचा-खींची करने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ। रमेश, केशव और दूसरे जो लोग इस काम में सहायता कर रहे थे निराश हो गये। किसी के दिमाग में यह बात ही नहीं आ रही थी कि क्या किया जाय। दो-एक ने तो निराशा में यहाँ तक कह दिया कि न हो तो रातभर में कुएँ को पाट डाला जाय, पर उससे समस्या कुछ हल नहीं हो रही थी, क्योंकि लाशें तो फिर भी भीतर ही रही जा रही थीं। जिस किसी दिन वे निकलकर उनके जुर्म को प्रमाणित कर दे सकती थीं।

ने निराश हो गये।

रास्ते में ईश्वरीसिंह से भेंट हुई। ईश्वरीसिंह इस इलाके का सुपरिचित गँजेड़ी है। उसके सम्बन्ध में यह मशहूर है कि उसने अपनी सारी पैतृक सम्पत्ति गाँजा और चरस में उड़ा दिया है। देखने में बिलकुल दुबला-पतला है। आँखें स्वप्नाविष्ट हैं। कपड़े मैले-कुचैले हैं। समाज से वह अलग रहता है, समाज भी उससे अलग रहता है।

सब उसको बराकर चले जा रहे थे।

पर वह एकाएक कह उठा—क्यों? काम हुआ?

केशव ने करीब-करीब आँखें तरेरकर कहा—कौन-सा काम ईश्वरी?

—वह काम जिसके लिये आप लोग काँटा लेकर गये थे—ईश्वरीसिंह ने जरा भी विचलित न होकर साधारण तरीके से कहा।

अँधेरे में ही सब लोग एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। तो क्या सभी जानते हैं कि दोपहर को जो जुर्म किया गया था, उसीको छिपाने के लिये वे इस समय गये हुए थे। दूसरा समय होता तो सब लोग ईश्वरी को डपट देते, कम से कम चूतड़-जला केशव तो उसे जरूर ही डपट देता, पर हकीम लुकमान का यह जो कथन है कि राजदाँ से डर, आज केशव इस बात की सार्थकता को अच्छी तरह समझता था। उसने फिर भी गँजेड़ी से छुटकारा पाने के लिये संक्षेप में कहा—नहीं, नहीं हुआ।

—क्यों नहीं हुआ?—ईश्वरीसिंह ने जरा दर्पगान से कहा, मानो वह इन लोगों का अफसर हो।

—नहीं हुआ—कहकर इसका मुँह लगना व्यर्थ है समझकर सब लोग उसे बराकर जाने लगे।

ईश्वरीसिंह ने जरा आवाज चढ़ाते हुए नाटकीय ढंग से कहा—रुक जाइये......

—क्यों?—सब लोग खड़े हो गये। गँजेड़ी का मतलब क्या है?

ईश्वरीसिंह ने कहा—चलिये मैं निकाल देता हूँ।

अबकी बार रमेश ने कहा—तुम निकाल दोगे ? बात क्या है ? नशा कुछ जोर पर है क्या ?

ईश्वरीसिंह ने पूरे विश्वास के साथ कहा—नशा नहीं है रमेश बाबू चलिये तो।

उन लोगों ने ईश्वरी को समझाया कि भाई यह दिल्लगी की बात नहीं है, पर उसने कहा—एक बार चलकर देख न लीजिये।

नतीजा यह हुआ कि लोगों को उसकी बात मानकर लौटना पड़ा। कौन जाने शायद सफल ही हो जाय। उन लाशों को निकालना इतना जरूरी था कि वे इसको करने के लिये किसी भी प्रकार के रहस्यवाद में आश्रय लेने में न चूके।

कुएँ के किनारे पर आकर ईश्वरीसिंह ने एक-एक कर सब कपड़े उतार दिये। केवल एक लँगोटा पहने रहा। फिर अपने ढंग से तैयार होकर उसने कहा—अब मुझे उतारिये।

—कहाँ ?

—कुएँ में, मैं वहाँ जाकर सब लाशों को बाँध दूँगा, आप लोग खींच लीजियेगा।

रमेश ने जरा संदेह के स्वर में कहा—अँधेरे में तुमको दिखाई पड़ेगा ?

हाँ हाँ, सब दिखाई पड़ेगा। और उसमें देखना क्या है ? कोई सूई थोड़े ही खोजना है, टटोलकर सब पा जाऊँगा।

रमेश ने फिर भी कहा—पर उसमें पानी है।

—मुझे तैरना आता है, जल्दी उतारिये नहीं तो नशा उतर गया तो फिर मुश्किल होगा।

इसलिये कमर में एक मोटी रस्सी बाँधकर ईश्वरीसिंह को कुएँ के अन्दर उतार दिया गया। साथ ही साथ उसके साथ एक दूसरी रस्सी भी उतरने लगी। कोई पन्द्रह हाथ रस्सी छोड़ देने के बाद ऐसा बात

हुआ कि अब रस्सी में खिंचाव नहीं है। इसके माने यह हुए कि ईश्वरी-सिंह कुएँ के नीचे पहुँच गया था। रमेश, केशव सभी ने कुएँ के अन्दर झाँककर देखा कि कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा है, और मछली की तरह एक बू आ रही है।

निश्चित सिगनल के अनुसार रस्सी में नीचे से दो बार खिंचाव पड़ते ही ऊपर खड़े लोगों ने रस्सी को खींच लिया, पर खींचते मालूम हुआ कि पहले से बोझा चौगुना हो गया है। सबने मिलकर बहुत जोर लगा कर बहुत कष्ट से बोझा को उठाया।

दो मुंडहीन शरीर और स्वयं ईश्वरी ऊपर आया। ये शरीर फूल-कर बहुत बड़े हो गये थे। जल्दी से दोनों लाशों को खोलकर ग्राक में रख लिया गया। इसके बाद ईश्वरी के कथन के अनुसार उसको फिर पहले की तरह नीचे उतारा गया।

ईश्वरी ने नीचे उतर कर बाकी लाश को जल्दी ही बाँध डाला। जब वह पहली बार कुएँ में उतरा था तो उसने पता लगा लिया था कि तीसरी लाश किधर है। उसे उसने फौरन रस्सी में बाँध दिया, पर दोनों मुंडों को लेकर वह बड़ी आफत में पड़ गया। ऊपर से उसने यह बात नहीं सोची थी कि उन मुंडों को रस्सी में बाँधना सम्भव नहीं है, पर फिर भी उन्हें ले जाना तो था ही। तीसरी बार तो आना सम्भव ही नहीं था। कुएँ का पानी बिलकुल बरफ हो रहा था, वह थरथर काँप रहा था।

आखिर को उसे एक बात सूझी। उसने दोनों मुंडों के बालों को दोनों हाथों में पकड़ लिया और सिगनल दिया। नतीजा यह हुआ कि उसको अपनी हालत बहुत खराब मालूम हुई। ठंड, बदबू, तिसपर भी वह किसी प्रकार लटकते हुए गिरते-पड़ते कुएँ की दीवार से टकराते चला। बीच रास्ते में ही वह बेहोश हो गया, पर उसने बेहोशी की हालत में भी बालों की पकड़ को न छोड़ा।

जब उसे ऊपर उठाया गया तो देखा गया कि वह अजीब तरीके

से शिथिल हो गया है। क्या ईश्वरीसिंह मर गया? दुर्भाग्य पर दुर्भाग्य!

सौभाग्य से ऊपर की खुली हवा लगते ही बिना प्रयास के ही ईश्वरीसिंह को होश आ गया। वह मानों कुछ लज्जित होकर खड़ा हो गया। और एक टुकड़ा कपड़े से अपना बदन पोंछने लगा।

अपनी सफाई के रूप में ईश्वरी ने कहा—बात यह है नशा उतर गया था न?

जो कुछ भी हो अब तर्क करने का समय नहीं था। एक फर्लांग के अन्दर ही पुलिस पिकेट था। अवश्य ही लाशों को इस प्रकार छोड़कर रक्खा नहीं जा सकता था। पुलिस पिकेट और इस जगह के बीच में केवल एक मकान आड़ के रूप में था। परनाले की तरफ जाते हुए पुलिस पिकेट पड़ता था।

ईश्वरीसिंह समझ गया कि मामला क्या है। उसने सोचकर कहा—जिस मकान के पीछे पुलिस पिकेट है, वह मकान तो खाली है।

—हाँ—केशव ने कहा।

—चलिये उसमें लाशों को ले चलें।

—उसके बाद क्या होगा?

—इस बीच में नशा कर लूँ, उसके बाद कहूँगा।......

दूसरा समय होता तो ईश्वरी की इस बात पर सब लोग हँसते, पर एक तो लाशों को यहाँ इस तरह रखना उचित नहीं था, और दूसरा जब से ईश्वरी ने कुएँ से लाशों को निकाला था, तब से वह आसानी से इन लोगों का नेता हो गया था।

बड़ी सावधानी से सबने मिलकर लाशों को उस खाली मकान में पहुँचा दिया।

कई एक मिनट के अंदर ही ईश्वरी गाँजा के सब सरंजाम लेकर खुशी-खुशी लौट आया, इसके बाद उसने सबसे कहा कि कुछ बोरे लाकर इन लाशों को उनमें भर डालो।

बोरे लाये गये और बहुत परिश्रम के बाद दो बोरों में वे लाशें भर दी गईं। एक बोरे में लड़के की लाश और दो मुंड तथा दूसरे में दो मुंडहीन देहों को किसी तरह मोड़-माड़कर भर दिया गया। सच बात तो यह है कि इस काम को भी ईश्वरी ने किया।

करफ्यू आर्डर के जारी होने में केवल आधे घंटे का समय था। इसी आधे घंटे के अरसे में सब काम करना था। इधर रास्ते सुनसान हो चले थे।

बोरों में लाशों को भरकर ईश्वरीसिंह ने एक चिलम गाँजे का भर लिया, और तीन ही चार कश में उसे खालकर कपड़े को ऊपर करके बाँधकर जूता खोलकर कहा—एक बोरे को मेरी पीठ पर लाद दो......

कोई भी समझ नहीं सका कि ईश्वरीसिंह करना क्या चाहता है, पर इस बीच में उसकी बुद्धि पर लोगों को इतना अखंडनीय विश्वास हो चुका था कि वे बिना प्रश्न के ही उसका अनुसरण करने के लिये तैयार हो गये। इसके अलावा वह विपत्ति को तो अपनी पीठ ही पर लादे लिये जा रहा है। सब विपत्ति तो उसी की है।

बोरे को आसानी के साथ अपनी पीठ पर रखते हुए उसने रमेश से कहा—उस बोरे को केशव की पीठ पर रख दीजिये, और बाकी सब लोग हँसते-हँसते, बात करते-करते हमारे आगे-पीछे चलें।

केशव इस व्यवस्था से खुश नहीं हुआ, पर इस समय तर्क का या चाहने न चाहने का कोई मौका नहीं था। उसने भी कपड़ा चढ़ा लिया, जूते खोल लिये और बोरे को पीठ पर रखकर चलने लगा।

यह जुलूस भी अजीब था। दो आदमियों की पीठ पर दो बोरे थे। उनके आगे-पीछे कुछ लोग स्वाभाविक रूप से बात करते हुए चले जा रहे थे। कई एक पिकेट के सामने से निकलकर ईश्वरीसिंह उस मकान में घुस पड़ा जो देवदत्त के मकान के सामने था, जिसमें रमेश आदि कल रात को थे।

रास्ते के पिकेटों ने इन लोगों की तरफ देखा, पर कौन अनुमान कर सकता था कि इन बोरों में तीन लाशें थीं।

मकान में घुसते ही केशव बोरे को अपनी पीठ से उतारने लगा, पर ईश्वरी ने कहा—नहीं नहीं, छत पर ले चलो।

इसलिये बोरे छत पर ले जाये गये। इसके बाद ईश्वरीसिंह ने सब से कहा—जल्दी से जितना हो सके पेट्रोल और मिट्टी का तेल ले आइये।

सब लोग चले गये और कोई पाँच मिनट के अंदर ही बहुत-सा पेट्रोल, मिट्टी का तेल, ओढ़ने के कम्बल, कपड़े आदि ले आये। जो लोग साधारण समय में एक कौड़ी देते हुए मुँह बिचका लेते थे, वे अब इस साम्प्रदायिक वातावरण में बिल्कुल दाताकर्ण हो रहे थे; पैसा माँगने पर रुपये देते थे। क्रान्ति के सब उपादान थे, पर इस समय प्रतिक्रियावाद के पक्ष में नियुक्त थे। इनका रुख बदल दिया जाय तो फिर काम ही बन जाय।

थोड़ी देर में ही कर्फ्यू आर्डर का समय हो गया। एक पुलिस लारी हिन्दू पाकिस्तान के हृदय को चीरती हुई मुस्लिम पाकिस्तान की तरफ चली गई। लड़ाई के कारण खर्च घटाने के लिये ही शायद इस लारी की एक ही आँख जल रही थी।

पहले के दिन का बिस्तरा बिछा हुआ था। सब लोग कपड़ा बदलकर उसमें पड़ गये। केशव ने तो स्नान भी किया। उसके सारे शरीर में कोई बदबूदार रस लगा था। उसे यही दुःख रहा कि वह और चीजों के साथ एक साबुन क्यों न माँगता आया। दूसरों ने स्नान तो नहीं किया, पर आधा स्नान जरूर किया। ईश्वरीसिंह का सारा शरीर बुरी तरह महक रहा था, पर उसने नहाने से इन्कार किया, बोला—इस जाड़े में नहाकर निमोनिया होकर जान थोड़े ही देनी है। फिर अभी तो कुएँ में नहा चुका हूँ। इसके अलावा सैकड़ों रुपये का नशा काफूर हो जायगा। नहीं भैया रहने दो, इससे बल्कि एक खिलाफ

और भर लिया जाय—कहकर उसने बिना किसी के समर्थन की प्रतीक्षा-कर गाँजा भरने में चित्त लगाया ।

ईश्वरी ने स्नान किया था नहीं, इसमें रमेश को बिल्कुल कोई कौतूहल नहीं था । वह दूसरी ही बात सोच रहा था । ईश्वरीसिंह की उपस्थित बुद्धि के सम्बन्ध में कुएँ की घटना से रमेश के मन में जो धारणा उत्पन्न हुई थी, उस पर अब बहुत ठेस लग रही थी । इन लाशों को छत पर रखने के क्या माने हैं, और पेट्रोल ही की क्या जरूरत थी । न मालूम इस आदमी के दिमाग में कौनसी बात है । गत एक घंटे से इसके साथ रहकर रमेश ने यह अनुभव कर लिया था कि इस व्यक्ति में दूसरे के जीवन के प्रति जैसे कोई मोह ममता नहीं है, उसी प्रकार अपने जीवन के प्रति भी इस व्यक्ति का रंचमात्र भी मोह नहीं है । जब सब लोग सो जायँ, उस समय यदि यह आदमी मकान में आग लगाकर सबको खतम कर दे, तो इसमें क्या आश्चर्य है ! आखिर गँजेड़ी ही ठहरा ।

चिलम को एक बार फूँक मारते हुए उसे पीते हुए, एक अन्तिम कश से चिलम की आग को धक से जलाते हुए ईश्वरीसिंह ने निश्चिन्त होकर कहा—आप लोगों को नींद आवे तो सो जायँ, मैं ठीक समय पर जगा दूँगा ।

—कौन-सा ठीक समय !—रमेश ने पूछा—हम भी तो कुछ समझें कि तुम करना क्या चाहते हो ।

ईश्वरीसिंह ने कोई उत्तर नहीं दिया । और भी दो-तीन बार कश खींचकर चिलम को जोर के साथ उलटते हुए ईश्वरी ने कहा—कब ठीक समय होगा वह मैं कैसे कहूँ !

—यह क्या कर रहे हो ! तुम्हींने सब कुछ किया, और तुम्हीं यह नहीं बता सकते कि ठीक समय कब होगा ।—रुखाई के साथ रमेश ने कहा ।

—ऐसी ही बात है। पुलिस यहाँ से कब हटेगी, इसी पर सब मुनहसर है।

—क्या मुनहसर है?

—इन चोरों को हटाना।

इन्हीं थोड़ी-सी बातों से समझ में आ गया कि ईश्वरीसिंह के दिमाग में कोई योजना नहीं थी। फिर भी यह पेट्रोल क्यों?

—लाशों को जलायेंगे—मानों रमेश के विचारों का जवाब देते हुए ईश्वरी ने कहा।

—कहाँ जलाओगे? छत पर? सर्वनाश हो जायगा।

—नहीं-नहीं आप मुझे इतना अहमक समझते हैं? छत पर नहीं जलायेंगे—इसके बाद रहस्यमय तरीके से हाथ हिलाते हुए उसने कहा—दो-तीन मकानों के बाद मुस्लिम मुहल्ले में एक छप्पर वाले मकान में लकड़ी की टाल है, वहीं ले जाकर इन्हें जलाऊँगा।

अबकी बार साफ हो गया कि ईश्वरी के दिमाग में कोई न कोई सर्वांग सुन्दर योजना है, पर भाषा की दरिद्रता के कारण वह उसे स्पष्ट नहीं कर सका है। रमेश और उसके साथी बहुत कुछ आश्वस्त हुए। फिर भी रमेश ने मन ही मन सोचा कि जागते रहने में हानि क्या है। सावधानी से विपत्ति की सम्भावना नहीं रहती।

रमेश दीवार से उठँगकर बैठ गया और देखते ही देखते सो गया। यही हाल सबका हुआ। सभी शारीरिक मानसिक दोनों तरफ से थके हुए थे, इसलिये न चाहने पर भी लोग सो गये। चूतड़-जला केशव तो खर्राटे भरने लगा।

ईश्वरीसिंह बैठे-बैठे अपने पीनक में मस्त सबको घृणा से देखता रहा। ये ही लोग भद्र और भले बनते हैं, और मैं गँजेड़ी हूँ। आज मैं न होता तो कल सारे मुहल्ले के हाथों में जरूर ही हथकड़ियाँ पड़तीं। आकर पास-पड़ोस वाले देखें कि मैंने ही उन्हें बचाया है। नहीं तो जो होता वह तो हम जानते हैं।

उसको बड़ी आत्मतृप्ति हुई। उनको सोते हुए देखकर वह चुपचाप वहाँ से निकल गया।

× × ×

रात को बारह बजे के कुछ बाद उसने रमेश तथा अन्य लोगों को जल्दी से जगाया।

—उठिये, उठो, कोई नहीं है।

सब लोग अकचकाकर उठ बैठे।

—क्यों ? क्या मामला है ?

—पूछियेगा बाद को, नीचे उतरकर मुसलमान मुहल्ले की तरफ चलिए।

रमेश ने कहा—क्या पागल हो गये, पिकेट जो खड़ा है !

—कोई नहीं है, वे यहाँ से बहुत दूर चले गये।

—यह क्या बात है ?

—बाद को बतलाऊँगा, साथ में तेल के पीपों को भी लेते चलियेगा।

पर ईश्वरीसिंह खुद इन लोगों के साथ न आकर छत पर चढ़ गया।

रमेश, केशव और सब लोग उस तरफ को सड़क पर पहुँच भी नहीं पाये थे कि करीब-करीब साथ-ही-साथ बहुत जोर से धप-धप की आवाज हुई। रमेश, केशव आदि चौंककर तीन कदम पीछे हट गये। गँजेड़ी ने अच्छी विपत्ति में डाल दी। दूर तक कहीं कुछ दिखाई तो नहीं पड़ रहा है, फिर यह धप-धप आवाज कहाँ से हुई ? क्या कोई दीवार गिरी ? रमेश, केशव आदि की यह हालत हुई कि न तो उनसे पीछे हटा गया और न उनसे आगे बढ़ा गया। उनकी समझ में नहीं आया कि क्या करें ? गँजेड़ी को नेता मानने के लिये पछतावा होने

लगा। खून-जमा केशव ने कहा—चलिये देवदत्त के मकान में घुस पड़ा जाय। गँजेड़ी तो गया।

पर पीछे से ईश्वरीसिंह छाया की तरह आकर खड़ा हो गया। बोला—चलिये उन बोरों को उसी तरह उठाया जाय......

—बोरा कहाँ है?—केशव ने कहा—बोरे तो छत पर हैं।

—छत पर नहीं, ये क्या हैं? कहकर उसने पास ही उँगली दिखा दी।

सचमुच ही तीस-हाथ दूर पर बोरे सड़क पर पड़े थे। अब समझ में आया कि वह धप-धप आवाज काहे की थी। ईश्वरीसिंह ने जाकर छत से बोरों को ढकेल दिया था। केशव ने सोचा आखिर गँजेड़ी है, उल्टी बात के अलावा कुछ सोच नहीं सकता।

बोरों को उठाकर वे मुसलमान पाकिस्तान के अंदर घुसे और चार मकानों को पारकर लकड़ी के टाल में घुस पड़े। मुसलमानों ने पहले ही यह हिस्सा खाली कर दिया था, इसलिये कोई डर की बात नहीं थी।

टाल के अंदर लकड़ी के एक बहुत बड़े ढेर पर दोनों बोरे रक्खे जा रहे हैं, इतने में सुनाई पड़ा कि कोई लारी आ रही है। सबकी हालत उस समय ऐसी हो गई कि इसके बजाय यदि वज्रपात होता तो वे कम घबराते। सब के हाथ-पैर फूल गये कि न मालूम क्या होने वाला है। ईश्वरीसिंह भी कुछ क्षण के लिये किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया, पर जल्दी ही सम्हलकर टाल के दरवाजे को भेड़कर देखने लगा कि क्या होने जा रहा है।

पुलिस लारी आकर हिन्दू पाकिस्तान और मुसलमान पाकिस्तान के बीच की सड़क पर खड़ी हुई। दो बन्दूक वाले पिकेट उससे निकले और पहरे की जगह पर खड़े हो गये।

लौटकर ईश्वरी ने कहा—पिकेट बैठ गया, अब इस वक्त कुछ नहीं हो सकता।

—तो क्या हो ?

—इन्तजार किया जाय—ईश्वरी ने कहा—आप लोग सो जायँ, मैं जग रहा हूँ।—उसने इस बात को इस लहजे में कहा मानों प्रश्न सिर्फ इस बात का हो कि सोया जाय या न सोया जाय।

फिर सोया भी जाय तो कैसे। ऐसी भयंकर विपत्ति के बीच ईश्वरी का यह मूर्खतापूर्ण आत्मविश्वास केशव को बिल्कुल पसन्द नहीं आया। इसके अतिरिक्त एक दूसरी बात भी थी; वह बात यह थी कि तीन मुसलमानों को पकड़कर तथा उनको बलि-वेदी पर चढ़ाकर केशव ने जो ख्याति पैदा की थी, वह इस गँजेड़ी के सामने बिल्कुल फीकी पड़ती मालूम हो रही थी। और भी एक बात थी वह यह कि सामायिक रूप से मुहल्लेवालों ने भले ही बलिदान के समय केशव की प्रशंसा की हो, पर उसे मालूम था कि बाद को सभी उसे गालियाँ दे रहे थे और कह रहे थे कि उसके लिये सारा मुहल्ला डूब रहा है। शाम के समय केशव ने स्वय अपने कानों से लोगों को ऐसे मन्तव्य करते हुए सुना था। पर इस गँजेड़ी को लोग जब कहेंगे तो मुहल्ले का उद्धारक ही कहेंगे।

सच तो यह है कि जब केशव ने अपने सम्बन्ध में लोगों को अंटसंट मन्तव्य करते हुए सुना था, तभी वह रमेश के पास दौड़ा गया था कि लाशों को हटाया जाय।

इस प्रकार एक गँजेड़ी से परास्त होकर ऐसे ही केशव का मन बहुत दुःखी था, अब उसने जो उसके मुँह से सोने की बात सुनी तो वह बहुत नाराज हो गया, बोला—हाँ, अब मजे में फाँसी के तख्ते में सोना होगा।

ईश्वरीसिंह ने कुछ नहीं कहा। उसने टाल का किवाड़ा आधा खोल लिया और उसके सामने बैठकर बाहर सड़क पर निगाह रखने लगा।

करीब-करीब तीन लाशों को गोद के पास रखकर रमेश के मन में अद्भुत विचार आ रहे थे। ओह, ये दो तीन दिन जैसे दो-तीन युग की तरह बीते। इन कई दिनों में वह एक शान्तिप्रिय नागरिक से एक दुर्दान्त अपराधी में परिणत हो गया है। राजीव के नाम से ही और राजीव को उपलक्ष करके ही उन लोगों ने ये अपराध किये हैं, पर क्या राजीव ऐसे अपराधों का समर्थन करता? रही प्रतिहिंसा, सो इससे किसका फायदा है। उन लोगों ने राजीव को, अमित को मारा है, फिर भी इन निर्दोष मुसलमानों को मारकर क्या फायदा हुआ। जो लोग राजीव के आततायी हैं, उन पर किसी तरह की आँच न आई होगी। वे अपने अपराधों की संख्या बढ़ाते ही जा रहे होंगे।

बारह घंटे पहले तक ये तीन आदमी जीवित थे। शायद ये लोग राजीव की तरह ही निर्दोष और निष्पाप हैं। उसे याद आई कि जिस आदमी को दूसरी बार में मारा गया था उसकी चितवन कैसी थी। ओह, क्या वह कभी इस चितवन को भुला सकता है। उसने मानों इस प्रकार ताककर यह कहा कि इतने आदमियों में एक भी इंसान नहीं है। कैसे बिना किसी प्रतिवाद के उसने अपने गले को बलिदान की लकड़ी पर स्थापित किया? किस बात से उसे इतना स्थिर साहस मिला? यह जीवन के प्रति वैराग्य था या एकत्रित लोगों के प्रति घृणा? और उस लड़के को केशव ने किस प्रकार कुचलकर मार डाला? केशव शायद अपने को एक वीर समझता है, पर उसकी तरह दुष्ट शायद ही कोई हो। उसने एक बार अँधेरे में ही केशव को अग्नि-नेत्र से देखा। और इन अत्यंत पतित लोगों के साथ ही वह तीन दिन से दिन-रात है, उन्हीं के कहने पर उठ और बैठ रहा है, उन्हीं की भाषा बोल रहा है, और सच तो यह है कि वह उन्हीं में से एक हो गया है। यह बात सोचकर वह सिहर उठा। उसका इतना अधःपतन हो गया! अकल्पनीय है।

कई दिन आगे तक उनकी मित्र मंडली कैसी सुन्दर थी, जैसे एक

चाँदी का सपना हो पर पल टूटकर बिखर गया। सजा-सजाया बाग उजड़ गया। रमेश की मानसिक अवस्था ऐसी हो रही थी कि यदि उस मुहूर्त में कोई आकर उसके हाथों में हथकड़ी डाल देता, या मुसलमान आकर उसे पकड़ लेते, तो वह उसका बिल्कुल प्रतिवाद न करता। उसे अपरिहार्य भाग्य जानकर वह चुपचाप स्वीकार कर लेता। उसकी मानो इस समय सारी इच्छाशक्ति विलुप्त हो गई थी।

ऐसी मानसिक अवस्था में शायद वह कुछ सो गया था। एकाएक किसीने उसे धक्का देकर जगाया।

—चलिये।

ईश्वरी ने उसे हिलाकर धीरे से कहा—चलिये।

सब लोग उसकी बात पर आश्चर्य प्रगट कर रहे हैं देखकर उसने संक्षेप में समझा दिया—संत्रीलोग अपने बरानकोटों को ओढ़ कर सो रहे हैं, हम यहाँ पर आग लगाकर चुपके से उनके सामने ही से निकल जायेंगे।

किसीको कुछ करना न पड़ा। ईश्वरी ने बोरों पर मिट्टी का तेल तथा पेट्रोल छिड़क दिया, फिर एक तेल से भीगी हुई रस्सी को बोरों के साथ संयुक्तकर उसके एक सिरे पर आग लगा दी। आग देखते ही देखते रस्सी पकड़कर आगे बढ़ने लगी।

सब लोग ईश्वरीसिंह के पीछे-पीछे टाल से निकल गये। सचमुच ही देखा गया कि दोनों संत्री सो रहे हैं। चोरों की तरह इनको बचाकर रमेश, केशव आदि सब लोग देवदत्त के मकान के सामने वाले उसी मकान में घुस गये जिसमें से वे बोरे लेकर रवाना हुए थे।

पाँच मिनट के अन्दर ही उधर के उस मकान या टाल में गगन-चुम्बी लपटें उठीं। इसीके साथ-साथ पटपट डमडम आवाज होने लगी। संत्रीगण अकस्मात् जग उठे। जाकर उस मकान के सामने किसी को न देखकर संत्रीलोग चिल्लाने लगे। पर कुछ

आर्डर के मारे कोई उनके पास नहीं आया। इसके अतिरिक्त इधर के मकान तो प्रायः खाली ही थे। लोग मरघटों से डरते हैं या हिन्दू-मुसलमान दंगों से।

रमेश छत पर खड़ा होकर आड़ में रहकर उस फैलते हुए अग्नि-कांड की ओर देखने लगा। आग बगल के मकानों की ओर बढ़ी। सड़क पारकर उस आग के इधर आने की संभावना नहीं थी, और यदि आती भी तो उससे रमेश को भय नहीं था। उसके बगल में खड़े रहकर ईश्वरी, केशव और तीन अन्य व्यक्ति भी उस आग को देख रहे थे, पर वे बहुत हृष्टचित्त थे। आग ने इतना विराट्‌रूप धारण किया कि उसकी दीप्ति से रमेश को अपने बगल में खड़े लोगों का मुँह दिखाई दे रहा था। देखते-देखते उसे ऐसा ज्ञात हुआ कि इन लोगों के साथ उसका कोई भी आत्मिक सम्बन्ध नहीं है, कुछ भी नहीं! इन आदमियों से बल्कि वह आदमी जिसे दूसरी बार में बलिदान किया गया था, उसके साथ उसका सम्बन्ध कहीं गहरा था। ओह कितना भयंकर सत्य था! उसे इच्छा हुई कि यदि इस समय राजीव आ जाता तो वह उसके पैरों पर गिरकर कहता कि वही ठीक था, और हम लोग गलती पर थे, पर क्या ऐसा हो सकता है? उसकी आँखों से अनायास दो बूँद आँसू उसी जगह पर गिर पड़े जहाँ इसके पहले छुरे से उस आदमी के शरीर का रक्त निकला था।

१७

इसी दिन शाम को पुलिस सुपरिन्टेंडेन्ट के दफ्तर में अरामग्र में ही लाइन इन्सपेक्टर राबर्ट्स की पुकार हुई।

—मि० राबर्ट्स आपको मि० हैमिल्टन याद कर रहे हैं......—कहकर प्रवीण पुलिस कप्तान मारिसन मुस्कराने लगे।

मि० राबर्ट्स कुछ चिन्तित हो गये। एक कुर्सी खींचते हुए उसने पूछा—क्या आप कुछ बता सकते हैं कि कमिश्नर साहब ने क्यों मुझे याद किया है?

मारिसन मेज के ऊपर के पेपर वेट को हाथ से हिलाते हुए बोले—नहीं मि० राबर्ट्स मैं यह तो नहीं बता सकता, पर बीच-बीच में वे अपने किसी भी नीचेवाले कर्मचारी को बुलाकर राजनीति पर बातचीत किया करते हैं। बात यह है कि उन्हें राजनीति बहुत पसन्द है।

पहले से अधिक चिन्तित होते हुए राबर्ट्स ने कहा—मैं भला राजनीति का क्या जानता हूँ कि वे मुझसे इस पर आलोचना करेंगे।

—यह कोई ऐसी बात नहीं है। वे शायद जानते हैं कि आप लेबर पार्टी के मेम्बर हैं, इसलिये इंगलैंड की राजनीति को समझने के लिये उन्होंने आप को बुलाया होगा। इसके अतिरिक्त किलटन में अंग्रेजों का Morale कैसा रहा है, यह भी वे शायद जानना चाहते हैं—फिर जरा रुककर आवाज बदलते हुए बिल्कुल अफसरी लहजे में उन्होंने कहा—मुझे कुछ नहीं मालूम है जनाब। फोन से उन्होंने कहा कि आप संध्या समय उनसे मिलते जाइये। बड़े शरीफ आदमी हैं, मिलकर आपको खुशी होगी।

राबर्ट्स समझ गया कि इससे अधिक मालूम न होगा, इसलिये नमस्कारकर चल दिया।

यथा समय वह कमिश्नर साहब के बँगले में हाजिर हुआ। मि० हैमिल्टन ने बड़े तपाक के साथ उसका स्वागत किया। वे इतने जिलों के हर्त्ताकर्त्ता विधाता हैं, और शीघ्र ही उच्चतर ओहदे पर जाने की संभावना है, इस बात को उन्होंने अपने व्यवहार से बिल्कुल व्यक्त नहीं किया। सीधा-सादा छल-कपट से हीन व्यवहार था। हँसमुख, नाना की तरह उम्र ५० से ऊपर होगी। बाल कहीं-कहीं खूब पक गये हैं। दृढ़, बलिष्ठ, शरीर सीधा होकर चलते हैं। प्रथम दृष्टि में ही राबर्ट्स को अच्छा लगा। इसके पहले भी उसने मि० हैमिल्टन को कहीं पर एक बार देखा था, पर जमकर बातचीत करने का मौका नहीं लगा था।

—आइये आइये मि० राबर्ट्स—कमिश्नर साहब ने आगे बढ़कर राबर्ट्स से हाथ मिलाया।

जल्दी ही दोनों में बातचीत जम उठी। हैमिल्टन ने राबर्ट्स से ब्यौरे में लड़ाई की खबरें पूछीं। इंगलैंड के गाँववालों ने तथा शहर वालों ने किस प्रकार जर्मन हवाई जहाजों के आक्रमणों को शान्ति के साथ सहा है, इसका वर्णन सुनते-सुनते मि० हैमिल्टन अभिभूत हो गये। उनकी आँखों के किनारे चमक उठे। वे अकस्मात् बोल उठे—सचमुच ही हमारी जाति महान है, क्या आप ऐसा नहीं मानते ?

—अवश्य—राबर्ट्स ने कहा—हम लोगों ने जर्मन पशुओं के फासिज़्मवादी आक्रमण का सामना किया, वह विस्मयकर है।

—हाँ, मैं तो यह समझता था कि वर्षों तक समृद्धि में पलने तथा खतरे से दूर रहने के कारण कदाचित् हमारी जाति भी फ्रेंचों की तरह क्षयशील तथा वीरहीन हो गई है। इस बात को सोचकर मुझे बहुत दुःख होता था, पर इस युद्ध ने दिखला दिया कि हममें से प्रत्येक बच्चा स्वतंत्रता और साम्राज्य की रक्षा के लिये जान की बाजी लगा सकता है।

साम्राज्य शब्द के नाम से राबर्ट्स ने एकाएक भौंहों को कुछ

ताड़ लिया, यह बात मि० हैमिल्टन की पैनी दृष्टि में आ गई। उन्होंने कहा—शायद साम्राज्य शब्द आप को पसन्द नहीं आया, पर यह एक दृष्टिकोण मात्र है। अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करना या खुद स्वतंत्र होना एक साधारण कर्त्तव्य है, पर दूसरी किसी पिछड़ी हुई जाति को अपनी देख-रेख में इस प्रकार शिक्षित करते रहना कि वे समय आने पर स्वतंत्र हो सकें, यह एक वृहत्तर कर्त्तव्य है। सौभाग्य से ईश्वर ने हमारी जाति को सर्वगुणमंडित किया है, पर इस कारण यदि हाथ पर हाथ धरकर घर बैठे रहा जाय तो यह उचित न होगा। दूसरों को भी अपने गुणों का विशेषकर स्वतंत्रता का अधिकारी करना पड़ेगा। यही हमारे साम्राज्य का अंतर्निहित उद्देश्य है, इन्हीं पवित्र विचारों से अनुप्राणित होकर हमारे देश के नौजवान, आपकी तरह विद्वान और होनहार नौजवान त्याग का जीवन व्यतीत करने के लिये ६ हजार मील दूर आकर पादरी, सौदागर, अफसर बनकर पिछड़े हुए देशों की सेवा करते हैं। इतना बड़ा आदर्श न होता तो घर-द्वार छोड़कर लोग यहाँ पर तिल-तिल करके अपने प्राणों की आहुति देने के लिये न आते। कभी भी न आते।

मि० हैमिल्टन अपने वक्तव्य की सत्यता के सम्बन्ध में इतने निश्चित थे कि वे इस बात को समझ ही नहीं सकते थे कि अंग्रेज न होते हुए रावर्ट्स दूसरी तरह से सोच सकता है। पर जब रावर्ट्स ने कोई बात नहीं कही, तो समझ गये कि शायद यह छोकरा संपूर्णरूप से मेरी बात को नहीं मान रहा है। उन्होंने एक बार रावर्ट्स के मुँह की ओर देखा फिर कहा—कहिये, आप ही कहिये कि आप हिन्दुस्तान में क्यों आये ?

अकस्मात् यह प्रश्न कैसे उठा यह न समझकर रावर्ट्स ने केवल उस प्रश्न को दोहरा भर दिया—मैं यहाँ क्यों आया ?

—हाँ, मैं यह पूछ रहा हूँ कि आप जो भाई-बन्धु, रिश्तेदार-नातेदार सबको छोड़कर इस सुदूर विदेश में आये हैं, यह सिर्फ रुपये के

लिये आये हैं, यह मैं नहीं मानता। माना कि यहाँ आपको कुछ अधिक आराम मिलेगा, उसमें भी संदेह है क्योंकि यहाँ बीस नौकर जितना काम करते हैं, इंगलैंड में एक नौकर से उससे कहीं अधिक आराम मिलता है। जो कुछ भी हो आप जो घर-द्वार छोड़कर यहाँ आकर जान दे रहे हैं, यह क्या सिर्फ कुछ मामूली आराम के लिये कर रहे हैं, यह मैं नहीं मानता।

राबर्ट्स को आना की बात याद पड़ गई। वह क्या कुछ रुपयों के लिये सुन्दरी आना को छोड़कर इतना दूर आया है? कभी नहीं?

हैमिल्टन कहते गये—इस देश के लोग समझते हैं कि हम लोग यहाँ पर शोषण तथा दोहन के लिये आये हैं, पर आप अपने मन से सोचकर देखिये कि क्या आप शोषण के लिये आये हैं?......

हैमिल्टन ने अकस्मात् रुककर राबर्ट्स को अच्छी तरह देख लिया, फिर कहा—क्या आप शादीशुदा हैं?

—नहीं।

—तो शायद Engaged वाकदत्त होंगे।

—हाँ—राबर्ट्स ने कुछ लज्जित होते हुए कहा।

—तो फिर इसीसे समझ लीजिये कि आप केवल एक आदर्श के लिये ही सब कुछ छोड़छाड़कर आये हैं।

राबर्ट्स को अकस्मात् यह बात याद आ गई कि आना के पिता ने इसलिये उससे अपनी कन्या की शादी नहीं करनी चाही कि वह गरीब है। उसने कहा—यह भी तो हो सकता है कि मैं रुपयों के लिये आया हूँ।

रुपये के लिये? नहीं, नहीं, नहीं, कोई रुपयों के लिये इतना बड़ा त्याग नहीं कर सकता।

राबर्ट्स ने कुछ देर तक रुककर कहा—क्या ऐसा कहा जा सकता है? जान दे देने से बढ़कर कोई त्याग नहीं है, पर हजार हजार

लोग आज दुनिया के विभिन्न मोर्चों पर रुपयों के लिये बिना किसी हिचकिचाहट के जान ले और दे रहे हैं।

हैमिल्टन के माथे पर पहली दफा बल आ गया। उसके अन्दर का दुर्दान्त हाकिम १६४२ का दमन करनेवाला कसाई निकल पड़ा, पर केवल एक अन्यमनस्क क्षण के लिये। उन्होंने जल्दी ही अपने को सम्हाल लिया, कहा—क्या ब्रिटिश सेना की बात कह रहे हैं? उन्होंने उत्तर को सीधा निकाल लेने के लिये राबर्ट्‌स की आँखों के अन्दर अपनी पैनी दृष्टि डाली, पर राबर्ट्‌स ने उस दृष्टि का सामना न करते हुए प्रश्न को बराते हुए कहा—मैं किसी विशेष सेना की बात नहीं कह रहा हूँ......

—उसके माने?—हैमिल्टन ने दुखी होकर कहा।

अत्यन्त स्वाभाविक स्वर में राबर्ट्‌स ने कहा—इसके माने यह है कि सभी देशों में मिसनरी हैं, हमारे देश में भी हैं।

आश्वस्त होकर मि० हैमिल्टन ने कहा—यह तो है हाँ पर हमारे देश में सबसे कम हैं।

राबर्ट्‌स बहस बढ़ाने के लिये इच्छुक नहीं था, उसने संक्षेप में कहा—हाँ।

हैमिल्टन ने देखा कि तर्क में मामला बन नहीं रहा है। उन्होंने सिगार-केस निकालकर राबर्ट्‌स को एक सिगार दिया और एक खुद लेकर धराया। थोड़ी देर तक दोनों चुपचाप सिगार पीते रहे।

काफी देर तक सिगार पीने के बाद मि० हैमिल्टन ने सामने की दीवार घड़ी की तरफ ताकते हुए कहा—आप लेबर पार्टी के मेम्बर हैं?

—हाँ—राबर्ट्‌स ने कुछ डिफेन्सिव होकर कहा।

—साम्राज्य के सम्बन्ध में मेरा मत तो सुन लिया, मैं इसे एक पवित्र बोझा मानता हूँ। अब यह बताइये कि आप क्या मानते हैं, अर्थात् आपकी लेबर पार्टी क्या मानती है?

राबर्ट्स ने सोचा कि अब तो तर्क से बचना मुश्किल है, उसने धीरे-धीरे कहा—लेबर पार्टी की राय में भारतीयों को स्वतन्त्रता दे देनी चाहिये......।

अब मि० हैमिल्टन से न रहा गया। शराफत का नकाब उतारकर बोले—Absurd! बिल्कुल फजूल बात है। मुँह से कह दिया बस हो गया। भारतीयों को स्वतन्त्रता दे दी जाय, मिश्र वालों को स्वतन्त्रता दे दी जाय, बिल्कुल गैरजिम्मेदाराना बातें हैं। कभी लेबर पार्टी के नेताओं ने इसके पूरे अर्थ को सोचकर भी देखा है। अभी लेबर पार्टी की सरकार नहीं है, इसलिये वे जो चाहें सो कहें, पर यदि वे कभी शक्ति आरूढ़ हों, तो वे समझ सकेंगे कि आटा-दाल का क्या भाव है। हमें तो ऐसा मालूम होता है कि इन गैरजिम्मेदार लोगों को राह पर लाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उनके हाथों में राष्ट्र की शक्ति दे दी जाय, तो फौरन इनकी नारेबाजी बन्द हो जायेगी।

राबर्ट्स ने अभी उस दिन तक ट्रफलगर स्क्वायर में खड़े होकर व्याख्यान सुने हैं, लेबर पार्टी के नेताओं ने इन व्याख्यानों में बराबर यह कहा है कि इस लड़ाई में सब मजदूरों को इसलिये भाग लेना चाहिये कि इस लड़ाई के अंदर से ही ऐसी क्रान्तिकारी शक्तियाँ निकलेंगी जो समस्त विश्व में विराट् क्रान्ति ला देंगी, इसलिये राबर्ट्स लेबर पार्टी की इतनी बड़ी भयंकर निन्दा सुनने के लिये तैयार नहीं हुआ, बोला इसके माने यह हुए कि आप कह रहे हैं कि शक्ति आरूढ़ होते ही हम अपने सब आदर्शों पर लात मार देंगे?

—जरूर कह रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ कि लेबर पार्टी के नेताओं ने इस बात को सोचने का कष्ट ही नहीं किया कि साम्राज्य चले जाने पर ब्रिटेन की क्या दशा होगी।

—कैसा?—राबर्ट्स ने कुछ मुँह बिचका लिया।

—देखिये मि० राबर्ट्स आप मुझे एक सठिआया हुआ बुड्ढा मात्र न समझें। आप की लेबर पार्टी के नेताओं ने मार्क्सवाद, लेनिन-

बाद आदि विशेष कुछ नहीं पढ़ा है, पर आज से पन्द्रह वर्ष पहले मैंने एक समाजवादी षड़यन्त्र में जज का काम किया था। उसी सिलसिले में मुझे मार्क्सवाद लेनिनवाद का गहरा अध्ययन करना पड़ा। मैं कह सकता हूँ कि षड़यन्त्र के अभियुक्तों ने इस विषय का इतना अध्ययन नहीं किया होगा, जितना मैंने कर डाला और सो भी केवल ६ महीने में। जाने दीजिये। मैंने इन बातों को इसलिये कहा कि आप यह न समझें कि मैं इन बातों को नहीं समझता। खूब समझता हूँ।

सिगार का एक कश लेकर मि० हैमिल्टन कहते रहे—साम्राज्य जाने पर पहली बात तो यह होगी कि ब्रिटेन प्रथम श्रेणी की शक्ति नहीं रह जायगा। और यह एक ऐसी बात है? जिसके लिये कोई भी ब्रिटिश बच्चा तैयार न होगा।

रावर्ट्स कुछ कहने जा रहा था, पर उसकी बात को रोककर हैमिल्टन ने कहा—और भी सुनिये, इस समय अर्थात् लड़ाई के पहले अंग्रेजों के जीवन का जो मानदंड था, साम्राज्य जाने पर उससे आगे बढ़ना तो दूर रहा, उससे बहुत पीछे हटना पड़ेगा, और इसके लिये कोई भी अंग्रेज तैयार न होगा।

सिगार का जल्दी से एक कश लेकर हैमिल्टन ने वक्तव्य को जारी रखते हुए कहा—आप की पार्टी की सभाओं में आपके नेतागण क्या कहा करते हैं। मालूम नहीं, पर चर्चिल की कोलिशन सरकार में लेबर के नेतागण जिस प्रकार काम करते आ रहे हैं, उससे तो यही मालूम होता है कि वे इतने अहमक नहीं हैं कि हाथ में शक्ति आने पर साम्राज्य को तहस-नहस कर देंगे। वे सब के सब बहुत चतुर राज-नीतिज्ञ हैं। यदि लेबर पार्टी इस लड़ाई के बाद कभी शक्ति आरूढ़ हो, तो वह क्रान्ति के मार्ग से नहीं बल्कि चुनाव के मार्ग से ही होगी, और जिससे जनता फिर आगे इन्हीं को चुने, इसलिये इस बीच में इनका प्रयास यह होगा कि अंग्रेज जनता के जीवन का मानदंड बढ़े, तभी तो वे वोट पायेंगे।

हैमिल्टन ने एक साँस में इतनी बातें कह डालीं, फिर सिगार की राख को बड़ी सुरुचि के साथ एक कामदार ऐश-ट्रे में झाड़कर, फिर सिगार का एक कश खींचते हुए कहा—हाँ एक दूसरा रास्ता है जिसे मार्क्सवाद बताता है, वह है क्रान्ति का रास्ता, पर मैं जानता हूँ कि लेबर पार्टी उस रास्ते को लेने के लिये तैयार नहीं है। क्रान्ति कर के धनियों की सारी सम्पत्ति जब्त कर ली जाय तो साम्राज्य जाने पर भी शायद इंगलैंड वालों के जीवन के मानदंड को कुछ कायम रक्खा जा सके, पर फिर भी इस प्रकार जो मानदंड होगा वह लड़ाई के पहले का मानदंड होगा, ऐसा मैं नहीं समझता।

हैमिल्टन रुक गया। राबर्ट्स तर्क बढ़ाने के लिये तैयार न था, बोला—क्रान्ति के बिना भी तो क्रान्ति हो सकती है... ..

—हाँ, मार्क्स ने इंगलैंड के लोक तंत्र से खुश होकर ऐसा एक बार जरूर कहा था, पर सारे मार्क्सवाद में इसके विरुद्ध दस हजार वक्तव्य हैं। मार्क्स ने शायद इंगलैंड की पुलिस को इतमिनान दिलाने के लिये ही यह कहा था कि बिना क्रान्ति के भी इंगलैंड में क्रान्ति हो सकती है, ऐसा उन्होंने इस कारण किया होगा कि इंगलैंड की पुलिस उन्हें शान्ति से काम करने दे।

हैमिल्टन कुछ मुस्कराया, पर राबर्ट्स उसकी हँसी में शामिल न हो सका, बोला—इसके माने ये हुए कि मार्क्स ने एक क्षुद्र सामयिक लाभ के लिये एक ऐसी वाहियात बात कही थी ?

—क्षुद्र सामयिक लाभ ? क्रान्तिकारी और चाहता क्या है ? वह तो चाहता है कि उसे शान्ति से काम करने दिया जाय, जिससे वह षड्यन्त्र को और भी परिपक्व कर सके। इसके अतिरिक्त जब सारा मार्क्सवाद चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है कि क्रान्ति के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है, तो उस एक बात की इसके अतिरिक्त और क्या व्याख्या हो सकती है। और हिन्दुस्तान में तो रोज व्यवहारिक रूप से यह बात कितने सालों से देख रहा हूँ। सभी समय अहिंसा-अहिंसा की रट लगाई

जाती है। यहाँ की परिस्थिति के सम्बन्ध में अनभिज्ञ पादरी और लेखक कहते नहीं थकते कि इसामसीह फिर अवतार रूप में आये हैं, पर व्यवहारिक रूप से जो कुछ हुआ, वह तो मैंने १६४२ में देख लिया। तब इन अहमक पादरियों तथा लेखकों को लाकर विद्रोहियों के सामने कर दिया जाता तो उन्हें मालूम होता कि क्या रंग है।

दीवार घड़ी में टन-टन करके आठ बजे।

मि० हैमिल्टन अकस्मात् चौंक पड़े। सिगार को डालकर अकस्मात् विषयान्तर करते हुए उन्होंने कहा—आप के साथ बातचीतकर बहुत खुशी हुई। मेरा लड़का विलियम भी कैम्ब्रिज से इसी प्रकार की बातें लिखा करता था। अब वह मिश्र में युद्ध दफ्तर में है। अब उसकी बातें बहुत कुछ बदल चुकी हैं। यद्यपि अभी तक युद्धों के अंत के लिये युद्ध, सुन्दरतर जगत के लिये युद्ध—ये सब बातें वह लिखा ही करता है। मैंने समझ लिया कि यह भी एक फैशन है। हम लोग पुराने ढर्रे के हैं, हमें लम्बी-चौड़ी बातें नहीं करने आतीं। हम लोगों के जमाने में कुदाल को कुदाल ही कहा जाता था। मैं अंग्रेज बच्चे की व्यवहारिक बुद्धि में विश्वास करता हूँ। समय पड़ने पर काम ठीक ही करेगा, यों चाहे वह कुछ भी बकता रहे।

राबर्ट्‌स को बहुत कुछ कहना था, पर उसने देखा कि इनसे बात करना पत्थर में बीज बोने के बराबर होगा। उसने सोचा कि अब चलना चाहिये, बोला—आप के मतों को जानकर बहुत खुशी हुई अब जाता हूँ।

अकस्मात् जैसे हैमिल्टन को कुछ स्मरण हो आया, बोला—बैठिये-बैठिये, आप के साथ जिस बात की विशेषकर आलोचना करनी थी, वह तो रह ही गई।

—हाँ कहिये—कहकर राबर्ट्‌स अच्छी तरह सम्हल कर बैठ गया। तो सिर्फ आलोचना ही नहीं, कुछ और भी है।

पहले कुछ हिचकिचाते हुए और फिर शान्तस्वर से हैमिल्टन ने कहा---एक बात आप शायद मानें कि इंगलैंड की राजनीति को मैं समझूँ या न समझूँ, भारतीय राजनीति को मैं बखूबी समझता हूँ।

---अवश्य, अवश्य। इस बात को कौन अस्वीकार कर सकता है? --राबर्ट्स ने जल्दी से कहा।

परम आत्म-तृप्ति से एक चप-चप शब्दकर हैमिल्टन ने कहा---खैर जब तक आपकी लेबर पार्टी शक्ति आरूढ़ होकर साम्राज्य का दान नहीं दे देती, तब तक हम लोगों को जिनको इसके लिये तनख्वाह दी जाती है यह चाहिये कि साम्राज्य को अच्छी से अच्छी ब्रिटिश परम्परा के अनुसार कायम रक्खें। आप इस बात को मानते हैं?

--अवश्य।

---मैं आप की तरह प्रतिभावान युवक से यही आशा करता था। अच्छा तो इसे मानने पर बहुत से प्रश्न खुद-ब-खुद पैदा हो जाते हैं। प्रत्येक संस्था का एक नियम है। साम्राज्य एक संस्था है, उसके कुछ नियम हैं, यदि साम्राज्य कायम रखना हो तो उन नियमों को मानकर ही चलना होगा।

राबर्ट्स कुछ समझ नहीं सका इसलिये आँखें फाड़-फाड़कर यों ही ताकता रहा, बोला---यह तो उचित ही है कि हम उन्हें स्वतंत्रता के उपयुक्त कर दें।

---हाँ, ठीक कह गये हैं, पर उसका भी एक नियम है, वह नियम यह है कि हम किसी के साथ पक्षपात नहीं करेंगे।

राबर्ट्स ने हाँ करते हुए कहा---यह तो है ही।

---अच्छी बात है, आपने सिद्धान्त रूप में बात को समझा है, पर कार्यरूप में दूसरा ही किया......

---कौन? मैंने क्या किया है?---आश्चर्य के साथ राबर्ट्स ने कहा।

—हाँ आप—कहकर जितना संभव धीमे स्वर में मिठास लाते हुए हैमिल्टन ने कहा—गलत न समझें। मैं कमिश्नर की हैसियत से कुछ नहीं कह रहा हूँ, मित्र के नाते कह रहा हूँ। उस दिन आप जो रात को रमेश पांडे के साथ मुस्लिम मुहल्ले में गये थे, उसमें आप का उद्देश्य अच्छा था यह मैं मानता हूँ पर व्यवहारिक रूप में उसमें हिन्दुओं के साथ पक्षपात हुआ है।

—कैसा ? आप हमारे विरुद्ध गम्भीर चार्ज लगा रहे हैं......

हाँ अवश्य ही गम्भीर है। इससे हिन्दुओं के प्रति सफेद जाति का पक्षपात सूचित होता है।

और भी आश्चर्य में पड़कर राबर्ट्स ने कहा—हिन्दुओं के साथ पक्षपात ? मैं ?

—हाँ, अगर मुसलमान जान जावें तो हमें बहुत परेशान होना पड़ेगा।

—इसके माने ये हुए कि आपके अनुसार दंगे की खबर पाकर भी हमें चुपकर बैठे रहना तथा लड़ाई चलने देना चाहिये था ? क्या आप कह रहे हैं कि मुझे घटनास्थल पर जाना न चाहिये था ?

—यह क्यों ? फिर भी एक हिन्दू के कहने पर इस तरह आपको मुस्लिम मुहल्ले पर चढ़ाई नहीं करनी चाहिये थी। इसके अलावा आपने उस हिन्दू को साथ में ले लिया यह भारी गलती थी, इससे मुसलमान क्रोध कर सकते हैं।

राबर्ट्स ने अभी तक अपने काम में कोई गलती नहीं पाई ; कहा—उस भले आदमी ने आकर जिधर की खबर दी उधर गया। और मैंने उनको जो साथ में लिया, वह महज गाइड की हैसियत से। अगर कोई मुसलमान आकर खबर देता तो भी मैं उसके साथ जाता।

—यह सब माना। सुनने में अच्छा मालूम होता है, पर

कार्यकाल में उनका रुख पक्षपात का हो गया। इसे आप नहीं समझ रहे हैं।

—नहीं।

—पर यह देखिये—कहकर मि० हैमिल्टन ने उर्दू अखबार इन्साफ में जो टिप्पणी निकली थी, उसका अंग्रेजी अनुवाद दिखलाते हुए कहा—इसे पढ़ देखिये इसमें कहा गया है कि आप विलायत में ही विवेकानन्द के शिष्य हो गये थे, आपकी तरह के आदमी को पुलिस में रखने पर मुस्लिम स्वार्थ की हानि होगी।

राबर्ट्स ने दिये हुए कागज को पढ़कर देखा कि सचमुच यही बात है, बोला—मैं तो यह जानता भी नहीं कि विवेकानन्द कौन हैं, मैंने तो कभी नाम भी नहीं सुना।

—हाँ, यह तो मैं भी जानता हूँ। यह राजनीति है। इसमें सच-झूठ सब चलता है। इसलिये हमें सावधान होना चाहिये।

—तो क्या आप कह रहे हैं कि मेरा जाना उचित नहीं हुआ?

—आप पर धीरज में जाते। हिन्दू-मुसलमान लड़ रहे हैं, इससे हमें क्या? हम लोग तो बराबर उन्हें एक होने के लिये कह रहे हैं। फिर ये लोग जब भी एक हो जाते हैं फौरन अकृतज्ञ होकर हमें गालियाँ देना शुरू करते हैं। इसलिये हमें इन झंझटों से बिल्कुल अलग रहना चाहिये।

—पर हमारे हाथ में राष्ट्र-शक्ति है, अगर दस या बीस बदमाश मिलकर शान्ति भंग करें, तो क्या यह हमारे लिये उचित न होगा कि उनके उत्पातों से साधारण जनता की रक्षा करें?

—हाँ-हाँ, यह सब बातें थियोरी में अच्छी लगती हैं, पर व्यावहारिक नहीं है। इसके अतिरिक्त आप तो एक रात घूमें, आपने मसजिद के सामने खड़े होकर साम्प्रदायिक गाना सुना, लाश की चोरी देखी, फिर भी क्या आप समझते हैं कि यह कुछ बदमाशों का ही काम है? यह

मुसलमानों के विरुद्ध हिन्दुओं का और हिन्दुओं के विरुद्ध मुसलमानों का total warfare है। इससे हम लोगों को दूर ही रहना चाहिये, नहीं तो हम पर पक्षपात करने का दोष लगाया जायगा।

—हाँ सामयिक रूप से तो मालूम हुआ total warfare है, पर अवश्य ही मि० गांधी का दल इसमें हिस्सा नहीं ले रहा है।

मि० हैमिल्टन ने मुस्कराते हुए कहा - अच्छी बात याद दिला दी। वह भी सुन लीजिये। मुसलमानों में कांग्रेस नहीं है, पर हमें निश्चित खबर मिली है कि दंगा के शुरू से ही सब कांग्रेसी या तो घर पर बैठ गये, या उन्होंने इसमें हिस्सा लिया। उस इलाके के विश्वम्भर नाम के एक कांग्रेसी के सम्बन्ध में हमें पता लगा है कि उसने खुद तो उसमें शिरकत नहीं की पर हिन्दू दंगाइयों को अस्त्र तथा अन्य तरीकों से सहायता दी है।

—ए ? वे तो अहिंसा मानते हैं ?

—कहा न कि वह केवल बहाना है, और सुनिये, सुनियेगा, आप दंग रह जायेंगे।

राबर्ट्स ने सिर हिलाकर कहा—हाँ।

—आपके साथ जो रमेश पांडे था उसे आप क्या समझते हैं ?

—मुझे तो ऐसा मालूम पड़ा कि सार्वजनिक सेवा की इच्छा रखने वाला साहसी युवक है।

—हा हा हा हा, उस युवक ने बराबर दंगे में सक्रिय भाग लिया है।

—क्या कह रहे हैं ? यह त बिल्कुल कहानी की तरह है—आश्चर्यचकित राबर्ट्स ने कहा।

—ठीक ही कह रहा हूँ। कल उसके ही दोस्तों ने तीन मुसलमानों को काली को चढ़ा दिये।

—ओह तब तो इन्हें पहचानना बड़ा मुश्किल है।

—यही तो मेरा रोना है कि आप लोग इंगलैंड से वहाँ के मानदंड लेकर आते हैं, उसके बाद वहाँ के उस मानदंड को यहाँ के लोगों पर लगाना शुरू कर देते हैं। नतीजा जो होना चाहिये वह होता है, भयंकर विभ्राट उपस्थित होता है। हम लोगों को यह सब झेलना पड़ता है। थियोरी और प्रैक्टिस में बहुत फर्क है। उस पांडे को आपने आक्सफोर्ड के एक अंडर-ग्रैजुएट की तरह समझा था, पर आपने सुना न?

—इन्हें और उनके साथियों को गिरफ्तार किया?

—नहीं।

—क्यों? जब आपको उनके अपराध के सम्बन्ध में मालूम हो रहा है, तो आप उन्हें गिरफ्तार क्यों नहीं करते?

—मैंने वह जो कहा कि साम्राज्य रक्षा के कुछ नियम हैं, इसलिये सभी समय अपराधी को गिरफ्तार करना उचित नहीं है......

—क्यों?

—इसलिये कि हम पक्षपात नहीं करना चाहते।

—यदि इस तरह से अंग्रेजों का मारना शुरू हो तो क्या अपराधी गिरफ्तार न किया जाता?

—अवश्य ही किया जाता। सारे साम्राज्य का जोर लगाकर अपराधी को खोजकर निकाला जाता, उसके बाद उसे सजा दी जाती। पर अंग्रेज की बात और है। जो अंग्रेज को मार रहा है वह साम्राज्य की जड़ में कुठाराघात कर रहा है। उसे पकड़ना ही पड़ेगा, मारना ही पड़ेगा। पर ये यदि आपस में लड़ें, तो हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। वे लड़े तो लड़ें, हम क्या करेंगे?

—हमें चाहिये कि उनके झगड़े को मिटा दें!

—जरूर ही, पर वे इस बात को कहें तो इस बात को मानें तो। वे तो कहते हैं Quit India.

—इसका अर्थ?

—अर्थ कुछ नहीं, उन्हें यह समझना चाहिये कि हम अंग्रेज यहाँ उनकी भलाई के लिये हैं, और इससे भी बड़ी बात है कि हम यहाँ रहेंगे। Commonwealth और ऐसा और वैसा मैं भी हाँक सकता हूँ, पर इससे कुछ आता जाता नहीं। आज अंग्रेजी जो विश्वभाषा हो गई है, उसका कारण हमारी बौद्धिक या साहित्यिक श्रेष्ठता नहीं है, बल्कि उसका कारण हमारा साम्राज्य है, उसका कारण उतनी हद तक शेक्सपियर, गैल्सवर्दी, शा नहीं हैं, जितनी हद तक कि क्लाइव, वारन हेस्टिंग्स, विलिंगडन हैं। इन बातों को न समझना मूर्खता की हद होगी।

मि० हैमिल्टन रुक गये। वे समझ गये कि राबर्ट्स बहुत कुछ प्रभावित हुआ है। ब्रिटिश वास्तविकता की अंत तक विजय तो रहेगी ही।

हैमिल्टन ने फिर सिगार सुलगाया, कुछ देर तक दोनों चुपचाप सिगार पीते रहे। फिर हैमिल्टन ने शुरू किया—मैं काम का आदमी हूँ, अधिक थियोरी नहीं समझता, पर साम्राज्य के लिये मैं सब कुछ कुर्बानी कर सकता हूँ यह मैं जानता हूँ। क्यों न हम साम्राज्य को चाहें? हम देखते हैं कि हमारे ही रहते हिन्दू-मुसलमान रोज लड़ा करते हैं, हमारे बाद जाने क्या होगा? आपने भारतीय अखबारों को यह खबर देखी है कि बकरीद अच्छी तरह गुजर गई, कोई दंगा नहीं हुआ, मुहर्रम खैरियत से गुजरा, रामलीला के जुलूस में कोई दुर्घटना नहीं हुई। ये यहाँ की खबरें हैं। इसीसे समझ लीजिये। इसके अलावा आपने पांडे ऐसों की हालत सुनी?

—हाँ, बहुत आश्चर्य मालूम हुआ।

—यहाँ किसी का एतबार नहीं।

—ऐसा ही मालूम हो रहा है—राबर्ट्स मानने के लिये मजबूर हुआ, पर उसमें अब भी विद्रोह का अंश मौजूद था। बोला—फिर यह जो सुना कि कल से दंगे को बन्द करने के लिये पुलिस खूब कोशिश

कर रही है, इस बात के साथ और आपकी बात के साथ कि इन दंगों में हमें उदासीन रहना चाहिये कुछ मेल नहीं खाता।

—हाँ, साधारण समय का यही नियम है। पर इस समय लड़ाई हो रही है, इस समय हम साम्प्रदायिक दंगे को एक सीमा के बाहर जाने नहीं दे सकते, क्यों कि दंगा होते ही भारतीय पुलिस और सेना में भी साम्प्रदायिकता फैल जाती है। हिन्दू पुलिस मुसलमान पुलिस को मारना शुरू कर देती है, इसके माने वह राजभक्त नहीं रहती। लड़ाई के समय अरे बाप रे हम इस परिस्थिति को कभी पनपने नहीं दे सकते, इसलिये हमें ज्योंही खबर मिली कि पुलिस और सेना में साम्प्रदायिकता फैल गई है त्यों ही हमने एक घंटे के अंदर दंगा बन्द कर दिया।

—एक घंटे के अंदर ?

—हाँ, साम्राज्य खतरे में पड़ जाय तो हम एक घंटे में दंगा बंद कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस समय दंगे के माने मिलों का बंद होना है, मिलों का बंद होना माने युद्ध प्रयास में बाधा है। दंगा बंद करना ऐसी कोई मुश्किल बात नहीं है। हम लोग तो तराई के कबीलों की सब भीतरी खबरें पा जाते हैं। एक अंग्रेज बच्चे को कबीला वाले ले न जायँ, जहाँ भी छिपा रक्खेंगे, फौरन सात दिन में पता लगेगा। दंगे की खबर पाना ऐसी क्या मुश्किल है।

—तो यहाँ पर पुलिस और सेना में भी साम्प्रदायिकता है ? वे भी दंगे में भाग लेती हैं ? बहुत ही आश्चर्य की बात है !

—हाँ, यहाँ पर धर्म एक जीवित शक्ति है। यहाँ की चिन्ता-शैली है, पछाँह के गणतन्त्र के नियमों को यहाँ पर लागू करने से विपरीत परिणाम होगा। अब भी भारतीयों को न मालूम कितने साल शिक्षा देनी पड़ेगी, तब जाकर कहीं......

आज के लिये दवा की काफी बड़ी मात्रा दी जा चुकी है। जानकर मि० हैमिल्टन ने कहा—तो आज आप जा सकते हैं। आपको तकलीफ

हुई। फिर किसी दिन आपके साथ और भी विस्तारपूर्वक भारतीय राजनीति की आलोचना करूँगा।

राबर्ट्‌स हाथ मिलाकर चला गया।

जो राबर्ट्‌स आया था वह नहीं लौटा। एक दूसरा राबर्ट्‌स अपने क्वार्टर में लौटा। हैमिल्टन के एक लेक्चर ने ट्रैफलगर स्क्वायर और हाईड पार्क के सब व्याख्यानों पर पानी फेर दिया।

थोड़ी देर बाद श्रीमती हैमिल्टन क्लब से या सिनेमा से आईं। आकर के ही पूछा—वह युवक आया था?

—हाँ।

—क्या कहा?

—क्या कहता, बहुत मल्ल युद्ध के बाद उसने सब बातें मान लीं—जय गौरव से हैमिल्टन ने कहा।

—मैंने तो सुना था कि वह लेबर पार्टी का मेम्बर है उसने इतनी आसानी से मान लिया कि (हिन्दू और मुसलमान को लड़ाकर हमारा साम्राज्य कायम है।)

—अजी लोबाह करो, इस तरह से थोड़े ही वह मानने वाला है। वह युग लद गया। अब सब चीजों का नाम बदल गया। पुराने नाम बाजार में चल नहीं सकते। अब साम्राज्य को Commonwealth कहते हैं, Divide and rule को कहते हैं कि हम झगड़ा मिटाने के लिये हैं। खैर, रात हो गई है। जल्दी से खाने के कमरे में चलो। बहस से भूख अधिक लगती है।

श्रीमती हैमिल्टन गौरव की हँसी हँसकर कपड़े बदलने के लिये चली गईं। हैमिल्टन सिगार का धुँआ छोड़ते-छोड़ते पीछे चले। वे मन ही मन अच्छे विजयोन्माद का अनुभव कर रहे थे। उनकी आँखें खिली जा रही थीं। एक साम्राज्य का कट्टर भक्त और बना।

१८

जोहरा ने दो-तीन दिन बहुत ही बुरी हालत में बिताये। अब वह अपने को सम्पूर्ण निर्दोष करके नहीं सोच पा रही थी। राजीव के निर्यातन और हत्या में उसका भी हाथ था। उसने शौकत को यह धमकी जरूर दी थी कि राजीव के हत्यारों को पकड़ा देगी, पर जब मौका आया तो उसने उसके बिल्कुल विपरीत आचरण किया। उसने अपराधियों को बचा लिया।

जोहरा अब तक सोचती थी कि वह जो चाहती है, कर सकती है, पर उसे अब विश्वास हो गया था कि वह केवल कुछ अज्ञात शक्तियों के हाथों में कठपुतली मात्र है। उसमें न तो कोई स्वतन्त्र कार्यशक्ति है और न कोई इच्छाशक्ति है।

कभी-कभी उसके मन में यह इच्छा हो रही थी कि जो कुछ हुआ सो हुआ, उसने जो कुछ झूठ कहा सो कहा, अब जाकर पुलिस के सामने पूरी बात कह दे, पर न मालूम क्यों वह जब इस बात को सोचती तो उसे यह वास्तविक नहीं ज्ञात होती।

अकस्मात् उसके दिमाग में एक बात आई। अब्बाजान को बुला-कर सलाह की जाय तो कैसा रहे। अब्बा, स्नेहमय देवतुल्य अब्बा, वे अवश्य ही अच्छी सलाह देंगे।

उसने फौरन अब्बा को तार दिया कि विशेष विपत्ति है, जल्दी आइये।

तार पाते ही डा० नौशेर फौरन दो दिन के अन्दर आ गये। इधर जब से तार दिया गया था तब से जोहरा बहुत निश्चिन्त थी। वह सोच रही थी कि उसने बड़ा अच्छा फैसला किया। दुविधा से पीड़ित उसके

हृदय में जैसे अकस्मात् शांति का संचार हुआ। उसे विश्वास था कि नौशेर अपनी लड़की को अवश्य ही अच्छी सलाह देंगे। अवश्य ही वे ऐसा कोई समाधान निकालेंगे जिससे उसका विवेक परितृप्त होगा।

जोहरा ने पिता का बहुत तपाक से स्वागत किया। पिता को देखते ही एक बच्ची की तरह ऐसे लिपट गई कि नौशेर आश्चर्य-चकित रह गये। जोहरा की बैठी हुई आँखों तथा रूखे चेहरे को देख कर वे यह समझ गये कि उनकी दुलारी कन्या बीमार है, पर ऐसा क्या मामला है कि उन्हें एकाएक तार दिया गया इसे वे नहीं समझ पाये।

उन्होंने चारों तरफ आँख दौड़ा कर जो शौकत को नहीं देखा तो पूछा—शौकत कहाँ है? वह खैरियत से तो है?

—हाँ, हाँ, वह अच्छी तरह है, कहीं पर गया है, आता होगा—रूखे स्वर में जोहरा ने कहा।

सुनकर नौशेर को तसल्ली हुई। जोहरा के कमरे में प्रवेशकर बैठते हुए नौशेर ने अपनी कन्या से पूछा—क्या बात है?

—आप नहा खाकर आराम कर लीजिये, फिर बातचीत होगी।

लड़की के इस आश्वासन पर भी नौशेर सम्पूर्ण रूप से निश्चिन्त न हो सके। उन्होंने चिन्तित स्वर में कहा—सुना है कि कई दिन से यहाँ हिन्दू-मुसलमान दंगा हो रहा है। ताँगे वाले से यही मालूम हुआ।

—हाँ—संक्षिप्त रूप से सिर नीचाकर जोहरा बोली।

—हम लोगों के कोई रिश्तेदार तो नहीं मारे गये?

—नहीं—राजीव को मित्र या रिश्तेदार में गिनने का अधिकार जोहरा को नहीं था, इसके अतिरिक्त अभी से सब बात कहने की जरूरत नहीं थी। उसने कहा—नहा खा लीजिये, देर हो रही है।

डा० नौशेर समझ गये कि अभी कोई बात नहीं खुलेगी। इसके अलावा वे अपनी मातृहीना कन्या को अच्छी तरह जानते थे। जितनी

ही वह जिद्दी थी उतनी ही भावुक भी। इसलिये वे उठ खड़े हुए, पर चाहे सहजात बुद्धि के कारण ही हो या अन्य किसी कारण से हो उनके मनमें एक गाँठ रह गई।

उधर जोहरा तार देकर जैसी निश्चिन्त यहाँ तक कि प्रफुल्लित हो रही थी, पिता के साथ थोड़ी बातचीत करने के बाद ही उसकी वह निश्चिन्तता तथा प्रफुल्लता नष्ट हो गई। कुछ उसको ऐसा सन्देह हो गया कि पिता के साथ बातचीत से कोई परिणाम नहीं निकलेगा। निराशा से उसके मन में ऐंठन-सी पड़ने लगी और वह निर्जीव हो गई। ऐसी हो गई कि मानों उसके लिये कोई जगत नहीं रहा, बुराई-भलाई नहीं रही, जीवन का कोई मूल्य नहीं रहा। जैसे वह अकेली है, कोई ऐसा नहीं है जो उसे बचा सके।

फिर भी तीन-चार घण्टे बाद जब वह पिता के कमरे में जाकर बैठी तो उसके मन में एक नवीन आशा का संचार हुआ, जीवन ने फिर उसके कानों में एक आशा की असावरी गा दी। यथा समय नौशेर ने उससे पूछना शुरू किया। धीरे-धीरे जोहरा ने नौशेर को सारी बात जैसी घटित हुई थी, बता दी। उसने कुछ भी नहीं छिपाया। केवल यह बात छिपाई कि राजीव और उसमें परस्पर मित्रता थी। उसने राजीव पर जो घटना घटित हुई थी उसे केवल एक विश्वासघात की कहानी के रूप में चित्रित किया।

जोहरा की कहानी सुनते-सुनते डा० नौशेर का चेहरा गम्भीर हो गया। बहुत देर तक वे कुछ नहीं बोले। न कहने पर भी नौशेर ने अपनी कन्या के हृदय तथा मन के सूक्ष्मतम तन्तुओं के स्पन्दन को अनुभव कर लिया। जब से जोहरा मातृहीन हुई थी तब से वे एक साथ उसकी माता तथा पिता की जगह पर थे। रोना पड़ा था। वह कोई दस वर्ष की बात है जब उनको पिता के अतिरिक्त उसकी माता भी बननी पड़ी थी। शौकत की बात और थी। वह हमेशा दूर ही दूर रहा। उसे ५

तो पिता की जरूरत थी, न जननी की आवश्यकता थी। वह मानों बचपन से ही अपने में आप सम्पूर्ण था।

दोनों बहुत देर तक चुप रहे। कहने को कुछ था ही नहीं, इस कारण नौशेर कुछ नहीं कह रहे थे।

—अब्बा—जोहरा ने अकस्मात् पुकारा।

—क्या है बेटी!

—क्या होगा?

—काहे का क्या होगा?—नौशेर ने कहा। उनकी चिन्ताएँ जैसे कुछ बिखर गई थीं। इतनी बिखर गई थीं कि वे रूप ग्रहण करने में असमर्थ थीं। फिर भी कुछ कहना चाहिये इसलिये उन्होंने कहा—अल्लाह की ऐसी ही मर्जी थी।

जोहरा जैसे कुछ व्यथित हुई, आश्चर्यचकित होकर बोली—अल्लाह की मर्जी?

—इसके अलावा और क्या है? हमारा तुम्हारा इसमें क्या हाथ है? नहीं तो क्यों यह दंगा ही होता, और क्यों ये सब भद्दे कांड ही होते? यह उन्हीं की मर्जी है। बेटी हमें यही सोचकर तसल्ली करनी चाहिये कि इसमें अल्लाह का कोई मनसूबा छिपा हुआ है।

—इसमें मनसूबा? इसमें क्या मनसूबा हो सकता है?—जोहरा ने इस प्रकार के लहजे में कहा मानों वह किसी अप्रिय चीज को भगा रही थी, बोली—नहीं, नहीं, मैं इस बात को नहीं मान सकती।

—क्यों? इससे शायद हिन्दू-मुसलमान और भी पास आवें। दूसरे तरीके से तो वे पास न आ सके इसलिये इस तरह की मारपीट और झगड़े-बखेड़े के उल्टे रास्ते से ही जाकर समझें कि यह रास्ता गलत है। दूसरे रास्ते से चलना पड़ेगा। कौन कह सकता है बेटी कि किस बुराई में से कौन सी भलाई हो जाती है?

—पर......

—पर बस कुछ नहीं बेटी, अल्लाह की मर्जी में अपनी मर्जी को डुबा देने में ही अमन का रास्ता है। हम कितने आगे तक सोच सकते हैं ?

—फिर भी हमारा एक फर्ज तो है—जोहरा ने विद्रोही स्वर में कहा।

—हाँ, वह फर्ज यह है कि हम अल्लाहताला की मर्जी में एतबार न खो दें। इससे बड़ा फर्ज और कुछ नहीं हो सकता।

जोहरा ने कहा—नहीं, नहीं, उस फर्ज के अलावा और भी फर्ज है। आप जिस फर्ज की बात कह रहे हैं, उस फर्ज पर भरोसा किया जाय तो दुनिया का कोई काम न हो। हम लोगों को अल्लाह ने ही हाथ-पैर दिये हैं, हमें चाहिये कि उनसे कुछ काम लें।

—कौनसा काम ?—नौशेर ने पूछा।

—ऐसा काम जिससे भलाई की जीत जल्दी हो, जिससे बुराई की हार हो। ऐसी फिरका परस्ती जो आदमी को हैवान से कमतर कर देती है, उसके साथ मिलकर काम करना गलत होगा, उसे सब तरीके से खतम करना पड़ेगा।

—उससे मिलकर क्यों काम करें ? कभी नहीं करेंगे—नौशेर ने जोरदार तरीके से कहा।

—पर मैंने तो ऐसा ही किया न !

नौशेर समझ गये कि जोहरा क्या कह रही है। अल्लाहताला की आड़ लेकर उनकी चिन्ताएँ कुछ स्पष्ट हो रही थीं पर अकस्मात् किसी ने उस स्पष्टता को जैसे बिगाड़ दिया। फिर उनकी चिन्ताएँ कुछ धुँधली हो गईं, उनमें कोई किनारा या रास्ता नहीं रहा। वे करीब-करीब हतबुद्धि होकर बोल उठे—तुम ?

—हाँ, मैंने ही तो सब कुछ जान-बूझकर उनको पुलिस से बचाया।

—पुलिस से ?—अन्यमनस्क नौशेर बोले।

—हाँ, उनको पुलिस से मैंने ही तो बचाया, नहीं तो अगर मैं सच बोलती तो अब तक वे सबके सब दाखिल हवालात होते।

नौशेर ने कुछ नहीं कहा। सिर नीचा कर लिया। इसके बाद कुछ सोचकर कहा—पर शौकत को भी तो हवालात में बन्द होना पड़ता।

—हाँ—डरती हुई जोहरा ने कहा।

दोनों फिर बड़ी देर तक चुप रहे। मानो यही एक समस्या थी जिसका दोनों किसी प्रकार समाधान नहीं कर सकते थे। अकस्मात् नौशेर ने कहा—पर बेटी यह क्या अच्छी बात होती ?

—बुरी क्या होती ? एक अच्छी मिसाल तो हो जाती। आज तक यही होता आया है कि हरेक मुसलमान चाहे या न चाहे हरेक मुसलमान गुंडे की गुंडई में हाथ बँटाता आया है किसी बिन्दु पर इस नियम को तोड़ना तो होगा।

—हाँ, थियोरी में यह बात ठीक है कि उसे तोड़ना होगा, पर उसके रास्ते में कितने प्रैक्टिकल रोड़े हैं उसे भी कभी सोचा है ?

—कौन-सी प्रैक्टिकल कठिनाई है ? शौकत ?

हाँ, शौकत तो है ही, बहिन होकर भाई के खिलाफ गवाह बनकर खड़ा होना तो नहीं हो सकता। वह तो एक तमाशा हो जायगा।

—ओ—निराश होकर जोहरा चुप हो गई। वह शिथिल हो गई पर एकाएक उसके दिमाग में एक विचार आते ही उत्फुल्ल हो गई, बोली—पर यह तो हो सकता है कि शौकत को बचाकर मैं ब्यान दूँ, और दूसरे बदमाशों को सजा करवा दूँ......

नौशेर ने उसी प्रकार गांभीर्य के साथ कहा—यह भी नहीं हो सकता। मैं मानता हूँ कि इन लोगों ने एक बहुत बड़ा जुर्म किया है, एक मासूम मेहमान को दगाबाजी से मार डाला है, पर फिर भी सब कुछ जानते हुए और देखते हुए कुछ भी किया नहीं जा सकता। हम व सोसाइटी में पैदा हुए हैं, हमें उसीमें रहना पड़ेगा। हाँ, अगर हम

मजहब बदलकर मुल्क छोड़ दें, तो बात दूसरी है, पर जब तक हम यह फैसला नहीं कर लेते तब तक हम लोगों को इसी सोसाइटी का हिस्सा बनकर चलना पड़ेगा।

जोहरा ने कहा—चाहे जितनी बेइन्साफी हो, चाहे जितनी बदमाशी हो हम उसके खिलाफ चूँ भी नहीं कर सकतीं ?

—चूँ क्यों नहीं कर सकतीं ? उसके खिलाफ आवाज उठाओ, पर इस आवाज उठाने के दरमियान में पुलिस को न लाओ—कहकर वे रुक गये, इसके बाद अंतिम फैसला देने के लहजे में बोले—इसके अलावा तुम जिस मकसद से ब्यान देना चाहती हो वह भी तो पूरा नहीं होगा, बल्कि इसके खिलाफ नतीजे होने के इमकान हैं। सजा से आदमी सुधरता नहीं है, कम-से-कम जिन जुर्मों की जड़ में समाजी वजूहात हैं, उन जुर्मों को धमकियाँ देकर बन्द नहीं किया जा सकता। मुसलमान यह सोचेंगे कि तुमने उनके साथ दगा किया, और जब उनके दिल में इस तरह के ख्यालात उठेंगे, तो वे सुधर नहीं सकते, उसका तो रास्ता ही बन्द रहेगा।

जोहरा समझ गई कि इन बातों का जवाब देना मुमकिन नहीं है, पर इसके फलस्वरूप जिस नतीजे पर पहुँचा जाता था, उस नतीजे को वह मानने के लिये तैयार नहीं थी, बोली—फिर भी इस बेइंसाफी का कुछ करना तो पड़ेगा। बिला मुखालिफत इतनी बड़ी बेइंसाफी को होने देने के मानी यह है कि उसमें हिस्सा लिया गया।

—हाँ मुखालिफत करनी होगी, पर ऐसी मुखालिफत करने के कोई मानी ही नहीं होते जिससे मुखालिफत का मकसद ही खराब हो जाय। तुम्हारा मकसद तो यह है न कि फिरका परस्ती को दूर किया जाय और खाना जंगी बंद किया जाय पर तुम जो करना चाहती हो, 'उससे होगा-हवायेगा कुछ नहीं' लोग सिर्फ हँसेंगे।

—लोग हँसेंगे ?—कहकर वे रुके कि यह बात करनी चाहिये कि नहीं, पर जल्दी ही जैसे कठिन प्रश्न का समाधान कर बोले—लोग

यह कहेंगे कि एक मुसलमान कुवाँरी लड़की ने अपने हिन्दू आशिक के लिये दस-बीस मुसलमानों को फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दिया। इससे इश्क का बड़प्पन बढ़ेगा, पर इस काम के पीछे जो फिरक़ापरस्ती की मुखालिफत वाला पहलू है, वह पीछे रह जायगा। कोई उसे देख नहीं सकेगा। मुसलमान तुम्हें एक मजहब के साथ दगा करने वाली औरत समझेंगे, और हिन्दू तुम्हें तमाशा समझेंगे। बेटी, तुम नाख्वान्दा या नासमझ लड़की नहीं हो, जरा सोचकर देखोगी तो सभी बातें समझ में आ जायेंगी।

जोहरा तर्क में परास्त हो गई। उसे कोई भी ऐसी बात नहीं मिली, जिसे वह इसके प्रतिवाद में कह सकती थी, पर पुलिस के सामने उसने जो झूठी बातें कही थीं, उनके कारण उसका हृदय कड़वापन तथा व्यर्थता से भर गया था। इस प्रकार तर्क में पराजित हो जाने पर भी उसकी मानसिक स्थिति में कोई फर्क नहीं आया, बल्कि चारों तरफ की परिस्थितियों ने उसे इस प्रकार भयंकर रूप से बाँध रक्खा है, देखकर उसका मन और भी विद्रोह कर उठा। इसके अतिरिक्त जब तक वह सोचती थी कि वह राजीव की मृत्यु के प्रतिषेध में कुछ कर सकती है तब तक जैसे राजीव के साथ उसका एक अंतिम योगसूत्र रह गया था, पर ज्योंही उसने यह देखा कि उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध अपने विवेक के साथ संपूर्ण जबर्दस्ती करते हुए भी इस अपराध को ढकने में सहायक होना पड़ेगा, तो वह और भी तैश में आ गई। पर यह क्रोध किस पर है यह न समझकर उसकी आँखों में आँसू आ गये। बहुत प्रयास से उसने आँसुओं को रोका, और दूसरी तरफ मुँह फेरकर चुप बैठी रही।

खैरियत यह है कि डा० नौशेर ने इस तरफ ख्याल नहीं किया था। वह मानों अपने ही साथ बातचीत करते हुए कहते जा रहे थे—दुनिया में कितनी ही बेइन्साफी और कितनी ही बेईमानी हमारी आँखों के सामने बराबर हो रही हैं, पर क्या हम उन सब की मुखालिफत कर

सकते है, नहीं कर सकते । बेइन्साफी, बेईमानी के साथ कम्प्रोमाइज के बगैर शायद हमारी जिन्दगी ही नामुमकिन हो जाती । जिन्दगी का नाम ही कम्प्रोमाइज है—कहते-कहते उनका आत्मविश्वास और जोश जैसे घट गया, बोले—क्या किया जाय ? शायद अल्लाहताला ने इन्सान को इसी तरह बनाया ही है, वह क्या करे ?

इतने दुःख और असहायता की अनुभूति के बीच में भी जोहरा को हँसी आ गई, बोली—फिर भी अल्लाहताला ?

जोहरा की इस हँसी की तीव्रता का धक्का सम्हालने में डा० नौशेर को बहुत ही प्रयास करना पड़ा । हजार उदार हों, वे धर्म के ऊपरी नियमों को नैष्ठिक आनुगत्य के साथ मानकर चलते थे । किसी भी दिन इन नियमों की यौक्तिकता के सम्बन्ध में उन्होंने संदेह नहीं किया, करना जरूरी नहीं समझा । मनुष्य सूर्य की किरणों को जिस प्रकार से स्वाभाविक मान लेता है, उनके सम्बन्ध में तर्क नहीं करता, उसी प्रकार से नौशेर ने किसी भी दिन मजहब या खुदा के विषय में तर्क नहीं किया । उनमें किसी तरह का कट्टरपन नहीं था, पर नास्तिकता से भी वे हजारों कोस दूर थे ।

इसके पहले कभी मजहब आदि विषय को लेकर कन्या के साथ उनका तर्क नहीं हुआ था, इसलिये जोहरा की यह हँसी उन्हें बहुत अप्रत्याशित ज्ञात हुई । केवल यही नहीं इतनी देर तक वे जोहरा की विपत्ति के प्रति जिस सहानुभूति का अनुभव कर थे, वह जैसे कहीं पर क्षुण्ण हो गई । कहा—बेटी अल्लाहताला की नजर हमारी तरह कोता नहीं है । हम जिसमें बुराई सोच रहे हैं, शायद उसीमें भलाई है, आखिरकार शायद उसीसे भलाई निकले । बीजा खत्म न होने पर पेड़ नहीं उगता । बीज की छोटी भलाई-बुराई से हम चलें तो पेड़ कभी पैदा ही नहीं होता ।

नौशेर इन बातों को सम्पूर्ण विश्वास के साथ कह रहा है, इस बात को जोहरा ने मन ही मन अनुभव किया, पर जितना ही वह इस बात

को अनुभव करने लगी उतना ही वह महसूस करने लगी कि वह इस जगह की नहीं है, वह इस जगत् की भाषा नहीं समझती, वह इस जगत् के किसी को पहचानती नहीं।

उसने नौशेर के जोश से दीप्त चेहरे की ओर देखा। कितना चिरपरिचित है, पर कितना दूर और कितना अज्ञात है। जैसे उसने सामने बैठे हुए इस व्यक्ति को कभी देखा नहीं था। कितना भीषण है, वह उसीका पिता है, पर इस बात को याद करते हुए उसे कुछ भी सहायता नहीं मिल रही थी।

फिर भी वह इस बीस वर्ष के परिचित जगत को आसानी से छोड़ देने के लिये तैयार नहीं हुई, उसने संग्राम किया, कहा—पर अब्बाजान बिज के खाद में से पेड़ होता है इस बात को सिर्फ दूसरोंकी कुर्बानी पर याद करने से कैसे चलेगा, राजीव बाबू बीजा थे या यासीन इसका फैसला कौन करेगा?

—उसके माने?—कुछ मामूली तरीके से नाराज़ होकर नौशेर ने कहा।

—इसके माने यह हैं कि राजीव की तरह एक मासूम आदमी की मौत से दुनिया की भलाई होगी या यासीन की तरह एक बदमाश की मौत से, इसका फैसला कौन करेगा?—कहकर जोहरा ने दूसरी तरफ मुँह फेर लिया। बोली—अब्बाजान आप अपनी बेटी को माफ करेंगे, मिसालों से कोई बात साबित नहीं हुआ करती, हाँ चीज को और भी पेंचदार बना दिया जा सकता है।

जोहरा की एक-एक बात इतनी अप्रत्याशित ज्ञात हुई कि उसके बहाव में नौशेर की बुद्धि एक बार और निरुद्देश्य होकर बह गई। जोहरा ने थोड़े में सूत्ररूप से जो व्यंग किया उससे उनके आत्मप्रसादका बुलबुला फट गया। उन्होंने नाव की पतवार छोड़ दी, कहा—तो बेटी तुम्हीं बताओ कि क्या होना चाहिये?

जोहरा इस चुनौती के सामने एकाएक सहम गई। आत्महारा होकर बोली—मैं तो कहती हूँ कि यासीन की तरह बदमाश की मौत ही बेहतर है। छिः ये ही लोग समाज के खम्भे हैं, ये ही लोग मजहब के रहबर हैं।

नौशेर कुछ समझ नहीं सके कि इसके जवाब में क्या कहना चाहिये। वे अच्छी तरह मन ही मन समझ गये कि दोनों का दृष्टिकोण सम्पूर्ण रूप से एक दूसरे के विरुद्ध है।

वे यह भी समझ गये कि बहसों से कोई फायदा न होगा, बोले—अच्छा बेटी अच्छा, बाद को फिर सोचा जायगा। अब मैं जरा डिस-पेन्सरी जाता हूँ—पर यह सोचते हुए कि शायद इस प्रकार से चला जाना कहीं आकस्मिक न हो जाये इसलिये उठते हुए उन्होंने कहा—क्यों?

यह कहकर उन्होंने जोहरा की पीठ पर हाथ रखकर धीरे से दबा दिया, इसके बाद मकान से निकल पड़े। इस बीच में साम्प्रदायिक दंगा करीब-करीब बन्द हो गया था। दूसरे जिलों से पुलिस आ जाने के कारण शहर के सब खतरनाक मौकों पर पुलिस का पहरा बैठ गया था।

१६

पिता के प्रस्थान के बाद बड़ी देर तक जोहरा वहीं बैठी रही। पिता के साथ बातचीत के फलस्वरूप उसने अपने सम्बन्ध में इस्पात की तरह कठिन एक वास्तविकता का अनुभव किया था। वह यह कि इन तीन-चार दिनों से उसने मन ही मन जिस बात के विरुद्ध संग्राम किया था, या उस संग्राम के लिये अपने को तैयार किया था, वह केवल एक निर्व्यक्तिक रक्तमांस स्पर्शहीन आदर्श नहीं था। राजीव ने आदर्श को मूर्त किया था, व्यक्तित्व की प्रभा देकर आदर्श के कंकाल में प्राणों का संचार किया था। इस बात को महसूसकर, वह बिल्कुल दुःखी नहीं हुई बल्कि सुखी ही हुई। किसी एक उबाल आए हुए मुहूर्त में उसने अन्यमनस्क होकर राजीव को प्यार नहीं किया था। दिन के बाद दिन राजीव ने उसके चैतन्य लोक के सिंहद्वार में जो खटखटाया था, वही उसके मन में प्रेम के रूप में प्रतिध्वनित हुआ था। राजीव के सामने इस प्रेम ने कभी भी उत्ताल उबलता हुआ रूप धारण नहीं किया था। मानों इस प्रेम का जन्म बुद्धि के हवन-कुंड में हुआ था। यह प्रेम शारीरिक जन्म से कोई वास्ता नहीं रखता था, इसलिये उसमें उच्छवास का प्रदर्शन कम था, पर तरंगें नहीं थीं इसलिये उसकी गहराई कम थी यह बात नहीं। इस बात को जोहरा ने इन कई दिनों में समझ लिया था, पर आज वह इस बात को और अच्छी तरह समझ गई। किसी ने मानों उनकी आँख में उँगली डालकर यह बात समझा दी। राजीव आदर्श में प्रविष्ट हो गया, आदर्श राजीव में प्रविष्ट होकर एक हो गया। जोहरा को इसमें कोई लज्जा नहीं हुई। यदि राजीव स्वस्थ शरीर में जीवित होता, तो शायद आदर्श और प्रेम-पात्र के इस प्रकार परस्पर में अंतःप्रविष्ट हो जाने पर वह लज्जित होती पर

अब उसकी आँख में राजीव की शहादत ने आदर्श को गतिशील और सजीव ही बना दिया था ।

जोहरा के विचार इस हद तक तो स्पष्ट हो चुके थे कि शहीद हुए राजीव को वह त्याग नहीं सकती थी, मन और हृदय से वह उसी की रहेगी, पर जितने बार भी उसने इससे अधिक सोचने की चेष्टा की, उतना ही वह अधिक संदेहयुक्त अनिश्चय में पड़ गई। वह किसी प्रकार भी इस बात को तय नहीं कर सकी थी कि आगे क्या हो । इतना बड़ा आदर्श उसके सामने होते हुए भी वह किंकर्तव्यविमूढ़ रही। उसका कारण यह था कि जिसे वह अपना आदर्श समझ रही थी, वह बहुत कुछ उसके जीवन के साथ शिथिल रूप से हिलगा हुआ था, उसकी जड़ें उसके जीवन के रन्ध्र-रन्ध्र में प्रविष्ट हो गई थीं ।

एक बात उसकी समझ में यह बहुत अच्छी तरह आ रही थी कि इन परिस्थितियों में उसके लिये रहना असंभव है। शौकत उसका भाई है; पर जिस दिन से उसने राजीव को उस प्रकार पकड़ ले जाने में मदद दी थी, उस दिन से वह उसके साथ किसी तरह अपनत्व का अनुभव करने में असमर्थ थी, बल्कि अब तो इस बात को यादकर कि वह उसका सगा भाई है उसका हृदय निरन्तर व्यथा से जर्जर रहता था और इसीलिये उसके साथ एक छत में रहना असंभव था। यदि वह उसका भाई न होकर रास्ते का मुसाफिर मात्र होता, तो वह यहाँ के जीवन को सहन कर सकती, पर......। शौकत ने उस दिन रात को जो कुछ किया वह कोई आकस्मिक बात नहीं थी। उसके संपूर्ण चरित्र के साथ उस दिन की बात अच्छी तरह खपती थी। इसके पहले भी शौकत के चरित्र में कट्टरपन था, पर जोहरा उसे एक खामखयाली मात्र समझती थी, यह खामखयाली जाकर बाद को वाचनिक क्षेत्र छोड़कर भविष्य में इस प्रकार विभत्स रूप धारण कर सकती है, यह जोहरा ने कभी नहीं

सोचा था। जो कुछ भी हो इस समय उसकी आँखों में शौकत की मर्यादा एक गुंडे से अधिक नहीं थी।

रह गये स्नेहमय पिता। वे गुंडेपन के बिलकुल विरुद्ध थे, केवल मौखिक रूप से ही नहीं, बल्कि मनसावाचा कर्मणा से। पर वे बहुत ही दुर्बल चित्त थे। वे जिस समाज में पैदा हुए थे, उसमें खुद बखुद परिवर्त्तन हो तो अच्छी बात है, नहीं तो इस समाज के विरुद्ध खड़े हो उसे चोट देकर जिलाने में बिलकुल विश्वास नहीं करते थे। उनके ऐन घर में इतना बड़ा विश्वासघात तथा इतना बड़ा अपराध हुआ, पर वे इसे लेकर किसी प्रकार हल्ला मचाने के विरुद्ध थे। शायद वे शौकत को इसके लिए एक भी बात न कहें। और ये ही लोग समाज के आदर्श नागरिक हैं। कितनी भयंकर विडंबना है।

जोहरा ने अपने जीवन के सामने की ओर दृष्टि दौड़ाई। जितने दूर तक दृष्टि गई, बिल्कुल सूना था, सहारा की तरह सांयसांय, कहीं भी जरा सी हरियाली नहीं थी। इन्हीं के बीच में उसे जीवन काटना है। फिर यह बात नहीं, शायद अब यासीन की तरह किसी व्यक्ति से उसे शादी भी करनी पड़े। इस बात को सोचते ही उसके रोंगटे खड़े हो गये।

इतने दिनों तक उसको कभी भी ब्याह करने के लिए कहा सुना नहीं गया। इसी एक मामले में नौशेर ने सत्साहस दिखलाया था, पर वह सहजात बुद्धिवश समझ रही थी कि भविष्य में उसके पिता इस प्रकार निस्पृह, उदासीन रुख नहीं रक्खेंगे। नौशेर रोशनी-याफ्ता नैष्ठिक मुसलमान थे। वे इतना तो करते थे कि उनकी लड़की के साथ कोई मिले-जुले तो उसमें बाधा न डाले, उसके पास कौन आता है इस सम्बन्ध में कभी कौतूहल नहीं दिखलाया। पर वे अगर किसी भी प्रकार यह जान पाते कि इस प्रकार इत्तफाकी भेंट-मुलाकात के फलस्वरूप उनकी कन्या का विवाह एक गैर मुस्लिम से हो सकता है तो वे जरूर ही इस मिलने-जुलने के रास्ते में रोड़े अटकाते क्यों कि वे किसी भी

हालत में वह नहीं चाहते थे कि उनके परिवार में कोई ऐसी बात घटित हो जिससे लोग उन्हें भला-बुरा कहें, या परोक्ष में या प्रत्यक्ष में उन पर उँगली उठावें।

जोहरा को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि अब वे उसकी शादी जल्दी कर देना चाहेंगे। शादी! वह इस बात की कल्पना को भी सहन करने के लिये तैयार नहीं थी। उसने स्त्रियों की पराधीनता के सम्बन्ध में बहुत कुछ पढ़ा था। वह खुद भी उस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा करती थी, पर यह सब लफ्फाजियाँ थीं। अब जो उसने इन परिस्थितियों में अपनी इच्छा के विरुद्ध अपनी शादी की संभावना देखी, तब उसकी समझ में आया कि जिस पराधीनता के सम्बन्ध में वह इतना कहा सुना करती थी वह कितनी भयानक है! उसने देखा कि समाज, धर्म, परिवार ने स्त्रियों को अपनी असंख्य रस्सियों के द्वारा चारो तरफ से बाँध रक्खा है, यहाँ तक कि करवट लेने तक का मौका नहीं है। यदि करवट लेना चाहे तो फौरन सैकड़ों की तादाद में उठे हुए काँटे चुभेंगे।

उसने देखा कि इस अप्रिय संभावना से बचने का एकमात्र उपाय है कि वह भाग जाय।

पर भागे कहाँ? इस जगत से वह जो कुछ भी परिचित है उससे यह मालूम है कि वह एक दो यासीन के डर से भाग रही है, पर बाहरी जगत में तो ऐसे सैकड़ों यासीनों का सामना पड़ सकता है। इस जमीन की विपत्तियाँ तो उसे ज्ञात हैं पर जिस समुद्र में वह कूदने जा रही है, उसमें न मालूम कितने भयंकर घड़ियाल उसे मुँह बाकर निगलने के लिये तैयार हैं, यह कौन जाने।

यदि घर की परिस्थिति अच्छी नहीं है तो बाहर की परिस्थिति अच्छी होगी, इससे अच्छी होगी यह कैसे मालूम? बल्कि अच्छी न होना संभव है। फिर इन्हीं परिस्थितियों में उसकी माँ, नानी दादी सब पली हैं, सुख पायी हैं, आनन्द किया है, प्रत्येक उत्सव में सुन्दर वस्त्र

तथा अलंकार पहन कर सजी हैं, फिर वही क्यों इस परिस्थिति के साथ पैर मिलाकर चल न सकेगी ?

इस बात को सोचते-सोचते उसके मन का सारा तेज जैसे लुप्त हो गया। उसने मन ही मन कहा कि वह इस परिस्थिति में क्यों न रह सकेगी, अवश्य रह सकेगी। फिर उस अज्ञात जगत में उसे अपनी जीविका भी अर्जित करनी पड़ेगी, इस बात की याद आते ही उसने सोचा वह जरूर रह सकेगी। हजारों वर्ष से स्त्रियाँ जिन निर्यातनों को सहती आयी हैं, वह अवश्य ही उन्हें सह सकेगी।

राजीव गया, पर अब्बाजान तो हैं। हजार बात हो पर वे जान बूझकर अपनी कन्या का नुकसान नहीं करेंगे। कभी नहीं। चाहे वे जितने भी दुर्बल चित्त और डरपोक हों।

इन सब बातों को सोचते-सोचते जोहरा उस रात को कब सो गई, यह वह खुद भी नहीं समझ पाई।

आधी रात को वह एक स्वप्न देखकर तड़फड़ा कर उठ बैठी। उसकी रजाई पसीने से तर हो रही थी, दिल धड़क रहा था।

उसने स्वप्न में राजीव को देखा था। जरा पहले से दुबले पड़ गये हैं। सिर पर पट्टी बँधी हुई है। पर इस पट्टी ने मानों उसके सौन्दर्य को एक दिव्य प्रभा प्रदान की थी। जोहरा ने राजीव को इतना सुन्दर कभी न देखा था। जोहरा बड़ी देर तक उसकी तरफ मुग्ध नेत्रों से देखती रही। फिर वह राजीव की तरफ बढ़ी। जीवन में उसने उसके साथ जो बात नहीं की थी, वही करने जा रही थी। वह उसे आलिंगन करने जा रही थी, पर न मालूम किस बात ने उसके पैरों को जमीन के साथ बाँध दिया था, वह आगे नहीं बढ़ पा रही थी, किसी प्रकार भी नहीं। खींचा-तानी में उसे पसीना आ गया, इसके बाद वह रुक गई।

उसने राजीव की ओर ध्यान से देखा। राजीव उसी प्रकार निस्पन्द

खड़ा था। धीरे-धीरे राजीव के चेहरे की कुछ रेखाओं ने फैलकर उसके चेहरे को तिरस्कार सूचक बना दिया। मानों वह कह रहा था—छिः।

ठीक ऐसे ही समय राजीव कह उठा—और तुम भी जोहरा !......

जोहरा कुछ कहने जा रही थी पर उसका मुँह नहीं खुला। वह इसी प्रकार मूक हो कर खड़ी रही। राजीव के मुखमंडल में एक सार्वदेशिक करुणा परिस्फुट हो गई। अकस्मात् जोहरा ने ताककर देखा कि राजीव अंतर्ध्यान हो गया, पर जिस जगह पर उसका मुँह था, उस जगह पट्टी उसी प्रकार से है। बाद को उसने देखा कि पट्टी बड़ी होती जा रही है, और उसमें से टपटप खून के कतरे गिर रहे हैं।

जोहरा ने चिल्लाना चाहा, पर चिल्ला न सकी, उसकी नींद टूट गई। उसकी दोनों आँखों से आँसुओं की लड़ी खुदबखुद जारी हो गई। वह किसी प्रकार भी राजीव की उन बातों को नहीं भूल पा रही थी—और तुम भी जोहरा !—और वह पट्टी ! उसका हृदय वेदना से ऐंठने लगा।

फिर वही भयंकर चिन्ता शुरू हुई और समझ गई कि वह कितनी कमजोर है, तथा प्रत्येक स्त्री कितनी असहाय है और कितना गंभीर दुःख है। इसका कुछ अंश वह किसी को दे भी तो नहीं सकती। एक व्यक्ति था जिसे वह इस दुख का भाग दे सकती थी। पर वह एक व्यक्ति वही है जिसके लिये यह दुख है। वह नहीं है। उसका सारा अंतरतम कहने लगा—नहीं है, नहीं है, नहीं है—फिर भी वह अकेली संग्राम करेगी। जरूरत पड़ने पर वह लड़कियों को पढ़ायेगी, गाना सिखायेगी, सिलाई करेगी, पर वह इन परिस्थितियों में अब आगे एक मुहूर्त भी नहीं रहेगी। नहीं, नहीं, नहीं। इसमें वह किसी का निषेध नहीं मानेगी।

उसने रजाई छोड़कर बत्ती जलाई, और कागज का पैड तथा फौन्टेनपेन निकाल कर लिखना शुरू किया। कुछ देर तक वह लिखती रही फिर जो कुछ लिखा उसे सुन्दर तरीके से मोड़कर एक लिफाफे

में भरकर अपने तकिये के ऊपर रख दिया। उसके बाद कुछ देर तक सोचा। एक बार बड़े शीशे के सामने खड़ी हुई। धीरे से एक दफा सीटी दी, फिर छोटे बैग के अंदर कुछ चीजें भरीं। बैग में चीजों को रखते हुए उसने अपेक्षाकृत दीर्घकाल तक एक फोटो को देखा। उसके बाद घड़ी की तरफ देखकर जल्दी से बिछौने से कुछ चीजें निकालकर एक छोटी सी बेडिंग बनाई। उसके बाद बेडिंग को बगल में दबाकर और बैग को हाथ में लेकर वह बहुत सावधानी से मकान से निकल गई।

अगले दिन बड़ी देर तक उसे अपने कमरे से न निकलते देखकर नौशेर घबराहट से जोहरा के कमरे में पहुँचे। वहाँ देखा तो लड़की नहीं थी। आँख को अच्छी तरह रगड़कर देखा तो पाया कि जोहरा नहीं है। ऐसा देखकर उनकी मानसिक अवस्था कैसी हुई इसके वर्णन की आवश्यकता नहीं है। लड़की के तकिये पर उन्हें एक पत्र मिला। पत्र उन्हीं के नाम से था। थर-थर काँपते हुए हाथों से उन्होंने उसको पढ़ा।

पत्र यों था—

अब्बाजान,

इन हालतों में मेरे लिये एक भी मिनट रहना नामुमकिन है। अगर रही तो पागल हो जाऊँगी। यहाँ की हरेक चीज हम पर लानत भेज रही है। दूसरे मुल्कों की बात मैं नहीं जानती पर हमारे मुल्क में मजहब का असर बहुत ही जहरीला रहा है। मैंने जो बातें आँख से देखी उससे मजहब पर हमारी जो थोड़ी बहुत मुहब्बत और इज्जत थी, इज्जत नहीं, बल्कि जो पुराने ख्याल थे, वे बहुत कड़ी सच्चाई के छूने से बुलबुले की तरह एकदम फट गये। साथ ही हमने अपनी चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखा कि मजहब के खिलाफ किसी में चूं करने तक की हिम्मत नहीं है, सर उठाने की बात तो दूर रही मैंने अपनी बहुत छोटी सी जिन्दगी में जिन लोगों को जानने का मौका हासिल

किया है, उनमें से आप ही सबसे पाक हैं, पर आपने भी दीद व दानिस्ता एक जुर्म को घोंट जाना ही वाजिब समझा।

मैं अपने को भी बिल्कुल दूध की धुली हुई नहीं पाती। उस दिन मैंने पुलिस के सामने जो कुछ कहा, जिस तरह से शुरू से आखिर तक झूठी बातें कहीं, मैंने सोचकर देखा कि उसके लिये हमारे चारो तरफ के हालात ही जिम्मेदार हैं। इन हालात में कौन सही रास्ते पर रह सकता है, मैं नहीं जानती, पर मैं तो नहीं रह सकती। आप पर मेरी आखरी उम्मीद थी, पर उस उम्मीद की नाव भी बीच दरिया में गरक हो गई। मैं इसके लिये आपसे कुछ नहीं कहना चाहती, पर आपके लिये इन हालात में रहना और साँस लेना आसान है। आप इसी पानी के बतख हैं। इस पानी में रहते हुए भी कैसे अपने परों को भीगने से बचाया जा सकता है, इसका हुनर आपको मालूम है, पर मुझे यह हुनर नहीं आता, न आ सकता है। मुझे जिस तरह सोचना सिखाया गया है, उससे इन हालात में रहना ना मुमकिन है। मैं उन्हें सह नहीं सकती।

ऐसी हालत में मेरे सामने दो ही रास्ते हैं। एक खुदकशी करके सब सवालों से अपना छुटकारा कर लेना, दूसरा भाग चलना।

न मालूम क्यों खुदकशी का रास्ता मेरे दिल को पसन्द नहीं है। इसलिये मैं भाग रही हूँ।

हाँ एक तीसरा रास्ता भी है, वह है इस मौजूदा समाज के तरीके के खिलाफ जंग करते रहना, पर यह जंग किस तरह से चलाई जायगी, इस बारे में मैं ठीक-ठीक कुछ भी नहीं जानती। सच बात तो यह है कि जंग करने में मुझे एतबार नहीं है। यासीन की तरह बदमाश को सुधारा जा सकता है ऐसा मैं यकीन करने के लिये तैयार नहीं हूँ।

मैं भागकर कहाँ जा रही हूँ, इस बारे में कुछ नहीं जानती। फिर भी मैं भाग रही हूँ। कौन जाने आखिर तक भागने के तरीके को उसके

आखरी नतीजे पर पहुँचाकर हमें मौत के आगोश में जगह लेने की जरूरत पड़े या नहीं। यह मामला यहीं तक।

हाँ, और एक बात है। मैंने खूब अच्छी तरह सोचकर देखा कि मैं राजीव बाबू से मुहब्बत करती थी। हरेक औरत को यह हक है कि वह अपने दिल के मुताबिक किसी भी मर्द से मुहब्बत करे। मुहब्बत एक बतायी हुई, फिरका परस्ती से बताई हुई राह पर ही चलेगी, ऐसी कोई बात नहीं है। यह कोई जरूरी बात नहीं। मैंने राजीव बाबू को शादी के जरिये से नहीं पाया, पर मैं उनके बहुत पास पहुँच चुकी थी इसमें कोई शक नहीं। इसमें मैं कोई भी शर्म की बात नहीं पाती, बल्कि इसी की वजह से हमारे अंदर आज यह रुहानी ताक़त पैदा हुई है कि मैं इन हालात की जकड़ से भागकर अनेक के खिलाफ एक बहुत मामूली मुखालिफत करती हुई जा रही हूँ।

आप मुझे भूल जायँ, और फजूल में लौटाने की कोशिश न करें। मैं जानती हूँ कि आप को मेरे इस भागने से बहुत सदमा पहुँचेगा, मुझे भी अज़हद तकलीफ है, पर इन छोटी-मोटी बातों के लिये मैं अपने रास्ते को छोड़ने के लिये तैयार नहीं हूँ। मैं आप की इज्जत उसी तरह करूँगी।

आदाब अर्ज
आपकी बदकिस्मत लड़की
'जोहरा'

नौशेर ने पत्र को दो तीन बार पढ़ा, फिर जोहरा के विस्तरे वगैरह को ठीककर अपने रोज के काम में जुट गये। जैसे उन्होंने जोहरा की माँ की मृत्यु को एक तथ्य के रूप में स्वीकार कर लिया था, उसी प्रकार उन्होंने जोहरा के भागने को मान लिया।

उस दिन संध्या समय शौकत ने उनसे पूछा—सवेरे से जोहरा को नहीं देख रहा हूँ।

नौशेर कोई सख्त बात कहने जा रहे थे, पर अपने को रोककर बोले—वह जसोर गई—और उसकी तरफ अग्नि भरे नेत्रों से देखते रहे।

कैसे गई, क्यों गई, कब गई, इन प्रश्नों को करने का साहस शौकत को नहीं हुआ।

नौकर चाकर, मुहल्ला टोला वाले सब ने यह जाना कि जोहरा जसोर चली गई।

२०

वहाब जिस समय अधमरे राजीव को कंधे पर रखकर यासीन के घर से निकल आया, उस समय वह गलियों में होते हुए बिल्कुल अंधेरी गली में जा रहा था। इस गली में घुसते ही उसने पहला काम तो यह किया कि राजीव की जेबों की अच्छी तरह तलाशी ली और इस प्रकार उसे जो कुछ भी मिला, उसे अपनी जेब में रख लिया। इसके बाद बाघ जिस आसानी से बकरे को लादकर चलता है, वहाब उसी आसानी से राजीव को ले जाने लगा।

चलते-चलते उसे ऐसा आभास हुआ कि कोई उसके पीछे-पीछे आ रहा है। वह कुछ डरा और एक मिनट के लिये ठिठक कर खड़ा हो गया। भय के मारे उसने राजीव को छोड़ दिया। राजीव धम से गिर पड़ा।

—वहाब !

स्वर परिचित था। भागने के लिये तैयार वहाब लौटकर खड़ा हो

गया। बोला—कौन ? इमतियाज़ ?—फिर पहचानते हुए कहा—मैं तो डर गया था। आने का यह ढंग होता है ?

इमतियाज़ वहाब का बहनोई है। उसकी एकमात्र बहिन मरियम का पति है। एक स्कूल का मास्टर है। वहाब जन्म-अपराधी है, न मालूम कितनी ही बार जेल जा चुका है। दुनिया में ऐसा कोई भी अपराध नहीं है जिसे वह नहीं कर सकता। चार आने पैसों के लिये वह किसी के गले में छुरी डाल सकता है, पर इस विपुल विश्व में इमतियाज़ और मरियम ये दो विन्दु है जहाँ पर वह एकदम शिशु तथा सरल हो जाता था।

इमतियाज़ ने झुककर राजीव के सीने पर हाथ रखकर देखा तो मालूम हुआ कि इतने आघात प्राप्त करने पर भी जीवन अभी तक वहाँ पर अपनी जय की घोषणा करता जा रहा है। उसकी ध्वनि क्षीण हो गई है, पर अब भी जीवन को लौटा लाना शायद असम्भव नहीं है।

इमतियाज़ ने कहा —वहाब !

—हाँ इमतियाज़ ।,

—मैं इनको लिये जा रहा हूँ......

—क्यों ?—आश्चर्य में वहाब ने पूछा।

—बाद को बताऊँगा—कहकर वह बहुत ही सावधानी से राजीव को उठाने लगा। वहाब तगड़ा था, पर इमतियाज़ उससे भी तगड़ा था। उसने आसानी से राजीव को गोद में उठा लिया।

सचमुच ही अधिक बात-चीत का मौका नहीं था। राजीव को अकस्मात् रास्ते में डाल देने से गली में कुछ आहट सी होने लगी थी। कहीं पर एक जँगला खुलने की आवाज हुई थी। वहाब ने अपने मन में पूरे प्रश्न को तौलकर देखा। कहा—ले जा, समझ गया, इनाम मिलेगा।

उसके मतानुसार इमतियाज़ राजीव को बचाकर इनाम लेना चाहता है, इसीलिये वह उसे माँग रहा है। सो इमतियाज की गृहस्थी जैसे मुश्किल से चलती है, उसमें इस प्रकार से कुछ पुरस्कार प्राप्त करना कुछ गलत नहीं है, पर कहीं बखेड़ा न खड़ा हो जाय। कहा—समझ गया, तू कुछ इनाम पाना चाहता है, पर हुशियार रहना कहीं कुनबे भर की हवालात जाने की नौबत न आ जावे।

इमतियाज़ ने जवाब नहीं दिया। इनाम शब्द के उल्लेख से उसे इतनी घृणा मालूम हुई कि उसने कुछ नहीं कहा। यह क्रिमिनल अपनी ही तरह से सोचता रहता है, पर वह इसका साला लगता है। फिर यह कोई तर्क का समय नहीं है। वह जल्दी-जल्दी राजीव को उठाकर अपने घर की तरफ जाने लगा।

पीछे-पीछे वहाब चला।

इमतियाज़ समझ गया कि वहाब उसके पीछे-पीछे चल रहा है। एकबार इच्छा हुई कि वह उसे मनाकर दे, पर कुछ बोलने की प्रवृत्ति नहीं हुई। उस वक्त चाँदनी ने इस ईश्वर परित्यक्त गलियों में अपनी मोह मदिरा सींचना शुरू कर दिया था।

इमतियाज जल्दी-जल्दी चलने लगा।

जब वह करीब-करीब अपने खपरैल के मकान में पहुँचा, उस समय पीछे से वहाब ने धीरे से पुकारा—इमतियाज़ !

—हाँ—इमतियाज़ ने ठिटककर खड़े होते हुए संक्षेप में कहा।

—इनको भी ले ले—हाथ बढ़ाकर वहाब कुछ देने लगा।

इमतियाज़ ने जरा मुड़कर पीछे की ओर देखते हुए कहा—क्या है ?

—इसकी जेब से निकले हैं, रुपये और कलम—वहाब ने देने के लिये फिर हाथ बढ़ाया।

—नहीं—इमतियाज़ ने कहा, इसके बाद जल्दी से मुँह घुमा लिया और चलने लगा। चार-पाँच कदम बाद ही उसका घर पड़ा। दरवाजा

भिड़ा हुआ था। वह राजीव को लेकर मकान में घुस पड़ा। इसके बाद लकड़ी के पुराने दरवाजे को झट से बन्द कर दिया।

बाहर वहाब खड़े-खड़े कुछ देर तक सोचता रहा, फिर एक बार आकाश की ओर ताककर शहर के एक कुख्यात मुहल्ले के लिये रवाना हो गया। उसके सौभाग्य से ऐसी एक जगह मुसलमानों के पाकिस्तान में ही पड़ती थी।

इमतियाज़ के मकान में दो हिस्से थे। एक जनाना और एक मर्दाना। यद्यपि केवल एक गरीब स्कूल मास्टर था, फिर भी मरियम के परदे में कोई कमी नहीं थी। जहाँ तक इस बात का ताल्लुक है, इमतियाज़ लखनऊ के नवाबों का अनुकरण कर चलने की चेष्टा करता था।

उसने राजीव को ले जाकर मर्दाने हिस्से में रक्खा। स्त्री से कहा कि रोशनी जलाओ? एक कुप्पी मकान के दूसरे हिस्से में जल रही थी। यों नहीं जला करती थी, पर आज जल रही थी।

राजीव को इमतियाज़ ने थोड़ी ही देर पहले यासीन के घर में देखा था, पर अब उसे कुप्पी की रोशनी में देखकर घबड़ा गया। पैर बँधे हुए थे, सिर कहीं से फट गया था, अब भी ताजा खून बालों के अन्दर से होकर शायद बह रहा था। आँखें बन्द थी। सारा शरीर शिथिल था। मृत्यु ने जैसे उसके मुँह पर ज़हर की लकड़ी छुआ दी थी। थोड़ी देर के लिये इमतियाज़ के मन में पश्चाताप की भावना आई कि शायद राजीव को लाना गलती हुई। अगर मर गया, तो लेने के देने पड़ जायेंगे। रात भी तो अब ज्यादा बाकी नहीं है।

इमतियाज़ ने मरियम से कहा—जल्दी से खून धोकर मुँह पर पानी का छींटा दो... ..

मरियम कुछ हिचकिचाने लगी। उसने कभी किसी पर पुरुष को स्पर्श नहीं किया था, बोली—ये कौन हैं?

—बाद को बताऊँगा, इस वक्त जो कह रहा हूँ वह करो।

मरियम ने एकबार अपनी दो बड़ी-बड़ी सरल आँखों को खोलकर पति को देख लिया फिर मृत्यु की छाप वाले राजीव के चेहरे को देखा, उसके बाद उसकी सब दुविधा और जड़ता जाती रही। बड़ी सावधानी से सब काम करने लगी, मानो हमेशा से वह खपड़े के इस छोटे से मकान की जेल में बन्द रहकर यही काम करती आई है।

उधर इमतियाज़ ने एक छुरी से जल्दी से राजीव के पैरों की रस्सियों को काट डाला। दोनों पैर नीले पड़ गये थे, पर रस्सी खुलते ही पैरों के रंग बदलने लगे।

मरियम की सेवा के कारण राजीव की देह में फिर प्राण संचार होने लगा। अकस्मात् राजीव ने हिचकी की तरह एक आवाज की। उसका पैर हिला और शरीर के दूसरे भागों में एक गति आई। जीवन की रूपमयी गति।

मरियम ने राजीव के मुँह में एक बधने से थोड़ासा पानी दिया। राजीव ने एकबार एक मुहूर्त के लिये शायद आँख खोल दी, पर शायद शक्ति पूरी नहीं पड़ी, फौरन आँख बन्द करली। उसके मुँह में शारीरिक बेदना का चिन्ह स्पष्ट हो गया।

मरियम उठ खड़ी हुई। उसने समझ लिया कि राजीव को होश आ रहा है, इसलिये अब उसे हट जाना चाहिये। पर्दे की धारणा उसमें इतनी मज्जागत हो गई थी कि पर-पुरुष की दृष्टि की संभावना मात्र से वह विचलित हो गई। बोली—मैं अब जाऊँ ?

—नहीं—संक्षिप्त रूप से इमतियाज़ ने कहा। वह राजीव के पैरों में खून दौड़ाने के लिये उसके पैरों को जल्दी-जल्दी घिस रहा था। उसी प्रकार अपने हाथों से उसके पैरों का रगड़ना जारी रखते हुए उसने कहा—जरा दूध गर्म कर लाओ।

—दूध ?

—हाँ-हाँ, बच्चे के दूध में से जरा दूध गरमकर लाओ।

इतनी देर तक मरियम बच्चे के अस्तित्व की बात भूली हुई थी। अकस्मात् बच्चे की बात सुनकर वह जैसे एक दूसरे ही जगत में खो गई। वह जल्दी से चली गई।

कुछ मिनटों के अन्दर ही जब वह एक छोटी कटोरी में जरा सा गर्म दूध लेकर लौटी, तब तक इमतियाज़ ने किसी तरीके से राजीव के सिर पर बैंडेज कर दी थी। इसके अतिरिक्त उसको हटाकर सुलाते हुए उसके बदन पर एक दोलाई सी ओढ़ा दी थी।

इमतियाज़ ने हटते हुए स्त्री से कहा—इसे दूध पिलाओ।

मरियम ने एकबार फिर अपनी बड़ी-बड़ी आँखे फाड़कर पति को देख लिया, फिर राजीव की ओर देखकर उसमें कुछ अजीब गुदगुदी का भाव उत्पन्न हुआ। उसने तो अब तक बच्चे को ही दूध पिलाया है, इसे वह क्या पिलायेगी? वह जरा हिचकिचायी, फिर दक्षता के साथ एक-एक चम्मच दूध उसके मुँह में डालने लगी। पहले तो कुछ भी दूध नहीं गया, पर गले के नीचे एक कपड़ा रखकर वह वापस आये हुए दूध को रोकने लगी। दूध का एक बूँद भी इधर उधर नहीं गिरा। मरियम को बड़ा कौतुक मालूम हो रहा था मानो राजीव कोई प्रकांड शिशु हो।

इमतियाज़ ने इस गर्म दूध की व्यवस्था ब्रांडी की जगह पर की थी। नतीजा निकला। थोड़ी देर में सब दूध जाने लगा और कुछ भी वापस नहीं लौटा। शायद राजीव को कुछ-कुछ होश आया, पर वह आँख नहीं खोल सका। केवल धीरे-धीरे कराहने की आवाज सुनाई पड़ने लगी।

इमतियाज फस्ट एड जानता था। कुछ दिनों तक उसने होमियो-पैथी की भी प्रैक्टीस की थी। बहुत दिनों तक इरादा था कि होमियो-पैथिक डाक्टर बनेगा। जो कुछ भी हो राजीव की हालत देखकर वह समझ गया कि जीवन की जय हुई है, पर अच्छी तरह होश आने में अभी देर होगी।

और कुछ करने को नहीं था। भीतर से एक रजाई लाकर इमतियाज़ ने राजीव को अच्छी तरह ढँक दिया। फिर भीतर जाकर सो गया। प्रकृति अपना काम करेगी। जब वह भीतर पहुँचा तो मरियम ने इधर-उधर की बातों के बाद पूछा—यह कौन है?

—तुम क्या करोगी जानकर?—सवाल को टालने के लिये इमतियाज़ ने कहा।

—कहो न—जिद करके मरियम ने कहा।

इमतियाज ने दूसरी तरफ करवट ले ली।

पति कोई बात नहीं बता रहा है यह देखकर मरियम ने कुछ अभिमान के लहजे में कहा—क्या मैं नहीं जानती कि यह कौन है?

इमतियाज ने मन-ही मन यह तय कर लिया था कि इस सम्बन्ध में वह मरियम के किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देगा। कौन जाने मरियम मुहल्ले की किस औरत को सब बातें बता दे, तो फिर आफत ही आ जाय। पर जब मरियम ने यह दावा किया कि वह जानती है कि यह कौन है तो वह चित्त होकर लेटते हुए बोला—तू क्या जानती है?

—मैं जानती हूँ कि हिन्दुओं ने इन्हें मारा है, और तुम इन्हें बचा रहे हो।

—हाँ—अत्यन्त संक्षिप्त रूप से इमतियाज़ ने कहा। वह समझ गया कि यह कुछ भी नहीं जानती। उसे जरा इतमिनान हुआ। जम्हाई लेते हुए उसने कहा—पर मान लो अगर यह हिन्दू होता।

—ऐसा कैसे हो सकता है? फिर तुम इसे क्यों लाते?

तर्क अकाट्य था। वह फिर क्यों लाता? सच तो है। मुसलमान हिन्दू को क्यों बचावे? बोला—क्यों क्या हिन्दू आदमी नहीं है?

मरियम संदेह में पड़ गई। उसने तो यह बात कभी सोची भी नहीं थी। जरा उलझन में पड़ गई, बोली—मुझे न बनाओ। यह कभी हिन्दू नहीं हो सकता।

—क्यों?

—उसका चेहरा देखकर ही मालूम होता है कि वह हिन्दू नहीं है। कितना शरीफ है। हिन्दू कितने बेदर्द हैं कि उन लोगों ने ऐसे आदमी को मारा है।

इमतियाज़ भी यही सोचा करता था कि प्रत्येक हिन्दू बदमाश होता है। इसी धारणा के वश में वह मुहल्ले के और लोगों की तरह संध्या समय मुसलमानों की ओर से दंगा करने गया, पर यासीन के घर में राजीव को देखकर अकस्मात् उसे एक बात याद आ गई। बोला—क्यों मरियम, एक आध हिन्दू तो अच्छे होते ही हैं....., क्यों ?

मरियम ने सरलता से कहा—अच्छे होते हैं ?

—नहीं होते ?

—कौन जाने ?—इस बात को दबा देने के लिये मरियम ने कहा। वह तो इस सम्बन्ध में कुछ दूसरी ही शिक्षा पाती आ रही थी।

इमतियाज़ चुप हो गया। बगल के कमरे से उठती हुई कराहने की आवाज सुनाई पड़ने लगी। इमतियाज़ उठकर एकबार देखने गया, और लौटकर बोला—अभी तक होश नहीं आया।

मरियम ने कहा—हाँ......

इमतियाज़ जाकर अपने पहले के स्थान पर सो गया। दोनों में से किसी ने बहुत देर तक कोई बात नहीं की। अकस्मात् इमतियाज़ ने कहा—मरियम सो रही हो ?

इमतियाज़ कभी मरियम को 'तू' कहता था और कभी 'तुम'। और जिस समय वह कुछ भावुक हो जाता था उस समय ही उसे तुम कहता था।

इमतियाज़ ने फिर कहा—मरियम सो रही हो ?

मरियम जरा हिलकर बोली—नहीं तो, क्यों ?

—मैं एक बात कहने जा रहा था।

—क्या ?—मरियम ने पति के लहजे में कुछ जैसे आर्द्रता पायी, इसीलिये पास आकर बोली—इस तरह से क्यों बात कर रहे हो ?

—तुम्हें याद है जिस वक्त मुन्ना पैदा हुआ था, उस वक्त तुम कितनी बीमार हो गई थीं ? मैं तो सोचता था कि शायद अब जिन्दा न रहो।

दूसरा कोई समय होता तो मरियम इस पर एक नई फबती कसती, पर इस समय पति के लहजे में उसने किसी ऐसी बात का अनुभव किया जिसके कारण वह चुप रही, केवल बोली—हाँ।

उसकी समझ में यह न आया कि अकस्मात् यह बात क्यों उठी। इमतियाज़ कहता गया—मैं डा० फारूकी के यहाँ गया, उन्होंने पेनिसिलिन या ऐसी कोई दवा बताई जो लड़ाई के बाजार में मिलती ही नहीं थी। सुना कि डा० फारूकी के पास यह चीज आई है, पर उन्होंने नहीं दी। शायद सोचा हो कि मैं दाम न दे सकूँगा। इसके बाद बहुत खोजने पर एक जगह यह दवा मिली, पर दाम सुनते ही होश उड़ गये। कहा कि कुल दो सौ बत्तीस रुपये लगेंगे। उतने रुपये कहाँ से पाता ? तब फर्मासी के मालिक से अपनी विपत्ति की बात बताई। उन्होंने कहा ले जाओ कुछ देना न पड़ेगा। मैंने कहा धीरे-धीरे ये रुपये चुकता कर दूँगा। जब तुम अच्छी हो गई तो रुपये लेकर मैं उनके पास गया, किन्तु उस भले आदमी ने रुपये नहीं लिये। बल्कि ऊपर से कुछ ओवल्टीन दी। बोले—उन्हें यह खिलाओ। यह रोग बहुत खराब है, मेरी स्त्री इसी रोग से मरी थी। उन दिनों इस दवा की ईजाद नहीं हुई थी।

इतना कहकर इमतियाज़ चुप हो गया। यह कहानी मरियम को अच्छी तरह मालूम थी, बोली—हाँ वह डाक्टर बहुत ही अच्छे थे। मेरे दिल में उस सख्स के लिये बड़ी इज्जत है......

—पर वे हिन्दू थे—अकस्मात् इमतियाज़ ने कहा।

मरियम ने जल्दी में कहा—पर तुम तो कहा करते थे कि वे बंगाली हैं।

—हाँ बंगाली हिन्दू हैं।—फिर कुछ सोचते हुए कहा—उस कमरे में जिस आदमी को लेटा कर रक्खा है, वह उसी डा० राय का लड़का है। इसे ये लोग जिन्दा दफ़न करने जा रहे थे। मैंने पहचान लिया और ले आया।

—एँ ?—मरियम उत्तेजना से बैठ गई, बोली—तुमने इतनी देर तक कहा क्यों नहीं ? वो तो हमारे बुजुर्ग हैं।

इमतियाज़ ने इतनी आशा नहीं की थी, वह गदगद होकर बोला—मैंने तो सोचा था कि तुम गुस्से में आ जाओगी।

—मैं गुस्से में आ क्यों जाऊँगी, मैं क्या इंसान नहीं हूँ ?

इमतियाज़ ने कुछ नहीं कहा। फिर सोचकर बोला—पर जानती हो, अगर आज मुहल्ले-टोले में किसी के कान में यह भनक पड़ जाय कि हम लोगों के मकान में एक हिन्दू है तो फौरन लोग मकान पर चढ़ जायेंगे, उन्हें तो मार ही डालेंगे, शायद हम लोगों को भी न छोड़ें।

मरियम के चेहरे से वह उच्छ्वसित भाव दूर हो गया। उसके चेहरे पर चिन्ता की गम्भीर रेखायें दिखाई पड़ीं। यन्त्रचालित की तरह उसकी दृष्टि बच्चे पर गई। त्रस्त तथा कम्पित कण्ठ से उसने कहा—तो ?

—तो क्या ? जिससे कोई जान न पावे ऐसा काम करना पड़ेगा। किसी ने जाना कि मरे।

—हाँ, पर इनको अपने मकान में पहुँचा दिया जाय तो कैसा रहे ?

—पर यह सम्भव नहीं है।

—क्यों ?

—वे अभी चार-छः दिन तो उठ नहीं सकते।

—पर अगर पहुँचा दिया जाय तो ?

—कौन पहुँचाने जायगा ? मैं ? तब तो लौट नहीं सकूँगा। उधर भयङ्कर दंगा हो रहा है। इसके अलावा उनको लेकर अगर मकान से निकलें तो पहले तो मुहल्ले वाले ही हम लोगों को खत्म कर देंगे।

मरियम यह नहीं समझ सकी थी कि यह मामला इतना पेचदार है। अब समझ कर वह कुछ हतोत्साह हो गई और फिर लेट गई।

इमतियाज़ ने कुप्पी की रोशनी में खपड़े की ओर घूरते हुए, तथा मानो उन्हीं से अनुप्रेरणा लेते हुए कहा—यह मामला यहीं खत्म नहीं होता। अगर यह भले आदमी चंगे होकर पुलिस में बयान दे दें तो कम से कम एक सौ मुसलमान जेल की हवा खायेंगे, मुझे भी लेकर खींचातानी होगी।

मरियल डरकर बोली—तो फिर ?

—दो रास्ते हैं। एक तो यह है कि इनको होश आते ही इनसे वादा कराया जाय कि किसी भी हालत में वे मुँह नहीं खोलेंगे, या—कहकर इमतियाज़ कुछ हिचकिचाने लगा।

—या क्या ?

—या इनको मार डाला जाय।

—मार डाला जाय ? यह क्या—बहुत ही आश्चर्य में मरियम ने कहा।

—हाँ, मार डाला जाय। मैं तो किसी भी तरह मुसलमानों में नक्कू नहीं हो सकता।

मरियम अब समझ गई कि एक अच्छा काम करने में कितनी विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। इस आदमी को आश्रय देने की क्या क्या अप्रिय संभावनाएँ हैं। इतनी देर में सारी बात

वास्तविकता के दृश्य-पट पर एक अर्खंड सम्पूर्ण रूप से दिखाई पड़ी। दो मिनट पहले उसकी उत्फुल्ल दीप्त कृतज्ञता प्रदर्शन की नाव चारों तरफ की असंख्य तरंगों की मार से पीड़ित होकर अब बहुत जोरों के साथ डगमगाने लगी।

फिर भी मरियम ने कहा—*सब बात समझा देने पर वे जरूर ही अपने मुँह को बन्द रखने के लिये राजी हो जावेंगे।*

—मुझे भी ऐसा मालूम होता है, पर कौन जाने किसके दिल में क्या है, कुछ कहा नहीं जा सकता—फिर कुछ सोचकर बोला—पर एक बात है, उनको यहाँ लाकर रक्खा जाय। सबेरा होते ही लोग शायद इधर आने-जाने लगें।

—यहाँ लाओगे?—मरियम ने आश्चर्य से कहा। सब बातों को दबाकर उसके अन्दर की पर्दा-नशीन स्त्री ऊपर को आ गई।

—हाँ नुकसान क्या है? मौका ऐसा ही है,—उसके बाद मरियम की आपत्ति के कारण को एकाएक समझकर कहा—वे तो मुर्दे के बराबर हैं, उनके सामने पर्दा क्या?

नतीजा यह हुआ कि मरियम की आपत्ति नहीं टिकी। पूरब की तरफ रोशनी होती आ रही थी। दोनों ने मिलकर जल्दी से एक बिस्तरा तैयार किया, फिर राजीव को भीतर ले जाकर सुला दिया।

सबेरा अभी अच्छी तरह हुआ भी नहीं था कि एक आदमी ने आकर इमतियाज़ को पुकारा—इमतियाज़! इमतियाज़!

—कौन? वाहिद मियाँ?—इमतियाज़ जम्हाई लेते-लेते निकल आया।

—कल रात को तुम्हारे यहाँ कुछ शोरगुल सुनाई पड़ा था। कोई मेहमान आया था क्या?—कहकर वाहिद मियाँ खुले दरवाजे से आकर भीतर खड़े हो गये, और सन्देह भरी दृष्टि से चारों तरफ ताकने लगे।

—नहीं मियाँ, कोई मेहमान तो नहीं आया......

वाह मैंने तो अपनी आँखों से देखा कि कोई जैसे किसी को पकड़ कर तुम्हारे मकान में आया। बुड्ढा जरूर हो गया हूँ, पर बिल्कुल अन्धा नहीं हूँ—मीठी डाँट के लहजे में वाहिद मियाँ ने कहा।

भीतर पड़ी-पड़ी मरियम सब बातें सुन रही थी। उसका दिल धड़कने लगा। खैरियत यह है कि इमतियाज़ ने पहले ही से सब बातें समझ-बूझकर उनको यहाँ पर लाकर रक्खा है। वह कान खड़ा करके सुनने लगी कि इमतियाज़ क्या कहता है। बूढ़े ने तो बैठे-बैठे सब देखा है।

इमतियाज़ ने कहा—तो चाचा आपने सब कुछ देख लिया। सब घर की बातें हैं, कहाँ तक आपको बताऊँ? वहाब को तो आप जानते हैं। वह कल शराब पीकर झूमता हुआ इधर आया था। मैं उसे सहारा देकर ला रहा था। उतनी रात को कहता क्या है कि मुन्ना को देखूँगा, फिर यह सुनकर कि मुन्ना सो रहा है लौट गया।—इमतियाज़ एक साँस में इतने झूट बोल गया।

बूढ़े का सन्देह दूर हो गया। वह इस बात पर बहुत खुश हुआ कि आखिर उसने सारी बात निकाल ही ली, और उससे कोई कुछ छिपा नहीं सकता। उसका मुखमण्डल आत्मतृप्ति की हँसी से उद्भासित हो गया। अपनी इतनी भारी विजय की बात मुहल्ले-टोले वालों को जल्दी से बताने के लिये वह वहाँ से चल पड़ा। दंगे के सम्बन्ध में आलोचना भी नहीं की। यह भी नहीं पूछा कि वहाब कब गया।

२१

अगले दिन दोपहर तक राजीव ने आँख खोल दी और बातचीत भी करने लगा। उसे होश शायद बहुत पहले ही आया था, पर इतनी

कमजोरी थी कि आँख खोलने की भी ताकत नहीं थी। उसी आधी बेहोशी की हालत में मरियम ने उसे कई बार दूध पिलाया, और गले को पोंछा। एक स्निग्ध कोमल स्पर्श ने उसके अन्तर के गहन-देश में जाकर उसकी चेतना को चाबुक-सा लगाया। चित्त ने कहा कि जगना है, पर शरीर ने साथ नहीं दिया। एक जगह सिर में बहुत सख्त दर्द हो रहा था। सारे शरीर में एक अजीब दर्द और बेचैनी थी। पर फिर भी धीरे-धीरे बेचैनी और दर्द में कुछ कमी हो रही थी।

जिस समय राजीव को होश आया उस समय उसकी आँखों के सामने मुन्ना, इमतियाज़, मरियम तीनों थे। आँख खोलते ही राजीव ने मरियम को देखा। स्नेहमयी, करुणा की प्रतिमूर्त्ति। राजीव चौंक पड़ा, क्या जोहरा है, पर उसने जो एक झलक देखी थी, उसीसे समझ गया था कि यह जोहरा नहीं है, यद्यपि वही उम्र, वही तरुणता तथा वही लालित्य था, उससे भी कुछ कोमल। पर जोहरा की बात याद आते ही उसका मन कड़ुवा हो गया। विश्वासघातिनी! क्या प्रत्येक मुसलमान इसी प्रकार कट्टर होता है? कैसी विडम्बना है! उसकी दोनों आँखें फिर स्वयं बन्द हो गईं।

मरियम ने ज्यों ही देखा कि एक पुरुष उसकी तरफ ताक रहा है, त्योंही वह स्वयं चालितमृग की तरह अकस्मात् हटकर चित्त लेटे हुए राजीव के सिर के पीछे इस तरह से खड़ी हो गई कि रोगी को देख सके, पर रोगी उसे न देख सके। एक पर्दानशीन स्त्री की हैसियत से उसे ये सब पैंतरे बहुत अच्छी तरह मालूम थे।

जल्दी से इमतियाज़ हटकर उस जगह पर आकर खड़ा हो गया जहाँ पहले मरियम थी। उसने पुकारा—बाबूजी!

—हाँ—राजीव ने आँख खोलकर फिर देखा। देखा कि उसके सामने एक खसखसी दाढ़ीवाला युवक खड़ा है। देखकर ही पहचान गया कि मुसलमान है। राजीव ने सोचा था कि मैं ऐसी जगह पर आ

गया हूँ जहाँ कोई खतरा नहीं है, पर यह क्या ? उसकी आँखें खुली ही रहीं, पर वह स्पष्ट-रूप से खपड़े की तरफ देखता रहा। उस आदमी की तरफ नहीं देखा।

—तबियत कैसी मालूम हो रही है ?—इमतियाज़ ने पूछा।

प्रश्न में जैसे कुछ व्याकुलता थी। राजीव ने खसखसी दाढ़ीवाले युवक की ओर संदेहपूर्ण दृष्टि से देखा। बोला—अच्छी नहीं है।—फिर बोला—मैं कहाँ हूँ ?......

—आप मेरे घर पर हैं—इमतियाज़ ने मुहल्ले का नाम नहीं बताया, कौन जाने सावधानी में कुछ खर्च थोड़े ही लगता है। बाद को कौनसा बखेड़ा उठ खड़ा हो कौन जाने।

—आप कौन हैं क्या मैं इस बात को पूछ सकता हूँ ?—राजीव ने पूछा।

—मैं डा० राय का एहसानमन्द हूँ, उन्होंने मेरी बीबी की जान बख्शी थी।

—ओ—राजीव ने परिस्थिति को कुछ-कुछ समझा। तो यह आदमी बिल्कुल बेरहम नहीं है। खसखसी दाढ़ी भले ही हो। बहुतसी बातें उसके मन में एक के बाद एक आईं। बोला—तो मैं बिल्कुल खतरे से बाहर हूँ ?

—हाँ, पर एक शर्त है—ज़रा हिचकिचाते हुए इमतियाज़ ने कहा।

एक ही क्षण में राजीव के मुख-मंडल पर पहले तो क्रोध और फिर निराशा की भावना खेल गई। बोला—कैसी शर्त है ? मुसलमान होना पड़ेगा ? यही न कि और कुछ ?

—नहीं, यह नहीं। आपको वे लोग मारकर गाड़ने जा रहे थे। मैंने अपना निजी असर डालकर आपको बचा लिया। मैं सिर्फ इतना

ही चाहता हूँ कि आपको बचाने की वजह से उन लोगों पर खतरा न आवे जिन लोगों ने मेरे कहने पर आपको मेरे सुपुर्द कर दिया है।

—उसके माने ?

—उसके माने ये हैं कि आप यह वादा करें कि पुलिस को खबर नहीं करेंगे।

—सिर्फ यही, और तो कुछ नहीं ?

—नहीं......

राजीव ने कुछ देर तक जैसे कुछ सोचा, फिर कहा—मान लो कि मैं कह जाऊँ कि पुलिस को खबर नहीं करूँगा, और घर जाकर कर दूँ।

—यह आपके ईमान पर है, पर मुझे यक़ीन है कि यदि आप एक दफा वादा कर लेंगे तो किसी भी तरह उससे नहीं हटेंगे।

अकस्मात् राजीव ने उठ बैठने की चेष्टा की, पर उसमें असफल रहकर बोला—आपने कैसे जाना कि मैं अगर कोई वादा कर दूँ तो उससे हटूँगा नहीं। आप जानते हैं—राजीव कहने जा रहा था कि कल, पर सोचा कि न मालूम बेहोशी की हालत में कितने दिन रहा कौन जाने, इसलिये बोला—आप जानते हैं कि उस रोज हमारे साथ कैसी धोखेबाजी की गई, मुझे मकान में बैठाकर पकड़वा दिया गया।

—हाँ शौकत मियाँ......

—शौकत मियाँ ! मैं तो कुछ दूसरी ही बात कहने जा रहा था, आप क्या कह रहे थे ?

—कौन जाने जिस बात को वह जोश में आकर कहने जा रहा था, उस बात को कहने से रुक गया, और यह उचित समझा कि पहले खसखसी दाढ़ीवाला युवक जो कह रहा है उसे सुन ले।

इमतियाज़ ने कहा—मैं तो शुरू से आखिर तक था। उस दिन हम लोग हिन्दुओंके शिकार को निकले थे। एकाएक एक आदमी ने

आकर यासीन मियाँ के घर में खबर दी कि आप वहाँ पर हैं। यासीन मियाँ तो खुशी के मारे उछल पड़े, बोले—चलो, इन्तकाम, कोटा पूरा होगा। शौकत भी फौरन तैयार हो गया, पर मुझसे बोला—मास्टर, बहिन बंगालियों से बहुत हिली हुई है, बहुत क्रोधित हो जायगी। शायद हाथा-पाई पर उतारू हो जाय, इसलिये होशियार!

पूरी कहानी सुन ले फिर बात करे, राजीव में इतना धैर्य कहाँ था? कह उठा—इसके माने यह हुए कि हमें उस दिन फँसा देने में उस आदमी के अलावा और किसी का हाथ नहीं था?

—नहीं, आपको किस पर शक है?

—किसी पर नहीं—कहकर राजीव खपड़ों की तरफ देखने लगा। खपड़ों की साँसों से मीठी-मीठी धूप दिखाई पड़ रही थी।

इमतियाज़ ने कहा—तो आपका वायदा पक्का रहा?

—रहा—मारे जानेका राजीव के मन में जो थोड़ा-सा सन्देह था, वह दूर हो चुका था। राजीव का जवाब सुनकर इमतियाज़ के सीने पर जो पत्थर-सा दबा था वह भी हट गया। बड़ी देर बाद वह मानों अब आसानी से साँस लेने लगा।

राजीव ने सोचकर कहा—मुझे घर भेजने का कोई ढंग नहीं हो सकता?

—नहीं, बिल्कुल नहीं। जब तक दंगा जारी है, आप को चुपके से यहाँ पर पड़ा रहना पड़ेगा। यह बहुत खतरनाक मुहल्ला है, किसी को कानों कान भी इस बात की खबर हो जाय तो आफत ही आ जाय। आपकी जान तो जायगी ही, हमारी जान और माल पर भी बन आयेगी। इसके अलावा आप तो अभी पैदल चल भी नहीं सकते।

—नहीं, तीन दिन के बाद चल फिर सकूँगा ऐसी उम्मीद नहीं है, पर जिन्दगी में क्या-क्या इमकानात हैं यह कौन कह सकता

है ? आपने जिस तरह मुझे बचाया, उसे तो कोई सोच भी नहीं सकता था।

इसके बाद दोनों में तरह-तरह की बातें होने लगीं। मरियम पास ही दूध गर्म करने लगी।

२२

होश में आने के चौबीस घंटे के अंदर ही राजीव घर का-सा आदमी हो गया। मुन्ना भी उसके पास घुटनों के बल चलकर आने लगा। राजीव बहुत जल्दी-जल्दी अच्छा होने लगा। अब उसे बातचीत में कोई तकलीफ नहीं हो रही थी। राजीव चुप तो रह ही नहीं सकता था। उसने अपनी बातों का प्रचार जैसे हिन्दू मुसलमान सभी मजहब दल-बन्दी हैं, इत्यादि से शुरू किया। मियाँ बीबी दोनों जल्दी ही उसके चेले हो गये। मरियम आड़ में रहकर सब बातें सुना करती थी, पर राजीव की कही हुई हरेक बात उसके मन पर एक अमिट छाप छोड़ जाती थी। यह जैसे किसी नई दुनिया की बात थी। उसकी नन्हीं-सी दुनिया में एकाएक एक नई दुनिया की पुकार आ पहुँची। उसने तो ऐसी बातें कभी भी नहीं सुनी थी कि आदमी-आदमी एक हैं, मर्द और औरत के हक बराबर हैं, मजहबों से अमीर लोग अपना उल्लू सीधा किया करते हैं, मजहब अवाम के लिये अफीम है—ऐसी ही हजारों कभी न सुनी हुई बातें।

मरियम कभी सोचती नहीं थी, पर अब उसने भी सोचना शुरू कर दिया। राजीव एक दिन इमतियाज़ से कह रहा था—इन हिन्दू-मुसलमानों की लड़ाइयों और दंगों में न तो हिन्दुओं को कुछ फायदा है और न मुसलमानों को, फिर भी बार-बार ये दंगे होते ही रहते हैं क्योंकि इससे राज करने वाले तथा ऊपर के तबकों को फायदा है—राजीव इसी पर

आधा घंटा बक गया। मरियम कुछ समझी, कुछ नहीं समझी, पर इतना उसके चित्त के गहनतम कोने तक अच्छी तरह प्रविष्ट हो गया कि साम्प्रदायिक दंगों से हिन्दू या मुसलमान किसी को फायदा नहीं है।

दो दिन इसी प्रकार कट गये। राजीव अब शायद चल फिर सके, पर एक दिन और लेटा रहे तो अच्छा है।

सवेरा हो गया, फिर भी इमतियाज़ का कहीं पता नहीं था। जब से दंगा हो रहा है इमतियाज़ रोज रात को घर से बाहर बिताया करता था। अब उसके दिल में दंगे के लिये वह जोश नहीं है, पर दोस्त—अहबाब बुलाने आते हैं, इसलिये जाना पड़ता है। मरियम मना करती है, कहती है—और क्यों ? बहुत तो हुआ।

इमतियाज़ तसल्ली देते हुए बहुत जोर से राजीव को सुनाते हुए ही कहता है—कुछ करूँगा नहीं, पर जाना तो पड़ेगा ही। न जाऊँगा तो लोग शक करेंगे। समझे न ?—कहकर वह अर्थपूर्ण ढंग से जिधर राजीव है उधर इशारा करता है।

मरियम प्रतिवाद नहीं करती। चुपके से अपने काम में चली जाती है। राजीव सुनता है। सुनकर वह सोचता है कि यह समाज कितना भयंकर है कि एक आदमी अब समझ चुका है, दंगे में शामिल नहीं होना चाहता है, पर उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध दंगाइयों का साथ देना पड़ता है। कितना भयंकर है! उठने के लिये वह छटपटाता है, पर उठकर क्या करेगा ? अगर इस मुहल्ले में किसी ने हिन्दू कह के पहचान लिया तो उसकी मृत्यु निश्चित है, इसलिये वह खपड़े की तरफ ताकता हुआ असहाय पड़ा रहता है। और एक दिन में वह शायद कुछ चल फिर सके, पर इस शत्रुपुरी को छोड़कर वह कैसे जायगा ? वह इनमें से किसी को भी अपना शत्रु नहीं समझता, पर इससे क्या आता जाता है, फिर भी यह उसके लिये शत्रुपुरी है।

जब दस बजे दिन तक इमतियाज़ का कुछ पता नहीं लगा, तब

मरियम बेचैन हो गई। पर वह पर्दानशीन थी, करती तो क्या करती। मुहल्ले की किसी स्त्री से भी उसने इस वक्त इसका जिक्र करना उचित नहीं समझा क्योंकि घर में राजीव पड़ा था, इसलिये उनसे बचकर रहना ही अच्छा था नहीं तो खबर पूछने के बहाने ही भीतर चली आतीं और फिर तो भंडा फूट जाता। फिर भी उसने एक जवाब तो सोच ही रक्खा था। मौका पड़ने पर कह दूँगी कि यह उसके मायके के एक रिश्तेदार हैं, शहर में आकर हिन्दुओं के हाथ से मरते-मरते बचे।

साढ़े दस बजे वहाब आया। वह जानता था कि मकान के अंदर उस दिन का वह हिन्दू है। योंही वह बेरोक-टोक मकान के अंदर तक चला जाता था, मुन्ना के साथ दो एक बात करता था, उसे कोई छोटी-मोटी चीज देता था, पर आज वह मकान के मर्दाने हिस्से में ही खड़े होकर जोर से पुकारने लगा—मरियम! मरियम!

मरियम का दिल धड़क उठा, सोचा कि न मालूम क्या बुरी खबर सुनने को मिले।

भय से अकड़कर वह भाई के सामने खड़ी हो गई, बोली—क्या है?

वहाब ने कुछ भी भूमिका न बाँधकर कहा—इमतियाज़ को कल हिन्दू लोग पकड़ ले गये।

—हिन्दू लोग पकड़ ले गये?—खबर के सम्पूर्ण अर्थ को समझने में कुछ देर हुई, पर ज्यों ही बात समझ में आ गई, त्योंही उसके सामने एक मुहूर्त के अंदर दुनिया बदल गई, बोली—तो क्या होगा भाई जान?

आज बहुत दिन बाद उसने वहाब को भाई जान कहा। क्रिमिनल होने के कारण इमतियाज़ वहाब को विशेष प्रोत्साहन नहीं देता था, इसलिये मरियम भी उसके साथ कुछ रूखा व्यवहार करती थी। जितनी कम रुखाई से काम चले, उतनी ही करती थी।

बहाब ने चिन्तित मुद्रा में कहा -- होना क्या है? कोशिश कर देखूँगा, क्या होता है। अच्छा चलता हूँ। परेशान मत हो, मैं फिर दो घंटे में आऊँगा।

बहाब चला गया।

राजीव भीतर पड़े-पड़े सब सुन रहा था। यदि अकस्मात् इस मकान में मुसलमान दंगाई चढ़ आते तो उसे इतना आश्चर्य न होता। उसकी हालत ऐसी हुई कि काटो तो लहू नहीं। उसके स्वप्न अच्छे जम रहे थे, इतने में फिर यह किसने जबर्दस्ती उसके सारे स्वप्नलोक को तोड़ दिया। कितना भयंकर है! वह इस सरल लड़की के सामने कैसे मुँह दिखायेगा? आज तक वह सोचता था कि उसने अपने को हिन्दू न समझा, वह हिन्दू समाज की सारी भूल-चूक, मूर्खता तथा अपराधों से अलग हो गया, पर आज उसे सर्वप्रथम यह अनुभव हुआ कि इमतियाज़ को पकड़कर हिन्दू समाज ने जो अपराध किया है, वह मानो उसी का किया हुआ है। उसे इसके लिए लज्जा का अनुभव हुआ और यह लज्जा और भी तीव्र इस कारण हो गई कि उसने सोचा कि कदाचित् हिन्दू समाज के इस पाप के लिये उसे द्वितीय, या तृतीय बार मरकर प्रायश्चित्त करना पड़े।

मरियम भीतर आई, पर राजीव ने अभी तक किसी दिन मरियम के साथ बात नहीं की थी। मरियम उसके बगल से चली गई। राजीव ने अच्छी तरह अनुभव किया कि मरियम उस पर कुछ नाराज़ है, और उसने यह भी अनुभव किया कि इन दो दिनों में दी हुई सारी शिक्षा पर पानी फिर गया।

मरियम ने जाकर धमाके के साथ चूल्हे पर चढ़ी हुई बटलोई को उतार लिया, उसके बाद चूल्हे में पानी डाल दिया।

राजीव लेटे-लेटे असहाय की तरह सब सुनता रहा, पर चुप लेटे रहने के अतिरिक्त वह क्या कर सकता था? वह कर ही क्या

सकता है ! अच्छा, अगर किसी भी तरह वह उठा तो जायगा कैसे ? इस मुहल्ले से वह बिना खतरे के निकल कैसे सकता है ? अवश्य ही वह इस लड़की को इस प्रकार छोड़कर नहीं जा सकता । कुछ उसका भी कर्त्तव्य है, पर वह इस लड़की का कर ही क्या सकता है ? फिर एक दूसरी बात है, वह यह कि यदि वह लड़की अपने पति का बदला उससे निकालना चाहे, तो ? अच्छा वह बदला ले तो ले, वह मानसिक रूप से आत्मसमर्पण कर चुका ।

किसी ने खाना नहीं खाया । राजीव को कुछ-कुछ भूख का अनुभव हो रहा था, पर क्या होगा खाकर ? अन्त में वही गति तो होनी है इसके अलावा उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था । वह इस समय एक अनिवार्य तथा क्रूर भाग्य के भँवर में पड़ गया था । ऐसी भँवर जिसके साथ तर्क नहीं किया जा सकता और जिसने उसके हाथों तथा पैरों को जोर के साथ बाँध रक्खा है । जरा भी हिलने-डुलने की गुंजाइश नहीं थी । लेटे-लेटे उसे कुछ नींद-सी आने लगी ।

अढ़ाई बजे वहाब फिर आया ।

मरियम मानो उसी तरफ़ कान लगाकर बैठी हुई थी । वहाब के बिना पुकारे ही वह बाहर के कमरे में जाकर उपस्थित हुई, बोली—क्या खबर है ?

उसने प्रश्न को ऐसे पूछा मानों इस प्रश्न के उत्तर पर उसका जीवन तथा मृत्यु निर्भर है । वहाब क्या कहता है यह सुनने के लिये और भी एक आदमी मरियम से कदाचित् अधिक उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था, यद्यपि इस प्रश्न के उत्तर पर उसका वैधव्य निर्भर नहीं था, पर जीना-मरना निर्भर ज्ञात होता था ।

वहाब जैसे तैयार था, बोला—कुछ खबर नहीं मिली, मालूम नहीं क्या हुआ ।

मरियम ने यह उत्तर जो पहले-पहल सुना तो कुछ निराश हुई, पर अकस्मात् जैसे आनन्दित होकर बोली—कुछ खबर नहीं मिली ?

—नहीं मिली।

—अच्छा हिन्दू उन्हें जो पकड़ ले गये हैं, सो क्या करेंगे ?

मरियम की हालत देखकर वहाब को दया आई, यों ही अपने मन से बनाकर कह दिया—क्या करेंगे, शुद्धि करेंगे और क्या करेंगे।

—शुद्धि क्या है ?—कौतूहल के साथ मरियम ने पूछा।

—हिन्दू कर लेने को शुद्ध करना कहते हैं। हवन होता है, सूअर का गोश्त खिलाया जाता है, और क्या होगा ?

—तोबा ! तोबा ! सूअर का गोश्त ?

—हाँ, इसमें क्या नुकसान है ? फिर मुसलमान होते कितनी देर लगती है—तसल्ली के लहजे में वहाब ने कहा।

वहाब और मरियम दोनों भीतर गये।

वहाब ने कहा—बहुत भूख लगी है बहन, तुम रोटी बनाओ, शायद किसी ने खाना नहीं खाया। इस बीच में मैं बंगाली बाबू से कुछ बातचीत करूँ।

वहाब राजीव के बिछौने के पास जाकर आदाबअर्ज करके बैठ गया, और साफ बँगला में बोला—मुझे आप जरूर न भूले होंगे ?

राजीव इसके प्रश्न करने के ढंग से शंकित हुआ, बोला—नहीं, पर मैं भूलना चाह रहा था, इसके लिये वादा भी कर चुका था, आपने बँगला कहाँ सीखा ?

—उस बात को जाने दीजिये, अलीपुर जेल में पाँच बरस तक रहा। एक बात सुनियेगा ?

—क्या ?

—मेरे बहनोई को हिन्दुओं ने काली मूर्त्ति के सामने चढ़ा दिया।

—ऐं ? आप क्या कह रहे हैं ? आदमी को चढ़ा दिया ?—आश्चर्य-चकित होकर राजीव ने कहा।

—हां साथ-साथ और भी दो मुसलमानों को बड़ी धूमधाम से चढ़ा दिया।

राजीव इसके जवाब में क्या कहे कुछ समझ नहीं सका, बोला—पर आपने तो उनसे कहा कि खबर नहीं मिली।

हाँ, मैं उनसे झूठ बोला। सचाई को जानने के लिये तो सारी जिन्दगी पड़ी है। उसमें जल्दी क्या है ? झूठ बोलने से यदि दो घड़ी के लिए दुःख कम हो जाय तो उसमें हर्ज क्या ?

—हाँ।

—इसके अलावा अभी सचाई को न बताने की एक और वजह थी……

—वह क्या ?

—आप।

—इसके माने ?

—इसके माने ये हैं कि सच बतलाने पर अभी फौरन ही आपकी जिन्दगी खतरे में पड़ जायगी, इसीलिये सच नहीं कहा। सोच-समझकर जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा।

इसके जवाब में राजीव क्या कहता, चुप रहा।

वहाब ने कहा—मैं यह नहीं कहता कि इस खबर को बताते ही मेरी बहन आपको पकड़ा देगी, पर खबर सुनते ही वह इतने जोर से चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगेगी कि मुहल्ले-टोले वाले सब दौड़ आवेंगे, और आप पकड़ लिये जायेंगे।

राजीव ने सोचकर कहा—मुझे कौन पहचानता है, अगर आप लोग जिलाना चाहें तो जो चाहें फरजी तरीके से बता सकते हैं।

—नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। इसकी वजह यह है कि जहाँ पर आपसे वे सब सवालात पूछे गये थे और आपको मुसलमान होने के लिये कहा गया था, वहाँ इस मुहल्ले के बहुत से लोग थे। आपको देखते ही वह पहचान जायेंगे। बीच में मैं मारा जाऊँगा क्योंकि आपकी लाश मेरे सुपुर्द थी। लोग कहेंगे कि मैं काफिर था, हो सकता है वे हम सबको जान से मार डालें।

वहाब रुक गया। राजीव समझ नहीं पाया कि वहाब उससे क्या कहना चाहता है। वह चुप रहा।

दक्ष तथा अभ्यस्त हाथों से रोटियाँ बनाये जाने की आवाज़ आ रही थी। वहाब ने पूछा—आप जानते हैं मेरे बहनोई क्यों पकड़े गये?

—नहीं।

—आपके लिये—कुछ जैसे गुस्से में वहाब ने कहा, पर गुस्सा इम्तियाज़ पर था, राजीव पर नहीं, लेकिन राजीव ने गलत समझा।

—मेरे लिये?—आश्चर्य चकित और शायद कुछ डरकर राजीव ने कहा।

—हाँ वह कोशिश कर रहा था कि आपके घरवालों के साथ किसी तरह का सम्बन्ध स्थापित हो जिससे आपको जल्दी से घर भेजा जा सके।

राजीव सचमुच बहुत दुखी हुआ। उसे यह नहीं मालूम था कि उसी के सबसे बड़े हितैषियों ने इम्तियाज़ की हत्या की है। बोला—यह तो सब समझा, पर अब मैं क्या करूँ यह बताइये। अगर जान देकर भी कुछ मुआवजा दे सकूँ तो उसके लिये भी तैयार हूँ।

कड़वे लहजे में वहाब ने कहा—मुआवज़ा क्या दीजियेगा?—रोटी बनाने में लगी हुई बहन की तरफ इशारा करते हुए उसने कहा—इनको क्या मुआवजा दिया जा सकता है? शायद रो रोकर जान दे दें।

निराशापूर्ण आत्मविसर्जन के लहजे में राजीव ने कहा—इन दंगों में सबका नुकसान होता है, फिर भी ये चलते ही रहते हैं, किसी तरह रुकते नहीं।

राजीव की दार्शनिकता में बाधा देकर आकस्मिकता के साथ वहाब ने कहा—आप अगर अपने मुहल्ले में होते तो हिन्दुओं की तरफ से दंगा करते या नहीं ?

बहुत जोर के साथ राजीव ने कहा—कभी नहीं, मैं ऐसी बातें सोच भी नहीं सकता।

—पर आपके मुहल्ले के लड़के-बूढ़े सभी इस दंगे में हिस्सा ले रहे हैं। फिर कुछ रुककर बोला—जिस वक्त इमतियाज को काली मन्दिर में चढ़ाया गया, वहाँ मुहल्ले के सब लोग मौजूद थे।

राजीव ने अविश्वास नहीं किया। सोचा ऐसा तो बिल्कुल सम्भव है। कुछ बोला भी नहीं।

वहाब अकस्मात् उत्तेजित होकर बोल उठा—कहिये इसका क्या जवाब देते हैं ?

—क्या जवाब दूँ ? आप जो कह रहे हैं वही हुआ होगा, मुझे जो कहिये करूँ।

उधर दो-चार रोटियाँ बनाकर ही मरियम ने पुकारा—भाई जान !

—हाँ आता हूँ—वहाब ने कहा। उसके मुँह की बात मुँह में रह गई और खाने के लिये चला गया।

राजीव अपने बिछौने पर लेटे-लेटे आकाश-पाताल की सोचने लगा। इस प्रकार असहाय होकर पड़े रहने के बजाय मर जाना ही अच्छा था। ओह, इन दिनों उसके जीवन में कितने-कितने परिवर्तन हुए। मृत्यु, फिर जीवन, फिर मृत्यु, फिर जीवन। आगे क्या है, मृत्यु या जीवन, कौन जाने ? कोई बड़ी शक्ति जैसे उसके जीवन से खेलकर रही हो, उसे पंगु और अकर्मण्य रखकर उसका तमाशा देख रही हो।

जोहरा के मकान से वह मकान, उस मकान से यह मकान, बहुत थोड़े-थोड़े समय में ये परिवर्तन, पर कितनी घटनाओं से पूर्ण है। इसके अतिरिक्त ये एक-एक घटनाएँ ऐसी हैं कि उनके पैरों के दबाव से ही उनका आदर्श-जगत चूर्ण हो गया। कहाँ उसके द्वारा परिकल्पित वर्ग-युद्ध, यह तो सीधा-सीधा धर्मयुद्ध है, यह तो सीधा-सीधा दो भिन्न जातियों का वर्ग-युद्ध है। आदमी को पकड़कर इस तरह से बलिदान कर देना, और सो भी सबके सामने, सार्वजनिक रूप से। एक दो आदमियों ने बौराकर यह काम किया हो ऐसी बात नहीं, बल्कि सारे मुहल्ले ने खूब सोचसाच कर धूमधाम के साथ यह घृणित अपराध किया। राजीव को इस बात का दुःख नहीं है कि वह उसके जीवन को लेकर एक गेंद की तरह खेल रहे थे। शायद उसकी जान चली जाय, पर उसे इस समय जो सबसे बड़ा दुःख था वह यह था कि उसका आदर्श झूठा प्रमाणित हो गया।

भाई और बहिन में बातें हो रही थीं।

मरियम ने कहा—उनके आने में शायद देरी हो।

—हाँ दंगा जब तक न रुके तब तक भागने का मौका कैसे लगेगा ?—वहाब ने रोटी खाते हुए कहा।

—दङ्गा कितने दिन चलेगा ?

—कौन जाने ? शायद दस-पन्द्रह दिन लगें।

—इतने दिन ?—मरियम ने सकुचाते हुए पूछा।

—बहिन की हालत देखकर वहाब ने कहा—जल्दी भी हो सकता है, सुना है आज उन लोगों को कुछ होश आ रहा है।

—किन लोगों को ?

—पुलिसवालों को।

—अच्छा, जल्दी हो तो अच्छा है। थोड़ी दाल और दूँ ?

—नहीं—वहाब जल्दी से खाकर उठ पड़ा। हाथ धोते-धोते बहिन से कहा—तुम भी जल्दी खा-पी लो।

—हाँ, पर इनको भी तो कुछ नहीं दिया गया है—मरियम ने राजीव की ओर इशारा करते हुये कहा।

—अच्छा, उनका खाना लगा दो।

मरियम ने खाना लगा दिया। वहाब ने राजीव के सामने थाली रखते हुये कहा—आप बैठ सकेंगे या मैं आपको बैठा दूँ?

राजीव ने कहा—रहने दीजिये।

वहाब ने सहारा देते हुए कहा—आपने सबेरे से नहीं खाया है।

—भूख नहीं थी।

वहाब सामने बैठते हुए बोला—अजी खाइये भी, अगर गुस्से में कुछ कह दिया हो तो माफ कीजियेगा।

—नहीं गुस्से की बात नहीं कह रहा हूँ। खाकर अब क्या करना है।

—वहाब ने जरा सोचा, फिर बोला—देखिये, इमतियाज़ जब आपको बेख़ौफ कर गये हैं और आपकी जान की जुम्मेदारी ले चुके हैं तो मैं उनसे अलग नहीं हो सकता। यह बात सही है कि मेरे सामने आदमी की जान की कोई कीमत नहीं पर मुझमें तास्सुब बिल्कुल नहीं है। हम मुजरिमों में फिरकापरस्ती बिल्कुल नहीं है, यही तो एक अच्छी बात है। फिर भी हम दङ्गा चाहते हैं, क्योंकि उससे हम फ़ायदा उठाते हैं।

राजीव फिर भी नहीं हिला, आँखे फाड़-फाड़ कर अजीब तरह से ताकता रहा। वह इतना तो समझ गया कि अब डरने की कोई बात नहीं, पर अपने सम्बन्ध में निश्चिन्तता आने के साथ-साथ उसमें मरियम के लिये चिन्ता पैदा हो गई। जो तरुणी आड़ में रहकर उसकी सेवा कर रही थी, और उसी के लिये विधवा हो गई, उसका क्या

होगा ? क्या इसका भी कोई समाधान है ? वह तो कुछ भी नहीं देख पा रहा था।

वहाब ने कहा—खाइये, खाइये, नहीं तो वह शक करेगी कि कोई बात जरूर है।

इन दिनों इमतियाज़ ही राजीव को बैठाया करता था, पर आज उसकी जगह पर आये हुए वहाब से उसे अपना शरीर स्पर्श कराने की इच्छा नहीं हुई। फिर भी उठना जरूरी था। किसी भी हालत में उसे शक न हो इसलिये वह अकस्मात खुद उठ बैठा और थाली खींचकर रोटी तोड़ने लगा।

वहाब ने कहा—बाबूजी मेरी जान तो आफ़त में फँस गई।

—क्यों ?

—मैं हमेशा से बेदर्द हूं। तेरह औरतों ने मुझे छोड़ दिया, और मैंने कोई तीस औरतों को छोड़ा। कभी किसी की गिरफ़्त में नहीं आया। यही एक छोटी बहिन थी, बीच-बीच में आकर देख जाया करता था। कोई फ़िक्र नहीं थी, पर अब मालूम होता है इसका सब बोझा मेरे ऊपर आ पड़ेगा।

खाते-खाते राजीव ने कहा—काहे का बोझा ?

—इस बहिन का और भांजे का......

—क्या आप रुपये-पैसे की बात सोच रहे हैं, उसकी कोई फ़िक्र न कीजिये। आपकी बहिन और भान्जे पर मेरा भी कुछ फ़र्ज है।

वहाब ने प्रतिवाद करते हुए कहा—रुपये की बात नहीं सोच रहा हूँ। यह तो मैं कर ही सकता हूँ, पर अब मुझे शरीफ होना पड़ेगा। अब तक दूर-दूर रहता था, अब तो इनके पास रहना पड़ेगा।

राजीव ने मन ही मन कहा कि यह तो समाज के लिये फायदे की बात है, पर कुछ बोला नहीं।

खाना खतम हो जाने पर वहाब थाली लेकर मरियम की तरफ़ गया। मरियम थाली के सामने बच्चे को गोद में लेकर बैठी हुई थी, पता नहीं खा रही थी या नहीं, वहाब ने कहा—मरियम अब तो इन्हें यहाँ रक्खा नहीं जा सकता।

—क्यों ?

—जब तक इमतियाज़ खुद थे तो बात दूसरी थी। वह शौहर थे, उनकी जो खुशी होती कर सकते थे; पर मैं तो भाई हूँ, ऐसा नहीं कर सकता। इसके अलावा भाई भी कैसा कि बदनाम, लोग जान जायँ तो न मालूम क्या-क्या कहें।

—लेकिन, वह तो चल नहीं सकते।

—खूब चलेंगे, नहीं तो मैं कंधे पर ले जाकर आज ही रात को हटा दूँगा।

मरियम कुछ खा नहीं सकी। जैसे-तैसे खाकर जूठन बटोलती हुई बोली—जो अच्छा समझो करो, न हो तो आज रात तक देख लो। आज भी तो वह भागकर आ सकते हैं।

—नहीं, ऐसा मुश्किल है—कहकर उसने सोचते हुए जेब से कुछ निकाला और कहा—यह लो, वह दे रहे हैं।

मरियम ने देखा कि कुछ नोट हैं। उसका चेहरा खिल गया, पर अगले ही क्षण बोली—यह तो नोटों का पुलिन्दा है, नहीं, मैं नहीं लूँगी। वह आकर नाराज होंगे......

—नाराज होंगे तो लौटा आयेंगे, इस वक्त रक्खो।

मरियम ने नोटों को गिना नहीं, हाथ बढ़ाकर ले लिया और अन्दाज से समझ लिया कि सौ रुपये से कुछ ज्यादा होंगे। इमतियाज़ की तनख्वाह का दुगुना।

वहाब राजीव के पास जाकर खड़ा हो गया, और उनसे बँगला में बोला—तैयार रहियेगा, रात को आकर आपको ले जाऊँगा।

कहाँ ?

—एक ऐसी जगह जहाँ कोई खतरा न होगा। आप तो समझते ही हैं कि अब यहाँ रहना बहिन की शोहरत के हक में अच्छा नहीं है।

—हाँ, पर आपने यह क्या तमाशा किया ? मेरे नाम से कैसे रुपये दिये ? मैंने तो कुछ नहीं दिया।

—अच्छा आप सुन रहे थे। जरा चालाकी करनी पड़ी क्योंकि इमतियाज़ का हुकुम था कि मुझसे वह रुपये न लेगी।

—और मेरे नाम से ?

—आप के नाम से इसलिये दिये कि वह आपके ही हैं।

मेरे ?

—हाँ—वहाब ने बिना झेंपे हुए कहा—उस दिन आपकी जेब से निकाल लिये थे। इन रुपयों को उसे देने में आप को जरूर ही कोई उज्र न होगा।

—कुछ नहीं, बल्कि खुशी ही है।

—अच्छा, तो आदाब अर्ज़ ! रात को आऊँगा।

राजीव बैठे-बैठे न मालूम कहाँ-कहाँ की बातें सोचने लगा। वह सोचने लगा कि इस आदमी का कहाँ तक एतबार किया जाय, पर इसी के हाथ में उसके जीवन की कुंजी है। कुछ भी निश्चय न कर सकने पर औंधा लेट गया और गहरे विचार में पड़ गया। इस प्रकार वह घण्टों सोचता रहा। एक बात दिमाग में आती, और वह चली जाती।

२३

पुलिस के हस्तक्षेप के कारण दंगा एक सप्ताह में ही खतम हो गया। जिस मकान की नींव को उपलक्ष्य बनाकर दंगे का सूत्रपात हुआ

था बाद को वह सारा किस्सा अदालत में चला गया। उसे तो किसी ने याद भी नहीं रक्खा। इस बीच में ऐसी-ऐसी बहुत-सी घटनायें हुई थीं जिनके मुकाबले में वह उपलक्ष्य जिसको लेकर दंगे का सूत्रपात हुआ था, बिल्कुल फीका पड़ गया था।

दो महीने हो चुके थे। दंगे का विषय अब एक कहानी मात्र होकर रह गया था।

एक दिन सबेरे (बड़े आदमियों के लिये जाड़े में दस बजे सबेरा ही होता है) यासीन का एक बूढ़ा कारिन्दा हबीब अहमद आकर बोला—मालिक अब तो हमें छुट्टी मिल जाय। अब हमसे किये कुछ नहीं होता।

हबीब कामकाजी आदमी था। यासीन के बाप बन्देअली मियाँ के जमाने से नौकर था। बाईस मकान और उनके साथ की दूकानों का किराया वसूल करना, उनको मरम्मत कराना, म्युनिसिपलिटी से इनके सम्बन्ध में झमेला करना, यही हबीब मियाँ का काम था। एक-एक पाई का हिसाब ठीक रखने में उसके बराबर कोई नहीं था। मजाल क्या कि किसी किरायेदार पर एक महीने का भी किराया बाकी रह जाय, फौरन हबीब मियाँ वकील का नोटिस लेकर उसके सरपर सवार हो जाते और उससे किराया वसूल करके छोड़ते थे।

यासीन ने कहा—बैठिये मियाँ, ज़रा बताइये कि मामला क्या है?

—मामला क्या है? जब से दंगा हुआ है तब से ये छोटी जात के लोग सरपर चढ़ गये हैं। बात ही नहीं सुनते।

यासीन का चेहरा कुछ तमतमा उठा। इस बात को वह स्वयं भी अनुभव कर रहा था, बोला—कौन नहीं सुनता?

कसाई टोले की उन दूकानों में से एक का भी भाड़ा वसूल नहीं हो रहा है।

—उन दूकानों से माहवार कितनी आमदनी होती थी।

—जी—बिना सोचे ही हबीब ने हिसाब बनाया—२५३।।) बही देखकर बताऊँ, कहकर—उसने एक लम्बी बही की तरफ हाथ बढ़ाया।

जल्दी से मना करते हुए यासीन ने कहा—नहीं-नहीं बड़े मियाँ, अभी बाहर जाना है। इसके अलावा और तो सब वसूल हो रहा है न?

—नहीं, और भी बहुत-सी जगहों पर किराया वसूल नहीं हो रहा है।

—एक हफ्ता मुहलत दीजिये, देख तो रहे हैं जमाना कितना खराब है।

ज़रा मुसकराते हुए हबीब मियाँ ने अपनी पकी हुई दाढ़ी को उँगलियों से धीरे-धीरे खुजलाते हुए कहा—अगर उसकी उम्मीद होती तो मियाँ का वक्त थोड़े ही खराब करने में आता, वे तो सीधे से किराया देने से ही इनकार कर रहे हैं।

यासीन की दोनों आँखें सुर्ख हो गईं, ओठ काँपने लगे। बोला—देने से इनकार कर रहे हैं? कह क्या रहे हैं मियाँ?

—कहते हैं कि हबीब मियाँ जाओ, हम सीधे मालिक से बात कर लेंगे।

मुझसे बात कर लेंगे?—यासीन ने और भी तैश में कहा।

—हाँ, मुझसे कहते हैं कि मियाँ तुम बुड्ढे हो गये अब जाकर हज्ज करो, जमाना बदल गया है। अब यासीन मियाँ और हम भाई-भाई हो चुके हैं।

यासीन ने हबीब की बात को बीच ही में काटते हुए क्रोध के आवेश में कहा—कौन भाई-भाई हो गये हैं? मैं सैयद यासीन और ये कफनखसोट और कसाई? इन दो महीनों से ये हरामजादे बहुत

सर पर चढ़ गये हैं। जब देखो मेरे पास चले आते हैं, मियाँ यह चाहिये, वह चाहिये मानों हम इन्हीं की हमजोली के हैं··· । इसके अलावा तरह-तरह के बहानों से चन्दा लेने आते हैं, आज अंजुमन-मिल्लत, तो कल अंजुमन तरक्की उर्दू, एक न एक लगा ही रहता है, परेशान हो गया।

हबीब ने देखा कि यासीन एकदम आपे से बाहर हो रहा है, उसने जरा और उसके क्रोध में घी झोंकते हुए कहा—कहते हैं कि पाकिस्तान हो गया, मकान उसका है जो उसमें रहता है, दूकान दूकान वाले की है।

—उनके बाबा का सर, हरामजादे कहीं के। पाकिस्तान ? क्या पाकिस्तान के यही माने हैं ? पाकिस्तान में अमीर-गरीब रहेंगे, पाकिस्तान में बड़े-छोटे रहेंगे, अलहज़रत खुद मियार थे, पर उनके ज़माने में भी छोटे-बड़े अमीर-गरीब थे। जो कुदरत से है उसे कैसे मिटाया जा सकता है ?

—तो जैसा मियाँ कहें वैसा करूँ।

—और क्या करियेगा। वकील के ज़रिये नोटिस देकर दूकानों और मकानों को खाली करा लीजिये और जरूरत पड़ने पर कुर्की करवाइये !

—अच्छा तो यही होगा। बड़े मियाँ का जमाना होता तो अभी बुलाकर हरेक को पचास-पचास जूते लगाये जाते—हबीब ने पिछली बातें याद करते हुये एक गहरी साँस ली। और सलाम करके चल दिया।

हबीब कोई चार कदम गया था कि कुछ सोचकर यासीन ने उसे बुलाया—हबीब मियाँ ! हबीब मियाँ ! जरा सुनिये।

हबीब लौट आया। यासीन ने पहले का लहजा बदलकर नम्रता के साथ कहा—अभी नालिश न कीजिये। एक दफ़ा सबको बुलवा

दीजिये, समझा कर देखूँ—उसके बाद जैसे अपने लहजे को बदलने के लिये सफाई देते हुए कहा—जमाना बदल गया है, देखें इन कमीन लोगों को समझाकर काम निकलता है या नहीं। कम-से-कम एक कोशिश तो की जाय।

समझा-बुझाकर काम करना हबीब के पचास वर्षों के कर्म जीवन, नीति तथा धर्म की धारणा के विरुद्ध था, इसलिये उसने यासीन को जरा तिरछी निगाह से देखा। पर यासीन को अपनी राय पर डटा हुआ देखकर बोला—शाम को हाजिर करूँगा—और चला गया।

हबीब सीधा जाकर दूकान वालों के पास पहुँचा और एक पचमेल की दूकान के सामने जाकर कुर्सी पर धम से बैठ गया। दूकानदार ने बूढ़े को देखते ही नाक सिकोड़ दी, पर मुँह से कहा—आइये बड़े मियाँ।

स्वागत की कोई जरूरत न समझकर हबीब तो पहिले ही डट गया था। चेहरे को गम्भीर बनाकर दाढ़ी को उँगली से खोदते हुए हबीब मियाँ ने कहा—अख्तर, सब खैरियत तो है?

—सब आपकी मेहरबानी है।

—हाँ, यह तो बताओ कि उस मामले में क्या हुआ?

अख्तर अच्छी तरह समझ गया कि किस विषय का जिक्र है। लेकिन बोला—कौन-सा मामला?

—अजी मियाँ बनो मत, वही जिसके लिये बीसियों बार दौड़ चुका।

—कह तो दिया बड़े मियाँ कि आजकल रोजगार ठीक नहीं चल रहा है, दो महीने से कौड़ी की आमदनी नहीं है, बाल-बच्चेदार आदमी हूँ।

—यह सब बहुत सुन चुका। लड़ाई के जमाने में अमीर ही कौन है। किसी तरह काम चल रहा है। खैर इन फजूल बातों को जाने दो।

तुमसे दो महीने का १४) रु० किराये चाहिये। अभी सिर्फ १०) रु० ही दे दो, चार अगले महीने में दे देना।

—कह तो दिया बड़े मियाँ कि अभी एक रुपया भी नहीं दे सकता।

बुड्ढा क्रोध से काँपने लगा। उसकी सफेद दाढ़ी थर-थराने लगी। उठकर खड़े होते हुए उसने कहा—तो आज ही दूकान खाली कर दो।

—यह बात मीर साहब से होगी। आप जायँ—गुस्से में अख्तर ने कहा।

—मीर साहब से होगी? मैं किस मर्ज की दवा हूँ? निष्फल क्रोध में हबीब ने कहा। वह सोच रहा था कि यह होता क्या जा रहा है। ये लोग सब सीधे मीर साहब से बात करना चाहते हैं, और पहले के जमाने में ये और इनके बाप उसे मौके-बे-मौके चवन्नी-अठन्नी पान खाने के लिये देते थे, ईद-बकरीद में छोटी-मोटी चीजें देते थे जिससे कि मीर साहब से बात करने की नौबत न आवे। पर इसमें मालिक की भी गलती है। उसका सारा क्रोध अकस्मात् मालिक पर जा पड़ा। मालिक कमजोरी दिखाते हैं, तभी तो ये साले गुस्ताख होते जा रहे हैं। बूढ़े की दाढ़ी बार-बार हिलने लगी।

अख्तर दूकान की चीजों की धूल पोंछते हुए लापरवाही से बोला—यह कौन कहता है कि आप कोई नहीं हैं? पर मालिक-मालिक ही हैं। उनके साथ हमारा जो रिश्ता है उसे आप कैसे समझेंगे? जब दङ्गा हो रहा था तो आप गठिया से चारपाई पर पड़े थे, उस वक्त हम ही लोग तो उनके काम आये।

बुड्ढे ने देखा कि तर्क से कोई फायदा नहीं। इसलिये अपने अन्तिम बाण को छोड़ते हुए कहा—अच्छा तो मालिक से ही बात कर लेना, आज दीयाबत्ती के पहले बुलाया है, जरूर आ जाना, भूलना मत।

अख्तर इतनी देर तक बड़ी-बड़ी बातें हाँक रहा था कि मीर साहब से बात कर लेगा, मीर साहब के साथ नया सम्बन्ध स्थापित हुआ है, पर ज्यों ही उसने सुना कि मालिक ने बुलाया है, उसे कुछ अज्ञात भय का अनुभव होने लगा। हबीब चला गया, पर अख्तर का चेहरा गम्भीर बना रहा। ऐसा मालूम होने लगा कि मालिक अगर न बुलाते तो अच्छा था, चौदह रुपये ही तो हैं, दे देते तो अच्छा रहता। अख्तर ने जब गहराई के साथ सोचा तो देखा कि भय का कोई कारण नहीं। वह अपनी दूकान करता है, किसी के बाप का नौकर नहीं है, अठन्नी रुपया जो कुछ पाता है, उससे मुश्किल से बाल-बच्चों का पेट पालता है, एक लड़का को हाई स्कूल में पढ़ाता है, अगर खुदा ने चाहा तो उसे अलीगढ़ पढ़ने भेजेगा। उसे काहे का डर है? पर इस प्रकार तर्क करते हुए भी भय ने उसकी बुद्धि तथा चित्त में आसन जमा लिया।

उधर वृद्ध हबीब दूकान-दूकान में यही सन्देश पहुँचाता गया। कहीं पर उसने दूकानदार का अपमान किया, कहीं दूकानदार ने उसका अपमान किया, कहीं-कहीं जहाँ दूकानदार नई पुश्त के नहीं बल्कि पुराने लोग थे उन्होंने मामले को गम्भीर होते देखकर किराया दे दिया। इस प्रकार घण्टे भर घूमकर हबीब मियाँ निसार की गोश्त-वाली दूकान पर पहुँचे। एक कटी हुई गाय दूकान के बीच में झूल रही थी। निसार कीमा कूटने में लगा हुआ था।

बूढ़े को देखते ही निसार तैश में आ गया। अभी कल ही तो उसने कहा था कि किराया नहीं है और फिर आज आ गया। यह बुड्ढा बड़ा पाजी है। कीमा कूटना बन्द करके उसने आँखें तरेरते हुए कहा—आज फिर आ गये?

बूढ़े ने बड़े-बड़े बदमाश किरायेदारों को ठीक किया था। वह दबने वाला नहीं था, फिर लड़ाई के लिये कमर कसकर आया था, बोला—क्या तुम्हारा इलाका है? किराया लेने आया हूँ।

निसार ने हबीब को लाल-लाल आँखों से देखकर इस तरह कहा मानो हबीब भीख माँगने आया हो—जा, जा, एक दफा कह दिया कि किराया नहीं है।

—नहीं है, कहने से नहीं चलेगा। तुम्हारे बाप की दूकान है? किराया नहीं है तो दूकान छोड़ दो, तुम तीन देते हो तो दूसरा साढ़े तीन देगा......

मामूली हालत में ऐसे मौकों पर इस तरह से बाप का उल्लेख करना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। ये लोग हमेशा से सहते भी आ रहे थे, पर विगत दङ्गे में निसार ने जो-जो बहादुरी की थी, उससे उसका आत्म-ज्ञान कुछ दूसरे तरीके का हो गया था। वह कीमा काटनेवाली छुरी छोड़कर खड़ा हो गया, और बोला—अगर मेरे बाप की नहीं है, तो यह दूकान तुम्हारे बाप की भी नहीं है। तुम क्या आये हो बीच में मियाँमिट्ठू बनने। समझ रहे हो कि कोई बड़े सिकन्दर हो।

—सिकन्दर कैसा बे। किसकी हिम्मत है कि मुझे नहीं मानेगा? तू तो उसी फैजुद्दी का लड़का है जिसे मीर साहब एक मुकदमें में चालान कर रहे थे। आखिर मेरे हाथ-पैर जोड़े कि बचाओ मियाँ, तब मैंने मेहरबानी करके छुड़वाया कि बालबच्चेदार आदमी है, मर जायगा। तू अभी कल का लौंडा है, तेरी क्या मजाल है जो मुझसे जबान चलाये।

फैजुद्दी की बात सही थी। तीस साल पहले की बात है जब निसार का जन्म नहीं हुआ था। हिन्दू मुहल्ले से एक बछड़ा इधर चरने आया था।। फैजुद्दी ने उसे पकड़ कर काट डाला और बेच दिया। क्योंकि मुहल्ले के लोग जानते थे पुलिस को भी मालूम हो गया। फैजुद्दी ने पुलिस को बीस और हबीब को भी पाँच रुपये घूँस दिये तब कहीं उसकी जान बची। सुनी सुनाई निसार भी यह बात सुन चुका था और मुहल्ले के तो सभी लोग जानते थे।

निसार का क्रोध और भी बढ़ता। पर इस बात के उल्लेख से वह कुछ नरम पड़ा, बोला—मियाँ वह जमाने लद गये। अब घूँस लेने वालों का कीमा कर दिया जायगा।—कूटे हुये कीमे की तरफ इशारा करते हुये उसने कहा।

बूढ़ा दबनेवाला नहीं था। बोला—कोई साला घूस यों थोड़े ही देता है, सौ बार अटकती है तब देता है। चोरी में पकड़ा जायगा तो घूस नहीं देगा तो क्या करेगा? घूस लेना तो ऐसे आदमी पर मेहरबानी करना है, नहीं तो चक्की पीसनी पड़ती।

निसार को अकस्मात् क्रोध आ गया। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई उसके स्वर्गीय पिता का अपमान कर रहा है। वह एकाएक दूकान से नीचे कूद पड़ा, बूढ़े के पास जाकर बोला—कहता हूँ चले जाओ, नहीं तो आज तुम ही रहोगे या मैं।

शोरगुल सुनकर कई आदमी आ गये थे। हाथा-पाई की नौबत देखकर उन्होंने निसार को पकड़ना चाहा।

उधर बूढ़े ने आगन्तुक को सम्बोधन करते हुए कहा—छोड़ दीजिये साहब इनको। बड़े मारते खाँ हैं। उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। यह कोई अंधेर नगरी थोड़े ही है। दो-चार हिन्दू देहातियों को मार लिया तो बहुत शेर हो गये, मुझ पर हाथ उठाये तो अभी बड़े घर भिजवा दूँगा। बाप जिससे बच गया, लड़के को वहीं भिजवाऊँगा। आगन्तुकों ने देखा कि मामला कुछ पेचदार हो रहा है। वे बेवकूफों की तरह हाँ हाँ करने लगे जैसा ऐसे समय लोग किया करते हैं। उन लोगों ने निसार को नहीं छोड़ा, पर बाप और जेल की बात सुनकर निसार लोगों का हाथ छुड़ाकर बुड्ढे पर कूद पड़ा और उसके मुँह पर एक तमाचा कस दिया। बुड्ढा एक कदम पीछे हट गया।

इस बीच में सबों ने दोनों को अच्छी तरह पकड़ लिया। उन्होंने

निसार को दूकान में बैठा दिया और बूढ़े से कहा—जाइये यह ज़रा गँवार है, आप बुज़ुर्ग होकर इसके मुँह न लगिये।

जहाँ पर तमाचा लगा था वहाँ हाथ से मलते हुए हबीब ने कहा—खूनी कहीं का, कैसे मारा यह तो आपलोगों ने देखा। इसके बाप को मैंने बछड़े की चोरी के मामले में बचाया था, और इतनी मजाल कि इसने मुझे मारा, न बुज़ुर्गी का ख्याल रक्खा, न सफ़ेद दाढ़ी का। चार देहातियों को मारकर शेर हो गया है।

वहाँ जो लोग इकट्ठे थे सब मुहल्ले के ही मुसलमान थे। तमाचा पड़ने से सबको बुढढ़े से सहानुभूति हो गई थी। हज़ार बदमाश हो पर बुड्ढा तो था। फिर भी जब हबीब ने बार-बार हिन्दुओं को मारने की बात कही तो सब लोग नाराज़ हो गये क्योंकि दंगे में कुछ न कुछ हाथ सभी का था। एक ने कहा भी—आप तो, जनाब, बराबर बाप को खींच रहे हैं, ऐसी हालत में किसे गुस्सा न आयेगा। अपनी इज़्ज़त रखने से रहती है। आप जब जानते हैं कि वह बदमिज़ाज है तो इस तरह मुँहज़ोरी नहीं करनी चाहिये थी।

जब दो पक्ष लड़ते हैं, तो खाम-ख्वाह तीसरे पक्ष को उपदेश देने का मौका मिल जाता है, और दोनों पक्षों को वह उपदेश सुनना ही पड़ता है। हबीब तजर्बेकार आदमी था, समझ गया कि हवा बदल गई है, फिर भी कारिन्दा था। अपनी ग़लती ऐसे नहीं मान सकता था, बोला—कौन मुँहज़ोरी कर रहा है, मैं?

बग़ल का दूकानदार जिसका दो महीने का किराया बाकी था बोला—हाँ आप कर रहे हैं। मैं तो शुरू से सब सुन रहा हूँ। आपने ही उसे छेड़ा!

—क्या किराया माँगना छेड़ना है?—हबीब ने अपना पारा ज़रा ऊपर चढ़ाते हुए कहा।

—हाँ जब आपसे बार-बार कहा गया कि हम लोगों के हाथ में पैसा नहीं है तब आप उसी बात को क्यों दोहराते हैं? यासीन मियाँ तो राजा आदमी हैं, हम लोगों से दो चार महीने का किराया नहीं लिया तो उनका क्या आता जाता है? एक तो लड़ाई का जमाना है, तरह-तरह के टैक्स और कन्ट्रोल हैं, तिस पर यह दंगा शुरू हो गया, बहुत से लोग बिल्कुल बरबाद हो गये हैं।

बूढ़े हबीब ने देखा कि सब एक तरफ हैं, उसको बुरा कह रहे हैं और यासीन को भला। इसलिये उसने आत्मरक्षा के लिये कहा—क्या आप समझते हैं मैं किराया माँगने यों ही अपने से चल देता हूँ? जब मुझे भेजा जाता है तभी आता हूँ।

—कौन भेजता है?—उस दूकानदार ने पूछा।

—मालिक भेजते हैं और कौन भेज सकता है? नहीं तो आपने मेरा क्या बिगाड़ा है कि मैं बराबर आऊँ। मैं तो रुपये का नौकर हूँ।

दूकानदार ने ज़रा सोचा पर उसे जैसे पूरा विश्वास नहीं हुआ। सिर हिलाकर बोला—आप उन्हें ठीक तरह से हमारी हालत नहीं समझाते इसीलिये वह भेजते हैं। वह यह थोड़े ही जानते हैं कि हममें से कईयों के घरों में फाका हो रहा है।

भीड़ से एक आदमी ने कहा—हबीब मियाँ अगर आप समझते तो ऐसी नौबत नहीं आती।—इसके बाद एकत्रित भीड़ की ओर ताकते हुए उसने कहा—इन बीच वालों ने ही सब सत्यानाश कर रक्खा है नहीं तो यासीन मियाँ ऐसे थोड़े ही हैं। इस्लाम पर उनकी कितनी मुहब्बत है यह तो सब को मालूम है। क्या वह कुछ रुपयों के लिये हम सब को मकान से निकाल देंगे? यह नहीं मान सकता।

बूढ़े ने देखा यहाँ उसकी दाल नहीं गलेगी। कुछ आधे भूखे और अधनंगे लोगों की आँखें उसकी सफेद पोशी, तोंद तथा अच्छी तरह कंघी की हुई दाढ़ी की ओर घूर रही थी मानों वे आँखें कह रही थीं

कि यही वह आदमी है जिसके लिये हम लोग तिल तिल कर जान दे रहे हैं। उसने देखा कि अब यहाँ रहना ठीक नहीं, कौन जाने क्या हो।

वह चोर की तरह भीड़ से निकल गया। आज उसके मन में वह भय आया जो चालीस साल की नौकरी में कभी नहीं आया था। इस तरह की आँखें बनाकर कभी किसी ने उसको नहीं घूरा था। ये कौन लोग हैं? ये लोग क्या चाहते हैं? इनके पाकिस्तान से तो पहले का ज़माना कहीं अच्छा था।

२४

हबीब मियाँ तो चले गये पर इस तरफ के मकानों और दूकानों में चहल पहल पैदा हो गई। एक के बाद एक बाईस मकान थे। बाईस मकानों में गली के अंदर जो दस मकान पड़ते थे वे खपरैल के थे, बाकी सब पक्के थे। ज्यादातर मकान दो मंजिले थे पर कुछ मकान तिमंजिले भी थे। कबूतरखानों की तरह अलग-अलग कोठरियों में एक-एक मकान में लगभग दस-दस परिवार थे।

मालिक ने सबको पुकारा है, सुनकर वह लोग सन्नाटे में आ गये। अब क्या किया जाय।

एक किरायेदार ने कहा—सब लोगों के जाने की क्या जरूरत है? दो-चार आदमियों को नुमाईंदा बनाकर भेज दिया जाय, सब ठीक कर आयेंगे।

पर कौन जाय इस बात को लेकर बड़ी परेशानी हुई। ठीक जिस वक्त मालिक ने बुलाया था, उस वक्त हरेक का कोई न कोई जरूरी काम निकल आया। अन्त में यही तय हुआ कि निसार और उसके

दो-तीन साथियों को मीर साहब के घर भेजा जाय। निसार ने इस पर आपत्ति करते हुए कहा—भई देखो, मैं खुशामद नहीं कर सकता। मुझे भेज रहे हो पर काम बिगड़ जाय तो फिर बुरा न बताना।

मुहल्ले के एक आदमी ने कहा—अमाँ तुम्हें खुशामद करने को कौन कह रहा है। सब बातें साफ-साफ कहना लेकिन यह नहीं कि हाथापाई कर बैठो।

—नहीं, हाथापाई क्यों करने लगा? उस खूसट ने तो सवेरे से शाम तक तंग कर रक्खा था, फिर माँ-बाप पर उतर आया, इसलिये गुस्सा आया और एक तमाचा जमा दिया।

इस सम्बन्ध में सब की राय एक थी। इनमें से किसी ने हबीब की तरफ से बात नहीं की थी, फिर ये लोग सभी आड़ में हबीब को खूसट और तरह-तरह की गालियों से याद करते थे।

निसार कहता गया—यासीन मियाँ की बात और है। उनको खुदा ने जैसी दौलत दी है वैसे ही उनमें शराफत कूट-कूट कर भरी है। पहले दूर से देखा करता था, समझता था कि बड़े आदमी हैं, न मालूम कैसा मिजाज होगा, पर उन दिनों देखा कि आदमी हो तो ऐसा हो।

—और नहीं क्या? इस्लाम के लिये सब कुछ कुर्बान करने के लिये तैयार हैं। सुना है अब की बार असेम्बली के लिये खड़े होने वाले हैं, हम सब उन्हीं को वोट देंगे।

नतीजा यह हुआ कि सर्व सम्मति से और सबकी शुभेच्छा की सौगात लेकर शाम को निसार, तैयब, करीम और याकूब रवाना हो गये।

निसार यासीन के मकान से अच्छी तरह परिचित था। वह सीधा मकान में जाने लगा।

एक दरवान ने उन सबको रोकते हुए कहा—हैं, हैं, कहाँ जाता है ?

निसार ने निडर होकर उत्तर दिया—जा कहाँ रहे हैं ? मीर साहब के यहाँ जा रहे हैं।

यह दरवान बिल्लोची था। हाल में यासीन की ही एक मिल से आया था। निसार ने उसको कभी नहीं देखा था, बोला—तुम अभी नये आये हो, मैं तो मीर साहब का खास मिलने वाला हूँ।

—खास मिलने वाले हो, मैं कब कहता हूँ नहीं हो, पर उस बेंच पर बैठो—कहकर उसने एक बेंच की ओर इशारा किया।

तैयब ने कहा—मालिक ने हमें बुलाया है इसलिये आये हैं, यों ही नहीं आये।

बिलोची ने कहा—तुम्हीं लोगों ने भाड़ा नहीं दिया है, अच्छा बैठो उस बेंच पर। पुकारे जाने पर जाना। मालिक खाली नहीं हैं।

—खाली नहीं है ?—निसार ने कहा। पिछले पन्द्रह-बीस दिन से वह इस तरफ नहीं आया था, इस बीच में इतने परिवर्त्तन हो गये। वह तो अभी उस दिन तक बिना रोक-टोक के अंदर पहुँच जाता था। उसने पूछा वहाब कहाँ गया।

वह खाली नहीं हैं, अभी बैरिस्टर साहब से बात कर रहे हैं।

बिलोची दरवान रास्ता रोककर खड़ा था, इसलिये सबको बेंच पर बैठना पड़ा। निसार जिस प्रकार आत्म विश्वास और लापरवाही से इस मकान में दाखिल हुआ था, वह इस समय तक घटने लगी थी।

वे लोग बेंच पर बैठकर बिलोची के सम्बन्ध में आपस में कानाफूसी करने लगे। निसार ने बिलोची का चौड़ा कंधा, गठा हुआ बदन,

विशाल वक्षस्थल, सुन्दर कठोर चेहरा देखकर आनन्द से गद्गद् होते हुए कहा—मुसलमान है......

—हाँ—चारों में आनन्द फैल गया।

तैयब ने कहा—सुनते हैं बिलोची शिया होते हैं।

तीनों ने नाक चढ़ा ली, करीम ने कहा—वही न जो लोग मुर्दों को आँतों के धोवन के पानी को छिड़क कर मेहमान को खाना खिलाते हैं !

याकूब कहीं ज्ञान के क्षेत्र में करीम से पीछे न रह जाय, इसलिये उसने जल्दी में कहा—इन लोगों में एक त्योहार होता है ईदेरादार, जब मर्द और औरत आँख में पट्टी बाँधकर एकत्र होते हैं, इसके बाद जो जिसके हाथ में पड़ता है, वह उसके साथ हराम करता है !

निसार ने कहा—नहीं-नहीं यह बिलोचिस्तान की बात नहीं है, ईरान की बात है। बिलोचिस्तान में तो सब सुन्नी भाई होते हैं।

तैयब ने कहा—पूछा न जाय ?

सब चुप रहे। समस्या यह थी कौन पूछे ?

निसार ने समस्या का समाधान किया, पुकारा—ए भाई

बिल्लोची ने इनकी तरफ नहीं देखा।

निसार ने फिर पुकारा—ए भैय्या......

बिल्लोची ने देखा और कर्कश आवाज में बोला—क्या मुझे बुला रहा है ?

—हाँ !

—क्या है ?

—तुम मुसलमान हो ?

बिल्लोची ने भौंहें तान दी। उसे यह हमजोलीपन का तरीका पसन्द नहीं आया। डपटकर बोला—चुप रहो, मुसलमान हैं तो क्या, जिसका नमक खाते हैं उसका हुकुम बजाते हैं।

उसके इस अप्रत्याशित उत्तर से चारों मित्र दङ्ग रह गये, व्यथित भी हुए, पर निसार ने थोड़ी देर बाद फिर पूछा—तुम कबसे हिन्दुस्तान में हो?

—पाँच साल से। तुम इन बातों को जानकर क्या करेगा? हमारे मुल्क में तो जो लोग किराया नहीं देते उनको कोड़े से मारा जाता है।......

उसने फिर दूसरी तरफ मुँह घुमा लिया। निसार सोचने लगा कि न तो इस आदमी में कुछ मजहबी ख्याल है और न गरीबों पर कुछ रहम है। मुँह से तो कहा कि मुसलमान हैं, पर इन चारों के साथ इसने ऐसा व्यवहार किया मानों वे कोई तुच्छ कीड़े-मकोड़े हों। इसकी हरेक बात में घमंड है। कहता क्या है कि कोड़े मारे जाते हैं। अच्छा मुल्क रहा!

चारों फिर चुपचाप बैठे रहे। कुछ देर बाद एक सूट बूटधारी व्यक्ति मकान से निकल गया। बैरिस्टर होगा। बिल्लोची ने अटेनशन होकर उसे सलाम किया। बेंच पर बैठे हुए चारों आदमी जब तक यह तयकर पावें कि उठकर खड़ा होना चाहिये या बैठे रहना चाहिये, वह आदमी इन लोगों को घूरता हुआ निकल गया। उसने इन लोगों को इस तरह घूरा कि वे लोग मानों बैठे ही बैठे जमीन में एक-एक इञ्च धँस गये।

दो मिनट के अन्दर भीतर से पुकार हुई।

बिल्लोची ने पुकारा—ए, चलो।

चारों चलने के लिये उठ खड़े हुए।

बिल्लोची ने कहा—नहीं, एक चलो।

निसार ने समझाकर कहा—हम लोग सब एक ही काम के लिये एक साथ आये हैं और एक साथ जायेंगे।

बिल्लोची ने कहा—नहीं हुकुम नहीं है, एक चलो—

चारो एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। अन्त में हैदर ने निसार से कहा—तुम ही जाओ।

निसार क्या करता, अकेला ही चला। इतने में उस तरफ एक बिल्लोची और खड़ा था। चौखट पार होते ही इस नये बिल्लोची ने रुखाई के साथ कहा—आओ—और बिना कुछ कहे ही जल्दी-जल्दी चलने लगा।

इस बीच में बिल्लोचियों के सम्बन्ध में उसे जो कुछ थोड़ा ज्ञान प्राप्त हुआ था उससे उसके मन में साम्प्रदायिक प्रचार कार्य के कारण जो गर्माई तैयार हुई थी वह ठंडी पड़ गई। कितने ही बार जलसों में लीगी नेताओं ने भारतवर्ष का मानचित्र खोलकर यह दिखलाया था कि पाकिस्तान किन-किन प्रान्तों को लेकर बनेगा। बिलोचिस्तान इसी पाकिस्तान का प्रान्त बताया गया था। ये बिलोची वहाँ के रहनेवाले हैं, पर इनका व्यवहार अजीब है। बातचीत का ढङ्ग तो ऐसा है कि मालूम होता है काट खायेंगे।

निसार कुछ तो डर और कुछ आशा से इस नये बिल्लोची के पीछे-पीछे चलने लगा। उस समय भी उसे आशा थी कि यामीन मियाँ के साथ बातचीत होने पर सब ठीक हो जायगा, यद्यपि घटनाओं के अनिवार्य प्रवाह ने इस आशा को बहुत कुछ मंदीभूत कर दिया था।

कमरे के अंदर कमरा और फिर उसके अंदर कमरा, इस तरह दोनों व्यक्ति चले। कम-से-कम निसार को ऐसा ही मालूम हुआ। निसार समझता था कि इस मकान के जनाने हिस्से के अलावा बाकी सब हिस्सों से वह अच्छी तरह परिचित है, पर आज उसका भ्रम दूर हो गया। इसके अतिरिक्त वह जिन कमरों में पहले आ भी चुका था, उनको आज उसने बिल्कुल दूसरे रूप में पाया। तब ये कमरे बिल्कुल खाली थे, पर अब हरेक कमरे में असबाब, गालीचे, कुर्सी, शीशा, आरामकुर्सी और न मालूम किन-किन चीजों से जिनका नाम भी नहीं

मालूम भरे थे। तब शायद दंगे के डर से ये सब चीजें भीतर भेज दी गई थीं। यहाँ पर निसार ने ज़रा गलती की। ये चीजें हिन्दू दंगाइयों के कारण नहीं बल्कि निसार की तरह लोगों से बचाने के लिये हटा दी गई थीं।

बिल्लोची आकर एक पर्देदार कमरे के दरवाजे के इधर खड़ा हो गया। पर्दा कीमती था। शायद रेशम का हो। उसमें तरह-तरह के फूल और तसवीर बनी हुई थीं।

बिल्लोची ने बड़ी इज्जत के साथ और डरते-डरते पर्दे का एक कोना जरा सा उठाकर भीतर की ओर देखा, फिर भीतर से जैसे कोई इशारा मिला हो जल्दी से पर्दा खींच दिया और उसने निसार से सामरिक ढङ्ग से कहा—आ—ओ......

निसार भीतर घुसते ही पीछे हट गया। इस कमरे की सजावट इतनी अच्छी थी, फर्श पर इतना अच्छा कालीन बिछा हुआ था कि निसार ने अपना सस्ता चमरौधा पहनकर उस पर पैर रखने की हिम्मत नहीं की, उसने जूता खोलकर भीतर प्रवेश किया। बिना गुस्से के गुस्सेवर प्रतीत होने वाला बिल्लोची जरा मुस्कराया। वह जूता पहन कर ही भीतर घुस गया और कमरे के बीच में जाकर खड़े होते हुए सामरिक ढङ्ग से यासीन को सलाम करते हुए निसार की तरफ दिखाते हुए कहा—यह है हुजूर......

यासीन एक गद्देदार आराम-कुर्सी पर बैठा था। उसके हाथ में एक लम्बा सिगार था। कमरा एक सुगन्ध से महक रहा था। यासीन ने शायद बिल्लोची की तरफ देखा भी नहीं, और सिगार को मुँह में रखकर बोला—जाओ।

बिल्लोची चला गया। निसार ने एक दृष्टि में यासीन को देख लिया। यह यासीन उन दिनों का सुपरिचित यासीन तो नहीं है। उसके विद्रोही हृदय में जो यासीन आग लगाया करता था, जिस यासीन की

एक बात पर उसने कितने असाध्य साधन किये, विपत्ति को तुच्छ समझा, मृत्यु को भी एक बार बुड़की दे दी, वह यासीन कहाँ है ! उसके हृदय में एकाएक जोर से एक ऐंठन हुई ।

फिर भी यासीन की आँखों से आँख मिलते ही उसने साहस के साथ कहा - अस्सलामालेकुम ....जैसे वे लोग हमेशा उन दिनों आपस में कहा करते थे ।

पर उन दिनों यासीन जैसे उबलकर बल्कि उछलकर इसके जवाब में वालेकुमअस्सलाम कहा करता था, आज उसने उस तरह नहीं किया, बल्कि सलाम का जवाब बिना दिये ही सिगार को मुँह से निकालकर चाँदी के ऐशट्रे में झाड़ते हुए कहा—बैठो—कहकर उसे एक गद्दीदार कुर्सी दिखा दी ।

निसार धम से बैठ तो गया, पर बैठकर उसे अजीब परेशानी होने लगी । वह मन-ही-मन जिन बातों को सोचकर आया था, उन्हें बिल्कुल भूल गया । उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया ।

यासीन ने धुवाँ छोड़ते हुए सिगार को ऐशट्रे के ऊपर रखकर रुखाई के साथ कहा—निसार, मैंने सुना है कि आज तुमने हमारे कारिन्दे को मारा है......—बातों में ऐसा कोई भी भाव नहीं था कि किसी समय भी इस आदमी के साथ यासीन की किसी प्रकार की दोस्ती थी या कभी निसार उसका लेफ्टिनेन्ट था । बल्कि बातों में एक तरह की डाँट छिपी हुई थी । निसार यह समझ न सका कि वह मारने की बात को स्वीकार करेगा या अस्वीकार, इसलिये वह चुप रह गया, पर उसके बगल से ही हबीब ने कहा—यह देखिये हुजूर, काला पड़ गया है ।

निसार ने अभी तक देखा ही नहीं था कि इस कमरे में एक आदमी और भी है, और वह आदमी भी कौन है कि हबीब ! निसार की चिन्ताएँ कुछ स्पष्ट होती जा रही थीं, इतने में हबीब को देखकर उसके

निसार ग्रौर भी अकड़ गये । सचमुच ही उसकी सफेद दाढ़ी पर एक काला दाग था ।

यासीन बात करते-करते रुक गया था, पर निसार के कुछ जवाब न देने पर उसने फिर कहना शुरू किया – कोई भी शरीफ आदमी इस बात को बर्दाश्त नहीं करेगा कि उसके भेजे हुए आदमी पर इस तरह से जिरह हो ! तुमने इनकी बुजुर्गी या सफेद दाढ़ी का भी ख्याल नहीं किया ।—इसके बाद अकस्मात् आवाज को और भी चढ़ाते हुए यासीन ने कहा—तुम जानते हो इनको मारकर तुमने किसको मारा ? तुमने मुझको मारा ।

निसार गिड़गिड़ाता हुआ बोला—आपको मारूँगा यह आप क्या कह रहे हैं—यह कहकर यासीन की तरफ देखकर उसने 'हुजूर' शब्द भी जोड़ दिया, कहा—यह क्या बात कह रहे हैं हुजूर ? ऐसा कभी हो सकता है ? तोबा ! तोबा !

—हो क्यों नहीं सकता ? आज उनको मारा है, कल मुझे मारोगे । तुम क्या समझते हो हबीब मियाँ अपने से गये थे, वह मेरे हुक्म से गये थे । तुमने उनके ऊपर हाथ उठाया, तुमने मुझ पर हाथ उठाया । इन चन्द हफ्तों में तुम लोग अपने को बहुत भूल गये हो, कोई किराया माँगने जाय तो उसे मारने दौड़ते हो ।

निसार ने देखा कि शायद आगे मौका न लगे, इसलिये बोला—हम लोगों की हालत बहुत खराब हो गई है हुजूर । लड़ाई की वजह से सब चीजें बहुत महँगी हो गई हैं, अब हम दूकान और मकान का किराया कहाँ से लावें ?

—ऐं ? किराया कहाँ से लाओ यह हम क्या जानें ? किराया दो, नहीं तो दूकान छोड़ दो, साफ इन्साफ की बात है । किराया तो देना ही पड़ेगा । चोरी करो, डाँका मारो, जो चाहे सो करो, पर किराया तो देना ही पड़ेगा ।

निसार ने देखा कि कोई आशा नहीं है, पर इतने आदमियों ने उसे अपना नुमाइन्दा बनाकर भेजा है इसकी तो एक जिम्मेदारी है। उसने कहा—हुजूर हम लोग गरीब मुसलमान हैं, अगर आप रहम नहीं करेंगे तो कौन करेगा?

—रहम तो हमने किया ही। लड़ाई के दौरान में सब जगह मकान और दूकानों का किराया बढ़ा है। पर मैंने एक पैसा भी नहीं बढ़ाया। और क्या चाहते हो कि सब बापदादों की जायदाद लुटाकर फकीरी ले लूँ?

निसार ने कहा—आप राजा आदमी हैं, अगर रहम खाकर दो-चार महीनों का किराया छोड़ दें तो आप का कुछ भी न बिगड़ेगा पर हम लोग जी जायेंगे।

दो-चार महीने का नाम सुनकर यासीन क्रुद्ध हो गया। उसकी आँखों में अकस्मात् ललाई आ गई, ओंठ काँपने लगे। बोला—अच्छा दो महीने में खुशी नहीं हुई, अब दो-चार महीने की बात है, कल ही सबको झाड़ू लगवाकर निकलवा दूँगा। मैंने किराया इसलिये नहीं बढ़ाया कि गरीब आदमी हैं, क्या किराया बढ़ाऊँ? पर उधर तुम लोग ठीक कर के बैठे हो कि किराया ही नहीं देंगे। कल ही मैं सबको निकाल दूँगा—कहकर हबीब की ओर ताकते हुए कहा—आपने कितनी ही दफा यह कहा कि किराया बढ़ाइये, पर मैंने कहा कि ये गरीब बाल-बच्चेदार लोग हैं, पर अब देखता हूँ कि आपकी ही बात ठीक थी। इन लोगों को जरा मौका दिया तो ये सिर पर चढ़ने लगे।

—मैंने तो कहा ही था हुजूर। बड़े मीर साहब के वक्त से नमक खा रहा हूँ। जो सही है उसीको कहता हूँ—गद्गद् होकर हबीब ने कहा। कुत्ते की पीठ पर हाथ फेरने से जो हालत हो जाती है, मालिक की बातों से हबीब की भी वही हालत हुई। उसके चेहरे पर एक अनिर्वचनीय तृप्ति दौड़ गई।

निसार चुप रहा। उसकी समझ ही में नहीं आ रहा था कि क्या कहे।

यासीन ने हबीब की बातों की ओर जरा भी ध्यान न देकर कहा—यही मेरी आखिरी बात है, कल दिन निकलने के पहले ही जो लोग किराया न दे देंगे उनको मकान और दूकान से निकलवा दिया जायगा। और तुमको तो हम किसी भी हालत में नहीं रक्खेंगे, तुमने हमारे आदमी को मारा है।

अकस्मात् यासीन चुप हो गया मानो कुछ याद करना चाहता था पर याद न कर सका। फिर एक सेकेंड रुककर बोला—हाँ अच्छी बात है, तुम लोग नहीं जानते हो इधर खबर पाकर पुलिस आई थी। तुम लोगों को गिरफ़्तार करने की बात कह रही थी। मैंने कहा मेरे रहते ऐसा न होगा। कप्तान साहब का एक हजार देकर तब छुट्टी हुई।

असली मामला कुछ और ही था। पुलिस यह खबर पाकर तहकीकात करने आई थी कि यासीन ही इस दंगे का सरदार था। यासीन ने तहकीकात के लिये आये हुए दारोगा को कुछ मामूली चढ़ावा दिया था। और उसके लड़के को अपनी मिल में एक नौकरी दिलाई थी, इस पर तहकीकात का रुख फेर दिया गया था। पर अपने किरायेदारों में खौफ पैदा करने के लिये और मुफ़्त में नाम कमाने के लिये यासीन झूठ बोलने से नहीं हिचकिचाया।

यासीन उठ खड़ा हुआ। खास किसी तरफ न देखकर कहा—जाओ टोले में सबसे कह दो कि पहले किराया दे दें। और तुम सब के सामने नाक रगड़कर इनसे माफी माँगो, किराया चुकता कर दो, इसके बाद मैं सोचकर देखूँगा कि तुम्हें रक्खा जाय कि नहीं।

यासीन पर्दा उठाकर पीछे की ओर जनाने में चला गया। निसार हतबुद्धि होकर बैठा रहा। नाक रगड़ना? कभी नहीं। उसका पूरा गुस्सा

हबीब पर गिरा। बिलोची ने जब उसे बुलाया तो वह हबीब की तरफ अग्निनेत्रों से घूरते हुए निकल गया।

बाहर जाते ही साथियों ने पूछा—क्या रहा ?

—बाद को बताऊँगा, चलो—कहकर निसार उनके साथ यासीन के मकान से निकल गया। उसका सारा शरीर और मन कड़वेपन से जहरीला हो गया था।

२५

मुहल्ले में जाकर निसार ने सबको यासीन का हुक्मनामा सुना दिया कि दिन निकलने के पहले ही किराया जमा कर दिया जाय नहीं तो जो लोग नहीं कर पायेंगे, उन्हें निकाल बाहर किया जायगा।

लोगों ने यह आशा लगाई थी कि कोई न कोई बढ़िया समझौता हो जायगा, पर जब उन्होंने देखा कि ऐसी कोई बात नहीं हुई तो वे गिड़गिड़ाते हुए चल दिये। बगल के उस दूकानदार ने जिसने दोपहर के समय निसार का पक्ष लेकर तर्क किया था जरा आड़ में जाकर लोगों से बोला—इसी गँवार के लिये हम सब पर आफत आई। अगर सबेरे यह उस बुड्ढे को न मारता तो मामला इतना आगे कभी नहीं बढ़ता। फिर बन गये लीडर। अब वहाँ जाकर मालिक से लड़ गये होंगे इसलिये यह हुक्म आया है नहीं तो क्या यासीन मियाँ इस तरह की बात करने वाले हैं। अब क्या होगा, किराया देना ही पड़ेगा नहीं तो बच्चे-कच्चे लेकर कहाँ जायें, यहीं तो पैदा हुए और यहीं पले।

अधिकांश लोगों की यही राय ठहरी। केवल कुछ आदमियों ने

निसार ने कहा—सारी बदमाशी इसी हरामी की है। साला कब्र पर को पाँव लटकाये बैठा है, पर अभी बदमाशी नहीं गई।

निसार ने प्रोत्साहित होकर कहा—अरे एक बात तो कहना ही भूल गया। मालिक की जबानी मालूम हुआ कि लड़ाई छिड़ते ही इस काजी ने दूकान और मकानों का किराया बढ़ाने के लिये कहा था पर मालिक राजी नहीं हुए, कहा—गरीब हैं, क्या किराया बढ़ायें?

—अच्छा यह बात है?

—हाँ मालिक ने खुद मुझे बताया।

कारीगर सभी इस विषय में एक मत हो गये कि सारी बदमाशी इस बूढ़े की है। उस दिन की तरह सब लोग अपने अपने घर चले गये।

निसार का मकान और दूकान एक ही में था। एक ही कमरा था, उसी में वह और उसका छोटा भाई रहता था। इस कमरे और दूकान को मिलाकर उसे महीने में तीन रुपये देने पड़ते थे। कोठरी का फर्श मिट्टी का था। नल, पखाना कुछ नहीं था। रास्ते के नल से पानी लाना पड़ता था। जमपुलिस में टट्टी जाना पड़ता था। कोई तकलीफ नहीं होती थी। जो इसी तकलीफ, गंदगी और गरीबी में पैदा हुआ और पला है उसे क्या तकलीफ होती? यहीं पर वे पुश्तदरपुश्त पैदा हुए, सुअर के झुंड की तरह जिये और मरे। कभी उन्होंने विद्रोह नहीं किया यहाँ तक कि सोचने की चेष्टा भी नहीं की कि क्यों यह दुर्दशा है।

निसार के भाई ने खाना पका रक्खा था। दोनों भाई खा-पीकर सो गये। चार-पाँच साल से जब फैजुद्दी मर गया खाना पकाना छोटे भाई के जिम्मे रहता था। पहले यह काम फैजुद्दी किया करता था। माँ कब मर गई यह इन्हें मालूम नहीं था। हाँ सुना था।

निसार रात रहते ही उठकर कसाईखाने में जाता है, दिन भर दूकान पर बैठता है, शाम के करीब कभी-कभी छोटा भाई भी दूकान पर बैठ जाता है। लेकिन इन दिनों अक्सर बैठता है क्योंकि निसार इधर-उधर जलसों में जाया करता है और शाम-शाम मकानों में घूमता है।

आधी रात में निसार के कराहने की आवाज सुनकर छोटे भाई शुजा ने उसे हिलाकर जगाया—भैया! भैया!

निसार छटपटाकर उठ बैठा। शुजा ने पूछा—क्या ख्वाब देख रहे थे?

—कुछ नहीं यों ही—आँखें रगड़ते हुए निसार ने कहा।

—अच्छा सो जाओ। रात ज्यादा नहीं है। शुजा फिर कम्बल लपेटकर सो गया। ठंड बहुत थी।

—भाई से तो निसार ने कह दिया कि कुछ स्वप्न नहीं देख रहा है, पर असल में वह स्वप्न ही देख रहा था। उसने देखा कि वह हबीब अहमद के पैरों के सामने नाक रगड़ रहा है। नाक जमीन में गड़ गई है और किसी प्रकार भी छूट नहीं रही और वह चिल्ला रहा था।

उसे ऐसा मालूम हुआ कि वह बहुत देर से इस स्वप्न को देख रहा था। कितना भयानक स्वप्न था। वह उस खूसट के सामने नाक रगड़ रहा है। मर जाने पर भी वह ऐसा नहीं कर सकता, उसका मन बहुत दुखी हुआ। उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि किसी प्रकार भी बूढ़े की अधीनता स्वीकार न करेगा। भले ही निकलना पड़े। भाई को लेकर जहाँ चाहेगा चला जायगा। किसी मिल में मजदूरी करने पर इससे अधिक पायेगा। नहीं तो लड़ाई में भरती हो जायगा। भर्ती करने के लिये कितने ही लोग पीछे पड़े हैं पर छोटे भाई को देखकर कहीं नहीं गया। रह गई बापदादों की निसानी सो आज यह मालूम हो गया कि जब चाहे तब उसे निकलवा दिया जा सकता है। उसके बापदादे की

निशानी कहाँ है, यह तो मकानवाले का मकान है। उसका तो कुछ भी नहीं है। फैजुद्दी इसी दूकान में हमेशा बैठता था। इसी कोठरी के किनारे पर वह मरा था। इस तरह की बहुत-सी बातें उसके मन में आने लगीं। इस स्थान से सम्बद्ध एक-एक बात उसे याद आने लगी और हृदय में एक ऐंठन-सी लगने लगी।

उस रात को उसे नींद नहीं आयी।

रोज की तरह रात में उठकर वह अपने काम में लग गया और दूकान फैलाकर बैठ गया।

दातुन हाथ में लेकर याकूब ने आकर पूछा—निसार तुमने सुना ?

उसके स्वर में आतङ्क का प्रभाव स्पष्ट था। निसार गोश्त को काटकर ठीक कर रहा था। वह मुँह उठाकर बोला—नहीं तो, क्या मामला है ?

—अच्छा—दातुन हाथ में लेते हुए पिच्च से थूक दूर फेंकते हुए याकूब ने कहा—सुना है कि ज्यादातर लोगों ने खुद जाकर किराया पहुँचा दिया।

निसार अपने हाथ का काम छोड़कर उठ खड़ा हुआ, डरते हुए कहा—क्या है ? मुझे तो यकीन नहीं हो रहा है।

—हाँ मैं भी यकीन नहीं कर रहा था पर सुनकर देखने के लिये गया। अपनी आँखों से देख आया कि हबीब मियाँ के मकान के सामने भीड़ जमा है। सुना है कि हबीब ने किसी-किसी को धमकी देकर निकाल दिया है कि उसका किराया जमा नहीं किया जायगा।

—साला कुछ बुरा चाहता होगा।

—कौन जाने—रुककर याकूब बोला—सुनते हैं कि उनसे कहा है कि जिस वक्त निसार मुझ पर लपका, उस वक्त तुम लोगों ने उसी की ओर ली थी, अब देखूँगा कौन तुम्हें बचाता है।

निसार का चेहरा और भी गम्भीर हो गया, बोला—तो वह क्या बोले ?

—वह क्या बोलते ? तुम्हें कोसने लगे और हबीब की खुशामद करने लगे।

—साले डरपोक, ये लोग क्या इस्लाम और पाकिस्तान की बात कहा करते हैं ?

याकूब चुप रहा।

निसार ने एकाएक पूछा—तुमने किराया दे दिया ?

—नहीं।

—ऐसे कितने हैं ?

—पाँच छः आदमी होंगे।

—एक सौ दो किरायदारों में सिर्फ पाँच छः ?—आश्चर्य के साथ निसार ने कहा। उसकी दोनों आँखें भयङ्कर घृणा और क्रोध से जल रही थीं, उसने दृढ़ता से कहा—मैं तो किसी भी हालत में किराया न दूँगा। जान जाय तो भी परवाह नहीं।

याकूब ने फिर दतौन करना शुरू कर दिया, बोला—जान जाती तो अच्छी बात थी, पर जायगी इज्जत और रहने की जगह।

याकूब निसार की उम्र का था। दो साल से देहात से इस शहर में भाग्यान्वेषण के लिये आया था लेकिन खुशी से नहीं। बाप के मर जाने के बाद जमींनदार के साथ मिलकर उसके चाचा ने पैतृक जमीन को हड़प लिया था इसीलिये उसे यहाँ आना पड़ा। एक छोटी सी कोठरी लेकर रहता है जिसका किराया डेढ़ रुपया है। मिल में मजदूरी करता है। इसी उम्र में ही उसने जीवन को निराशावाद के चश्मों के अन्दर से देखना सीखा है। विगत दंगे में निसार के साथ बराबर 'काम' करता था।

अपने जीवन के सम्बन्ध में निराशावादी दृष्टिकोण होने पर भी

वह अपनी कोठरी छोड़ने से डरता नहीं था। दातुन हाथ में लेकर फिर पिच्च से थूकते हुए उसने कहा—जाय तो चला जायगा। मुझे क्या डर है, इस कोठरी को छोड़कर कहीं और चला जाऊँगा। ज्यादा से ज्यादा डेढ़ की जगह दो लगेगा।

पर निसार चीजों को इस प्रकार के दृष्टिकोण से नहीं देखता था। इस दूकान और कोठरी के साथ उसकी नाड़ी का अच्छेद्य सम्बन्ध था। उसने कहा—नहीं तो क्या, मर्द की बात और हाथी का दाँत। कभी भी इधर से उधर नहीं हो सकता।

दोनों चुप हो गये। इतने में एक आदमी दूकान में आया। याकूब यह समझ कर कि कोई ग्राहक आया है जरा हटकर दतौन करने लगा।

आगुन्तक ने कहा—निसार!

—हाँ।

—मेरी गाय का दाम आज चुकता कर दो।

—शाम को दूँगा। आज तो अभी बोहनी भी नहीं हुई।

आगन्तुक का नाम वजीर था। इधर उधर से अधमरी बूढ़ी गायों को बटोरकर कसाइयों के हाथ बेचा करता था। कहा—नहीं भाई, बहुत जरूरत है।

निसार ने क्रोध में कहा—कह दिया कि शाम तक दूँगा, कभी बाकी भी रक्खा है?

कुछ हिचकिचाते हुए वजीर ने कहा—बाकी तो नहीं रक्खा, पर......

कुछ कहना चाहता था पर अटक गया।

—पर क्या, साफ-साफ तो कहो—निसार ने कहा।

—सच कहूँ?—आँख से आँख मिलाकर वजीर ने कहा। उसकी दृष्टि कुछ बोझिल थी।

—हाँ सच बात कहो। डर किस बात का ?

—कह यह रहा था कि मैं तो दुकानदार आदमी ठहरा; कुछ तो सब तरफ देखकर चलना पड़ता है। एक मास का भी दाम मारा गया तो मैं तो मर जाऊँगा।

निसार ने व्यथित कण्ठ स्वर में कहा—तो तुम्हारा क्या मास मारा जा रहा है ? मियाँ कुछ माँग-ताँग तो रहे हैं क्या ?

—नहीं यह बात नहीं, रुपया कोई नहीं मार रहा है पर अभी सुना है कि तुमको दुकान से निकाल रहे हैं, इसलिये कहा......

—क्या सुना ?—निसार ने इस प्रकार से यह प्रश्न किया मानों यह उसके दिमाग में आ था पर वह इस पर विश्वास नहीं करता था।

—सुना है कि तुम्हारी दुकान खाली कराकर फकीरा को दे रहे हैं।

—फकीरा कौन ?—निसार ने भौंहें तान दीं, तो मामला इतना बढ़ गया।

—हमारे मुहल्ले का एक कसाई है। लड़ाई में खच्चर कोर (Corpse) में गया था। पैर में बम का टुकड़ा लग जाने से लङ्गड़ा होकर लौटा है। अब दुकान करेगा। दारोगा जी ने उसके लिये यासीन मियाँ से सिफारिश की है और यासीन मियाँ ने यह मामला हबीब के सुपुर्द किया है।

निसार यह सुनकर दङ्ग रह गया। इतना दूर तक षड़यन्त्र हो गया ? इसमें दारोगा है, यासीन है और वह हरामजादा हबीब भी। हबीब को यासीन मियाँ ने यह थोड़े ही कहा होगा कि निसार की दुकान को खाली करवा लो पर हबीब अपनी तरफ से खैरख्वाही दिखला रहा है। न मालूम कहाँ का फकीरा है, उसके लिये हबीब को इतना दर्द ? हबीब एक ही तीर से दो शिकार करना चाहता है। एक तो दरोगाजी को खुश कर खैरख्वाह बनना चाहता है, दूसरा मुझे-बे-घर द्वार कर देना

चाहता है। किसी के बाप दादों की निशानी मिटी जाती हो इससे हबीब को क्या ?

निसार सारी परिस्थिति को समझ गया। इतने प्रबल शत्रुओं के षड़यन्त्र से बचकर निकलना मुश्किल है। फिर भी बोला—अरे मियाँ, यह सब हबीब मियाँ की बदमाशी है, मुझे इस दूकान से कौन निकाल सकता है ?

वजीर ने निसार के आशावाद को लड़कपन समझा, फिर भी मुँह से कुछ न बोला, सिर्फ बोला—हाँ देखो हमारे रुपये न मारे जायँ, नहीं तो मैं बाल बच्चेदार आदमी मर जाऊँगा।

—मर कैसे जाओगे ?—कहकर कुछ सोचते सोचते चर्बी से लिपटी हुई लकड़ी के बक्स को खोला और उसमें से एक रुपये के पाँच नोट निकालकर देते हुए कहा—लो, बाकी का हिसाब होता रहेगा।

वजीर ने इतनी उम्मीद नहीं की थी। वह खुश होकर चला गया।

याकूब फिर पास चला आया। निसार ने कहा—सुना तुमने ?

—हाँ, हम लोगों की सब तरह से मौत है। दंगे की वजह से सात दिन तक मिल में न जा सका, पर फिर भी मकान का किराया देना पड़ेगा।

निसार ने कहा—उसी साले हबीब का पाजीपन है, गलत-सलत समझाता रहता है।

पिच्च से दूर थूकते हुए याकूब ने कहा—फजूल बात है।

—क्या फजूल बात है ?

—यह जो तुमने कहा कि सारी बदमाशी हबीब की है। सारी बदमाशी तो मकान वाले की है।

—किसकी ? यासीन मियाँ की ?—अभी तक निसार इतनी दूर तक जाने के लिये राजी न था, इसलिये जरा हिचका।

—हाँ और किसकी ? हम लोग भी ऐसा ही समझा करते थे कि फोरमैन की गलती है और जमादार की गलती है, पर ठोकर खाते-खाते समझ गये कि गलती उनकी नहीं है......

याकूब दतौन कर चुका था। बोला—लो अब चलता हूँ, मौका लगेगा तो फिर आऊँगा।

निसार रोज की तरह अपना काम करने लगा। रोज की तरह दूकान चलने लगी। जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

दिन को ग्यारह बजे के समय पक्की सड़क पर एकाएक एक सनसनी-सी मालूम हुई। निसार ने मुँह निकालकर देखा कि आगे-आगे हवीब है और उसके पीछे-पीछे पतली लाठी लिये हुए छः सात विलोची हैं। उनके पीछे चार सिपाही हैं और एक भीड़ है जो बढ़ती ही जा रही है।

निसार ने मन ही मन तयकर लिया कि ये बिलोची उसी के तरफ आ रहे हैं। उसकी दृष्टि में सारी पृथ्वी का रङ्ग बदल गया। ऐसा मालूम हुआ कि उसके सामने यह जगत बड़े जोर से घूम रहा है। उसने जल्दी से दूकान की दीवार पकड़ ली और तुरन्त सम्हल गया। निसार डरपोक नहीं था बल्कि हिम्मती था, पर इस तरह की विपत्ति की वह कभी उम्मीद नहीं करता था। अगर दस हिन्दू आकर उसे मारते-पीटते यहाँ तक कि मार डालते, वह इसे सह सकता था, पर इस तरह से मुसलमान भाई के हाथों उसका कारण निग्रह होगा, यह सम्पूर्णरूप से आशातीत था। इसलिये उसे भयंकर आघात पहुँचा।

विपत्ति को सरपर देखकर उसे स्वागत करने की प्रवृत्ति नहीं हुई। वह फिर दूकान में बैठकर अपना काम करने लगा। खट खट खट खट, फिर कीमा कूटने लगा।

पर यह क्या ? अकस्मात् निसार ने देखा वह भीड़ उसकी दूकान के सामने से आगे बढ़ गई। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ।

हाँ यह क्या है हबीब अहमद, उसके पीछे वे बिलोची और पुलिस वाले। निसार ने उठकर देखा कि वे जा रहे हैं। सब की पीठ दिखाई पड़ रही थी। निसार का मन बिना कारण ही प्रफुल्लित हो गया। अभी सबेरे ही तो याकूब कह रहा था कि यासीन मियाँ की बदमाशी है, पर यह थोड़े ही हो सकता है। यह हबीब, चाहे जितनी चुगलखोरी और मुखबिरी करे, पर यासीन मियाँ किसी को सड़क पर थोड़े ही खेद सकते हैं? कभी नहीं। रह गई थोड़ी बहुत डाँट डपट, सो उसके बिना काम थोड़े ही चलता है? हबीब ने इतनी बदमाशी की, पर कुछ कर थोड़े ही पाया। इन गन्दे बिलोचियों का (इस बीच में बिलोचियों के सम्बन्ध में निसार की धारणा बदल गई थी) स्वाँग रचा कर हबीब मियाँ अपना प्रताप दिखला गये। उसका मन यासीन के लिये आदर से भर गया। इस समय यदि यासीन सामने पड़ता तो शायद वह भक्तिपूर्वक उसके पैरों को पकड़ लेता।

हबीब और उसके साथ की भीड़ पास की एक गली में घुसी। निसार कुछ देर तक देखता रहा, फिर खुशी के साथ अपना काम करने लगा। उसके सीने पर से पसलियों को तोड़ देनेवाला एक बोझा जैसे अकस्मात् उतर गया।

पाँच मिनट के अन्दर जिस तरफ हबीब और उसके बिलोची गये थे, उस तरफ से कुछ लोग उत्तेजित होकर आपस में बातें करते हुए आ रहे थे। निसार कान खड़ेकर सुनने लगा पर साफ-साफ कुछ भी नहीं सुन पाया। उसके मन में फिर खटका पड़ गया। कोई बात जरूर हुई है। वह काम छोड़कर उठा और जो आ रहे थे उनमें से एक से पूछा—क्या मामला है जाफर? जाफरनाम से सम्बोधित व्यक्ति ने कहा—क्या हो रहा है? लूट हो रही है लूट।

—काहे की लूट—पास जाकर निसार ने पूछा।

फतेह मुहम्मद ने भाड़ा नहीं दिया था, इसलिये उसका सब सामान

मकान से निकालकर फेंका जा रहा है। सामान में जो कोई चीज़ बिलोचियों को पसन्द आती है उसे वे ले लेते हैं।......

निसार आगे सुनने के लिये न रुका। बहुत व्यग्र होकर दूकान में लौटा और दूकान के अन्दर वाली कोठरी से घर के काम में लगे हुए शुजा को पुकारा—शुजा ! शुजा !

ख़ैरियत यह थी कि शुजा था। निसार कुछ आश्वस्त हुआ। उसने आँधी की तरह जल्दी से एक छोटे बक्स और कुछ सामान को एक बड़ी पोटली में बाँध दिया, इसके बाद दूकान के लकड़ी के बक्स के सब नोट और पैसों को उडेलकर एक रूमाल में बाँधकर शुजा की जेब में डाल दिया और कहा—भागो......

शुजा ने थमाई हुई पोटली को उठाते हुए कहा—कहाँ भागूँ ?

—जाओ, जहाँ तबीयत हो जाओ। बात न करो। डकैत आये हैं। अफ़ज़ल के मकान में जाओ।

शुजा से और कुछ कहना न पड़ा, वह एक ही छलाँग में जिधर से हबीब मियाँ आये थे उधर की एक गली में घुस गया।

शुजा के चले जाने के बाद निसार ने फिर एक बार दूकान के बाहर देख लिया कि अभी कोई आ रहा है या नहीं ? फिर कोठरी में घुसा, सामने ही देखा कि उसके बाप का बहुत शौक का चाँदी के पात से मुड़ा हुआ (असल में यह जर्मन सिलवर था) छोटा फर्शी छूट गया। उसने जल्दी से उसको उठा लिया, फिर चारों तरफ ताका, फिर एकबार रास्ते की ओर देखा। अब उसने गोश्त काटने की बड़ी छुरी को भी उठा लिया और इसे तथा फर्शी को बगल के दूकानदार को देते हुए कहा—रखलो भैया लूट हो रही है।

बगल का दूकानदार पहले तो घबड़ाकर कहने जा रहा था नहीं रक्खूँगा, पर कुछ सोचकर बोला—अच्छा।

निसार दूकान में बैठकर विपत्ति की प्रतीक्षा करने लगा। उसे अब कोई भय नहीं था। भाई के हाथों सब कीमती चीज़ कपड़े तथा रुपये तो जाही चुके थे। इसलिये उसे हर्ष हो रहा था।

अधिक प्रतीक्षा भी नहीं करनी पड़ी। हबीब और उसके बिलोची जल्द ही उसकी छोटीसी दूकान को घेर कर खड़े हो गये। उसकी दूकान के सामने एक रास्ते का कुत्ता योंही हड्डी के लोभ से बैठा था। एक बिलोची ने बिना कारण ही उसपर इतने जोर की लाठी मारी कि वह कीं कीं करता हुआ भाग निकला और बड़ी देर तक कराहता रहा। शायद उसकी कोई हड्डी टूट गई थी।

बिलोचियों के साथ-साथ एक भारी भीड़ हो गई। निसार ने एक ही दृष्टि से देख लिया कि भीड़ में सब उसी के मुहल्ले के लोग थे, पर उनके चेहरों पर एक ऐसी दृष्टि थी मानों वे अब उसके कोई नहीं हैं और तमाशा देखने आये हैं।

निसार ने अपने को इस विपुल विश्व में बिलकुल अकेला पाया।

हबीब ने बिना भूमिका के ही कहा—निसार हम लोग किराया वसूल करने आये हैं।

निसार ने कहा—कल मैंने कहा तो कि कुछ नहीं है—और उसने लकड़ी के बक्से को उलट दिया। एक चवन्नी कहीं पर अटकी हुई पड़ी थी वह लुढ़ककर दूकान के बाहर चली गई। एक बिलोची ने उसे उठा कर एक बार निसार की ओर देखा, उसके बाद सबकी तरफ ताक कर जरा शर्मा गया, फिर भी चवन्नी को लिये ही रहा।

हबीब अहमद ने उस तरफ बिना ताके ही निसार से कहा—यह सब नहीं जानता, देना ही पड़ेगा नहीं तो अभी दूकान और कोठरी खाली कर दो।

—मैं यह थोड़े ही कह रहा हूँ कि किराया नहीं दूँगा। हाथ में

पैसे आने ही किराया चुका दूँगा। मियाँ दो चार दिन तो ठहर जाइये।

पर मियाँ बिलकुल नहीं ठहरे। उसने शायद बिलोचियों को कुछ इशारा दिया, वे सब एक साथ दूकान के अन्दर घुस पड़े और जिस लकड़ी पर गोश्त काटा जाता था, उससे लेकर और सब चीजों को सड़क पर फेंकने लगे।

निसार ने दो एक चीजें लोक ली और तैश में आकर बोला—मियाँ आप को इस तरह मेरे घर में घुसने का और मेरी चीजों को फेंक देने का कोई हक नहीं है। आप नालिश कीजिये, नोटिश दीजिये।

निसार कानून अच्छी तरह जानता था पर यह नहीं जानता था कि ये सब कानून भी अपेक्षाकृत तगड़े लोगों के लिये हैं। उसकी तरह असहाय के लिये कानून की किताबें केवल रद्दी कागजों का ढेर ही है। हबीब ने उसकी बात सुनकर उसकी तरफ ऐसे देखा मानो वह कोई अजीब जीव था, क्यों कि ऐसे आदमी उसे कानून का डर दिखावे यह बहुत बड़ी गुस्ताखी मालूम हुई। इसके बाद इस प्रकार निसार को देखते-देखते हबीब को बहुत क्रोध आ गया, बोला—तुम कल के लौंडे मुझे कानून पढ़ाने आये हो! मेरे बाल धूप में सफेद नहीं हुए। अच्छा, मैं तुम्हें निकाले देता हूँ। तुम मेरे विरुद्ध गैर कानूनी, बेजा मुदाखिलत का मुकदमा दायर करो, मैं देख लूँगा—कहकर उसने एक बिलोची की तरफ इशारा किया। बिलोची ने इशारा पाकर उसे पकड़ कर दूकान से बाहर निकालकर भीड़ में ढकेल दिया।

अगर निसार चाहता तो इस बिलोची से लड़ सकता था। लड़ाई में कौन जीतता मालूम नहीं। निसार शरीर से तगड़ा था, कसरती जवान था। मुहर्रम के जुलूस में वह लाठी और छुरे का जो खेल दिखलाता था वह एक देखने की वस्तु थी। पर न मालूम क्यों इस बिलोची के विरुद्ध उसने बल प्रयोग करना उचित नहीं समझा।

अपनी ही दूकान के बाहर एक राहगीर की तरह खड़े कर दिये जाने के फल स्वरूप वह कुछ देर तक हक्का-बक्का रह गया। पास ही दो सिपाही खड़े होकर तमाशा देख रहे थे। उन्हें देखकर निसार को जैसे एक बात याद आ गई। वह जल्दी उनके पास पहुँचा और बोला—सिपाही जी, देखो हमारी दूकान लूट रहे हैं।

सिपाहियों में जो अधिक उम्र का था वह बोला—तुम किराया क्यों नहीं देते ?

—इसके लिये वो हमारी दूकान लूट लेंगे, और चीजों को तोड़-ताड़ देंगे ?

—लूट काहे की, दूकान तो उन्हीं की है।

—किनकी ?

—मालिक की।

—पर मैं तो किरायेदार हूँ।

—हाँ, तुम्हें तब तक हक है जब तक तुम किराया देते हो, तुम किराया नहीं दे रहे हो इसलिये यह दूकान इस वक्त मालिक की है।

स्वयं निसार की सम्पत्ति सम्बन्धी धारणा यही थी, वह निरुत्तर हो गया, फिर भी बोला—किरायेदार को योंही जबर्दस्ती निकाल देंगे यह कोई अँधेर नगरी नहीं है। नोटिस दें, मुकदमा दायर करें।

अबकी बार सिपाही नाराज हो गया, बोला—ज्यादा बातें मत करो, अपनी औकात के अन्दर रहो, झगड़े की बात करोगे तो गिरफ्तार कर लूँगा।

निसार ने देखा कि ये सिपाही उसी को गलत समझते हैं। वह दाँत से ओठ चबा कर चुप रह गया।

वह फिर भीड़ के अन्दर मिल गया। एक जगह खड़े होकर एक दर्शक की तरह वह अपनी ही दूकान की लूट देखने लगा। उसके अन्दर का विद्रोही जैसे अकस्मात् मर गया। इसके अतिरिक्त

उसने पहले ही कागजों, बर्त्तनों, रुपयों को हटा दिया था इसलिये यह लूट का दृश्य उसके लिये बहुत कुछ सहनीय हो गया, बल्कि एक अंश तक कौतुक उत्पन्न करने वाला हो गया।

जो दो बिलोची कोठरी में घुसे थे, उन लोगों ने उसमें से कुछ अगड़म-बगड़म निकालते हुए अप्रसन्न होकर कहा—नङ्गा था, कुछ नहीं है—कहकर इन चीजों को दूकान के बाहर फेंक दिया। भीड़ पीछे हट गई, पर ज्योंही फेंकी हुई चीजें गिर पड़ी त्यों ही वह भीड़ बहुत जल्दी आगे बढ़ी और उन चीजों को लूटने लगी।

निसार चीज़ों की तरफ नहीं देख रहा था, उसने हृदय पर पत्थर बाँधकर, बहुत पहले ही दूकान की रही सही चीजों की ममता त्याग दी थी। पर भीड़ के इस असहानुभूतिपूर्ण आचरण से उसे बहुत कष्ट हुआ। इसमें अधिकांश लोग मुहल्ले टोले वाले थे। किसी प्रकार की सहायता करना तो दूर रहा, विपरीत इस अभद्र तरीके से लूट मचा रहे हैं। निसार ने अपने चारो ओर एक भी आदमी नहीं देखा जो उसके साथ सहानुभूति दिखलावे। जो लोग बहुत ही घनिष्ठ रूप से परिचित थे उन्होंने तो इस अवसर पर आँख ही नहीं मिलायी।

उसने इतनी बड़ी एक भीड़ में, अपने ही मुहल्ले में, अपनी ही दूकान के सामने अपने को अकेला, असहाय तथा परित्यक्त पाया। उसका हृदय व्यथा से स्पन्दित हो गया, बिलोचियों ने सारी दूकान में लेने लायक कोई चीज नहीं पायी। वे निराश हो गये पर अकस्मात् उनकी दृष्टि रक्खी हुई अधकटी गाय की तरफ गई। उनके मुँह में पानी भर आया। जो कुछ मिला वही सही, पर इसे काट-कूटकर कौन ठीक करेगा। इस सम्बन्ध में वे किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाये। उन लोगों ने एक बार चारो तरफ दृष्टि दौड़ाई, शायद निसार को खोजा, पर उस समय निसार भीड़ के पीछे की ओर खड़ा था। उत्साही तमाशबीन जनता ने उसे पीछे ढकेल दिया था, इसलिये बिलोची निराश होकर

असहाय की तरह उस अधकटी गाय की तरफ देखने लगे। अंत में एक बिलोची ने उसे खींचकर उतार लिया और भीड़ की तरफ फेंक दिया। अबकी बार भीड़ पीछे नहीं हटी, भीड़ के लोगों ने हाथो-हाथ उस विराट चमड़े उधड़े हुये मांस के लोथड़े को ले लिया। इसके बाद एक निमेष में न मालूम क्या हुआ। कुछ लोग बहुत जोर से दौड़े, खींचा तानी मची। शायद यह खींचातानी और दौड़ दो मिनट से अधिक स्थायी नहीं हुई, पर इसके बाद देखा गया कि उस अधकटी गाय का कहीं पता नहीं है। बहुतों के हाथ में एक-एक टुकड़ा गोश्त था। किसी के हाथ का टुकड़ा बड़ा था तो किसी के हाथ का छोटा।

जिन लोगों को गोश्त का कुछ भी हिस्सा मिला था वे चले गये। बाकी लोग अन्त तक तमाशा देखने के लिये डटे रहे पर अब तमाशा कुछ बाकी नहीं रहा था।

हबीब मियाँ ने दूकान से सब चीजों को निकलवाकर अपना ताला लगा दिया और चले गये।

साथ ही साथ भीड़ भी चली गई।

अकेला निसार ही वहाँ खड़ा रह गया। जब भीड़ हट गई तो उसने सड़क पर देखा तो उसकी कोई भी चीज पड़ी नहीं थी। हाँ जिस लकड़ी पर वह गोश्त काटा करता था वह रह गई थी। शायद जल्दी में भीड़ में से किसी व्यक्ति को यह नहीं सूझी थी कि इसे सुखा कर जलाने के काम में लाया जा सकता है। निसार ने उस चिरपरिचित लकड़ी को देखा। देखते-देखते उसका मन भयंकर घृणा और प्रतिशोध पिपासा से पूर्ण हो गया। उस लकड़ी को देखकर उसे यह भी याद हो आया कि छुरी बच गई है।

अकस्मात् उसका मन आनन्द से पूर्ण हो गया।

उसने इधर उधर देख लिया फिर बगल के दूकानवाले से कहा—लाओ भाई।

दूकानदार ने मुँह बना लिया, कुछ हिचकिचाकर चारों तरफ ताककर बोला—कोई है तो नहीं?

—नहीं—उसके बाद एकाएक कुछ जोश में आकर बोला—कोई रहे तो क्या? अपनी चीज आप ले रहे हैं किसी के बाप की चोरी तो नहीं कर रहे हैं।

दूकानदार ने जल्दी से बड़ी छुरी और फर्शा निकालते हुए कहा—हाँ यह तो ठीक है पर हबीब मियाँ को मालूम हो जाय तो बिना बदला लिये नहीं छोड़ेगा—इसी बीच में मुहल्ले भर में हबीब मियाँ का प्रताप छा गया था। जैसे हबीब मियाँ जो चाहे सो कर सकता है, मानो वह खुदा है।

निसार ने बड़ी छुरी को लेकर कपड़े के अन्दर छुपा लिया। बिना कारण ही उसे आनन्द का अनुभव हुआ। आगे बढ़ाई हुई फर्शी को लौटाते हुए निसार ने कहा—मियाँ तुम इसे मेरी याददाश्त के तौरपर रक्खो।

इसके बाद अकस्मात् घूमकर चला गया। जाने के समय उसने अपनी भूतपूर्व दूकान की ओर ताककर देखा। एक बार फैजुद्दी की बात याद आने पर उसकी आँखें कुछ नम हो आईं। नम आँखों से उसने देखा कि दूकान में हबीब मियाँ का बड़ा भारी ताला लगा हुआ है।

उसने भौंहें तान लीं और जल्दी-जल्दी चलने लगा।

—:०:—

३६

उस दिन रात को अफजल के मकान में याकूब और निसार में बातचीत हो रही थी।

याकूब ने कहा—मैं पहले ही समझ गया था कि मामला यहाँ तक आयगा। ज्यों ही मैंने देखा कि वह सूअर तुम्हारी दूकान में घुस आये त्यों ही मैंने सब लटुपटु बटोर लिया और भाग खड़ा हुआ।

—कुछ भी नहीं छोड़ा ?

—नहीं कोठरी में सलाई का एक खाली बक्स भी नहीं छोड़ा—कहकर याकूब जरा हँसा।

—मुहल्ले के लोगों ने कुछ नहीं कहा ?

—कहा क्यों नहीं ? एक ने कहा कि तुम भाग रहे हो पर मारे हम जायेंगे। मैंने कहा कह देना कि रात को भाग गया है पता ही नहीं लगा। यह कहकर मैं नौ दो ग्यारह हो गया।

—क्या यह ठीक हुआ ?—निसार के मन में खटका लगा। उसके मन में अभी तक सदाचार की पुरानी धारणा थी, यद्यपि वह स्वयं इस धारणा के विरुद्ध कार्यकर अपना सब सामान हटा चुका था।

—क्या ठीक नहीं हुआ ?

—यही किराया न देकर भाग जाना।

—तुम भी तो भागे।

—हाँ पर हमारे भागने से हमें कोई लाभ नहीं हुआ, बल्कि नुकसान ही हुआ। इसके अलावा मैं भागा नहीं, मुझे तो निकाल दिया—निसार ने कहा।

दोनों चुप रहे। याकूब के मन में कोई पश्चाताप नहीं था, कोई दुःख भी नहीं था, कोठरी को छोड़ देने के लिये कोई अफ़सोस भी नहीं था, पर निसार की बात और थी। उसे बड़ा अफ़सोस हो रहा था। मालूम होता था कि शायद रुपये दे देना ही ठीक रहता। याकूब का झगड़ा कर कोई फायदा तो नहीं हुआ।

अकस्मात् निसार ने कहा—याकूब!

—क्या है?

—एक दफा जाकर यासीन मियाँ से कहकर देखा जाय।

याकूब ने कर्कश आवाज से कहा—यासीन ही सब कुछ करा रहा है, और तुम उसी से कहने जाओगे?

—यासीन नहीं हबीब कर रहा है। यासीन को तुम जानते नहीं हो बड़े रहमदिल हैं। दंगे के दिनों में आधा मुहल्ला वहीं खाता था, खुद खड़े होकर मुहब्बत से खिलाते थे। तुमने भी दो एक दफा खाया ही होगा।

याकूब ने कहा—पेशाब कर दूँ उसके खाने पर। मैं कभी नहीं गया। अपनी गरज से खिलाता था।

—कौन सी गरज?

—गरज यह कि दंगे के जमाने में इतने आदमी मुफ़्त में वहाँ पहरे पर रहेंगे—याकूब ने कहा—तुम लोग रात को वहाँ सोया भी तो करते थे।

—हाँ कोई चालीस आदमी वहाँ रात को सोया करते थे। न मालूम कब क्या जरूरत हो इसलिये हम लोग रहते थे।

—हाँ-हाँ सिर्फ खाना खिलाकर उसे चालीस नौकर और पहरे वाले मिले हुए थे।

निसार ने कहा—हमें तो ऐसा नहीं मालूम होता है। पर उस जमाने में मियाँ हबीब की बात नहीं सुनते थे, और आज कल हबीब

की बात ही पर उठते बैठते हैं। किसी तरह यह पाजी मर जाय तो मुहल्ले के लोग आराम से सोवें।

याक़ूब ने केवल इतना ही कहा—हाँ इस हबीबा ने बहुत सताया नहीं तो शायद यह मामला यहाँ तक न बढ़ता।

निसार याक़ूब के और भी पास सटकर बैठ गया, बोला—तो एक काम क्यों न किया जाय।

—क्या?

—हबीब को खतम कर दिया जाय। मकान से निकलवाने का मज़ा तो मालूम हो।

याक़ूब चिन्तित हो गया, बोला—कोई आसान बात नहीं है......

—क्या आसान बात नहीं है?—निसार ने पूछा।

—यही किसी को मारना, आदमी की जान आसानी से नहीं निकलती।

निसार जैसे कुछ आहत होकर बोला—इस बात को मैं नहीं मानता। आदमी की जान गाय की जान से कड़ी नहीं है। एक ही वार में खतम कर दूँगा—कहकर उसने गोश्त काटने वाली उस बड़ी छुरी को निकालकर दिखलाया।

निसार हबीब की हत्या कर सकता है यह बात याक़ूब अच्छी तरह जानता था। दंगे के ज़माने में निसार ने उसी की आँखों के सामने दो-चार आदमियों को मारा था। अब इस छुरी को देखकर उसे और भी सन्देह न रहा कि निसार हबीब को मार सकता है, पर न मालूम क्यों उसे इस कार्य में रुचि नहीं मालूम हो रही थी। कहीं पर एक काँटा चुभकर उसे इस बात से मना कर रहा था। याक़ूब भी हबीब से घृणा करता था, पर इतनी दूर नहीं जाना चाहता था। उसने कहा—हबीब मरेगा तो कोई और आयेगा, वह शायद इससे भी खराब निकले-हमारी मिल में हमारे ही डिपार्ट में एक फोरमैन था जिसे लोग कहते

थे बहुत बुरा है। एकाएक वह लड़ाई में कुछ बनकर चला गया, जो उसकी जगह पर आया वह उससे भी खराब निकला।

निसार ने कहने की कोई बात नहीं खोज पायी इसलिये चुप बैठा रहा। तर्क में परास्त होने पर भी उसका मन याकूब की बात पर तैयार नहीं हो सका। उसकी आँखों में हबीब शैतान था।

याकूब ने फिर कहा—हबीब मुसलमान है, मुसलमान को मारोगे?

लापरवाही से निसार ने कहा—अगर वह मुसलमान है तो काफिर कौन है? मैं तो कहता हूँ वह खास इबलीस का बच्चा है।—कहकर उसने हाथ की बड़ी छुरी को उठाकर दिखाया।

रात अधिक हो रही थी इसलिये याकूब चलने लगा। निसार ने कहा—आज रात यहीं रह जाओ। कोई अच्छी कोठरी मिली? अफजल हमारा बहुत भारी दोस्त है, यह कोठरी हमें दे दी है। अफजल की हालत अच्छी है क्योंकि उसके दो लड़के लड़ाई पर गये हैं।

याकूब उठ खड़ा हुआ और बोला—नहीं, यहाँ नहीं रहूँगा, हमारे गाँव के एक आदमी ने मिल के पास एक दूकान खोली है उसी ने हमें टिकाया है। बात देकर आया हूँ, न जाऊँगा तो क्या सोचेगा।

असली बात यह थी कि याकूब इस मुहल्ले में इसलिये रात बिताना नहीं चाहता था कि वह इस बात से डरता था कहीं सबेरे उठकर मिल चलने लगे तो हबीब या हबीब के किसी आदमी से भेंट न हो जाय, तो आफत पड़े। इधर से मिल जाते हुए रास्ते में हबीब का घर पड़ता था। उसने यह भी सुना था कि हबीब उसकी खोज करवा रहा है। बात यह थी कि बिना अपमान हुये याकूब के निकल जाने से हबीब की न्याय बुद्धि को चोट लगी थी।

निसार ने कहा—अच्छा चलो तुम्हें कुछ दूर तक पहुँचा आऊँ, यहाँ बैठे-बैठे तबियत नहीं लग रही है।

याकूब ने खड़े होते हुए कहा—कोई जरूरत नहीं, ख्वाहमख्वाह

जाड़े में कहाँ जाओगे ?—फिर यह देखकर कि निसार जायगा ही, बोला—तो फिर मिल में मजदूरी की बात ही ठीक रही ; बहुत जल्दी काम पा जाओगे।

याकूब चल दिया। निसार ने कहा—चलो चलता हूँ, मजदूरी की बात ठीक रही, पर दो तीन दिन सोच लूँ।

दोनों रास्ते में निकल पड़े। अँधेरी रात थी। जब तक गली में होकर चलते रहे तब तक तो बिलकुल ही अँधेरा था, दोनों साथी भूतों की तरह मालूम होते थे। सड़क पर कुछ फासले पर म्युनिसिपलिटी के लैम्प जल रहे थे पर वे भी कुहरे का कोट पहन कर अपने को आखरी जाड़े की चोट से बचा रहे थे।

दोनों इधर उधर की बातें करते हुए जा रहे थे। निसार ने पूछा—अच्छा याकूब मिल में आजकल कितनी मजदूरी दे रहे हैं ?

—मजदूरी तरह तरह की है—याकूब ने कहा।

—मान लो जैसे मैं कोई काम नहीं जानता, मुझे क्या देंगे ?

—तुम्हें भी एक रुपये से क्या कम देंगे ?

—पर......

—पर क्या ? भाई को भी मजदूरी में लगाओ।

—वह बात नहीं कर रहा हूँ। कह रहा हूँ कि दूकान में बहुत कोशिश करने पर भी एक रुपया कभी नहीं बचता था।

तो अच्छा ही हुआ—याकूब ने कहा—तुम्हारी तो तकदीर खुल गई है।

बात को बीच में काटते हुए निसार ने कहा—यही तो नहीं है, रुपया तो खैर ज्यादा मिलेगा पर दूकानदार की एक इज्जत है। मजदूर तो मजदूर ही है।

—यह सब फजूल बातें हैं। गरीब की कहीं भी इज्जत नहीं है,

वह चाहे किसान हो, मजदूर हो या दूकानदार हो। सभी इस पर दाग लगाने के लिये तैयार रहते हैं।

ये बातें करते हुए हबीब मियाँ के मकान के सामने आ गये। छोटा सा मकान था, पर सुन्दर बना हुआ था। कम से कम निसार और याकूब से लोगों की आँखों में वह मकान बहुत ही सुन्दर था। सैकड़ों ईर्ष्या से भरी आँखें इस मकान पर पड़ती थीं। मजे की बात यह है कि ये लोग यासीन से ईर्ष्या नहीं करते थे। बात यह है यासीन इन लोगों से बहुत ऊँचे पर था, पर हबीब को ये लोग अपने ही में से समझते थे। इसलिये उनकी सब ईर्ष्या, हिंसा, क्रोध, द्वेष हबीब ही पर पड़ते थे।

निसार ने कहा—उस खूसट का मकान है!

याकूब ने कहा—हमहीं लोगों के खून से बना है। सुना है जब वह पहले यहाँ आया था तो बहुत मामूली आदमी था पर अब उसके दो लड़के अलीगढ़ में पढ़ रहे हैं और खूब चैन से है।

निसार ने कुछ नहीं कहा, सोचकर बोला—अल्लाह चाहेंगे तो सब चैन एक मिनट में मिट्टी में मिल जायगा। हराम का पैसा कभी फलता नहीं......

—यह सब दिल की तसल्ली है—याकूब की आँखों के सामने अपने चाचा का चित्र आ गया। चाचा ने अन्यायपूर्वक उसकी सम्पत्ति छीन ली थी, वह तो मजे में है। अबकी बार तो सुना गया है कि लड़ाई में भर्ती कराने के लिये कोई तमगे या खिताब मिले हैं। बोला—अल्लाह भी उन्हीं लोगों की तरफ है।

निसार को कुछ चोट सी लगी। वह भी कभी पहले नमाज नहीं पढ़ता था, पर विगत दो महीने से वह नियम पूर्वक नमाज पढ़ा करता है। उसने पूछा—तुम अल्लाह को नहीं मानते?

—मानता क्यों नहीं ? मानता हूँ—याकूब ने इस विषय में कभी सोचा नहीं था फिर भी यह उत्तर उसके मुँह से निकल पड़ा।

—तुम नमाज पढ़ते हो ?

—नहीं, तुम पढ़ते हो ?

—मैं पढ़ता हूँ, पर आज नहीं पढ़ी।

दोनों फिर चुपचाप चलने लगे। हबीब का मकान पीछे रह गया। अकस्मात् याकूब ने कहा—अल्लाह के इन्साफ में तुम्हें यकीन है ?

—हाँ, पर अक्सर देर होती है। अल्लाह के यहाँ देर है, अँधेर नहीं।

—ओ......ओ—याकूब ने इस तरह कहा मानो ऐसा बहुत सुन चुका है और अब अच्छा नहीं लगता।

याकूब और निसार फिर थोड़ी दूर चुपचाप चले। याकूब की मिल करीब करीब आ गई थी। याकूब ने कहा अब आगे न चलो, लौट जाओ, सलाम !

इसलिये निसार को लौटना पड़ा। वह चलते हुए उन बातों पर सोचने लगा जिन पर अभी याकूब के साथ बातें हुई थीं। अल्लाह पर उसका पूर्ण विश्वास था। तत्वों का ताना बाना फैलाकर इस चीज की गहराई में जाना उसकी बुद्धि के बाहर था, पर वह अपने अन्दर अल्लाह की अन्तहीन गहराई का अनुभव कर रहा था। इस गहराई की अनुभूति को तर्क से नहीं पकड़ा जा सकता था। बुद्धि की कठिनता को पारकर उसका यह विश्वास उसकी देह और मन में अपना प्रभाव फैलाता था। उसका यह विश्वास ध्रुवतारे की तरह बाहरी रोशनी की परवाह न करता या अपनी रोशनी आप जला रखता था। विरुद्ध प्रमाणों की हवा से बुझता नहीं था, निरन्तर नये नये प्रमाणों के रूप में उसे तेल की जरूरत नहीं थी।

रह गये ये तमाम अन्याय, अत्याचार, दमन। निसार ने हजरत

अय्युब की बात सुनी थी। अल्लाह ने उनकी कितनी परीक्षा ली थी। सब तरह से उनको गरीब, पीड़ित तथा परित्यक्त बनाकर फिर अपने ठंडे दामन में आश्रय दिया था। कसमुलम्बिया ऐसी ही कहानियों से भरी हुई है। यहाँ तक कि अल्लाह ने अलहजरत मुहम्मद रसूलल्लाह सल्ले अल्लाह अलै वसल्लम की भी क्या क्या परीक्षा ली। याकूब यह सब क्या समझेगा? आखिर है तो गँवार ही, अल्लाह की बातें वह क्या समझेगा? और यह हबीब की तरह लोग, इनका भी कसमुलम्बिया में जिक्र है, जैसे फरऊन। उसने अपने को खुदा कह दिया था, पर आखिर क्या हुआ?

निसार को चलते-चलते मालूम नहीं हुआ कि वह हबीब के मकान के सामने आ चुका है। दो आदमियों को बात करते हुए सुनकर उसके विचारों का सिलसिला टूट गया। दो आदमी शायद हबीब के मकान से निकल रहे थे। निसार यों ही तमाशा देखने के लिये जरा आड़ में हो गया।

ये दोनों आदमी बातें करते हुए जा रहे थे। पर इन दो में से एक तो स्वयं हबीब था। क्या कह रहे हैं सुना जाय। निसार सुनने लगा।

हबीब कह रहा था—चलिये और थोड़ा आगे कर आयें। नौकर से कहा कि इक्का ले आओ पर वह कहीं ताड़ीबाड़ी पीने में रह गया होगा। ये कमीने इतने पाजी हैं कि इनके मारे जिन्दगी दूभर हो गई है। किसी मामले में इनका यकीन नहीं कर सकते। दर्जी ठीक वक्त से कपड़ा नहीं सीयेगा, धोबी ठीक वक्त से कपड़ा नहीं धोयेगा, किरायेदार किराया नहीं देंगे, एकदम परेशान हो गया हूँ। इन कमीनों के तो न काम का ही ठीक है और न बात का ही।

अब दूसरे आदमी ने भी बात की। अधेड़ उम्र का आदमी होगा, आवाज से कोई अजनबी मालूम होता था, कम से कम निसार के लिये।

इस आदमी ने कहा—असली बात तो आपने कही ही नहीं, न तो इनका काम ही ठीक है, न बात ही ठीक है, और न बाप ही ठीक है—कहकर वह जोर से हँस पड़ा।

हबीब ने भी हँसी में हिस्सा बटाया।

सुनकर निसार ने भौंहें तानली, पर ये लोग और भी क्या-क्या कहते हैं, इस बात को सुनने का उसे कौतूहल हुआ। उसने आड़ में रहकर दोनों की बातें सुनना तथा पीछे-पीछे चलना शुरू किया।

हबीब ने कहा—साहब आपने खूब कही। अगर बाप का पता हो तो बात का भी पता हो, फिर बात भी ठीक रहे। अगर नुतफा ठीक रहे तो बात भी ठीक रहती है।

दूसरे आदमी ने कहा—यह तो बिल्कुल ठीक है। मैंने अपने दादा के बारे में सुना है कि दो तीन गाँव के मालिक थे, पर उन्होंने किसी से वादा किया था कि उसकी तरफ से मुकदमा लड़ेंगे, सो आखिर तक लड़े। पहले गाँव का एक हिस्सा, फिर आधा, इस तरह बिकते-बिकते तबाह हो गये। दादी ने बहुत समझाया पर उन्होंने कहा यह थोड़े ही हो सकता है? वायदा कर लिया सो कर लिया, लड़के भले ही भीख माँगे पर जो बात कह दी वह टल नहीं सकती। तब से खानदान तबाह हो गया। नहीं तो यासीन मियाँ के दादा और हमारे दादा एक ही गाँव के और एक ही हैसियत के लोग थे। इधर वालिद ने भी कुछ मिलकियत पैदा नहीं की, नहीं तो मैं किसी की परवाह न करता।

हबीब मियाँ इन बातों को सुनकर कुछ अधिक खुश नहीं हुआ। वह इस आदमी के एकमात्र लड़के के साथ अपनी लड़की की शादी तयकर रहा था। इसी सिलसिले में उसे बारबार न्यौता देकर खिला रहा था। आज भी इसी तरह का एक न्यौता दिया था। उसे इस बात से कोई खुशी नहीं हुई कि उसके दादा इतने वायदे के पक्के थे। हाँ, उसने अच्छी तरह खबर लेकर मालूम कर रक्खा था कि इस आदमी के

शहर में भी दो मकान हैं। यह भी बात ठीक है कि वह यासीन का कोई दूर का रिश्तेदार था। यासीन के घर पर वह बे रोक-टोक आया करता था।

हबीब ने कहा—फिर भी आपके पास जो कुछ है उससे काम चल ही रहा है।

—हाँ, नहीं तो क्या ?

—फिर लड़का तरक्की करेगा।

—इन्शाल्लाह, आप लोगों की मेहरबानी रहेगी तो जरूर तरक्की करेगा।

हबीब ने जरा सोचकर कहा—मेरी बीबी ने आपके लड़के को बहुत पसन्द किया है। बहुत अच्छा लड़का है, दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करेगा।

—यह तो है ही—उसके बाद अकस्मात बोला—अच्छा तो मैं चलता हूँ, बहुत रात हो गई। उस काम को यासीन मियाँ से करवा दीजियेगा, पर वे जान न सकें कि इसमें मैं हूँ। अच्छा आदाब अर्ज है......

—हाँ-हाँ मैं कोई तिल्फेमकतब थोड़े ही हूँ। वह तो हमारा काम है। आदाबअर्ज...

दोनों एक दूसरे से हाथ मिलाकर अलग हुए। हबीब मकान की तरफ जाने लगा। हबीब की दाढ़ी पक जाने पर भी उसकी उम्र अभी ५० के लगभग थी। पैर बढ़ाकर चलने लगा।

उधर निसार ने यह नहीं सोचा था कि हबीब इतना जल्दी लौटेगा। उसने सोचा था कि बातें सुनते-सुनते वह अगले चौराहे तक जायगा फिर उसके बाद बायीं तरफ से अफजल के मकान में लौट जायगा। पर हबीब एकाएक एक फर्लाङ्ग जाकर लौट आया तो वह बड़ी विपत्ति में पड़ गया। इधर कोई गली भी नहीं थी जिसमें वह चुपके से घुस

पड़ता इसलिये इधर उधर ताककर वह दीवार पकड़कर पतले फुट-पाथ में बैठ गया।

हबीब अपनी चिन्ता में गोता खाता हुआ लौट रहा था। उसने अपना काम करीब-करीब बना लिया था। अभी शादी की कोई साफ साफ बातचीत नहीं हुई थी, पर मान लिया जा सकता है कि प्रस्ताव करते ही सफलता मिलेगी। इस लड़की की शादी के बाद सब मुश्किलें आसान हो जायेंगी। रह गई दो लड़कों की शादी, सो उसमें कोई झंझट नहीं था। लड़के की शादी में क्या झंझट?

अकस्मात् हबीब ने देखा कि उसके सामने कोई काली सी चीज चुपचाप पड़ी हुई है। क्या कुत्ता है? नहीं कुत्ता नहीं, पर? हबीब मियाँ ने कुत्ता भगाने की तरह भगभग की आवाज की। कौन जाने आगे बढ़ गये, और पीछे से हमला किया तो। हबीब मियाँ ने अपनी लाठी पटकते हुए कहा—भगभग।

पर साथ ही साथ वह काली सी चीज एक ही छलांग में हबीब मियाँ पर टूट पड़ी, और चूँ आवाज करने के पहले ही निसार के मज़बूत तथा दक्ष हस्तों ने हबीब मियाँ के गले पर गाय काटनेवाली उस छुरी को फेर दिया। हबीब मियाँ का सिर अलग कटकर वहीं पर गिर पड़ा।

छुरी को खींचते हुए निसार ने कहा—फरऊन देख बात का पता है कि नहीं।

शायद दूर कुछ खट से आवाज हुई। इसलिये जल्दी से अपनी छुरी को हबीब मियाँ के गुलूबन्द में पोंछकर निसार जल्दी से रवाना हो गया, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार वह हिन्दुओं को मारकर दंगे के दिनों में नौ दो ग्यारह हो जाता था।

२७

ज्यों ही शहर में शान्ति हो गई और दिन के समय हिन्दू पाकिस्तान के अन्दर मुसलमान और मुसलमान पाकिस्तान के अन्दर हिन्दू अपेक्षाकृत आजादी से चलने फिरने में समर्थ हुए त्योंही वहाब ने राजीव को गाड़ी पर घर पहुँचा दिया। गाड़ी पर इस लिये न पहुँचाया कि उस समय राजीव को तेज बुखार था।

वहाब चुपचाप राजीव को घर पहुँचाकर चला आया। उसने यह काम किसी के भय से या पुरस्कार के लोभ से नहीं किया था। शहनाई की मृत्यु के बाद उसके ये पन्द्रह सोलह दिन बहुत बुरे बीते थे। बहिन को उसने बराबर झूठी उम्मीद दे रक्खी थी, पर वह सोच रहा था कि इस झूठ बोलने की भी एक सीमा है। मुहल्ले के बहुत से लोग यह जानते थे कि असल बात क्या है, पर वहाब ने हरेक आदमी, यहाँ तक कि स्त्रियों को, ढूंढ़ ढूंढ़कर यह कह दिया था कि कोई बहिन को असली बात का पता न दे।

लेकिन इतनी चौकसी रखने पर भी बात बहिन तक पहुँच कर रहेगी इसे वह अच्छी तरह जानता था। इस हालत में क्या करना चाहिये इस सम्बन्ध में कोई उसे अच्छी सलाह नहीं दे सकता था।

राजीव शायद दे सकता। पर घाव अच्छा हो जाने के बाद उसे बुखार आ रहा था। इसलिये समस्या के समाधान में राजीव क्या मदद देता, वह खुद ही एक समस्या हो रहा था। वहाब बिल्कुल भावुक नहीं था, पर उसे इस वक्त परेशानी थी कि कहीं राजीव मर न जाय। दंगे के समय की बात और थी। एक क्यों दस लाशों को आसानी से

गायब किया जा सकता था। तब कोई किसी से पूछता नहीं था कि क्या है। सभी जानते थे कि क्या है। इसके अलावा जिस मकान में उसने राजीव को लाकर रक्खा था, वह उसकी सहेली अमीना का मकान था। अमीना उस की हदतक प्रेयसी नहीं थी, उसकी दूसरी प्रेयसियाँ भी थीं। इसके अलावा वह उसके अपराधों में सहधर्मिणी थी। फिर भी उसने राजीव के मामले में अमीना का पूर्ण विश्वास नहीं किया। कह दिया था कि यह एक मुसलमान अपराधी है, फरार होकर यहाँ पर टिका हुआ है। राजीव को भी उसने यह बात सिखादी थी, पर अमीना कुछ संदेह करती थी यह स्पष्ट था।

जब राजीव को बुखार आया और बुखार ने एक कठिन रूप धारण किया, तब बहाब ने साहस कर एक दिन उसे टाँगे पर चढ़ाकर घर पहुँचा दिया। नौकर लोग पकड़ कर जब तक राजीव को घर में ले जाने लगे तब तक बहाब और उसके साथ का टाँगावाला गायब हो गये। जब लोगों को होश आया कि कैसे राजीव आये तब देखा गया कि कोई नहीं था।

खबर पाकर डा० राय आये। पुत्र की मृत्यु की खबर जबसे उन्हें मिली थी तब से उन्होंने करीब-करीब डाक्टरी छोड़ दी थी। आकर देखते ही बोले—टायफाएड है।

जरा नाक चढ़ा ली, पर इस व्याधि के विरुद्ध वे सारी जिन्दगी लड़ते रहे इसलिये निराश नहीं हुए। पहला उपचार यह किया कि शहर के दूसरे अच्छे डाक्टरों को बुलवा भेजा। एक घंटे के अन्दर ही टिड्डी दल की तरह डाक्टरों का मजमा इकट्ठा हो गया और किताबें उलट कर बड़े जोरों से इलाज शुरू हो गया।

उधर रमेश और दूसरे मित्र भी खबर पाकर आ पहुँचे। पर एक पुराने डाक्टर ने कहा—इस समय रोगी के पास लोग न आवें तो अच्छा है। इससे रोगी को भी फायदा है और आनेवालों की भी बचत।

इसलिये वे लोग दूर से रोगी को देखकर लौट गये। जाते समय इन लोगों ने बैजनाथ से जिरह की कि राजीव कब आये, कैसे आये इत्यादि। बैजनाथ इस सम्बन्ध में एक अपनी थियोरी रखता था। उसके मतानुसार छोटे बाबू के गायब हो जाने की बात के साथ दंगे का सम्बन्ध आकस्मिक था, तथ्य इससे कहीं जटिल था। पर बैजनाथ बहुत बुद्धिमान नौकर था। वह नौकरी नहीं खोना चाहता था, इसलिये लोगों ने उससे चाहे कुछ भी पूछा उसने यही कहा कि मुझे नहीं मालूम, बाबू एक टाँगे से आये थे।

इलाज करते-करते तीन सप्ताह के अन्दर राजीव की अवस्था अच्छी हुई। वह अच्छी तरह बातचीत कर सकता था, पर डाक्टरों ने उसे दो एक दिन और संयम करने को कहा। बैजनाथ पहरे के लिये रहा। ये दिन राजीव के लिये बहुत कष्टकर थे। कितने ही प्रश्न, कितनी ही समस्यायें उसके दिमाग में घूम रही थीं पर उसे डाक्टरी अनुशासन मानना पड़ा। क्या करता?

पहले-पहल डाक्टरों ने उससे पूछा कि ये बीस पचीस दिन कैसे और कहाँ गुजरे। डाक्टरों ने यह चाहा कि इसकी कहानी उन्हीं को सबसे पहले मालूम हो। सिर पर एक बड़े घाव के दाग तथा सारे शरीर पर यत्र तत्र छिल जाने के दाग से उन्होंने इस बीच की कहानी का कुछ कुछ अनुमान कर लिया था। पर वे जानना चाहते थे कि इस बीच में और क्या-क्या हुआ। ये लोग डाक्टर थे, किन्तु इसके कारण इनका कौतूहल किसी से कम नहीं था।

पर राजीव ने सबको निराश किया। अमीना के मकान में रहते समय ही राजीव ने यह तय कर लिया था कि वह विशेष कोई बात नहीं बतायेगा क्योंकि एक बात बताने पर दस प्रश्नों की उत्पत्ति होती थी। इसके अलावा शायद इसमें पुलिस भी आ जाती और राजीव ने तय किया था कि इस मामले में पुलिस को कुछ नहीं बताना है।

डाक्टरों के प्रश्नों की झड़ियों के उत्तर में उसने केवल इतना ही बताया कि घटना के दिन वह रोज की तरह निर्जन स्थान की तलाश में अमुक मुहल्ले की ओर गया था, यहाँ पर उसने ठीक ही मुहल्ले का नाम लिया। जब वह टहल रहा था तो अकस्मात् किसी ने उस पर आक्रमण किया। इसके बाद वह बेहोश हो गया, और फिर तो ये दिन बेहोशी में बीते।

इसके उत्तर में बल्कि इसके बाद फिर क्या प्रश्न होते। किसी ने इस कहानी को बिलकुल सही समझा, पर किसी किसी के मन में कुछ सन्देह रह गया, पर मुँह से कुछ नहीं कहा।

डाक्टरों की इजाज़त पाते ही रमेश आकर राजीव के बिस्तरे के पास डट गया। राजीव इस समय उठने बैठने, बातचीत करने लगा था। इस समय डाक्टर केवल दिन में दो बार आया करते थे। वे रोग के कारण उतना नहीं आते थे जितना कि भद्रता के कारण आते थे।

जिस समय राजीव और रमेश दोनों इतमीनान से आमने-सामने बैठे उस समय वे एक दूसरे के प्रति इतने आकृष्ट हुए जितना कि किशोरों में ही संभव है। दोनों की ही आँखें करीब-करीब भर आईं जिन नदियों की बाँध टूट चुकी है, उनकी तरह वे एक दूसरे की तरफ वेग के साथ धावित होने लगे, पर वे एक दूसरे को देखते ही समझ गये कि इस बीच में दोनों बहुत अजीब तजर्बे पा चुके हैं।

इतनी बातें थीं कि कहाँ से शुरू किया जाय यही समस्या थी।

रमेश ने ही शुरू किया, बोला—हम लोग तो निराश हो गये थे। मान लिया था कि तुम अब लौटने को नहीं।

राजीव ने कुछ मुसकुराते हुए कहा—हाँ यह नवजीवन है, इसमें सन्देह नहीं।—उसकी मुसकराहट बहुत कुछ कष्टकृत थी।

—ओह कितना भयंकर दंगा था !

—क्या बहुत भयंकर दंगा था ?—राजीव ने पूछा—मैंने तो कुछ कुछ अस्पष्ट रूप से सुना है।

—हाँ बहुत भयंकर दंगा था, मनुष्य पशु हो गये थे—उसके बाद रमेश ने धीरे धीरे उस रात के तजर्बे बताये जिस दिन वह रायट्‌स के साथ मुसलमानी टोले में गया था। राजीव इस विवरण को कहानी की तरह सुनने लगा। वह भूल गया कि उसकी अपनी कहानी इससे कहीं दिलचस्प और रोमांचकारी थी।

रमेश ने अपनी कहानी वहीं खतम की जहाँ तक वह रात खतम होने पर लौट आया था। इसके बाद की कहानी कही जाय या नहीं, इस सम्बन्ध में वह कुछ हिचकिचा रहा था। मरने के बाद ही सही, मित्र को मृत समझ कर ही सही उसने नौकर की सहायता से मित्र की प्रेमिका की खोज की थी, उसके रहस्य में अनधिकार प्रवेश किया था इस बात को स्वीकार करने में उसे हिचकिचाहट हो रही थी।

राजीव ने पूछा—शायद और कहीं तलाश नहीं की ?

—नहीं—कहकर ही रमेश को अकस्मात् यह बात याद आयी कि अब तो राजीव लौट ही आया है, आज न हो कल, कल न हो परसों वह वहाँ पर जायगा ही, तब राजीव को मालूम हो जायगा कि वह जोहरा के यहाँ गया था। बोला—हाँ उस रात को तो कहीं नहीं गया, पर सबेरे डाक्टर नौशेर के घर पहुँचा।

—डाक्टर नौशेर के घर ?—आश्चर्य में राजीव ने पूछा।

—हाँ, वह जो बंगाली मुसलमान डाक्टर बड़े खम्भेवाले मकान में रहते हैं, वहाँ गया था।

राजीव समझ गया, इसलिये और नहीं पूछा। बोला—वहाँ कुछ मालूम हुआ ?—यह प्रश्न करके उसने ऐसे देखा मानो इसके उत्तर पर बहुत कुछ निर्भर है।

रमेश ने जैसा घटित हुआ था, सब बताया। जब उसने कहा कि मिस जोहरा ने कहा कि तुम रात को स्वस्थ शरीर में यहाँ से चले गये, तब अकस्मात् राजीव के सिर पर पसीना आ गया। वह एकाएक पीछे के तकिये पर ढह गया। इसके आगे रमेश ने क्या कहा उसने कुछ नहीं सुना। जरा सम्हलकर बोला—मिस जोहरा ने क्या कहा?

—कहा कि वे कल रात को ठीक समय पर यहाँ से चले गये थे।

—अच्छा—राजीव ने जैसे मृत्यु दंड सुना, पर वहाब ने तो कुछ और ही बताया था। वहाब ने तो बताया था कि सारा दोष शाकत और यासीन का है। जोहरा के सम्बन्ध में इस बात को सुनकर राजीव ने अपने को केवल प्रेम में ही प्रवंचित नहीं समझा बल्कि उसका आदर्श जो उसके नजदीक कुछ-कुछ सुन्दर हो चला था, अकस्मात् बुलबुले की तरह फूट गया। रमेश ने इसके बाद जो कुछ सुनाया उसमें उसे विशेष कौतूहल नहीं रहा। उसने यह देखा कि वास्तविकता के आघात से उसका प्रेम और उसका आदर्श जर्जर और चूर-चूर हो गया, फिर भी उसके अन्तरतम चित्त ने अपनी पराजय स्वीकार नहीं करनी चाही। उसने मन ही मन कहा जोहरा भले ही विश्वासघातिनी और पापिनी हो, इमतियाज़ तो है। इसके अतिरिक्त उसका इस प्रकार लौट आना ही क्या यह प्रमाणित नहीं करता कि उसके जीवन का आदर्श व्यर्थ और शून्यगर्भ नहीं है। उसने इन कई दिनों में यह भी तो देखा था कि साम्प्रदायिकता एक उन्माद है, जब तक उसका दौरा चलता है, मनुष्य पिशाच बना रहता है, पर ज्योंही उसका दौरा खतम हो जाता है त्योंही पिशाच भी देवता हो जाता है। वहाब इसके प्रमाण स्वरूप है। वहाब कितना बदमाश है, पर उसने उसकी कितनी सेवा की। उसने उसके लिये अपनी रखैली और अपराध संगिनी अमीना को उसका झूठा परिचय दिया, अपनी बहिन को भी उसी के हित के लिये अन्धकार में रक्खा। उसने और भी कितनी ही बातें की।

रमेश ने देखा कि राजीव उनकी बातों में दिलचस्पी नहीं ले रहा है, कुछ अन्यमनस्क है, पूछा—कुछ तकलीफ मालूम हो रही है ? न हो आज मैं जाऊँ । कुछ विश्राम करो !

मानो अकस्मात् अपनी परिस्थितियों में लौटते हुए राजीव ने कहा—नहीं नहीं । यहाँ पर सुना कि काली बाड़ी में तीन मुसलमानों का बलिदान किया गया ?

रमेश जरा उधेड़बुन में पड़ गया । बिना कारण गला खखार कर बोला—हाँ, वह बहुत ही गंदा मामला था, बिलकुल घृणित !

—फिर भी सुनूं तो—राजीव ने कहा ।

रमेश को कहना पड़ा । उसने अमित की मृत्यु की बात को छोड़-कर सभी बातें बतायीं । अमित की मृत्यु की बात को वह इसलिये गोल कर गया कि उसने सोचा इस खबर से राजीव के मन को बहुत जबर्दस्त धक्का लगेगा ।

सब बातों को सुनकर राजीव ने कहा—तुम उस बलिदान के समय थे ?

—हाँ—कुछ लज्जित होकर रमेश ने कहा । वह ये बात छिपा गया कि राजीव की मृत्यु की खबर पाकर वह दङ्गे में कूद पड़ा था । इस समय उसे उस बात को स्वीकार करते हुए लज्जा मालूम हो रही थी ।

राजीव ने कहा—आश्चर्य यह है रमेश कि तुमने इसमें बाधा नहीं दी ।

—नहीं, वहाँ सारी हिन्दू जनता थी ।

—इसीलिये तो और भी बाधा देना जरूरी था—इसके बाद एका-एक अजीब तरीके से हँसते हुए उसने कहा—और मालूम है रमेश, उन तीनों में से एक ने मेरी जान बचायी थी । यदि वह ऐसा न करता तो मैं जीवित न होता ।

रमेश ने अविश्वास और आश्चर्य से चौंक कर कहा—यह बात ?

तब राजीव ने उसे इमतियाज़ की पूरी कहानी कह सुनाई। सब सुनकर रमेश ने कहा—कितनी भारी ट्रेजेडी है कि हम लोग उसीको सबसे ज्यादा बदमाश और जिद्दी समझ रहे थे।

—क्यों ? इसलिये कि उसने इतने पागलों से गिड़गिड़ा कर प्राण-भिक्षा नहीं माँगी।

व्यंग बड़ा तीखा था, और अब की सीधे सीधे रमेश पर था। रमेश इस व्यंग से तिलमिला उठा। अभी उसने यह जो तय किया था कि राजीव को अमित की मृत्यु की बात नहीं बतायेगा, वह उसपर टिक नहीं सका, बोला—इसलिये कि उसने अमित को मार डाला था।

—अमित को मार डाला था ?—इसके माने अमित मर चुका है। अब राजीव के लिये आश्चर्य में पड़ने की बारी थी। उसे दुख से अधिक आश्चर्य हुआ।

हाँ—रमेश ने अब की अमित की हत्या की सारी परिस्थिति कह सुनाई।

सब बातों को सुनकर राजीव को बड़ी निराशा हुई। उसने निराश कंठ से कहा—इसके माने ये हुए कि इमतियाज़ भी हत्यारा है। ओह—उसने थकावट के मारे जवाँई ली, पर अगले ही क्षण सोचकर बोला—वैसी हालत में वह अगर दो-चार को भी मार डालता तो उसे दोषी नहीं कहा जा सकता। जिसे बलि चढ़ाने ले जा रहे हैं वह प्रतिरोध तो करेगा ही।

रमेश ने कुछ नहीं कहा—संध्या उतर रही थी और उसी के साथ-साथ जाड़ा भी उतर रहा था। सारे वातावरण में जैसे एक विशाल का रेशा था। रमेश उस दिन के लिये उठ गया। राजीव बहुत अच्छी तरह समझ गया कि जिस जगत को वह छोड़ गया था, अब वह जगत नहीं रहा। इस बीच में बहुत से परिवर्त्तन हुए। रमेश के चले जाने

के बाद राजीव बड़ी देर तक बैठे-बैठे सोचता रहा। वह जितना ही सोचता जाता था, उतना ही उसके विचार गड़बड़ाते जाते थे।

२८

राजीव जब अच्छा हो गया तो वह एक दिन सबेरे टहलते-टहलते जोहरा के मकान की तरफ जा पहुँचा। जोहरा के साथ भेंट करने की जरा भी इच्छा नहीं थी, रमेश से जोहरा ने जो कुछ कहा था उसके कारण जोहरा उसकी आँखों में बहुत गिर चुकी थी। पर जब वह जोहरा के मकान के सामने जा पहुँचा तो किसी एक अदम्य शक्ति ने उसे मकान की तरफ खींचा।

मकान कुछ सूना सा ज्ञात हुआ। अभी डेढ़ महीने पहले की बात है कि वह रोज यहाँ आया करता था, पर अब यह मकान कितना अपरिचित ज्ञात हो रहा था। पहले वह सीधे सीधे मकान में घुस जाया करता था, पर आज मकान में सहसा प्रवेश करने की प्रवृत्ति नहीं हुई। भय? शायद कुछ भय भी हो, पर घृणा अधिक थी। उसमें एक प्रबल इच्छा यह ही आई कि वह जोहरा के सामने जाकर कहे—क्यों जोहरा, इतने बड़े-बड़े आदर्शों का यह परिणाम?

मकान के अंदर बिना गये ही उसने पुकारा—कौन है? अरे रमज़ान! करीम!

कई बार पुकारने के बाद एक आदमी निकल आया, बोला—किसे खोज रहे हैं? डाक्टर साहब को?—पर प्रश्न के साथ ही आगन्तुक की दृष्टि राजीव के चेहरे पर पड़ी और वह भय चकित हो गया, उसकी बात बन्द हो गई। वह राजीव को भली भाँति पहचानता था।

राजीव ने भी देखकर पहचान लिया। रूखाई के साथ बोला—रमज़ान कोई डर की बात नहीं है। लोग कहाँ हैं।

—डाक्टर साहब बैठके में हैं।

—और?

—शौकत मियाँ अभी तक सो रहे हैं।

शौकत के नाम से राजीव ने नाक चढ़ा ली। वह शौकत की खबर नहीं चाहता था। बोला—मिस जोहरा को बुलाओ, मैं उनसे मिलूँगा।

—वे तो नहीं हैं बाबूजी।

—कहाँ गई?—आश्चर्य चकित होकर राजीव ने पूछा।

—वे तो जसोर चली गई, अब तक कोई खबर नहीं मालूम।

रमजान और भी कुछ कहने जा रहा था, इतने में स्वयं डा० नौशेर मकान से निकले। वे रोज की तरह खैराती दवाखाने में बैठने के लिये जा रहे थे। अकस्मात् सामने राजीव को देखकर अवाक रह गये। इस अप्रत्याशित तथा अचिन्तितपूर्व भेंट से वे हक्का-बक्का होकर खड़े हो गये। उनके चेहरे पर अपार और सीमाहीन आश्चर्य था। जिसे उन्होंने मरा हुआ समझ लिया था, वह इस तरह बिल्कुल जीवित अवस्था में उन्हीं के सामने इस्पाती वास्तविकता से खड़ा है इस बात को विश्वास करने का जी नहीं चाहा। पर वास्तविकता किसी का मुँह देखकर नहीं चलती, वह आँखों में उँगली डालकर अपना अस्तित्व बता देती है। जैसे भी हो और जितना भूतपूर्व भी हो राजीव उसके सामने खड़ा था। हाँ वही था। इसमें कोई गलती नहीं थी। वही। पर बहुत दुबला हो गया, जैसे तपोक्लिष्ट है। चेहरे पर पहले जो सारे विश्व की चिन्ता का बोझ था अब उसके साथ एक झलक विषाद की भी मिल गई थी। पर केवल वही नहीं, ऐसा मालूम हुआ कि उन्हें देख कर इस चेहरे पर जैसे घृणा की एक झलक दिखाई दे गई।

सब कुछ मिलाकर डा० नौशेर पर एक विशेष अस्वाभाविक प्रभाव पड़ा। शौकत या यासीन ने जो कुछ भी किया था, जिस तरह से उन्होंने दंगे में भाग लिया था, विशेषकर जिस तरह से राजीव के साथ विश्वासघात किया गया था, डाक्टर साहब उसके कतई समर्थक नहीं थे। बल्कि वे समझते थे कि यदि वे मकान पर उपस्थित होते तो राजीव के साथ जो कुछ हुआ, उसकी नौबत ही नहीं आती। पर जो हो गया सो हो गया। वे अब घटनाओं के रुख के विरुद्ध दूसरी दिशा में जाने के लिये तैयार नहीं थे। जीवन में वे सबसे अधिक लोकलज्जा से डरते थे। इसी लोकलज्जा से बचने के लिये उन्होंने जोहरा के भागने की बात को शौकत तक से गुम रक्खा था। इसलिये जब उन्होंने अपने सम्मुख मूर्त्तिमयी लोकलज्जा के रूप में राजीव को खड़ा देखा, और एक क्षण के अन्दर यह बात उनके दिमाग में आ गई कि अब तो लड़की का एक ग़ैर मुसलमान के साथ इश्क करना और राजीव की हत्या की चेष्टा करने के कारण शौकत को हवालात जाना हो सकता है, तो उनकी अवस्था बहुत अद्भुत हुई। उनके मुँह से केवल एक अस्फुट शब्द निकला—एँ......

राजीव ने आशा की थी कि और जो कुछ भी हो डा० नौशेर अवश्य ही इन बातों में नहीं हैं। उन्हें वह एक उदार चरित्र तथा स्वतंत्र विचार वाले व्यक्ति के रूप में जानता था, पर जब उसने उन्हें इस प्रकार हक्का बक्का और डरा हुआ पाया, तब उसे पहले तो आश्चर्य हुआ, फिर उसने जब यह सोचा कि रमेश और अमित ने भी सक्रिय रूप से दंगे में भाग लिया, तब उसने इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं पायी।

उसने बिना आदाब अर्ज किये ही कहा—आपको मुझे देखकर आश्चर्य हो रहा है?

—हाँ, नहीं—कहकर उसके बाद बगल में नौकर को खड़ा देख

कर डरे, सोचा कि न मालूम क्या बात हो, नौकर को पुकारकर बोले— रमजान जाकर जरा दवाखाने में कह तो आओ कि आज डा० साहब नहीं आयेंगे।

रमज़ान खुद यह जानना चाहता था कि क्या मामला है पर मालिक की आज्ञा पाकर कुछ मुँह बनाते हुए अपने काम को रवाना हो गया।

रमजान के जाने पर डा० नौशेर ने यह सोचा कि यहाँ पर रास्ते में खड़े होकर बातचीत करना उचित न होगा, पर दूसरे ही क्षण सोच लिया कि राजीव का मकान के अन्दर बुलाने का मुँह नहीं रहा। कहने के लिये कोई बात न पाकर हतबुद्धि की तरह शुरू किया आपको देखकर बड़ी खुशी हुई, क्या खबरें हैं?

—इन बातों को बाद को सुनियेगा। मैं बच गया यह तो आप देख ही रहे हैं। शौकत मियाँ और उनके दोस्तों ने मुझे मारने में कोई कसर नहीं रखी। अजीब तरीके से बच गया।—रुखाई के साथ उसने इन बातों को कहा, पर फिर भी आने का कारण स्पष्ट नहीं हुआ, इसलिये बोला—मैं मिस जोहरा के साथ एक बार भेंट करना चाहता हूँ। इसीलिये आया था।

—पर वह तो बहुत दिन से यहाँ नहीं है—डाक्टर नौशेर ने बहुत साफ-साफ कहा।

राजीव को न मालूम क्यों इस बात पर विश्वास नहीं हुआ, सोचा कि शायद भेंट न करने देने का यह एक बहाना भर है। संदेह भरी दृष्टि से डाक्टर को देखते हुए बोला—मेरा और उनका सब ताल्लुक खतम हो गया, मैं सिर्फ उनसे पाँच मिनट मिलना चाहता हूँ।—फिर कुछ रुककर बोला—अगर आप कहें तो भेंट आपके सामने हो सकती है।

राजीव के प्रत्येक शब्द में कुछ तीखापन था, अविश्वास और सन्देह का तीखापन!

डा० नौशेर इस प्रकार से किसी की बात सुनने के अभ्यस्त नहीं थे। एकाएक उन्हें गुस्सा चढ़ आया पर कहीं गुस्सा करने से मामला और बिगड़ जाय, और अधिक भद्दा हो, इसलिये उन्होंने अपने को सम्हाल लिया और कहा—पर राजीव बाबू मैं आपसे सच कह रहा हूँ, वह यहाँ वाकई नहीं है।

राजीव ने कुछ नरम पड़ते हुए और शायद कुछ लज्जित होते हुए कहा—वे कहाँ हैं?

—नहीं मालूम—डा० के चेहरे पर विषाद की एक काली छाया पड़ गई।

आश्चर्य से राजीव ने कहा—आप नहीं जानते? यह कैसी बात है?

हाँ...डाक्टर यह सोच रहे थे कि राजीव को पूर्ण सत्य बताया जाय या नहीं। सोचकर उन्होंने देखा कि कहने से कोई फायदा नहीं बल्कि वे पछताने लगे कि यह क्यों न कह दिया गया कि वह जसोर गई।

राजीव यह समझ नहीं पाया कि ऐसा कौन सा कारण हो सकता है कि जोहरा कहाँ है इसे डाक्टर साहब न जाने। तो क्या जोहरा मर गई? इस बात को सोचते हुए उसका हृदय कम्पित हो उठा। उसने जोहरा को तिरस्कार करने के लिये कुछ बहुत ही पैनी और तीखी शब्दावलियों को मन ही मन रचना कर रक्खी थी, तुम नारी नहीं हो, तुम्हारा कोई आदर्श नहीं है, तुम ढोंगी हो, तुम मानव जाति के लिये कलङ्क स्वरूप हो। यदि इस समय जोहरा से भेंट हो जाती तो वह तिरस्कार पूर्ण वाक्यों को उबलते हुए गर्म पानी की तरह जोहरा के सिर पर डाल देता, पर वह यह क्या सुन रहा है। कहा जाता है कि मनुष्य का गुस्सा उस समय सबसे अधिक होता है जब प्रेम निवेदन के समय उससे कोई छीन लेता है, पर जिसको हृदय की समस्त घृणा

देकर चुने हुए शब्दों में तिरस्कार करने की बात तय कर ली गई है, उसको किसी कारण से तिरस्कार न कर पाने से जो आशाभङ्ग और मानसिक पीड़ा होती है वह उस क्रोध से कष्टकर नहीं है।

पर इस पीड़ा के साथ-साथ राजीव के मन में कौतूहल ने भी जोर मारा। अकस्मात् उसने सोचा कि कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि यासीन ने उसे हिन्दू-मुस्लिम दंगे के बहाने से मरवा दिया हो। वह सब कुछ कर सकता है। वह उस दिन जोहरा के सम्बन्ध में जिस प्रकार से बातें कर रहा था, उससे कुछ अजीब ध्वनि निकलती थी। हाँ खूब अच्छी तरह याद है। राजीव ने कहा—उन्हें किसी ने मार डाला ? साफ बताइये। कोई गड़बड़ मामला हो तो पुलिस को खबर दी जाय।

पुलिस का नाम सुनते ही डाक्टर का चेहरा फीका हो गया। अकस्मात् जैसे उनकी उम्र बीस साल बढ़ गई। चेहरा बैठा हुआ और आँखें धंसी हुई प्रतीत होने लगी। इन कुछ हफ्तों में उनको मानसिक कष्ट बहुत मिला था। एक ही मुहूर्त के अन्दर उन्होंने मामले की सारी ऊँच नीच सोच ली। उनके मन में सबसे अधिक यह बात आने लगी कि यदि वे राजीव को पूरी परिस्थिति समझा न सकें तो संभव है कि वह पुलिस में खबर दे। वे क्या जानते थे कि राजीव के मन में जोहरा के प्रति इस समय घृणा और तिरस्कार के अतिरिक्त कुछ नहीं था। साथ-ही-साथ उन्होंने यह भी सोचा कि यदि राजीव एक बार पुलिस में पहुँचा तो खुदा जाने क्या-क्या बक जाय। इस बात की सम्भावना मात्र से वे चौंक पड़े। बल्कि इससे तो अच्छा है कि राजीव को सब बात बता दी जाय। बोले—नहीं वह शायद जिन्दा है, पर मुझे उसका पता नहीं मालूम।

कौतूहल से अभिभूत होकर राजीव ने कहा—कैसी बात है समझ में नहीं आयी ?

धीरे-धीरे डाक्टर साहब ने जेब से रुमाल निकाल कर माथे पर

के पसीने की बूँदों को पोंछ लिया, फिर बोले—यह कहानी बहुत लम्बी है मि० राय। यहाँ रास्ते में खड़े होकर उन बातों का तजकिरा मुमकिन नहीं—फिर खाँसते हुए बोले—लेकिन आप को मकान के अंदर बुलाने की हिम्मत भी नहीं होती, इसलिये जहाँ जाने के लिये कहें, वहीं पर चलें......

इन बातों को कहकर डाक्टर नौशेर जैसे थक से गये। राजीव समझ गया कि बुड्ढा जो कुछ कह रहा है ठीक ही कह रहा है। उसका गला थोड़ी देर के लिये भावुकता के कारण रुँध गया। उसे बुड्ढे पर दया आ गई, बोला—नहीं नहीं, चलिये मकान के अंदर चलिये, आप से मुझे कोई खौफ नहीं है।

तुच्छ दो शब्द थे, पर इतने ही से बुड्ढे का मन पिघल गया, बोले—मुझ से तुम्हें कोई डर नहीं है, यह बात ठीक ही है, तुम्हारा कुछ होने के पहले मेरी ही लाश तड़पेगी। उस रात को अगर मैं मकान पर होता तो वह सब खुराफातें न हो पातीं।

दोनों चुपचाप मकान में घुस गये। डाक्टर ने उसे अपने कमरे में ले जाकर भीतर से दरवाज़े बन्दकर दिये। इसके बाद कुछ सोचते रहे। फिर अकस्मात् किसी निश्चय पर पहुँचकर उन्होंने एक ड्राअर खोला, और उसमें से एक बहुत सावधानी से रक्खे हुए कागज को राजीव के हाथ में देते हुए बोले—यह कागज का टुकड़ा सब कुछ बता देगा। इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं मालूम है।

राजीव कागज की परत को खोलकर उसके पढ़ने में डूब गया; वह डाक्टर नौशेर के अस्तित्व के सम्बन्ध में सम्पूर्ण रूप से उदासीन हो गया।

डाक्टर साहब सामने की एक आराम कुर्सी पर धम से बैठते हुए मेज पर की एक किताब को हाथ में लेकर उसे एक विकृत-मस्तिष्क व्यक्ति की तरह उलटने लगे।

राजीव ने पत्र को एक बार पढ़ा, दो बार पढ़ा फिर उसे मोड़कर डाक्टर साहब के हाथ में दे दिया।

पत्र को पढ़कर राजीव ने जैसे समस्त विश्व जगत को एक नये रंग में देखा। उसके चेहरे पर विषाद का जो काला बादल लहलहा रहा था, वह जैसे किसी जादूगर की जादू की छड़ी के स्पर्श से लुप्त होकर वहाँ पर एक सुन्दर सुनहली धूप दिखाई पड़ी। ओह जोहरा ने इस प्रकार अपने आदर्श के लिये और उसके लिये लड़ाई की। उसे केवल यही बात स्मरण हो आ रही थी कि बातें कितनी पैनी थीं। बातें शायद किसी बड़े कवि की हैं पर इस भाषा में जोहरा ने ही जीवन का संचार किया था। वह अपने पिता को इससे अधिक और क्या लिखती? इसके अतिरिक्त वे बातें भी कितनी जोरदार हैं॥

यह पलायन है या संग्राम है? किसी-किसी समय पलायन भी संग्राम है? यही विचार शायद ईस्लाम में हिजरत के रूप में व्यक्त हुआ है।

राजीव उनका अस्तित्व सम्पूर्ण रूप से भूल गया है देखकर बूढ़े डाक्टर ने कहा—अब आपने एतबार किया कि मैं जो कुछ कह रहा था वह ठीक था।

—हाँ, मुझे माफी दीजिये—राजीव एकाएक अत्यन्त भावुक होकर बोला—मेरी हालत में इस तरह दूसरे पर शक करना ताज्जुब की बात नहीं है यह सोचकर माफ फरमाइये।

बूढ़े डाक्टर ने समझ लिया कि जीत उनकी रही है। अब पुलिस का कोई डर नहीं है। अब भद्देपन की कोई बात नहीं है। अपनी जीत को और भी गहरी कर लेने के लिये स्वर नीचा करते हुए बोले—मैंने यह खत शौकत को भी नहीं दिखाया। वह यही जानता है कि जोहरा जसोर गई है।

—हाँ—राजीव ने कहा—मैं आपका बहुत मशकूर हूँ कि आपने मुझे यह खत दिखाया। इन दिनों मेरे सभी मियार जैसे पाँखों के सामने खतम हुए जा रहे थे, किसी तरह भी उन्हें नहीं जिला पा रहे थे, आज जैसे उन्हें फिर से नई जिन्दगी मिली—कुछ समझकर वह आगे कुछ न बोला।

डाक्टर उसकी बातों को सुनकर अजीब तरीके से ताकने लगे। यह छोकरा किन आदर्शों की बात कह रहा है ! उनके अपने भी तो कुछ आदर्श हैं। कुछ तो रोज के बरतने में आनेवाले आदर्श हैं और कुछ कभी-कभी काम में आनेवाले, पर इसमें इतने जोश में आने का क्या कारण है।

इसके बाद भी बड़ी देर तक बातें होती रहीं। यद्यपि डाक्टर नाश्ता कर चुके थे, फिर भी राजीव को नाश्ता कराने के लिये उन्होंने फिर उसके साथ नाश्ता किया। दोनों बड़े अच्छे ताल्लुकात लेकर एक दूसरे से अलग हुए। इसी मकान में नाश्ता करते-करते राजीव ने मन ही मन तय कर लिया कि वह जोहरा को खोजने निकलेगा। पर उसने इस निश्चय की बात डाक्टर से नहीं बतायी। जोहरा के सम्बन्ध में कुछ भी तो नहीं मालूम था कि वह इस वक्त कहाँ और किस हालत में है। पर वह इस बात से परास्त नहीं हुआ। रास्ता चाहे जितना भी दुर्गम और काँटेदार हो वह उसे खोजकर संग्रामकर पा सकेगा यही बात उसके रक्त के प्रत्येक कण नाच-नाचकर कह रहे थे। पृथ्वी का विस्तार उसे डरा नहीं पा रहा था।

२६

जोहरा दो महीने से शोलापूर में है, उसने जानबूझकर ही इस जगह पर आकर आश्रय लिया है। आश्रय क्या, मजदूरों के मुहल्ले में एक छोटी सी कोठरी थी।

जोहरा इसके पहले कभी भी मकान से बाहर नहीं रही। पिता के पक्षपुट में ही उसका सारा जीवन बीता था। इसलिये पहले-पहल एक अज्ञात जगह में आकर उसे बड़ी असुविधा हुई, पर राजीव की मृत्यु के बाद से (उसकी जान में राजीव मर चुका था) वह अपने मकान में ही जिस अशान्ति की शिकार थी उससे छुट्टी मिल गई। उसे जो बात सबसे अधिक अखरती थी वह यह थी कि शौकत के साथ एक छत के नीचे रहना पड़ता था, उससे मुक्ति पाकर उसे बहुत आनन्द हुआ। वह भाई से प्रेम करती थी, पर उसके कार्यों के कारण यह प्रेम सहज ही में घृणा में परिवर्तित हो गया। ऐसी भयंकर घृणा जो एक साथ रहने को भी बरदाश्त करने को तैयार नहीं थी।

जोहरा के मानसिक गठन में सबसे बड़ी चीज थी उसकी नव-नव उन्मेषशालिनी बुद्धि उसमें जैसे प्रेम बुद्धि के जरिये से प्रवाहित होता था, उसी प्रकार घृणा आदि अन्य मानसिक गुण भी बुद्धि के जरिये से प्रवाहित होते थे। जिस चीज, विचार या व्यक्ति के सम्बन्ध में वह समझ जाती थी कि यह बुद्धि विरुद्ध, वह चीज, वह विचार, वह व्यक्ति उसके निकट बहुत ही अधिक मात्रा में हेय हो जाता था। हाँ रक्त का खींचाव उसमें भी था। पर उसकी जड़ें इतनी गहराई तक नहीं जा सकती थीं कि बुद्धि की कठिनता को पार करते हुए अपनी जड़ों को फैला दे।

शोलापूर आकर उसे मानसिक शान्ति प्राप्त हुई, पर दूसरे प्रकार की अशान्तियाँ बहुत सी हो गईं। खाने पीने का कष्ट, रहने का कष्ट, तरह-तरह के अन्य कष्ट। धीरे-धीरे यह सब सह गया। कुछ कष्टों का समाधान हो गया, कुछ का नहीं हुआ, वे सहे गये। जीवन अपनी इकरस चाल से चलने लगा। न कोई हर्ष था न विषाद था, न कोई उत्तेजना थी, और न कोई विशेष अवसाद था। हृदय भरकर शून्यता थी।

जोहरा के पास कुछ निजी रुपये थे, पर वह यह जानती थी कि ये रुपये हमेशा नहीं चलेंगे। इसलिये उसने एक दैनिक में विज्ञापन देकर लड़कियों को पढ़ाने का एक काम लिया। इस प्रकार उसका समय भी बीतने लगा और एक स्थायी आमदनी भी हो गई। लड़कियों को पढ़ाने के बाद जो समय बच रहता था उसे वह मजूरों की स्त्रियों के साथ बिताती थी उनमें कोई ढङ्ग का काम नहीं करती थी क्योंकि मजूरों में क्या काम करना चाहिये इस सम्बन्ध में उसे न तो कोई ज्ञान ही था, और न कोई आन्तरिक झुकाव ही था, पर एक काम तो वह कर रही थी, वह यह कि उनमें साम्प्रदायिकता के विरुद्ध प्रचार करती थी। केवल प्रचार नहीं जेहाद।

मजूरों में जो राजनैतिक दल काम कर रहे थे, उन्होंने जोहरा के प्रगतिमूलक झुकाव को देखकर उसे अपनी पार्टियों के जालों में कसने की चेष्टा की, पर वह पकड़ में नहीं आयी। जिस प्राणशक्ति की अदम्य लीला रहने पर राजनैतिक लड़ाई में भाग लेने की प्रवृत्ति करती है, वह जोहरा में दुर्बल और मृत हो चुकी थी।

इधर एक और अड़चन थी। जोहरा की शिक्षा दीक्षा इस प्रकार हुई थी कि वह अपने को स्त्री बहुत कम सोचती थी। पुरुषों के सम्बन्ध में उसमें किसी प्रकार का सुलभ संकोच नहीं था। एक राजीव के सामने ही वह कभी-कभी अपने को स्त्री रूप में सोचती थी, पर

उसकी अकाल मृत्यु के कारण उसका वह भाग बिल्कुल शुष्क हो चुका था, पर फिर भी वह नारी थी, युवती थी, सुन्दरी थी। विषाद ने उसके सौन्दर्य को एक ऐसा स्पर्श प्रदान किया था जिसने उसे पुरुषों की आँखों में और भी वांछनीय कर दिया था। वह जब इधर उधर जाती थी तब उस पर बहुत सी लोलुप दृष्टियाँ पड़तीं। पहले पहल जोहरा इन सब दृष्टियों के सम्बन्ध में बिल्कुल अज्ञ रहती थी, पर धीरे-धीरे उसने देखा कि मजदूर लोग उसे अपने से बहुत ऊँचा समझते थे, काम के दबाव में उनको इस तरफ मन देने का मौका कम लगता था, पर उनमें भी जो अवारे किस्म के थे, वे दूर से आँख फेंककर चल देते थे।

जोहरा पर बहुत सी कुदृष्टियाँ पड़ती थीं। कोई-कोई अपने से आगे बढ़कर अपनत्व दिखाने की चेष्टा करता था। अवश्य मुसलमान स्त्री रूप में परिचित होने के कारण हिन्दू अवारे बहुत डरते हुए उस पर दृष्टि का अत्याचार करते थे, पर हिन्दू नहीं करते थे तो क्या मुसलमान करें। यदि कोई हिन्दू जोहरा पर अत्याचार करता या इसके साथ बेकार में रब्तजब्त बढ़ाने की कोशिश करता तो ये ही मुसलमान उसकी रक्षा करने के लिये आगे बढ़ते, शायद इसी बात को उपलक्ष्य कर एक साम्प्रदायिक दंगा भी हो जाता, पर खाली मैदान पर यही लोग शरारत करने लगे। ये लोग शायद यह समझते थे कि एक असहाय अनाथ मुसलमान युवती पर अत्याचार करने का अधिकार एक मात्र मुसलमानों को ही है और किसी को नहीं।

जोहरा परेशान हो गई। वह समझ गई कि इस समाज में स्त्री को कोई भी स्वतंत्र नहीं होने देगा। स्त्री को पुरुष के अधीन रखने के षड़यन्त्र में ये गुंडे या अर्ध गुंडे भी शामिल हैं। यदि नारी विद्रोहिनी होकर घर के बाहर जाय, तो ये लोग भूंककर फौरन उसे अपने पुराने ग्वाल घरों में लौटा देते हैं। ये लोग केवल भूंकना ही

जानते हो ऐसी बात नहीं, ये काट भी सकते हैं यह इनके दाँतों को देखने से ही पता लगता है।

एक तो जोहरा के अन्दर कोई पद्धतिगत संग्राम नहीं था। दूसरे वह अकेली थी, तीसरे यह आफत जुटी। वह बहुत निरुत्साह हो गई। उसने बाहर निकलना कम कर दिया।

पलायन, फिर उसके अंदर पलायन।

वह सिर्फ लड़कियों को पढ़ाने के लिये निकलती थी और खाने-पीने की जरूरत के लिये दो एक बार और निकली थी। उसे ऐसा मालूम हो रहा था कि सारी मानव-जाति उसके पीछे पड़ी हुई है। किसी प्रकार भी वे उसे जीने न देंगे। समय-समय पर उसकी सहन शक्ति पर इतना अधिक टैक्स पड़ता था कि वह गम्भीर रूप से यह सोचा करती थी कि पिता के घर लौट जाना उचित होगा या नहीं। वहाँ शान्ति तो रहेगी, पर शौकत की बात याद आते ही घर लौटने के सम्बन्ध में उसका उत्साह समाप्त हो जाता था। उसका सारा मन एक निश्चेष्ट उदासी से भर उठता था।

राजीव की स्मृति भी कुछ कुछ क्षीण होती जा रही थी। वह धीरे धीरे एक रक्तमांस के मनुष्य से अपरूप रूप में मंडित एक विचार होता जा रहा था। वह विचार भी क्या है, इसे भी वह अब अच्छी तरह पकड़ नहीं पा रही थी। इस प्रकार राजीव धीरे-धीरे विचारों के जगत में समाप्त होता जा रहा था। केवल यही नहीं चारों तरफ अज्ञान और अन्धकार के विरुद्ध थोड़ा बहुत लड़कर जोहरा में यह धारणा पैदा होती जा रही थी कि शायद राजीव जिन आदर्शों को लेकर अपने जीवन में प्रयोग कर रहा था, वे इतने ऊँचे थे कि कभी सफल नहीं हो सकते।

इन सब तरह के शारीरिक तथा मानसिक सङ्घर्षों में उसका शरीर टूट गया। अपनी शारीरिक अवनति देखकर कभी-कभी उसमें यह

इच्छा उत्पन्न होती थी कि घर लौट चलें, अर्थात् फिर से भागे, अबकी रण छोड़कर भागने के अर्थ में भागे। पर किसी अव्यक्त आशा से वह जहाँ रही वहीं डटी रही। उसने सोचा जीवन की सब आशायें तो मटियामेट हो चुकीं, अब जीवन चला जाय तो क्या है। काहे का डर?

ऐसा हो गया कि उसके लिये ट्यूशन करने के लिये जाना भी कठिन हो गया। फिर भी वह जाती रही। सस्ते से होटल से खाना घर ही पर आ जाया करता था।

ऐसे दिन कट जाते थे। ऐसे समय में एक घटना हुई। एक दिन रास्ते में उसके साथ निसार की भेंट हुई। हाँ निसार ही था। अकस्मात् जोहरा के सब स्नायु सचेतन हो गये। यह कौन है? इसे उसने कहाँ देखा है? हाँ याद आ रहा है। यह उन्हीं के शहर तथा मुहल्ले का एक नौजवान है। कहीं उसे खोजने न आया हो। अगर आया हो तो भी क्या। वह कोई नन्हीं सी बच्ची तो है नहीं कि कोई उसे जबर्दस्ती ले जायगा। इसके अलावा अगर यह उसे खोजने के लिये आया है तो उस प्रकार से मुँह छिपाकर भागने की कोशिश क्यों कर रहा है? जरूर ही उसने उसे पहचाना है।

जोहरा ने निसार की तरफ दो कदम बढ़ते हुए पुकारा—निसार! निसार!

निसार जरा डरते हुए लौटा। यदि पुकारनेवाला पुरुष होता तो वह निश्चय ही भाग खड़ा होता, पर जोहरा नारी थी, यह सोचकर वह आगे बढ़ आया। हबीब को मारकर उसी रात में ही निसार बम्बई के लिये रवाना हुआ था। बम्बई की मिल में मजदूर हो गया था, पर वहाँ किसी मामले से खटका लगने से शोलापुर आया था।

पास आने पर जोहरा बोली—निसार तुम यहाँ?

जोहरा के स्वर में किसी प्रकार का तिरस्कार या डाँट ना नहीं थी। बल्कि अपने लोगों के साथ जो सहज और स्वाभाविक सहानुभूति थी, वही थी। जोहरा शायद हबीब के मारे जाने की बात जानती ही न होगी।

फिर भी कौन जानता है? इसलिये अपनी दृष्टि से जोहरा के मन की थाह लेने की कोशिश करते हुए निसार ने कहा—हाँ यहाँ मजदूर हूँ।

—तुम्हारी शायद गोश्त की दूकान थी?

निसार की चिन्ता दूर हुई। बोला—हाँ बहन थी तो जरूर पर यासीन मियाँ ने बेदखलकर दूकान लुटवा ली।

दूसरे किसी समय कसाई का एक लड़का इस प्रकार उसे बहिन कहता तो जोहरा नाक चढ़ा लेती, पर इतने दूर देश में एक ने फिर भी उसके साथ कुछ नज़दीक का बर्त्ताव किया, इससे उसके कुछ स्नायु जो खुराक के अभाव से ऊर्ध्वबाहु ऋषियों के बाहुकी तरह मृतप्राय हो गये थे, उनमें फिर जीवन की पुकार मच गई। फिर इस किशोर की बड़ी बहन होने से इन्कार ही क्या था?

जोहरा बोली—सुना था तुममें और यासीन मियाँ में बड़ी दोस्ती थी—फिर स्वर उतार कर बोली—तुम और वह शायद उस दङ्गे में बहुत ही घुलमिल गये थे?

—हाँ, पर अमीर और गरीब में कभी दोस्ती होती है?—दूर में एक हवेली की ओर ताकते हुए विषाद तथा क्रोध में निसार ने कहा।

जोहरा के चेहरे पर मुसकराहट दौड़ गई। ये बातें राजीव की तरह हुईं। पर राजीव ऐसी बातों को केवल बौद्धिक प्रेरणा से कहा करता था, पर इसके कहने में एक उष्णता है, जो राजीव की बातों में कभी न मिली। राजीव की बातें ठंडे दिमाग की बातें थीं, पर इसकी

बातें ज्वालामुखी के लावा से बनी हुई थी। जोहरा ने पूछा—क्या ऐसी दोस्ती नहीं होती ?

—नहीं—दृढ़ता के साथ निसार ने कहा।

—पर तुमने तो दंगे में बहुत हिन्दू मारे थे।

—हाँ उस वक्त समझता था कि मुसलमान एक कौम है, पर मालूम हुआ कि वे भी दो कौमों में बँटे हुए हैं।

—कैसे ?—रहस्याभिभूत होकर जोहरा बोली। पर समझ नहीं पाई कि निसार की पहेली के क्या माने हैं। पूछा—दो कौम कैसे ?

—अमीर और गरीब। यासीन मियाँ एक कौम के हैं, हमारी मिल के मालिक डाबर चन्द उन्हीं की कौम के हैं, और हम लोग सब गरीब लोग दूसरी कौम के हैं।

जोहरा ने निसार की तरफ आश्चर्य से देखते हुए कहा—तुम यह सब क्या कह रहे हो निसार ? किसने तुमको ये बातें सिखायीं ? बहुत ऊँचे दर्जे की बातें हैं।

अकस्मात् जोहरा को राजीव की बात याद आ गई, पर वह भी इन बातों को इतना दर्द मिला कर नहीं कह पाता था। उसकी बातों में एक निर्व्यक्तिक निस्पृहता थी, पर इसकी प्रत्येक बात में जैसे एक लाल शराब लबरेज है, जो सुनते ही दिमाग पर चढ़ जाती है। जोहरा को नये जगत का पता मिला। उसे ऐसा मालूम हुआ कि किसी बात में यह नौजवान राजीव से कहीं बलिष्ठ है, इस बज्र-हस्तों में नया संसार अधिक फबता है। इस बात की याद आते ही उसे ऐसा मालूम हुआ कि शायद वह राजीव के साथ कुछ अन्याय कर रही है। उसका मन नये जगत की बन्दना के साथ-साथ अपने मन में बनाये हुये राजीव के मन्दिर को कायम रखना चाहता था। वह अकस्मात् बिल्कुल प्रसंग को छोड़कर कह बैठी—दंगे के वक्त हमारे मकान से यासीन एक

बंगाली को पकड़ ले गया था, उसके साथ एक भीड़ थी, उसमें तुम थे ? अब तो छिपाने की कोई बात नहीं है न ?

—नहीं—कहकर निसार ने चारों तरफ देखा। कुछ लोग दूर से उसे देख रहे थे। इन देखने वालों के चेहरों पर कौतुकपूर्ण हँसी थी।

जोहरा ने इन लोगों की हँसी नहीं देखी, पर इतना समझ गई कि इन सब बातों की चर्चा के लिये यह स्थान उपयुक्त नहीं है। उसने निसार से कहा—चलो हमारे घर पर, वहाँ पर बातें होंगी। इस वक्त तुम खाली तो होगे ?

निसार ने कहा—हाँ, आज रात के शिफ़्ट में काम है। इस वक्त छुट्टी है, चलिये—उसे भी बात करना पसन्द आ रहा था।

निसार पीछे-पीछे चला। दोनों जाकर जोहरा की छोटी-सी कोठरी में बैठ गये। आज पहली बार एक पुरुष उसकी कोठरी में आया था।

इसके बाद घंटों बातें होती रहीं। यासीन के मकान में राजीव को होश में लाकर उससे क्या-क्या प्रश्न किये गये, उसने किस प्रकार मुसलमान बनकर जान बचाने से अस्वीकार कर दिया, कैसे जब उसने यासीन की बात नहीं मानी, तो उसे फिर मार डाला गया, इत्यादि।

राजीव का जो चित्र अब जोहरा के निकट अस्पष्ट हो चला था, वह केवल पहले की तरह फिर स्पष्ट ही नहीं हुआ, बल्कि किसी ने मानों उसमें दस हजार कैंडल लाईट लगाकर उसे अत्यन्त उज्ज्वल कर दिया। निसार के सामने ही उसके आँखों से आँसू की धारा जारी हो गई। निसार को बीच-बीच में अपनी कहानी रोक देनी पड़ी। उत्तेजना में निसार यह भी सुना गया कि किस प्रकार उसकी दूकान लूटी गई, और कैसे उसने हबीब को मार डाला। हबीब के सम्बन्ध में तथ्य तो यह था कि उसने अंतिम मुहूर्त तक हबीब को मारने का विचार नहीं किया था, पर जोहरा को सुनाते समय उसने उसमें इस प्रकार नमक

मिर्च लगा दिया कि मानों वह बहुत पहले से ही उसके खून का प्यासा था।

इतनी हत्याओं का केन्द्र होने पर भी यह नौजवान जोहरा के निकट घृणित नहीं ज्ञात हुआ, न उसे इस बात का अफसोस हुआ कि उसने उसका बहिन कहना अस्वीकार नहीं किया था। बल्कि राजीव के अंतिम समय के वृत्तान्त को उसे बताने के लिये वह उसके प्रति कृतज्ञ ही रही।

उस दिन से निसार प्राय: आने जाने लगा, पर जोहरा की बीमारी बढ़ने लगी। जब से उसने निसार का विवरण सुना था तब से उसे यह प्रतीत होने लगा कि राजीव मानवता के लिये जरूर मरा है पर उससे कहीं ज्यादा वह उसके लिये मरा है। इस ज्ञान से उसे खुशी हुई, पर इस खुशी से उसकी बीमारी में कमी न होकर वह और जल्दी घुलने लगी। शरीर में दर्द, एक उत्कट खाँसी और कई अन्य लक्षण दिखाई दिये। ट्यूशन में जाना बन्द हो गया।

इस प्रकार उसका शरीर केवल हड्डियों का ढाँचा रह गया। मुँह से जब-तब खून आने लगा।

निसार ने जब-जब कहा—डाक्टर साहब को तार दे दूँ, हवाई जहाज से आ जायेंगे—उतने ही दफा जोहरा ने मना किया। बोली—मेरा कोई नहीं है, तुम ही बल्कि मेरे अपने हो।

निसार मजदूरी छोड़कर दिन-रात जोहरा की सेवा करने लगा। मुहल्ले में जो लोग उसे दूसरा कुछ समझकर सन्देह करते थे, वे उसकी सेवा का विस्तार देखकर मान गये कि हाँ कोई सचमुच का रिश्ता न होता तो इस तरह से कोई सेवा नहीं कर सकता था। जोहरा ने मुहल्ले के लोगों से कहा था कि निसार उसका दूर के रिश्ते से भाई लगता है।

अंत तक जोहरा ने घर पर तार नहीं दिया। एक दिन उसके मुँह से बहुत खून आया। निसार जल्दी डाक्टर बुलाने के लिये गया। डाक्टर ने आकर कहा—सब खतम हो चुका है, मैं तो कल ही जानता था।

निसार मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। इन कुछ महिनों में वह जोहरा के बहुत पास आ गये थे। दोनों एक दूसरे के निरस जीवन में एक अपूर्व रस का संचार किया था। जहाँ तक जोहरा का सम्बन्ध था उसके लिये यह रस यथेष्ट इसलिये नहीं साबित हुआ कि उसके पेड़ की जड़ें कट चुकी थीं। अभिजात कुल में उत्पन्न जोहरा और वह कसाई का लड़का निसार एक विचार के जरिये से एक हो गये थे।

निसार कई दिन कटे पतङ्ग की तरह घूमता रहा, फिर मिल में काम करने लगा। वह मजदूर सभा का एक प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता हो गया।

धीरे-धीरे उसे यह भी ज्ञात हुआ कि हबीब की हत्या के लिये पुलिस उस पर सन्देह नहीं करती, और न उसके नाम से कोई वारन्ट है।

३०

अजीब घूमते-घूमते बहुत दिनों बाद शोलापुर पहुँचा। वहाँ पर अकस्मात् निसार की भेंट हो गई। निसार ही ने आगे बढ़कर सलाम किया। दङ्गे के बाद साल भर हो चुका था, अब उसे कोई डर नहीं था। पहले वह यहाँ पर शमसुल नाम से अपना परिचय देता था, पर जब से उसे मालूम हुआ था कि हबीब की हत्या के बारे में उसपर कोई वारन्ट नहीं है, वह सीधे-सीधे निसार अहमद नाम से पत्र मँगाता था। प्रति सप्ताह उसी नाम से शुजा का पत्र आता था।

राजीव और निसार में घंटों बातें हुईं। राजीव ने सारी कहानी बारबार पूछी। उसने उस कोठरी को जाकर देखा जिसमें जोहरा रहती थी। उसने उसकी कब्र को पक्का करवाकर उस पर एक दिन फूल चढ़ाये। पर किसी प्रकार भी उसे तृप्ति नहीं हुई। मन के अन्दर जो सूनेपन की सृष्टि हुई थी, उसकी किसी प्रकार पूर्त्ति नहीं हुई। उसे बार बार यह अफसोस होता था कि ओह एकबार भी भेट नहीं हुई। उसको सबसे बड़ा अफसोस यह था कि जोहरा अन्तिम समय तक उसे [illegible] हुआ जानकर मर गई, नहीं तो शायद न मरती।

अन्त में एक दिन राजीव लौट गया। उसने डाक्टर नौशेर से जोहरा की मृत्यु की बात बताई। वृद्ध के माथे पर एकाएक एक आकस्मिक संकुचन-प्रसारण दिखाई पड़ा, और टपटपकर अधपकी दाढ़ी से होते हुए अश्रुधारा बह चले। बोले—अच्छा ही हुआ, मर गई—फिर हिचकी की तरह एक आवाज हुई, बोले, हमारे इस अभागे समाज में तुम लोगों की जगह न होती, सहज गालियाँ और बेचैनी होती। तुम लोग आनेवाले समाज के लोग हो, हम [illegible] के समाज में तुम लोगों की कोई भी जरूरत नहीं है।

बूढ़े डाक्टर जल्दी से उठकर भीतर के कमरे में चले गये।